CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Maṭh, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अभिनन्दन ग्रन्थ

सम्पादक :

महेश्वराचार्य

विख्यात साहित्यकार, भूतनाथ आश्रम, लखनऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अभिनन्दन ग्रन्थ

सम्पादक :

महेश्वराचार्य

विख्यात साहित्यकार, भूतनाथ आश्रम, लखनऊ

●

निदेशक :

प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी, आरा

प्रो० एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभागाध्यक्ष

वीर कुँवरसिंह विश्वविद्यालय, आरा

●

परामर्शदात्री समिति :

डॉ० स्वर्ण किरण, सोहसराय

श्री हरिनन्दन कुमार, डुमराँव

श्री विजयानन्द तिवारी, बक्सर

श्री ओम प्रकाश केशरी 'पवननन्दन', बक्सर

श्री पद्मराज जैन, आरा

●

प्रबन्ध सम्पादक :

श्री श्याम सुन्दर बजाज

एम.ए., एल.एल.बी.

सङ्कटमोचन, सांकेत नगर कालोनी, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :
गोवर्धन प्रसाद एवं ब्रदर्स
पो० डुमराँव.जिला : बक्सर
प्रान्त बिहार (भारत)

प्रकाशित अन्य पुस्तकें -

प्रथम प्रकाशन	: हिन्दुस्तान हिन्दू हिन्दुत्व	१९८९
द्वितीय प्रकाशन	: मेरी दृष्टि में	१९९४

अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन वर्ष जुलाई १९९७

मूल्य : १५०.०० रुपया मात्र

प्रकाशक के अधीन सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक :
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी-१०
फोन : ३११८४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

"त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेव समर्पयेत्"

विविध रंग के भाव-सुमन, सुरभित तन, मन, मन्दिर, आङ्गन
संस्मरण, समीक्षा, गद्य-पद्य मय; अक्षर-अक्षर; मलयज-चन्दन
हृदय-पटल, श्रद्धा रूपायित; रोम रोम श्री-कानन-नन्दन
त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुम्हें समर्पित सादर 'अभिनन्दन'

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनन्दन

आप सभी प्रिय मेरे हैं दूँ किसको क्या सम्बोधन!

विविध रूपमय प्राण विहङ्गम –
का अद्भुत यह पावन संगम

स्वागत में उद्गारों का मृदु मौन मुखर उद्बोधन !
आप सभी प्रिय मेरे हैं दूँ किसको क्या सम्बोधन !

परम नेह घट घट के भीतर
भ्रातृ-भाव मय सहज मधुर स्वर

खिले सुमन से आप सभी तन मन मलयज धन-चन्दन!
आप सभी प्रिय मेरे हैं दूँ किसको क्या सम्बोधन !

चिरवाञ्छित आशा अभिलाषा
प्रेम पगी नयनों की भाषा

दिव्य भाव से प्रमुदित हो करती सबका अभिनन्दन
आप सभी प्रिय मेरे हैं दूँ किसको क्या सम्बोधन

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

संक्षिप्त जीवन-वृत्त

जन्म	:	१९ अप्रैल १९०९ मलावार हिल, मुम्बई
पिता	:	स्व० मोतीलाल बजाज, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, कटनी; जबलपुर जिलान्तर्गत (म.प्र.)
माता	:	स्व. सूंवटी देवी पुत्री स्व० विलासराय वकरेडी वाल रामगढ़ (राजस्थान)
संतान	:	तीन पुत्र एवं चार पुत्रियाँ चि० गोरवधनप्रसाद बजाज, श्यामसुन्दर बजाज, सोहनलाल बजाज, कुसुम कुमारी, सुशीला कुमारी, उर्मिला कुमारी, प्रेमा कुमारी
स्कूली शिक्षा	:	लोअर प्राइमरी (कलकत्ता, डुमराँव, कटनी)
स्वाध्यायजन्य	:	(१) होम्योपैथी एच.एम.बी. दी ईम्पीरीयल होम्योपैथिक कालेज, स्टेशन रोड, पटना, वर्ष १९४७ (२) नवीनोत्तर मध्यमा - सन् १९७५ (३) नवीन शास्त्री - सन् १९७८ (४) एलएल.बी (प्रथम वर्ष उत्तीर्ण) सन् १९९४
चिकित्सक	:	रजिस्टर्ड मेडिकल डाक्टर होम्योपैथ, रजिस्ट्रेशन सं० ३२७३ सन्- २९-५-६१
सेवाये	:	डुमराँव में ४०.०० प्रतिमाह पर छै माह के लगभग। ग्रेन सप्लाई ऐजेन्सी, आरा (प्रो० भीखराज जैपुरिया) प्रबन्ध - निरीक्षक १० ब्रांच लगभग १-१/२ वर्ष डुमराँव टेक्सटाइल्स लि० सेल्स आफिसर १९७०-७३ ,, ,, ,, ,, १९८३-८६ वित्तीय सलाहकार – मैनेजिंग डायरेक्टर १९८६ एवं डायरेक्टर, डुमराव टे० मि० लि०
व्यवसाय	:	वस्त्र व्यवसाय; डुमराव इन्डस्ट्रीज (प्रा०) लि० उत्पादन - हरीकेन लालटेन के एकाधिकारी विक्रेता। डुमराँव टेक्सटाइल लि०; द्वारा उत्पादित सूत के विक्रेता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिरुचि	:	कविता, गद्य लेखन, पठन-पाठन, चित्रकारिता, ज्योतिष, हस्तरेखा, चिकित्सा
विशेष घटना	:	भाले से चीते का वध सन् १९३७ - १५ जुलाई, दैनिक पत्रो मे प्रकाशित 'लीडर', 'भारत' इलाहाबाद
अध्यक्ष	:	विश्व हिन्दू परिषद, जिला बक्सर (पू०अ०) वैश्य महा सम्मेलन, जिला बक्सर (पू०अ०) डुमराँव नगर व्यवसायी संघ, डुमराँव (पू०अ०)
उपाध्यक्ष	:	संस्कार भारती बिहार प्रदेश (राष्ट्रीय संस्था) सरस्वती शिशु मंदिर, डुमराँव
विशिष्ट सदस्य	:	अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता
सम्पादक	:	'कलश' भोजपुरी पत्रिका (अब बन्द है)
सम्पादक - मण्डल में	:	'हिलोर' मासिक पत्रिका, आरा (अब बन्द है)
परामर्शदाता	:	'जगरम' भोजपुरी पत्रिका, बक्सर
पुस्तक - प्रकाशन	:	हिन्दुस्तान, हिन्दू, हिन्दुत्व लोकार्पण लन्दन में मेरी दृष्टि में कविता संग्रह सन् १९९५
अप्रकाशित - रचनाएँ	:	बंन्शी शतक, कृष्णा कृष्णा, सिंह-शावक। इसके अतिरिक्त लेख, निबन्ध, नाटक, कविता इत्यादि
सम्मान प्राप्त	:	शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन, आरा दिनांक २०/१२/७६ शहीद स्मारक समिति डुमराँव दिनांक १६/८/९३ भोलानाथ केशरी वासमती देवी स्मृति ट्रस्ट, बक्सर दिनांक २६/१/९५ भोजपुरी साहित्य परिषद ,बक्सर दिनांक ४-६-९५ भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, द्वारा डा० अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड; पदक एवं सम्मान पत्र दिनांक २४/९/९६
संरक्षक	:	१. गाँधी साहित्य परिषद पुस्तकालय, डुमराँव २. भोलानाथ केशरी बासमती देवी ट्रस्ट समिति, बक्सर ३. कला संगम रंगालय, बक्सर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय

– श्री महेश्वराचार्य

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' का अभिनन्दन-ग्रंथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता इसलिए हो रही है क्योंकि मैंने वस्तुतः एक अभिनन्दनीय पुरुष का अभिनन्दन-ग्रंथ निकाला है। इस पुनीत कार्य को सम्पन्न करने का मैंने पहले ही से मन, वचन और कर्म से दृढ़ संकल्प ले रखा था। सच तो यह है कि उसे यथा सादृश सुसज्जित और सम्पादित करने में मैंने अपना तन, मन और धन तक निछावर कर दिया है।

किसी भी कार्य के पीछे उसका कोई न कोई कारण होता है अथवा प्रेरणा-स्रोत होता है। आदरणीय डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के अभिनन्दन के उपलक्ष्य में 'जगरम' का बक्सर से एक विशेषांक निकला था। अतः 'जगरम' विशेषांक से प्रेरणा लेकर मैंने डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जैसे वयोवृद्ध साहित्यकार को अभिनन्दन ग्रंथ का पात्र मन ही मन चुन लिया। अपनी प्रबल इच्छा को डुमराँव जाकर मैंने शास्त्री जी के सामने रख दिया। वे 'ना' नहीं कह सके।

सदा से वयोवृद्ध पुरुष का अभिनन्दन होता आया है। कहा गया है 'अभिवादन शीलस्य नित्य वृद्धोपसेविनः' तथा 'Elders must be respected.' सम्भव है शास्त्री जी से भी पुराने साहित्यकार होंगे या हैं। मगर वे मेरे आत्मीय नहीं हैं, परिचित नहीं हैं। शास्त्री जी से मेरा परिचय अत्यन्त पुराना है। जब से उनका साथ 'प्रणयी' से हुआ तभी से शास्त्री जी मेरे मित्र बन गये हैं। इधर 'प्रणयी' जी मेरे अभिन्न मित्र थे। उधर शास्त्री जी 'प्रणयी' जी के अभिन्न मित्र थे। हम तीनों के बीच जो सम्बन्ध बना उस अभिव्यक्ति का दावा मैं निम्न पंक्ति द्वारा करना चाहता हूँ 'मुझको यह प्यारा और इसे तुम प्यारे। मेरे दुगने प्रिय रहो न मुझसे न्यारे'।

शास्त्री जी मात्र वयोवद्ध ही नहीं हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ अनेक विलक्षण घटनाएँ जुड़ी है। उनमें कतिपय कलाओं और गुणों का पर्यवसान हुआ है। सामान्य पुरुष से वे बहुत ही ऊपर उठे हुए हैं। काली, कमला और ब्रह्माणी, तीनों शक्तियों से जन्मतः वे विभूषित रहे है। जन्मकाल का उनका नाम ही था कालीचरण। भरी जवानी में उन्होंने एक चीते को मार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाला था। तब वे काली से कालूराम बन गए। जिस दिन उनका जन्म बम्बई में हुआ उसी दिन कमला उन्हें अशीर्वाद देने पहुँच गईं। उनके पिता को उस दिन डेढ़ लाख रुपये मिले। और वाणी तो उनकी जिह्वा पर बचपन से विद्यमान है ही।

जब वे आठ वर्ष के थे तभी समस्या पूर्ति कर देते थे। दोहा, चौपाई या सवैया बना देना उनके बायें हाथ का खेल था। बचपन के बनाये उनके तीन काव्य कहे जाते हैं – कृष्ण-कृष्णा, वंशी शतक और सिंह शावक। बचपन के बनाए उनके दोहे बिहारी के दोहों से टक्कर लेते हैं। उनकी सवैया रीतिकाल के कवियों की सवैया को मात करती जान पड़ती है। दोहे और सवैये यहाँ मात्र एक-एक बानगी द्रष्टव्य है–

कर रद पटरदपट कर दूर हरि लागो, हिये मम आन।
कर रद रदपट पटहित, वेणुके,जो मम सवत समान॥

कर्म की रेख विचित्र बनी, न धनी से बचे जो चले यह चक्कर।
राम गुनी न बचे मुनी नारद, शारद शेष छले यह मक्कर॥

सरस्वती की अनोखी कृपा शास्त्री जी ने पाई है। दस - बारह वर्ष की उम्र में उन्होंने पन्द्रह दिनों में गीता कंठस्थ कर सुनाई थी। सारस्वत प्रतिभा उनमें कूट-कूटकर भरी है। लेखन, पठन-पाठन, मनन-चिन्तन और ओजपूर्ण भाषण उनका एक से बढ़ कर एक है। उनकी मेधा, स्मृति, विचक्षण बुद्धि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। उनकी सूझ-बूझ अनोखी है। संस्कृत का व्याकरण उन्हें कंठस्थ है। व्याकरण पर उनका चिन्तन निराला होता है। साहित्य में वे अपने मौलिक चिन्तन के लिए विख्यात हैं। सद्य: प्रकाशित 'मेरी दृष्टि में' इसका प्रमाण है। आरा से निकलने वाले 'कलश' के कुशल सम्पादक रह चुके हैं। चार भाषाओं पर उनका समान अधिकार है। संस्कृत, हिन्दी, भोजपुरी एवं मारवाड़ी में वे गद्य-पद्य दोनों लिखा करते हैं। 'संस्कृतम्' पत्र में वे पहले लेख लिखा करते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य का बचपन सारी जिन्दगी का आइना है। बचपन में जो कुछ दिखता है वही सयाने होने पर प्रस्फुटित होता है। कहा ही गया है– 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'

बचपन की जिन्दगी उनकी विलक्षणताओं से भरी दीखती है। बचपन और जवानी की तैंतीस वर्ष की उम्र उन्होंने मारवाड़, बम्बई, कटनी और कलकत्ते में बितायी है। विगत पचपन वर्षों से वे डुमराँव में रहते आ रहे हैं। यह भी एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अजीब बात है कि उन्होंने बम्बई और कलकत्ता जैसी महानगरी को छोड़कर डुमराँव में ही अपना घर बसा लिया है। डुमराँव से उन्हें इतना प्यार बढ़ा कि उन्होंने डुमराँव पर ही कविता रच डाली 'तू मेरी प्यारी नगरी है, मुझसे मत अपना दर्द छिपाना'।

भोजपुर यारुष के लिए गर्व का विषय है कि शास्त्री ज़ी ने यहाँ की मिट्टी पसन्द की है और भोजपुरी भाषा को अपनाया है। इस मिट्टी ने प्राचीनकाल में विश्वामित्र, भृगु, च्यवन, बाणभट्ट, दामोदर मिश्र, सदल मिश्र, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द्र, शिवपूजन सहाय, 'शैदा' आदि को पैदा किया है। आज भी यहाँ साहित्यकारों, विद्वानों, कवियों एवं मनीषियों की एक लम्बी कतार लगी दिखाई पड़ती है। उन सभी का मैं तुलसी के शब्दों में नमन करता हूँ–

भये जे अहहिंजे होइहें आगे। प्रनवउँ सबहिं कपट छल त्यागे ।।

हाँ, तो शास्त्री ज़ी के गुणों और कलाओं का यदि मैं दिग्‌दर्शन कराऊँ तो एक अलग ग्रंथ तैयार हो जायेगा। संक्षेपत: इतना ही कहा जा सकता है कि वे बल-पौरुष, वैभव तथा विद्या के खजाना हैं। आज भी उनमें उत्साह है, उमंग है, साहस है, निर्भीकता है, ओजभरी वाणी है, दृढ़ संकल्प लेने की क्षमता है। वे अब व्यवसाय नहीं करते। मगर उन्हीं के इशारे पर, निर्देशन में उनके पुत्र-पौत्र व्यवसाय सम्हालते हैं। लिखने - पढ़ने का मौका न उन्हें पहले मिल सका, न अब है। पर साहित्यिक चर्चा में वे मौज लेते हैं। यदा-कदा कुछ रच भी लेते हैं। उनकी रचनाएँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लिखी पड़ी हैं। संग्रहीत न होने के कारण उनकी बहुत सी कविताएँ नष्ट हो गईं। जिन्दगी में उन्हें फुर्सत नहीं मिली कि उसे सँजो सकें। पिता ने बचपन में ही व्यापार और व्यवसाय का कार्यभार उनके कंधे पर लाद दिया था जिससे वे आजतक नहीं निकल सके। व्यवसाय की मशीनवत जिन्दगी में ही वे सरस्वती की साधना भी करते आ रहे हैं। संस्कृत-प्राकृत के उद्भट विद्वान् श्री नेमीचन्द्र शास्त्री की उन पर इतनी कृपा हुई कि उन्होंने शास्त्री बनाकर ही छोड़ा।

शास्त्री जी जन्मजात कवि हैं, साहित्यकार हैं, सम्पादक हैं। लेखक हैं, चित्रकार हैं, वकील हैं, सफल व्यवसायी हैं, ज्योतिषी हैं, हस्तरेखा विशारद हैं, प्रखर वक्ता हैं। उनके गुणों एवं कलाओं पर विचार करना यहाँ सम्भव नहीं है। शास्त्री जी सरीखे महापुरुष कम पैदा होते हैं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। कारणत: मैंने उनका 'अभिनन्दन ग्रंथ' निकालने का अथक प्रयास किया है।

अभिनन्दन ग्रंथ मेरे सम्पादकीय लिख देने से नहीं निकल सका है। इसके लिए मैंने अपने कृपालु रचनाकारों से निवेदन किया है, अनुरोध किया है और उनके सामने गुहार लगाई है। रचना के लिए मैंने दौड़धूप भी कम नहीं की है। रचनाकारों ने मुझे खुले दिल से आदर दिया है और अपनी रचनाएँ भेजी हैं। अभिनन्दन ग्रंथ में शास्त्री जी के काव्य की समीक्षा है; व्यक्तित्व है और उनका संस्मरण। उन पर कविताएँ भी रची गई हैं और शुभकामना के कुछ पत्र भी आये हैं। अत: अभिनन्दन ग्रंथ की सफलता का श्रेय रचनाकारों को जाता है। अत: छोटे-बड़े सभी रचनाकार धन्यवाद के पात्र हैं। क्योंकि उन्होंने माँ शारदा के मन्दिर में अक्षत, फूल-फल या नैवेद्य अर्पित किया है मंदिर का वह द्वार धन्य है–

जय देव मंदिर देहली, समभाव से जिस पर चढ़ी, नृप हेममुद्रा और रंक वराटिका।

रचनाकारों ने शास्त्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वे विद्वान् हैं। विद्वानों ने शास्त्री जी का सम्मान किया है, अभिनन्दन किया है। इससे सिद्ध होता है कि शास्त्री जी असामान्य पुरुष हैं। बड़े लोगों के बीच जिनका गुण-गान गाया जाता है वह कोई साधारण पुरुष नहीं होता। ऐसे महान् पुरुष की खोज या चाहना सर्वत्र ही रहती है। ऐसे पुण्य पुरुष को लोक-परलोक दोनों चाहता है। कवि ने इस पर मुहर लगाई है।

जाकी खूब खूबी खूब खूब में सुनी ताकी खूब खूबी खूब खूबी अवगाहना।
जाकी बदजाती बदजाती इहाँ पंचन में ताकी बदनाती बदजाती ह्वाँ उराहना।
ग्वाल कवि ऐही पर सिद्ध सिद्ध रहैं पर सिद्धवहे जाकी इहाँ उहाँ की सराहना।
जाकी इहाँ चाहना है, ताकी उहाँ चाहना है, जाकी इहाँ चाह ना है ताकी उहाँ चाह ना।

८८ वर्ष की उम्र में भी शास्त्री जी में अनेक सम्भावनाएँ छिपी हैं। अभी तो हमारी यही चाहना है। भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें दीर्घायु करें। इसी अभिलाषा और कामना के साथ।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

खण्ड–१

कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर अभिनन्दनीय आलेख, संस्मरण, समीक्षा

१. सम्पादकीय	श्री महेश्वराचार्य	
२. अभिनन्दन पञ्चकम्	पं० वज्रभूषण मिश्र आक्रान्त	३
३. बहुमुखी प्रतिभा के धनी 'अखिलेश' जी	युवराज श्री चन्द्रविजय सिंह	४
४. 'अखिलेश जी' मेरी दृष्टि में	श्री सूर्यदेव पाठक, पराग	६
५. यादों के आइने में 'अखिलेश'	प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी	११
६. एक काल प्रसूत विभूति	डा० स्वर्ण किरण	१६
७. 'अखिलेश' की कविताएँ	डा० दीनानाथ सिंह	२१
८. 'अखिलेश' की जीवन-दृष्टि	डा० नन्दूजी दुबे	२५
९. 'मेरी दृष्टि में' अखिलेश	डा० विश्वरंजन	३०
१०. सरल एवं उदार हृदय कवि	श्री कृष्णानन्द कृष्ण	३३
११. एक पहचान प्रतिभा की	श्री हरिनन्दन कुमार	३७
१२. 'मेरी दृष्टि में' दृष्टिकोण की सफल अभिव्यक्ति	डा० गौरीशंकर पाठक	४१
१३. 'मेरी दृष्टि में' – एक समीक्षा	डा० दीनबन्धु पाठक	४४
१४. 'मेरी दृष्टि में' – एक अध्ययन	डा० विमलकिशोर मिश्र	४६
१५. 'अखिलेश' गीतकाव्य पर एक दृष्टि	डा० रामनन्दन ओझा	४९
१६. अखिलेश के गीत की एक कड़ी	श्री सत्यनारायण शास्त्री	५२
१७. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : सहृदयता के प्रतीक	श्री ओम प्रकाश केशरी 'पवननन्दन'	५३
१८. 'अखिलेश' जी : डुमराँव के सधे साहित्यकार	डा० चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल'	५५
१९. अभिनन्दन	श्री किशोरचन्द्र सरकार	५८
२०. अखिलेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व	स्वामी फन्दोतीर्णानन्द पुरी	६१
२१. 'अखिलेश' की भोजपुरी कविता	श्री विजयानन्द तिवारी सं०'जगरम'	६३
२२. 'अखिलेश' के गीत	श्री महेन्द्र पाण्डेय	६५
२३. अभिनन्दन-वन्दन	श्री पद्मराज कुमार जैन	६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४. अयस्कीय व्यक्तित्व	डा० अरुण मोहन भारवि	७१
२५. संघर्षमय जीवन के धनी	डा० कृष्णचन्द्र पाण्डेय	७२
२६. चिन्तनपरक संस्मरण	आनन्द सन्धिदूत	७२
२७. आश्चर्यमय व्यक्तित्व	राम देवसिंह	७४

काव्याञ्जलि अभिनन्दन

१. कालूराम अखिलेश आद्यक्षरी	पाण्डेय कपिल	७७
२. डा० कालूराम शास्त्री अखिलेश	डा० स्वर्ण किरण	७८
३. अभिनव अभिनन्दन	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	७९
४. पूज्य बाबा! पद वन्दन!	आचार्य जगन्नाथ	८०
५. अखिलेश अभिनन्दन	जवाहरलाल 'बेकस'	८१
६. कवनो उपमा ना ठाँटी	स्वामी फन्दोतीर्णानन्द पुरी	८२
७. अभिनन्दन वन्दन	सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी	८३
८. सुमन चरणों पर, माथे चन्दन	जगदीश पन्थी	८४

पत्राचार

१. डॉ० युगल किशोर ८५

२. डॉ० रसिक बिहारी ओझा ८६

३. राजेश्वरी शाडिल्य ८६

खण्ड – २

'अखिलेश' के हिन्दी, भोजपुरी निबन्ध, भाषण, कविताएँ, हाइकू साहित्य, समाज-सेवा, व्यवसाय से सम्बन्धित पत्राचार एवं विशेष अभिरुचि–जन्य तथ्यपरक जानकारियाँ

पत्राचार

१. संस्कार भारती द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम ८९

२. विदेश से लौटने पर डॉ० कालूराम अखिलेश का भव्य स्वागत ८९

३. आपन बात ९०

४. राजगढ़ प्रांगण में कवि सम्मेलन ९१

५. बाढ़ पीड़ित साहाय्य समिति का गठन (१९७८) ९२

६. व्यापारियों की बैठक ९२

७. विश्व हिन्दू परिषद् के बक्सर जनपद का गठन ९३

८. भारत माता पूजनोत्सव ९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९. वैश्य लोग राजनीति दृष्टि से मजबूत हों : साहु ९४
१०. गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती मनायी गयी ९५
११. चन्द्रशेखर प्रताप सिंह ९६
१२. "ठूठ वृक्ष अँखुआया चेतना तरंग से" ९६
१३. स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न ९७
१४. President Muncipal Committee, Murwara ९८
१५. अखिल भारतीय भोजपुरी महासभा ९९
१६. मंगला प्रसाद पाण्डेय, संपादक, दैनिक आज, वाराणसी ९९
१७. मु० मिश्र, साप्ताहिक संस्करण सम्पादक : प्रदीप, पटना १००
१८. बुधजन डॉवरा, प्र०सं० "बापू" १००
१९. कमल सिंह एम.पी. महाराजा बहादुर १००
२०. ओमप्रकाश झुनझुनवाला अध्यक्ष साहित्य समारोह उपसमिति, रानीगंज १०१
२१. पुरुषोत्तम दास झुनझुनवाला १०१
२२. C.V. Singh Dumraon Textiles Limited १०२
२३. A. Ramamurthy (Industrialist & Businessman) १०२
२४. श्याम सुन्दर सिंह (डी.एस.पी.) बिहार १०३
२५. यशवन्त सिन्हा (मुख्यमंत्री बिहार) १०३
२६. महेश्वराचार्य १०४
२७. अशोक द्विवेदी १०४-५
२८. शम्भू शर्मा 'पागल' साहिबगंज १०४
२९. रवीन्द्रनाथ ओझा १०५
३०. डॉ० कामेश्वर प्रसाद पाण्डेय १०६
३१. रघुवीर १०६
३२. (डा०) स्वर्ण किरण, सोहसराय १०७
३३. चन्द्र विजयसिंह भोजपुर कोठी, डुमराँव १०७
३४. इंदिरा गांधी इमरजेन्सी गुब्बारे की हवा निकल गई १०८
३५. Release Report Arristing and Wounderfull १०९
३६. Dumraon Insdustries Ltd. ११२
३७. Surya Narayan Je ११३
३८. भोजपुर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, आरा, सम्मान प्राप्त ११४
३९. Indian Post and Telegraphs Dept. Dumraon ११६
४०. महेश्वराचार्य ११६
४१. संस्कार भारती ११६
४२. Chamanlal Industries ११६
४३. माताप्रसाद, गवर्नर ११७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी निबंध

१. सुगन्ध ११८
२. दरिद्र नारायण ११९
३. प्रदूषण ज्ञान गंगा का १२३
४. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी १२५
५. ध्वनि प्रदूषण १२८
६. लोक भाषा एवं लोक-साहित्य १३०
७. वैश्य संगठन : महत्त्वाकांक्षा १३३
८. परमाणु अप्रसार सन्धि शान्ति के स्थान पर युद्ध को प्रोत्साहित करेगी १३५
९. हिन्दुत्व (हिन्दुस्तान, हिन्दु, हिन्दुत्व पुस्तक का अंश) १३८
१०. गीता और मैं १४७
११. अवमूल्यन १५१
१२. महाराजा अग्रसेन १५३
१३. व्यक्तित्व के लक्ष्य बिन्दु १५७
१४. भक्ति योग १५९
१५. ज्ञान योग १६२

हिन्दी आलेख

१. डुमराँव नगर पर आलेख १६५
२. नेमिचन्द्र शास्त्री : आश्चर्यमय व्यक्तित्व के धनी १७१

भाषण, प्रतिवेदन

१. डुमराँव मानस सम्मेलन में भाषण १७५
२. बक्सर जनपदीय वैश्य सम्मेलन में दिया गया भाषण १७८
३. नवरत्न साहित्य परिषद् में पढ़ा गया प्रतिवेदन १८१

विदेश यात्रा

१. यूरोप-यात्रा (लंदन यात्रा) १८५

हिन्दी कविता

१. गजब दिवाली आई रे! १९१
२. बीन बजाता रहा सपेरा १९१
३. मेरी प्यारी नगरी १९२
४. सौन्दर्य सागर १९३
५. सुन प्रिये; कहूँ, तूँ कैसी है १९३
६. नील नभ - घनश्याम १९५
७. वह कौन? १९५
८. धन्य भाग मिल गई स्वतन्त्रता १९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९. गंगा की मैली धारा है १९८
१०. राजा शब्द हो गया अकिंचन १९८

मुक्तक

१. जवान बच्चे हो नहीं सकते १९९
२. विकल प्राण पार्थ है १९९
३. मौन मन सिखा रही १९९
४. कर रही रचना नयी १९९
५. सत्य ही भगवान है २००
६. आप कैसे श्रीमान् है २००
७. अन्याय है २००
८. तुरुप का पत्ता है। २००
९. बंदूक की नोंक पर... २००
१०. अटलजी ने कहा २०१
११. खुशी का पर्व २०१
१२. चाँद का नजारा २०१
१३. मृत्यु को ललकारते हुए २०१
१४. आदमी के भीतर का आदमी मर गया २०१

भोजपुरी निबन्ध और भोजपुरी कविता

१. सत्य २०२
२. अंजुरी भर गंगाजल २०४
३. वेद एगो झलक २०६
४. सुमन २०८
५. अपराध अपराधी अपराधालय २१०
६. भोजपुरिया माटी २१३
७. भोजपुरिया बोली २१४
८. भोजपुरिया बोली बोलि बोलि २१५
९. कुँवर सिंह २१५
१०. संत तुलसी २१६
११. होली २१७

मुक्तक

१. दुलर्भ अनन्दवा. २१८
२. कुर्सी हथियावऽ २१८
हाइकू २१९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड – १

कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर आलेख, संस्मरण, समीक्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ॰ कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'म्प्रति

— व्रजभूषण मिश्रः 'आक्रान्त'

पद्यपञ्चकम्

कालूरामोऽखिलेशः कविकुलमणिः श्रीयुतः स्पष्टवादी,
स्वाध्यायेनात्र भूमौ द्रवितहृदयः धैर्यवान् तत्त्वद्रष्टा।
सेवाधर्मैश्चपुष्टः गुरुनतिनतः देशभक्तः पुनीतः,
साक्षात्तुष्टस्वभावो बुधजनकृपालब्धकीर्तिर्वरेण्यः ॥१॥

यावच्चन्द्रार्कदिव्यौ विमलकलितौ दीप्तिमन्तौ भवेतां,
यावद्विन्ध्याचलोऽयं सकुलसुखयुक्तो वर्ततां भूतलेऽस्मिन्।
यावत्त्रैलोक्यतुङ्गो विविधशिखरी पर्वतेशो विभाति,
तावत्तिग्मांशुदीप्तः किरण इव यः सद्बुधैः कीर्तितः स्यात् ॥२॥

गङ्गयावत्तरङ्गैः कलकलकलैः भारतं वै पुनाति,
यावद्गोदावरी चाखिलमलहृते दुन्दुभीं वादयन्ती।
यावद्दीर्घैस्तरङ्गैर्जलनिधिरतिक्रीडते वै विवर्तैः,
कालूरामस्य कीर्तिः सुरभिसुयुता कीर्तिता सर्वथेयम् ॥३॥

यावद्वेदाः पृथिव्यां सकलसुकृते ज्ञानदीप्तिं तनोति,
यावच्छास्त्राणि नित्यं मनुसुतकृते मार्गदृष्टिं ददाति।
यायद्व्यासप्रणीतं विविधचरितैर्दीप्तिमन्तं पुराणं,
कालूरामस्य कीर्तिर्हिमकरसमा शीतला स्याज्जगत्याम् ॥४॥

यावत्तीर्थेषु तृप्तिं जनगणमनो याति नित्यं नवीनां,
यावद्धर्मार्थसेव्या बहुजनहृदि द्योतते दिव्यवाणी।
यावद्धीराग्रगण्या धृतिबलयुता भूतलेऽस्मिन् भवेयुः
कालूरामोऽखिलेशः सहृदयहृदि ह्लादकत्वाय तावत् ॥५॥

मारुति संस्कृत शोध संथान
प्रकाशपुरी
आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुमुखी प्रतिभा के धनी अखिलेश जी

– युवराज श्री चन्द्रविजय सिंह, भोजपुर हाउस, डुमराँव

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न विविध आयामी व्यक्तित्व के धनी श्री कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' को बक्सर से लेकर डुमराँव तक शायद ही कोई सचेतक मिले जो इन्हें न जानता हो। इनकी बहुमुखी प्रतिभा को देखते हुए अनायास मुझे फिल्मी गीत की एक पंक्ति "जहाँ जाइयेगा मुझे पाइयेगा" का स्मरण हो आता है।

'अखिलेश' जी की तूती एक लेखक या कवि की हैसियत से केवल हिन्दी जगत में नहीं अपितु भोजपुरी जगत में भी बोलती है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता है किंसी भी प्रतिक्रिया को मर्मस्पर्शी रूप में रूपायित करना। भावों को मूर्तरूप देने के लिए अन्तस् भावन व्यापार के साथ निरु:संगता बनाये रखना। जीवन के सुख-दु:ख, हर्ष-विषाद, मधुर मार्मिक कल्पना, मनोरम अप्रस्तुत योजना, चिन्तन आदि को कविता के माध्यम से व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता। मेरी दृष्टि में कवि 'अखिलेश' का अनुपम काव्य संग्रह 'मेरी दृष्टि में' सन् १९९५ में प्रकाशित होने वाली ऐसी लहलहाती सौरभ बिखेरती फुलवारी है जिसमें भाँति-भाँति के ५९ फूल अपने-अपने रंग एवं सुगन्ध से अनायास ही पाठकरूपी भौरों को आकर्षित करते हैं। इस संकलन की प्रत्येक रचना सशक्त एवं प्राणवन्त है। कवि के नाते इन्हें योरप भ्रमण का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है। स्विट्जरलैण्ड, पेरिस, लण्डन आदि स्थानों में इनकी काव्य-रचना को खूब ख्याति मिली।

जब कभी भी कोई साहित्यिक गोष्ठी या कवि सम्मेलन का आयोजन होता है उसमें ये अग्रणी रहते हैं। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की बागडोर सम्भालने की कला में पारंगत हैं। बहुतेरी संस्थाओं द्वारा इन्हें सम्मानित भी किया गया है जिसमें सरस्वती विद्या मन्दिर, बक्सर का नाम लिया जा सकता है।

लेखक एवं कवि होने के साथ ही साथ श्री कालूराम जी एक अनुभवी होमियोपैथिक डॉक्टर भी हैं। इनकी चिकित्सा से डुमराँव की अनगिनत जनता लाभान्वित हो रही है। दीन-दुखी जनता की मुफ्त चिकित्सा करने में भी पीछे नहीं हटते। एक चिकित्सक होने के कारण अन्य चिकित्सकों की भाँति अपनी बड़ाई सुनना नहीं चाहते जैसा कि साधारणतया कहा गया है–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सुना है, आप बहुत अच्छा इलाज करते हैं।
अपने इलाज से कबूतर को बाज करते हैं।।

श्री कालूराम जी "छुपे रुस्तम हैं।" शायद बहुतों को नहीं पता कि ये एक लेखक, कवि, चिकित्सक होने के साथ-साथ एक कुशल चित्रकार भी हैं। सन् १९९५ में इनकी भी कुछ कृतियाँ थीं जो अपने आप में अपूर्व थीं जिन्हें डुमराँव के "राज संगमरमरीय कक्ष" में चित्रकारी की लगाई गयी प्रदर्शनी के समय देखा गया।

श्री कालूराम जी एक समाजसेवी व्यक्ति हैं और इनका सम्बन्धश्डुमराँव एवं बक्सर की अनेक समाजसेवी संस्थाओं से है। इन्हें समाजसेवी संस्थाओं के सम्मेलन में अध्यक्षता करने का भी गौरव प्राप्त है। बक्सर जिला वैश्य सम्मेलन इसका उदाहरण है। समाजसेवी होने के लिए अपना कुछ गवाँना पड़ता है जिसके लिए ये सर्वदा तत्पर रहते हैं तन, मन और धन से।

कहा गया है "भूखे भजन न होइ गोपाला"। जब भूखे पेट भगवान का भजन ही नहीं होता है तो फिर खर्चीली गतिविधियों को कैसे वे चला रहे हैं, वह स्वयं भी जानते हैं और डुमराँव की जनता भी। वह एक नेक, मधुरभाषी, लोकप्रिय व्यवसायी भी हैं। व्यवसाय ही उनका एकमात्रअविरल प्रवाहित झरने का स्रोत है।

बिहार की धरती से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति यदि बिहार के अमर शहीद "कुँवर सिंह" के गुणों का अनुकरण करे तो उसे वन्दनीय ही समझना चाहिए। जिस प्रकार से उन्होंने अस्सी वर्ष की उम्र में अंग्रेजों के विरुद्ध कमर कस ली थी उसी प्रकार श्री कालूराम जी अपनी अस्सी वर्ष की उम्र में भी अध्ययन-रत हैं अधिवक्ता की उपाधि पाने के लिए। उनकी सभी गतिविधियाँ अपने आप में अनूठी हैं।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्ति को जब से मैंने होश सम्भाला, जानता हूँ और उनके जीवन के "शरद:शतम् " की कामना करता हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिलेश जी : मेरी दृष्टि में

– सूर्यदेव पाठक 'पराग'

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' उन्नत व्यक्तित्व के धनी, सामाजिक चेतना-सम्पन्न, मानवीय करुणा के मूर्तिमान् विग्रह तथा सहृदय कवि के रूप में बहुचर्चित, प्रशंसित एवं प्रतिष्ठित हैं। यों डॉ० अखिलेश के व्यक्तित्व के पारस स्पर्श से अपने को स्वर्णसिद्ध करने का सौभाग्य अब तक नहीं मिल सका है। फिर भी इस अभिनन्दनीय उदात्त व्यक्तित्व को अभिनन्दन-ग्रंथ अर्पित करने की जानकारी पाकर मेरे जिज्ञासु मन में इन्हें जानने, समझने की भावना प्रबल से प्रबलतर होती गई और इस महाबोधि व्यक्तित्व के महोदधि में संतरण हेतु इनकी एक काव्यकृति 'मेरी दृष्टि में' जलपोत की तरह सहायक सिद्ध हुई।

कवि और काव्य का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध स्वयंसिद्ध है। कवि के अन्तस्तल में सतत प्रवाहित भाव-धारा ही शब्दों में उपनिबद्ध होकर कविता के रूप में मूर्तिमान् बन जाती है। कविता कवि की मानस पुत्री है जो कहीं न कहीं उसके व्यक्तित्व को अपने भीतर रूपायित कर देती है। वर्तमान युग में हर व्यक्ति मुखौटे लगाकर दोहरा व्यक्तित्व रखकर जी रहा है। ऊपर जैसा दिखता है वैसा वास्तविक जीवन में होता नहीं। यही इस युग की भयंकर त्रासदी है। ज्ञान और क्रिया का इतना अधिक अलगाव शायद आज जैसा कभी नहीं रहा जिसको लक्ष्य कर महाकवि प्रसाद ने 'कामायनी' में कहा है :–

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडम्बना है जीवन की।

डॉ० अखिलेश ज्ञान और क्रिया के समन्वय के अन्यतम प्रतिमान हैं। ये मात्र कल्पना के पंख पर सवार होकर सात समुन्दर पार करने और चाँद-सितारे पर हवाई उड़ान भरने वाले कवि नहीं, अपितु वास्तविकता के ठोस धरातल पर पाँव रखकर मानव के दुःख-दर्द की ऊष्मा पर अपनी सजल करुणा का शीतल चन्दन-लेप करने वाले सहृदय कवि हैं। इसीलिए तो इनकी कविता कल्पना-प्रसूत न होकर हृदय-सरोवर में विकसित वह कमलिनी है, जो पाठकों को अपनी शीतलता, सौन्दर्य और सुगन्ध से ओतप्रोत किए बिना नहीं रहती। कविवर डॉ० 'अखिलेश' की सहृदयता से अतिशय प्रभावित होकर महाकवि श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' ने एक पत्र में अपने उद्गार इस प्रकार प्रकट किए हैं :-

"डुमराँव-यात्रा में मुझे एक ही चीज मिली, आप जैसे सहृदय-हृदय-हार सज्जनरत्न का निर्मल प्रेम-भाव। इसे जुगो कर रखूँगा। जीवन-यात्रा के आखिरी चरण की अनमोल निधि के रूप में।"—महाकवि 'प्रभात' का यह कथन डॉ० 'अखिलेश' की सहृदयता व सज्जनता को उजागर करने के लिए पर्याप्त है।

'मेरी दृष्टि में' कवि के विविधवर्णी भाव-सुमनों से गुम्फित कविता-माला है, जिसकी सम्मोहक सुरभि से पाठक का मन पुलकित, उल्लसित हो उठता है। कहीं माँ भारती के पावन पाद-पद्मों में कवि का निश्छल सरल अनुराग व्यक्त होता है तो कहीं प्रकृति के मनोरम चित्र चित्त को चमत्कृत किए बिना नहीं रहते। कवि के हृदय की घनीभूत वेदना कविता के माध्यम से प्रकट होकर अध्यात्म चिन्तन की ओर कवि की प्रवृत्ति का आभास करा देती है। इसी प्रकार कहीं 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' की भावधारा प्रवाहित होती है तो कहीं कुटिल राजनीतिक स्वार्थान्धता से कवि का हृदय क्षुब्ध हो उठता है।

उपर्युक्त कथनों को स्पष्ट रूप में रेखांकित करने के लिए कवि की कविताओं की कतिपय पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं। कोई भी कवि निरन्तर साधनारत रहकर ही सिद्धि के दुर्लंघ्य शिखर पर समासीन हो पाता है किन्तु साधना से सिद्धि तक के दुर्गम पथ को पार करने के लिए उसे अपने आराध्य का सम्बल सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके लिए कवि का यह उद्गार द्रष्टव्य है:-

मिट जाये मन का भ्रम सारा
मिट जाये मन का तम सारा
ज्ञान दीप की स्वर्णिम लौ से
कलुष कालिमा हर ले मेरी
सफल साधना कर दे मेरी।

कवि ने प्रकृतिपरक अनेक कविताएँ लिखी हैं। चन्द्रमा का विविध रूपों में अवलोकन कर निम्नलिखित पंक्तियों में नये बिम्बों की स्थापना की गई है:-

स्वर्णिम कलशी का ज्योति-जल
सन्ध्या-सीपी में गिर अविरल
तम-सागर से निकला सुन्दर अनुपम विशाल मुक्ता बन कर।

कहना न होगा कि कविवर 'अखिलेश' एक ओर प्रकृति के सुकुमार कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंत के पद-चिह्नों पर चलते लगते हैं तो दूसरी ओर विरह की अमर गायिका महीयसी महादेवी की नाईं प्राणों को दीपक बनाकर जलाने में ही जीवन की सार्थकता मानते हैं। यथा :–

मेरे प्राणों के दीपक जल !
करता चल तू दूर विश्व-तम
जबतक है तेरी दम में दम
अमर वही जग में हो पाये पर हित हैं जो 'यहाँ गये गल।

कवि को प्रिय के विरह में तिल-तिल कर जलने में ही सुख की अनुभूति होती है। प्रिय को स्मृति के अक्षय कोश में सँजोकर रखने के लिए विरह से बढ़कर अन्य उपादान संभव हो नहीं सकता। विरह की टीस, विरही की आँखों मे प्रिय के झिलमिलाते चित्र उकेरती उसे कभीं भी अपने से अलग नहीं होने देती। कवि की मात्र यही कामना है :–

किसी रूप में किसी वेश में
रहूँ कहीं भी किसी देश में
याद सँजोये अपने मन में जीऊँ इसी तरह बस जल-जल।
विरह टीस दो, प्रिय तुम केवल।

सदियों बाद अंग्रेजी दासता के अँधेरे से स्वतंत्रता का सूरज उगा था जिसका व्यापकरूप में अभिनन्दन किया गया। कविवर 'अखिलेश' ने भी अपने हृदय का हर्षोद्गार इस प्रकार प्रकट किया :–

'चीर दैन्य-दासत्व-तिमिर को
रवि स्वतंत्रता का निकला रे।
× × ×
युग - युग से पीड़ित मानव को
जीवन का अधिकार मिला रे।

किन्तु समय की गति के साथ ही धीरे-धीरे कवि का मोह-भंग होने लगता है। स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख पुरोधा विश्ववंद्य बापू की निर्मम हत्या के साथ ही राष्ट्रीय मंच पर खतरनाक खेल शुरू होता है, जो स्वेच्छाचारिता, पद-लोलुपता व जातिवाद-सम्प्रदायवाद से होकर हत्या-लूट-बलात्कार के घिनौने कारनामे तक पहुँच जाता है और भारतमाता के श्वेत वस्त्र को अनगिनत कलंकों से भर देता है। कवि को विश्वास था कि स्वतंत्रता की तरणी पर समासीन राष्ट्र की जनता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शोक-सिन्धु को पार कर सकेगी, किन्तु हुआ इसके ठीक विपरीत। कवि की आहत वाणी इन शब्दों में फूट पड़ती है :-

मैंने पाया नहीं किनारा।
आजादी की नौका पाकर
भी न सका मैं शोक-सिन्धु तर
लिए जा रही मुझे बहाकर, यह अभावमय दुःख की धारा।
महँगाई लहरों के फेरे
भ्रष्टाचार भँवर के घेरे
नैतिक पतन प्रभंजन सम्मुख, माँगूँ किससे आज सहारा।

कवि ने वर्तमान की विस्फोटक परिस्थितियों को विषम बनाकर 'यह कैसा मधुमास है', 'इस वीणा के तार न छेड़ो इसमें आग मचलती है', 'आजादी का सूर्य कैद है लाल किले के आँगन में', 'मौसम ठंडा-ठंडा रे' जैसे प्रेरक भाव-प्रवण कविताओं का प्रणयन किया है

कवि ने 'हे महावीर' और 'हा बापू' जैसी कविताओं में सत्य-अहिंसा-करुणा की महत्ता उद्घाटित की है तो 'गोडसे का पश्चात्ताप' के माध्यम से बापू के हत्यारे नाथूराम गोडसे से पश्चात्ताप कराया है और हत्यारे के हृदय-परिवर्तन के माध्यम से आज के आतंकवादियों को भी राष्ट्र की मुख्य धारा में मिल जाने का संकेत किया है।

तमाम सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों के बावजूद युगधर्मी कवि अपनी हार मानकर बैठ जाना स्वीकार नहीं करता। वह नई सृष्टि करने का अधिकारी स्वयं प्रजापति जो है! इसीलिए कहा गया है :-

अपारे काव्य-संसारे कविरेव प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्त्तते॥

कविवर 'अखिलेश' एक सर्वथा नया जगत् रचने के लिए कवियों को प्रेरित करते हैं जहाँ शोषण, उत्पीड़न, रक्तपात आदि का नामो-निशान न हो और जहाँ अन्नजल सम्पदा को पर्याप्त रूप में धारण कर, यह धरती वसुन्धरा के नाम-अर्थ को चरितार्थ कर सके। इंस उदात्त भाव से आपूरित कवि की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि ऐसे जग की रचना कर।
शोणितमय न गगन न धरा हो
भ्रातृभाव से विश्व भरा हो
जहाँ मनुज के निर्मल मन में द्वेष-भाव रह पाय न आकर।
× × ×
जहाँ अन्न-रस-पूर्ण मही हो
सर, सरिता भी क्षीरमयी हो
राम-राज्य से भी सुन्दर हो, कवि ऐसे जग की रचना कर।

सचमुच जिस दिन कवि की यह कल्पना साकार हो उठेगी उस दिन भारतीय क्षितिज पर सुख-सूरज की स्वर्णिम किरणें विकीर्ण हो उठेंगी और यह देश अपने अतीत के गौरव को पुनः प्राप्त कर सकेगा।

उपर्युक्त पंक्तियों में कविवर 'अखिलेश' के कविरूप पर किंचित् चर्चा हो सकी है जो निश्चय ही उनके व्यक्तित्व का एक पक्ष है। सूर्य की रजत रश्मियों के व्यापक विस्तार को अपने झोपड़े में बैठा व्यक्ति नहीं देख सकता। उसको देखने के लिए नदी-समुद्र-वन-पर्वत तक नजरों का विस्तार-चाहिए। डॉ० 'अखिलेश' की यश-रश्मियाँ भारतीय सीमा को लाँघकर विश्व के धरातल तक फैल चुकी हैं, जहाँ तक देखने के लिए व्यापक दृष्टि चाहिए।

अनन्त ऊर्जा के स्रोत, सच्चे समाज सेवी तथा सज्जन-सृजन-स्नेही वयोवृद्ध कवि डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अपनी साहित्यिक ऊर्जा द्वारा हिन्दी साहित्य को अत्यधिक ऊर्जास्वित करते हुए लोक और साहित्य के हितार्थ 'जीवेम शरदः शतम् ' की आर्षवाणी को अक्षरशः चरितार्थ करें, प्रभु से यही प्रार्थना करते हुए मैं इनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

उच्च विद्यालय
मड़ौरा, जिला सारण (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यादों के आइने में :'अखिलेश'

– श्री रामेश्वरनाथ तिवारी

शाहाबाद जिला-हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का मैं प्रधानमंत्री था और सम्मेलन के प्रायः हर आयोजन में सदस्य की हैसियत से कालूराम जी पधारने का कष्ट करते थे। चाहे कार्यसमिति की बैठक हो या स्थायीसमिति की या सम्मेलन द्वारा आयोजित कोई साहित्य-गोष्ठी हो, अन्य उपस्थित कवियों के साथ-साथ कालूराम जी का काव्य-पाठ अवश्य होता था। श्रोता उनकी कविता सुनने के लिए विशेष व्यग्र रहते थे, क्योंकि उनके काव्य-पाठ में एक अनोखी विलक्षणता है और कवि रुक-रुक कर लगभग हकला कर, बहुत विराम देते हुए पाठ करते हैं, पर कालूराम जी, कोई उपयुक्त हिन्दी शब्द नहीं मिल पाने के कारण कहूँगा, एक सुरुकिया पाठ किया करते थे। वे उम्र की दृष्टि से वृद्ध हो चले थे पर काव्य- पाठ के समय तरुण बन जाते हैं और बिना रुके हुए एकसुरुकिया पाठ इतनी तल्लीनता के साथ करते हैं कि श्रोता अनायास प्रशंसा में तालियाँ बजाने लगते हैं। लगता है कि 'अखिलेश' जी ने अपने जीवन की किसी बेला में प्राणायाम-दम साधने की क्रिया-का भरपूर अभ्यास किया होगा। इसीलिए तो साँस के उखड़े बिना वे विराम हीन पाठ–एकसुरुकिया पाठ– के निष्णात कलाकार बन गये हैं।

डुमराँव के कॉलेज में प्रधानाचार्य बन कर गया तब पता चला कि 'अखिलेश' जी बहुत बड़े व्यवसायी हैं और डुमराँव महाराज के विश्वासभाजन और कृपापात्र हैं। वे महाराज के व्यावसायिक उत्पादन के मुख्य एजेण्ट या मैनेजर हैं। बड़े व्यवहार-कुशल, व्यवसाय-निपुण और महाराज के दाहिने हाथ हैं।

साधारणतः व्यवसाय-व्यापार और काव्यसृजन में छत्तीस का सम्बन्ध माना जाता है।

हिन्दी में, मैं अबतक यही जानता था कि 'प्रसाद' ने व्यवसाय और काव्य- सृजन दोनों में निपुणता हासिल़ की थी (यह भी हो सकता है कि उनका व्यवसाय कोई दूसरा व्यक्ति देखता होगा।) पर अब देखा कि 'अखिलेश' जी व्यवसाय में प्रत्यक्षतः ऊभचूभ होते हुए भी क़विता-सुन्दरी को भी जीवन संगिनी बना कर धीर गति से आगे बढ़ रहे हैं। वे उम्र की आँधियाँ पार करते हुए आगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ते आये हैं, पर व्यापार की जटिलताओं के बीच अपनी कविता की मुसकान नहीं भुला पाये हैं।

वे व्यावहारिक जीवन में भले ही व्यापारी हों, अपने हर कदम पर लाभ-हानि की बात सोचते हों पर कविता के क्षेत्र में आते ही वे शुद्ध भावुक बन जाते हैं और पाठकों से बहुत छोटी-सी विनम्र माँग करते हैं, जो आर्थिक न होकर भावनात्मक होती है। यही उनके सच्चे कवि-हृदय की पहचान है लीजिए, सुनिए, वे अपने पाठकों से क्या कह रहे हैं :–

मुस्कराहट आपकी मेरे लिए उपहार है।
दे सकें तो दीजिए मुझको इसीसे प्यार है।।

उर्दू के किसी शायर ने अपने माशूक के विषय में कहा था कि मेरे प्रेम-निवेदन पर उन्हें जब गुस्सा आ जाता है तब मुझे उनके गुस्से पर प्यार आता है[१]; पर कालूराम 'अखिलेश' वयोवृद्ध होने पर भी इतने एक्सपर्ट प्रेमी हैं कि उनके माशूक को गुस्सा नहीं आता, ओठों पर मुस्कराहट ही खिल जाती है।

'अखिलेश' जी व्यवसायी हैं, लक्ष्मीपति हैं, पर सरस्वती को भी उन्होंने अपनी चेरी बना डाला है। लक्ष्मी और सरस्वती दोनों को एकसाथ अपनी अर्धांगिनी बना लेना साधारण सिद्धि की बात नहीं है। कालूराम जी व्यवसायी हैं, लक्ष्मीपति हैं, महाजन हैं पर महाजनी संकीर्णता के शिकार नहीं हैं। बंधुवर डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' जब डुमराँव में शिक्षक थे तब से दोनों का साथ हुआ था और 'प्रणयीजी' के जीवन भर यह मैत्री चलती रही। प्रणयी जी जब जैन कॉलेज, आरा में मेरे सहकर्मी बन आये, हिन्दी-विभाग में नहीं, संस्कृत-प्राकृत-विभाग में, तब उन्होंने 'कलश' नामक एक भोजपुरी पत्र निकालना शुरू किया। इस पत्रिका के प्रकाशन के मुख्य वित्तदाता और संपादक श्री कालूराम 'अखिलेश' ही थे।

निस्सन्देह पत्रिका के लिए उनके इस वित्तीय दान से मेरी श्रद्धा उनके प्रति बहुत बढ़ गयी। सन् १९७६ के २० दिसम्बर को शाहाबाद हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की ओर से उन्हें सम्मानपत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर उनकी साहित्य-

---

१. उन्हें आता है मेरे प्यार पे गुस्सा।
मुझे उनके गुस्से पर प्यार आता है। -लेखक

इस शेर के साथ निम्न शेर में जोड़ रहा हूँ -
एक से है एक वेहतर सब अदायें आपकी।
जान लेती है मगर तेवर चढ़ाने की अदा।। - सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेवा के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। मारिशस के राज-प्रतिनिधि राजा 'राजा मोहन्थी जमादार' ने आरा आकर अपने हाथों से उन्हें सम्मानपत्र प्रदान किया। अखिलेश जी के लिए, सम्मेलन के लिए यह बड़े गौरव का क्षण था।

दिवंगत बंधु डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयी' जब जीवित थे, प्राय: घर आया करते थे, कभी साहित्य-चर्चा के लिए, कभी औषधि-चर्चा के लिए। वे आयुर्वेद के आचार्य थे, मैं होमियोपैथी का अदना प्रेमी। अपने कुछ रोगों के लिए वे मुझसे होमियोपैथिक दवाएँ लेते थे।

एक दिन हम लोग-प्राध्यापकों की आर्थिक कठिनाइयाँ के विषय में चर्चा कर रहे थे और यह भी कह रहे थे कि अर्थोपार्जन के लिए कुछ प्राध्यापक धमाचौकड़ी मचाते हैं, वह शोभनीय नहीं लगती। 'प्रणयी' जी ने एक स्मरणीय सुभाषित सुनाते हुए कहा, धन के लिए हाय-हाय करना बेकार है, सुनिये सुभाषित ने कहा है :–

प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्य:
दैवोऽपि तं लंघयितुं न शक्त:।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे
यदस्मदीयं न हि तत् परेषाम् ॥

मैनें इसका अनुवाद अपने लिए किया –

जो कुछ भाग्य ने तुम्हें लिखा है
वह तुमको मिल कर ही रहेगा।
स्वयं विधाता भी चाहें तो
उसे छीन पाएँगे नहीं ॥
इसीलिए मैं दु:ख न करता
सोच न करता, क्या पाया, क्या खोया
कारण यह है जो मेरा है, वह मेरा है
वह तो अन्य का हो नहीं सकता

अब ऐसा हुआ कि मैं मूल सुभाषित लिखना भूल गया, लेकिन उसकी याद मुझे बेचैन करती रही। 'प्रणयी' जी धराधाम छोड़ चुके थे। एक दिन मैंने इसका जिक्र महेश्वराचार्य से किया तो वे बोले, अरे, इस भाव का श्लोक तो कालूराम जी बराबर सुनाते रहते हैं। यह श्लोक 'प्रणयी' जी और कालूराम जी दोनों को बड़ा प्रिय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौभाग्यवश एक दिन कालूराम जी 'अखिलेश' मेरे घर पधारे। मैंने उनसे यह सुभाषित लिख लिया और प्रार्थना की कि मैं न संस्कृत का ज्ञाता हूँ और न हिन्दी का कवि हूँ, आप सौभाग्य से दोनों हैं, इसलिए इसका अनुवाद मेरे लिए कर दीजिए। मेरा अनुवाद लद्धड़ है और चुस्त नहीं। आप एक चुस्त अनुवाद कर दें। 'अखिलेश' जी ने तत्क्षण एक मोहक अनुवाद मेरे लिए प्रस्तुत कर दिया।

मिलने वाला अर्थ मिलेगा, नहीं दैव बाधक बन सकता।
जो मेरा है, नहीं अन्य का, इसीलिए आश्चर्य न चिन्ता ॥

— कालूराम 'अखिलेश'

'अखिलेश' जी के चुस्त अनुवाद से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

हमलोगों की वार्त्ता आगे बढ़ती रही। उनका संस्कृत-ज्ञान विलक्षण था। उन्होंने शास्त्री के अध्ययन के क्रम में संस्कृत का बड़ा गहरा अध्ययन किया था।

संस्कृत में अपना अल्प ज्ञान होने के कारण संस्कृतज्ञों के प्रति मेरी श्रद्धा बड़ी गहरी हो जाती है, विशेषत: तब जब वह संस्कृतज्ञ संस्कृत के साथ-साथ हिन्दी का भी सुविज्ञ हो।

श्रीमद्भगवद्गीता की प्रति मेरे पास पड़ी रहती है और यदा-कदा उसे उलटता-पलटता रहता हूँ। २२.१०.९३ को श्री 'अखिलेश' जी मेरे यहाँ पधारे थे। उन्होंने बातों ही बातों में युग के भ्रष्टाचार की चर्चा की और कहा, यह सब नरक की यात्रा का उपक्रम है। भ्रष्टाचार के मूल में काम और लोभ की अवस्थिति है। गीता में इसकी चर्चा हुई है। मैने कहा, कहाँ

उन्होंने कहा सोलहवें अध्याय का श्लोक इक्कीस देखिए।

मैंने श्लोक पढ़ा है:—

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥

काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकार के नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले हैं अर्थात् अधोगति में ले जाने वाले हैं, इससे इन तीनों को त्याग देना चाहिए।

पढ़ने से ज्ञात होता है, उससे सुना हुआ ज्ञान अधिक टिकाऊ, मर्मस्पर्शी और उद्बोधक होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता के सोलहवें अध्याय का पाठ मैं कई बार कर चुका था, पर कवि कालूराम 'अखिलेख' शास्त्री के सुनाये संकेत के बाद पढ़ने पर यह श्लोक मेरे हृदय में बैठ गया और गीता की प्रति पर मैंने इस श्लोक के सम्मुख उनका नाम तथा आने का दिनांक अंकित कर दिया।

कालूराम 'अखिलेश', सुना है बड़े अतिथिवत्सल हैं, अतिथियों की बड़ी आवभगत करते हैं, भारतीय संस्कृति के उपासक हैं, अतिथि को देवता मानते हैं, पर स्वयं कहीं अतिथ्य ग्रहण करने में बड़े संकोच का अनुभव करते हैं।

'अखिलेश' जी की कविताओं का संग्रह है 'मेरी दृष्टि में' शीर्षक काव्य का द्योतक न होकर चिंतन का व्यंजक बन गया है।

कवि 'अखिलेश' में निर्भीकता कूट-कूट कर भरी है। यह विडम्बना नहीं तो और क्या है कि भारत में रहते हुए भी हम अपने को हिन्दू कहने में संकोच का अनुभव करते हैं। डॉ० मुहम्मद इकबाल प्रचण्ड स्वर में अपने को मुसलमान घोषित कर 'चीनो अरब हमारा' का उद्घोष कर भी प्रगतिवादी कवि माने जा सकते हैं पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उपासक एक हिन्दू कवि अपने को हिन्दू नहीं कह सकता क्योंकि उसे इस बात का भय है कि कहीं वह साम्प्रदायिक न करार दिया जाए। पर कवि 'अखिलेश' ने 'हिन्दुस्तान, हिन्दू और हिन्दुत्व' नामक पुस्तक लिखकर तथा विश्वहिन्दू परिषद् के लंदन में २६-२७ अगस्त १९८९ को आयोजित: 'विराट्' हिन्दू सम्मेलन वाले अधिवेशन में भाग लेकर अपनी अजेय निर्भीकता का परिचय दिया।

सो मैं कहता हूँ –

लक्ष्मी-सरस्वती के साधक,
भोजपुरी जनपद के गौरव,
धर्म-संस्कृति के सच्चे पोषक,,
श्री 'अखिलेष, तुम्हें अर्पित है
आदर-स्नेह मुसकान भरा मेरा स्तवक ॥

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,
आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक काल प्रसूत विभूति

– डा० स्वर्ण किरण

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' एक काल-प्रसूत विभूति के रूप में हमारे सामने आये, जो केवल डुमराँव ही नहीं, डुमराँव के बाहर भी सभी जगह अपनी सहृदयता, सहिष्णुता, उदारता एवं सात्विक चेतना का परिचय देते रहे हैं। 'अयं निज: परो वेति गणना लघुचेतसाम् , उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् अर्थात् यह अपना है यह पराया है, ऐसी गणना छोटी बुद्धिवाले करते हैं। जो उदार चरितवाले हैं उनके लिए तो समस्त संसार ही अपना कुटुंब है, अपना परिवार है। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' संपूर्ण संसार को ही अपना परिवार समझते हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं करना, सबको सहायता का पात्र समझना इनकी विशेषता है। व्यवसाय में रहने के बावजूद शत प्रतिशत साहित्यिक व्यक्ति हैं, साहित्य-सेवा में अपने को अहर्निश लगाये रखना यह गौरव की बात समझते हैं। साहित्य संगीत कलाविहीन : साक्षात् पशु पुच्छविषाणहीन:'. अर्थात् साहित्य संगीत एवं कला विहीन पुरुष पूँछ एवं सींग से रहित साक्षात् पशु ही है– के यह समर्थक हैं। कहा जाता है कि डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' तत्कालीन जैन कॉलेज, आरा के संस्कृत-प्राकृत विभाग के अध्यक्ष; एवं भोजपुरी पत्र निकालने की नियत से इनके पास आये। उम्मीद से बढ़कर, इन्होंने डॉ० 'प्रणयी' जी की सहायता की। डॉ० 'प्रणयी' जी को पहले पहल विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा भी हो सकता है। कोई व्यक्ति इस सीमा तक जाकर भी आर्थिक सहायता कर सकता है। उन्हें अफसोस हुआ कि वह पहले क्यों नहीं आये, पहले आये होते तो अब तक भोजपुरी पत्र काफी प्रतिष्ठित हो गया होता।

सहृदय-हृदय रंजन डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' के जीवन का वृहत्तर उद्देश्य है। लोग-बाग का आपसी मनोमालिन्य, परस्पर लड़ना-झगड़ना, महत्त्वाकांक्षा, एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति समाज एवं राष्ट्र के पतन का कारण है। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' दु:खी मन से स्वीकारते हैं।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' यह मानकर चलते हैं कि एक स्थान पर बैठे-बैठे आदमी कूपमंडूक बन जाता है, उसे घूमना चाहिए, यात्रा पर भी निकलना चाहिए। राहुल सांस्कृत्यायन की तरह 'घुमक्कड़ी' का आनंद लेना जरूरी नहीं है पर घुमक्कड़ी से ज्ञान के क्षितिज का विस्तार होता। कहा गया है कि `Travelling is a part of youngman's education and a part of old man's

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

experience' अर्थात् यात्रा युवापुरुष के लिए शिक्षा का अंग है, वृद्ध पुरुष के लिए अनुभव का अंग। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' ने घूमने-टहलने अथवा यात्रा को शिक्षा एवं अनुभव के अंग के रूप में ही स्वीकार किया है। यूरोप की यात्रा के समय स्थानीय डुमराँव की जनता ने जो इनकी भव्य विदाई की वह इतिहास की बात बन गयी है। स्विट्जरलैंड जैसे छोटे से देश ने कैसे इतनी उन्नति कर ली है, घड़ी के व्यवसाय ने कैसे लोगों को अभिभूत किया, इन्होंने प्रत्यक्षत: जाकर अनुभव किया। फ्रांस की राजधानी पेरिस की सड़कों पर रबर बिछी रहती है, फूलों की वहाँ भरमार है, लोगों में व्यवसाय के लिए कैसी होड़ है, देखकर डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' ने पर्याप्त लाभ उठाया। लौटने पर अनुभव से लोगों को लाभान्वित किया, यह बात भी स्वाभाविक ही है। विदेशों से मधु प्राप्त कर घर का शृंगार करना सब लोगों के लिए आसान बात नहीं। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' ने विदेशों से अनुभव प्राप्त कर अपने देश को लाभ पहुँचाया है इसमें दो राय की गुंजाइश नहीं है।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' साहित्यिक समारोहों के केन्द्रबिंदु बनते रहे हैं इसमें इनके व्यक्तित्व का ही योगदान दिखलाई पड़ता है। इन्होंने साधना के द्वारा अपने को ऐसा बनाया है कि नवरत्न साहित्य परिषद् , डुमराँव ने इन्हें कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया, सरस्वती विद्या मंदिर, बक्सर ने इन्हें सम्मान दिया, अंतर्राज्यीय कवि सम्मेलन की अध्यक्षता का भार इनपर सौंपा गया। कुछ दिन पहले इन्हें भोजपुरी मंडल, बक्सर ने कुछ अन्य लोगों के साथ सम्मानित किया। मंडल के प्राण डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' जैसे भोजपुरी-हिन्दी के प्रति समर्पित वयोवृद्ध व्यक्ति को परम तोष का अनुभव हुआ। जैसे डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' को सम्मानित कर इन्होंने स्वयं ही सम्मान प्राप्त किया हो। डुमराँव के महाराज बहादुर कमलसिंह इन्हें सम्मान की दृष्टि से देखते रहे हैं, इनकी साधना के प्रति नत-विनत रहते हैं। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अपनी बात से लोगों को प्रभावित भी करते हैं। इनकी दृष्टि में बातों में अद्भुत शक्ति है, वे व्यर्थ नहीं हैं। यह कहते हैं –

'ऐ दोस्त, ऐसा न सोच, बातें केवल बातें, बातों में दम नहीं,
बातों की गोली में ताकत, बंदूक की गोली से कम नहीं
चोट ऐसी न खून बहता है न घाव बोली के नजर आते,
न जीते बनता है न मरते बनता यह हकीकत है भ्रम नहीं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बातों में बंदूक की गोली से अधिक ताकत होती है, इसमें संदेह नहीं है बातों की खेती, वाणी की आराधना, वस्तुतः साधारण बात नहीं है।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' दीन-दुःखियों के प्रति जैसी सहानुभूति (Sympathy) करते रहे हैं, अपराधी या अन्य लोगों के साथ तदनुभूति (Empathy) करने की कला में भी माहिर हैं। महात्मा गाँधी की हत्या करने वाले नाथूराम गोडसे के साथ तदनुभूति और उसके माध्यम से पश्चात्ताप इस बात की पुष्टि के लिए प्रमाण हैं।

'भूल हुई आँखों से, आँखों ने पहचान नहीं पाया था,
भगवान् आदमी के वेश में भारत की भूमि पर आया था।
सत्य के लिए आग्रह जीवन भर सच्चा सत्याग्रही था,
दीन और दुःखियों का बंधु सचमुच दीनबंधु वही था।'

और गोडसे के पश्चात्ताप के क्रम में –

'आदमी को आदमी से प्यार हो समाज अब ऐसा हो,
सबके लिए रोटी हो, वस्त्र हो, मकान हो, पैसा हो।
आदमी हो देवता वसुधा यह स्वर्ग हो इसलिए,
गरिमा सब स्वर्ग की हाथों से समेट कर साथ में लाया था।।

- मेरी दृष्टि में, पृ० ३२

आदमी के भीतर की घृणा दूर हो जाए वह सबसे प्यार करे तो आदर्श समाज एवं आदर्श राष्ट्र का निर्माण कठिन नहीं है। गोडसे के पश्चात्ताप में 'बाइबिल' के कथन 'The Repentence Chasteneth a man' अर्थात् पश्चात्ताप मनुष्य को पवित्रीकृत कर देता है, की याद अनायास हो आती है।

नूतन निर्माण का संकल्प डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' को लोकोन्मुख अथवा बहिर्मुख व्यक्ति सिद्ध करता है। कवि के रूप में डॉ० अखिलेश ने अपना एक विशेष स्थान बनाया है। कुछ पंक्तियाँ उदाहरण के रूप में यहाँ प्रस्तुत हैं:–

'हम नूतन निर्माण करेंगे।
अनाचार का नाश करेंगे, जनमन में उल्लास भरेंगे।
शोषित जन का शोषण से उद्धार करेंगे, त्राण करेंगे।

हम नूतन ०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृष्टिकोण सबका बदलेंगे, भेदभाव को जगह न देंगे।
जर्जर समाज की काया में हम गौरवमय नव प्राण भरेंगे
हम नूतन ०

अखिल विश्व अब यह जानेगा,आज नहीं तो कल मानेगा,
एक जाति है मनुज मात्र की रंग-भेद-अज्ञान हरेंगे।
हम नूतन ०

शोषण मुक्त समाज निश्चय ही (मेरी दृष्टि में, पृ० ३५।) नूतन राष्ट्र का सुन्दर घटक होगा।

अखंड आत्म विश्वास डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' की जीवन यात्रा के लिए उल्लेख्य संबल है। सुख़-दुःख के थपेड़ों को बर्दाश्त करते हुए कहीं इन के भीतर निराशा का कुहासा छाता है पर यह कुहासा बराबर के लिए टिका नहीं रहता। जबर्दस्त कालबोध इसके भीतर विद्यमान है। इनकी कुछ पंक्तियाँ इस क्रम में द्रष्टव्य हैं :-

'मैं बिल्ला नहीं हूँ, मैं रंगा नहीं हूँ
मुहब्बत का सागर हूँ दंगा नहीं हूँ।
मुहब्बत में तिल-तिल जला जिंदगी भर
जलूँ एक पल में वह पतंगा नहीं हूँ।
मैंने जिया स्वच्छ जीवन सदा ही
कहे कहनेवाले कि गंगा नहीं हूँ।
फिदा सूर्य पर हूँ मैं जन्म से ही,
मैं खिलता कमल हूँ तमस नंगा नहीं हूँ।
है एक रंग तन मन पहचान लो तुम;
मैं मन का दुरंगा तिलंगा नहीं हूँ।
(मेरी दृष्टि में, पृ० ३८)

रंगा-बिल्ला जैसे बदनाम व्यक्ति का विरोध पर मानव मात्र के प्रति सच्चा प्रेम रखना, स्वच्छ जीवन जीना, अपने को खिला कमल मान कर, सूर्य पर जन्म से ही फिदा रहना, छल-कपट से दूर एकरस रहना डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' को एक आदर्श पुरुष कहने के लिए बाध्य करता है।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अपने देश में सच्चे 'राम राज्य' की स्थापना के समर्थक हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति अपने देश के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है पर इसके बाद देश का विकास जिस रूप में होना चाहिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था, नहीं हुआ। यह बात डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' को सताती रही है इन्होंने स्वीकार भी किया है कि 'दीप जल रहे, जलें प्रकाश का पता नहीं, योजना बनी, प्रसून से लदी लता नहीं।...' प्रकाश होने पर भी प्रकाश का अभाव, योजनाँ कार्यान्वित हों पर लाभ के नाम पर कुछ नहीं। चिंता का कारण होना स्वाभाविक है। देश के लोगों को संबोधित कर 'अखिलेश' जी का कथन है -

'तुम सेवक भी तुम शासक भी, भारत के स्वर्णिम सपने तुम,
किस विधि होगा अब रामराज, बोलो सच भी, हो अपने तुम।
यह भूल हुई, या लोभ जगा, या नहीं योग्यता है तुममें,
जो बात ठीक हो कह दो भी, अपने अब भाषण के क्रम में,
गुपचुप में कुछ रह न सकेगा, सब कुछ लगे समझने हम।'

(मेरी दृष्टि में, पृ० ४८)

यहाँ कवि के भीतर रामराज्य को देखने की छटपटाहट स्वभावसिद्ध है।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' का जीवन, वस्तुत: खुली हुई पुस्तक के समान है जिसके पृष्ठ-पृष्ठ से कुछ सीखा-सिखाया जा सकता है। 'आत्मन्यात्मन: तुष्ट:' की परिपंथी अखिलेश जी पर वेदांत दर्शन के साथ सूफी दर्शन का प्रभाव भी परिलक्षित होता है : 'विरह टीस दो, प्रियतम केवल - तन की भी कुछ रहे न सुध-बुध - दुनिया कहे देखकर पागल ...–' विरह की टीस जीवन में सच्चे प्रेम के उद्भव का कारण है। ठीक ही कहा गया है कि 'विरह प्रेम की जाग्रत गति है और सुषुप्ति मिलन है। सच्चे प्रेम का उद्भव-लोग-बाग के भेदभाव को दूर करने का कारण बन सकता है। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' कवि हृदय नहीं, अच्छे कवि हैं पर देश में आग लगने पर चाँदनी के गीत गाते रहना इन्हें अभीष्ट नहीं, दीन-दुनिया की दशा-दुर्दशा से यह बेखबर नहीं और न ही पलायनवादी नीति को यह अख्तियार कर चलने के अभिलाषुक हैं। सच्चे लोकतंत्र अथवा प्रजातंत्र की स्थापना जैसे इनके जीवन का लक्ष्य है। इनके लिए व्यवसाय, साहित्य-सेवा अथवा साहित्येतर सेवा जीवन को जीवन बनाने का साधन है इसमें दो राय की गुंजाइश नहीं। जीवनकाल में अभिनंदन अथवा अभिनंदन ग्रंथ का विरोध, वास्तव में इन्हें 'नि:स्पृह संत' कहने के लिए विवश करता है।

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
वि० वि० किसान कालेज, सोहसराय (नालंदा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अखिलेश' की कविताएँ

— डॉ० दीनानाथ सिंह

मेरे समक्ष श्री अखिलेश जी की उनसठ कविताओं का एक काव्य-संग्रह 'मेरी दृष्टि में' विद्यमान है। मैं इन्हें कवि-रूप में विख्यात व्यक्ति समझता रहा हूँ और इसीलिए इनके व्यक्तित्व-पक्ष के वैशिष्ट्य की जानकारी नहीं दे सकता हूँ किन्तु ११.९.९५ को आरा के नागरीप्रचारिणी-भवन में आयोजित स्वर्गीय डॉ० जितराम पाठक के प्रथम पुण्य-स्मरण की कवि-गोष्ठी में इनसे मिलकर जान गया हूँ कि डॉ० कालूराम शास्त्री एक अच्छे कवि ही नहीं हैं अपितु एक उदार, सहज, सर्वप्रिय, विनम्र तथा संवेदनशील व्यक्ति हैं। ऐसा नहीं होता, तो इनके इर्द-गिर्द कवियों (पुराने और नए) का प्रभा-मंडल चक्कर नहीं मारता रहता।

अपनी पहली मुलाकात में इन्होंने मुझे प्रभावित किया। मंच-संचालन करते हुए मैंने उस उत्तर प्रौढ़ावस्था के स्थूलकाय कवि को जब आहूत किया, तो सोचा था, शास्त्री जी शास्त्रीय एवं पारम्परिक उपदेशमूलक, कठोर छंद-बंध की कविताएँ सुनायेंगे किन्तु इन्होंने अत्याधुनिक भाव-पक्ष एवं शिल्प पक्ष की मुक्त छंदीय कविताएँ भी सुनायीं तथा काव्य शास्त्र-सम्मत कविताएँ भी पढ़ीं।

मैं तो अभिभूत होकर सोचता रह गया कि इस वृद्ध भीमकाय देह में काव्य-सरिता अजस्र वेग से कैसे बह रही है।

और जब समीक्ष्य संग्रह मेरे सामने है तो इसकी संग्रहीत कविताओं के झरोखों से मैं डॉ० कालूराम जी के कवि को देख रहा हूँ तथा कवि के साथ उस व्यक्ति को समझ रहा हूँ, जिनकी संवेदना कवितामय है।

यह कवि जितने दशकों से काव्य-सृजन कर रहा है, आधुनिक कविता के कई पड़ाव बनते-मिटते रहे हैं। छायाकार से लेकर आज जनवाद तक जितने 'वाद' आए, उस कवि की प्रतिबद्धता किसी से नहीं है, यह कवि युग का गायक है; मानवता का समर्थक है। कवि की चिन्ता लोक-मंगल की चिन्ता है। लोगों के सुखमय, शान्त एवं समृद्ध जीवन की कामना इस की बहुसंख्यक कविताओं में स्पन्दित है। आज़ विश्व-मानव जिन संकटों से गुजर रहा है कवि ने सबकी ओर संकेत देकर सब का अभिनन्दन किया है। कवि बहुजनहिताय नहीं, सर्वजनहिताय का पक्षधर है। वह मार्क्स और गाँधी दोनों के रचनात्मक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य का आग्रही है। किन्तु पूर्ण अहिंसक परिवर्तन को ही विश्व-कल्याण का अभीष्ट मानता है

परम नेह घट-घट के भीतर
भ्रातृ-भावमय सहज मधुर स्वर
खिले सुमन से आप सभी
तन, मन मलयज-धन-चन्दन!
आप सभी प्रिय मेरे हैं,
दूँ किसको क्या संबोधन!

विविधता इनकी कविताओं की प्रसरण शक्ति का बोध कराती है। इसीलिए कवि ने अपनी दृष्टियों को किसी एक दर्शन में नहीं बाँधा है। कवि दर्शन का नहीं अपितु दृष्टियों का कवि है। यही कवि की शक्ति है और सीमा भी। हाँ, दर्शन का एक व्यावहारिक पक्ष यह कहा जा सकता है कि कवि ने जमीनी समस्याओं का समाधान 'आसमान' से नहीं माँगा है बल्कि संघर्ष करते हुए व्यक्तियों के पौरुष तथा निरन्तर गतिशील क्रियाकलापों में ढूँढा है। ऐसे कवि ने कई वेदना-गीत लिखे हैं और उस परम चिन्मय सत्य के प्रति आस्था व्यक्त की है, ऐसा करते हुए भी कवि ने अपने लिए उस शक्ति से शक्ति की याचना नहीं की है निराला ने सरस्वती-वंदना में भारत के लिए (प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव) की आकांक्षा व्यक्त की है तो दूसरी ओर 'कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर जगमग जग कर दे' के लिए भी प्रार्थना की है। यह वेदना-गीत का भव्य विधान है श्री कालूराम जी निराला की तरह ही 'सफल साधना कर दे मेरी' वंदना-गीत में कहते हैं –

"हरित प्रेम तरवर हो जाये
मानवता सुख में सो जाये
सेवा जल जीवन गागर में
कृपा सिन्धु भर दे मेरी।

... सफल साधना ..."

'माँ कमले अब मेरी सुन ले' भी ऐसा ही वंदना-गीत है। जो प्रकृति का कवि होता है, वही जग-जीवन का कवि होता है। अखिलेश जी की अनेक कविताएँ प्रकृति-सम्बन्धी हैं किन्तु इन कविताओं में छायावादी शिल्प है; विशेषकर सुमित्रानन्दन पंत की तरह प्रकृति-प्रेम एवं प्रकृति-सौन्दर्य दोनों बिम्ब-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिबिम्ब भाव से अनुस्यूत हैं। प्रकृति की बाह्य प्रवृत्ति एवं आन्तरिक प्रकृति दोनों को डॉ० कालूराम जी ने एक-दूसरे का पूरक बनाकर प्रस्तुत किया है। कहीं-कहीं इनकी अतीत कल्पना एवं अप्रतिम बिम्ब है; छायावादी पंत से अधिक-प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं :

(१) "मैंने देखा चन्दा जी भर'
बह चला सभी अभिलाषा-धन
आँखों से जब आँसू बन-बन
तब एक बूँद आँसू की ही निशि के कपोल पर गई ठहर।"

(२) "सुरभित वसुधा तल करने को
कलियों को पागल करने को
कलियों के कोमल अधरों पर बन कर मधुरिम हास छा गया
साथी फिर मधुमास आ गया।"

निराला की 'बादल-राग' कविता की तरह का एक ध्वन्यर्थ-व्यंजना प्रधान चाक्षुष बिम्ब से इस कवि की शब्द-साधना को समझा जा सकता है -

"तुम बरसो; जग में सुख बरसे
वसुन्धरा का कण-कण हर्षे
बरसो; गरज गरज के बरसो, फूले लता विश्व वन उपवन।
बरसो हे नभ के श्यामल घन"।

कवि प्रकृति का ही नहीं, सौन्दर्य एवं प्रेम का भी कवि है। कवि की प्रेमानुभूति कहीं लौकिक है तो कहीं लोकोत्तर। 'माँगता हूँ प्यार दो तुम' तथा 'तुम्हीं कहो, मैं कैसे तुमको पाऊँ' जैसी कविताएँ स्मरणीय हैं।

छायावादोत्तर काल की पूर्व पृष्ठभूमि में यानी छायावाद के चरमोत्कर्ष की अवधि में छायावादी कविताएँ भी लोकायतन बन गयी थी। इस कवि ने जीवन के यथार्थ को अनेक स्थानों पर **अभिव्यक्त** किया है "जीवन नौका बही जा रही", 'जीवन चक्र विषम चला रे', 'आज विश्व करता क्रन्दन रे' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं। कवि अपने प्राणों का दीप जलाकर विश्व-तम को दूर करना चाहता है और यही जीवन को कालजयी बनाता है "अमर वही जग में हो पाये परहित हैं, जो यहाँ गये गल।"

डॉ० शास्त्री राष्ट्रभक्त हैं। राष्ट्रीयता के लिए समर्पित हैं। इसीलिए देश की दुर्दशा, लोकतंत्र की हत्या, भ्रष्टाचार आदि से अपनी असहमति व्यक्त करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन विद्रूपताओं में तथा अन्तर्विरोधों पर तीखा प्रहार करते हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में जो मोह-भंग हुआ है, सबका बेपर्द चित्रण इनकी कविताओं में हुआ है।

'मैंने पाया नहीं किनारा', 'जनमत को तुम मत ठुकराओ', 'प्रगटे लाखों राम नहीं, 'भ्रष्टाचार मिटायेंगे', 'यह कैसा मधुमास रे' तथा 'स्वतंत्रता का दूध' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं।

आज सम-सामयिक कविताओं की काव्यधारा सामाजिक परिवर्तन की आक्रमक जनवादी धारा है। डॉ० शास्त्री इस तरह से अपने को अलग नहीं कर पाते हैं। 'खोल नयन मन युग बदला रे' तथा 'हम नूतन निर्माण करेंगे' एवं 'इस वीणा के तार न छेड़ो, इसमें आग मचलती है' कविताएँ द्रष्टव्य हैं।

फिर भी कवि ऐतिहासिक गौरव एवं इतिहास-पुरुष के जीवनादर्श को कई समाधानों के लिए उपयुक्त मानते हैं। 'हे महावीर' तथा 'बापू' कविताएँ इस के लिए उदाहरणीय हैं। समाज-नीति हो या राजनीति, कवि दो टूक शब्दों में गलत को गलत कहने की क्षमता रखता है। कवि की वीणा में आग मचलती है, यह युग-धर्म की चेतना है और डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' चेतावनी देते हुए कहते हैं –

"इस वीणा के तार न छेड़ो, इसमें आग मचलती है।
दलित दीन दुखियों की आहें, इसमें सदा सिसकती हैं।।"

इस आलेख को अनावश्यक विस्तार से बचाते हुए मैं इस महाकवि को छायावादी, रहस्यवादी, प्रगतिवादी, जनवादी की नहीं सर्वोपरि स्वच्छन्दतावादी से भी आगे नवस्वच्छन्दतावादी कवि मानता है। स्वच्छन्दतावाद की आत्मानुभूति जब सामाजिक सरोकार की अनुभूति बन जाती है, तभी नवस्वच्छन्दतावाद का जन्म होता है। कवि को भाषा पर पूर्ण अधिकार है। इस अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशन के अवसर पर मैं अपने इस संक्षिप्त आलेख द्वारा अपनी विनम्र श्रद्धा अर्पित करते हुए कवि को शतायु से भी अधिक साहित्य-सेवा के लिए जीवित रहने की शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

विज्ञेषु किम् अधिकम्।

आचार्य एवं अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
वीर कुँवर सिंह वि०वि०, आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अखिलेश' की जीवन-दृष्टि

— डॉ० नन्दूजी दुबे

डुमराँव जनपद अपनी साहित्य-साधना के लिए प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रहा है। अद्यावधि यहाँ की सारस्वत-सरिता सतत प्रवहमान रही है। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जी एक ऐसी लोल लहर हैं, जिनसे उस सरिता के सौंदर्य में अभिवृद्धि हुई है। आप एक वयोवृद्ध साहित्यकार हैं, जिन्हें भारत-स्तर के साहित्यकारों से अच्छा सम्पर्क रहा है तथा उनका स्नेह भी मिला है। श्री 'अखिलेश' जी कवि के रूप में कई बार सम्मानित हो चुके हैं तथा हिन्दी-कवि-सम्मेलनों के अध्यक्ष-पद को भी आपने सुशोभित किया है। पेशे से व्यवसायी होते हुए भी समाज-सेवा एवं साहित्य-सर्जन के दायित्त्व का आपने सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। 'अखिलेश' जी एक ऐसे साहित्य-सेवी एवं साहित्य-सर्जक रहे हैं, जिन्हें प्रकाशित एवं विज्ञापित होने की महत्त्वाकांक्षा कभी नहीं रही। आपकी प्रकृति में सर्वजन सेवा एवं समर्पण का ही प्राधान्य रहा है।

श्री 'अखिलेश' जी की अब तक दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:- ''हिन्दुस्तान, हिन्दू, हिन्दुत्व'' (१९८९) और ''मेरी दृष्टि में'' (१९९५)। आप एक चिंतनशील, प्रबुद्ध एवं भाव-प्रवण व्यक्ति हैं। अपनी अभिव्यक्ति के प्रति ईमानदारी, सजगता तथा स्पष्टता का 'अखिलेश' जी ने सर्वत्र निर्वाह किया है। उपर्युक्त दोनों रचनाओं में आपने अपनी जीवन-दृष्टि को अभिव्यक्त किया है। प्रथम रचना गद्य शैली में है और दूसरी पद्य में। शैली से आपको अपनी विचाराभिव्यक्ति में कोई व्यवधान नहीं पड़ा है। आपके आदर्श अटल एवं अडिग हैं। आप के रोम-रोम में भारत, भारतीयता, भारतीय भाषा और साहित्य के प्रति प्रेम भरा है।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जी मूलत: कवि हैं। यही कारण है कि आपकी गद्य-रचना में भी काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं। 'मेरी दृष्टि में' एक कविता संकलन है, जिसका जितना रचना-काल-विस्तार है, उतना ही भाव-विस्तार। यदि इन कविताओं के साथ रचना-काल का भी संकेत किया गया होता तो बहुत से रहस्यों का अवगुंठन हट जाता। फिर भी बोधगम्यता में कोई व्यवधान नहीं पड़ता। कवि इतना संवेदनशील है कि वह अपने परिवेश के प्रति अपनी संवेदना को ईमानदारी से अभिव्यक्त कर देता है। उसकी कविता का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फलक व्यक्ति, परिवार, समाज से लेकर राष्ट्र और विश्व-मानव तक को अपने में स्वायत्त कर लेता है।

'मेरी जीवन दृष्टि' शीर्षक को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि आप एक सोद्देश्य रचनाकार हैं। आपकी रचनाओं में 'दृष्टि' की प्रधानता है, जो विचार एवं दर्शन का पर्याय है। यह दर्शन ही किसी रचना का प्राण होता है। किसी रचना को पढ़ने के बाद पाठक को 'कुछ' मिले, वह आह्लादित हो, वह अपने आप को पाये वही रचना सार्थक और सोद्देश्य होती है। 'अखिलेश' जी की रचनायें इस दृष्टि से पूर्ण सफल हैं, वाग्जाल नहीं।

'अखिलेश' जी ने अपनी सम्पूर्ण जीवन-दृष्टि को ग्रन्थ के 'समर्पण' में प्रस्तुत कर दिया है, जो ध्यातव्य है– 'स्वतंत्र भारत में जन्में सभी भारतीय नागरिक जो संवैधानिक मूल प्रस्तावनाजन्य परम प्रकाश के रहते हुए भी राजनीति के अन्धकार में भटकते हुए मजबूरी, बेबसी और गरीबी का जीवन जी रहे हैं। उन्हें सादर ...। ऐसा प्रतीत होता है, इस समर्पण के एक-एक शब्द कवि के दर्द हैं, साथ ही उसके ऊँचे आदर्श के प्रतीक। ये सभी शब्द व्याख्या की अपेक्षा रखते हैं, जो यहाँ संभव नहीं। यों कवि ने अपनी विभिन्न कविताओं में इन्हीं भावों को वाणी देने का सफल प्रयास किया है।

भारतीय संविधान के प्रति कवि को पूर्ण आस्था है। हमारा संविधान विश्व का एक अभूतपूर्व संविधान है और उसकी प्रस्तावना ही उसका प्राण है। प्रस्तावना है– 'हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्त्व-सम्पन्न समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक – विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधानसभा में आज तारीख २६ नवम्बर १९४९ ई० (मिती मार्ग शीर्ष शुक्ला सप्तमी दो हजार विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।'' सममुच में भारत के संविधान-निर्माताओं ने बहुत ऊँचा एवं अलौकिक आदर्श इस प्रस्तावना में रखा है, जो भारत को अन्य देशों की अपेक्षा न्यारा प्रमाणित करता हैं। कवि ने अपने समर्पण में इसे 'परम प्रकाश' कहा है। यही नहीं, इस प्रकाश को स्वतंत्र भारत में उतारने का वह आकांक्षी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को देखा है और उसमें भाग लिया है। एक लम्बे संघर्ष, त्याग और बलिदान के बाद भारतीय जनता को उत्पीड़न, शोषण और अपमान से मुक्ति मिली। कवि ने स्वतंत्रता देवी का 'अभिनंदन' किया और 'कवि ऐसे जग की रचना कर', 'खोल नयन मन युग बदला रे' तथा 'हम नूतन निर्माण करेंगे' कविताओं में उसने स्वतंत्र भारत के स्वरूप को प्रस्तुत किया। 'कवि ऐसे जग की रचना कर ' कविता में वह कहता है:–

'शोणितमय न गगन न धरा हो
भ्रातृ-भाव से विश्व भरा हो
जहाँ मनुज के निर्मल मन में
द्वेष भाव रह पाय न आकर।

'खोल नयन मन युग बदला रे' क़विता में कवि लिखता है :–

दुखित दीन कुटियों के कण-कण पायेंगे सुखमय नव जीवन।

'हम नूतन निर्माण करेंगे' में कवि संकल्प लेता है। 'अनाचार का नाश करेंगे, जन मन में उल्लास भरेंगे'। 'हे मानव तू देव तुल्य बन' कविता में कवि ने ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि को त्याग कर सत्य, अहिंसा, प्रेम एवं भ्रातृत्त्व को अपनाने का संदेश दिया है।

संकलन की आरंभिक कविता में भी कवि ने अपने आराध्य से यही याचना की है कि –

'हरित प्रेम तरवर हो जाये
मानवता सुख में सो जाये
सेवा-जल जीवन गागर में
कृपा-सिन्धु तू भर दे मेरी।

अपने देश में कवि कहीं भी अभाव, उत्पीड़न, ईर्ष्या, द्वेष, बेबसी आदि नहीं देखना चाहता। वह प्रसन्न है। वह महावीर, बापू, राम, कृष्ण, अर्जुन, सीता और राधा के आदर्शों को उतारना चाहता है। कवि को पूर्ण विश्वास है कि भारत की श्री-वृद्धि इन महापुरुषों के आदर्शों पर चलने से ही संभव हो सकती है। हमने इनके आदर्शों को भुला दिया था, जिसका परिणाम था पराधीनता। कवि ने 'गोडसे का पश्चात्ताप' कविता में देशवासियों की ओर से प्रायश्चित्त किया है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूल हुई आँखों से, आँखों ने पहचान नहीं पाया था,
भगवान, आदमी के वेश में भारत की भूमि पर आया था।

लेकिन यह क्या? स्वतंत्र भारत के उसके सपने टूटते हुए नजर आते हैं। जिस राम-राज्य की कल्पना कवि ने की थी, वह साकार नहीं हो पाती। सर्वत्र ईर्ष्या-द्वेष, घृणा, स्वार्थ, शोषण, भ्रष्टाचार, हत्या, अपहरण, गरीबी, अशान्ति बढ़ती ही जाती है, जिससे कवि का हृदय व्यथित हो उठता है। राष्ट्र और अपने समाज के प्रति इसी व्यथा को व्यंग्य के रूप में उसने अपनी उत्तरवर्ती रचनाओं में व्यक्त किया है। वह कह उठता है –

'स्वतंत्रता का दूध सब मिल गया पानी में,
लिखा यह जायेगा इतिहास में, कहानी में।

और –

अपना देश, प्रशासन अपना, आज बना उपहास रे,
आजादी की गंगा का तट; पर अधरों पर प्यास रे।'

कवि का पूरा आक्रोश राजनेताओं के ऊपर है। उनका कोई चरित्र नहीं। स्वार्थ और विलासिता में वे आकण्ठ डूबे हैं। उन्हें जनता एवं राष्ट्र की चिंता नहीं। इसलिए राजनेताओं की कवि ने अच्छी खबर ली है –

कहते स्वयं को देश सेवक ऐलान कैसा है,
आजादी का रस पी रहे ईमान कैसा है।

'पुनर्जन्म', 'मैंने पाया नहीं किनारा', 'जीवन विहग विकल है साथी', 'प्रगटे लाखों राम नहीं', 'राजघाट पर रोते बापू', भ्रष्टाचार मिटायेंगे', 'तूफान कैसा', 'शेष प्रश्न', 'आजादी का सूर्य कैद है लाल किले के आँगन में', 'स्मृति दोष' आदि कविताओं द्वारा कवि ने देश की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के प्रति असंतोष व्यक्त किया है। निर्विवाद रूप से आजादी के बाद की राजनीति दिशाहीन हो गयी है, जिस पर कवि ने कटु व्यंग्य किया है। साथ ही, इस राजनीतिक व्यवस्था को कवि ने चेतावनी भी दी है –

इस वीणा के तार न छेड़ो इसमें आग मचलती है
दलित दीन दुखियों की आहें, इसमें सदा सिसकती है।

भारत अपने पौरुष के लिए ख्यात रहा है। यहाँ जनता ने कभी भी अनय को सहन नहीं किया है। अत्याचारी को उखाड़ फेंकने के लिए भारतीय जनता ने अपनी आत्माहुति तक दी है। कवि उस भारत की जनता का प्रतिनिधित्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करते हुए क्रान्ति के स्वर का भी उद्घोष करता है –

'जनमत को तुम ठुकराओ
रह न सका गोरों का शासन
व्यर्थ गये, उनके सब साधन।'

'अखिलेश' जी अपनी रचनाओं में आद्योपान्त भविष्य के प्रति आशान्वित हैं। उनमें पौरुष है, संघर्ष की भावना है, त्याग है और है समर्पण। 'जीवन चक्र विषम चलता रे', 'आज विश्व करता क्रन्दन रे', 'मेरे प्राणों के दीपक जल', 'मुझे सभी कहते दीवाना', 'प्रेम पन्थ पर मैं चलता हूँ' आदि कविताओं में इन भावों को देखा जा सकता है। जग-जीवन की वेदना के अनन्त शूलों को झेलने के बाद भी कवि हताश नहीं। यह शक्ति उसे कहाँ से मिलती है ? उस अव्यक्त सत्ता से, जिसमें उसकी पूर्ण आस्था है। 'सफल साधना कर दे मेरी' और 'स्वागत ज्योतिर्मय स्वागत' कविताओं में कवि की आध्यामिकता की गहराई को हम देखते हैं। ऐसा कवि संघर्षों से पराङ्मुख नहीं हो सकता। उसके जलने में भी एक सुख है और उसकी विरह-वेदना में भी मिलन-आनंद।

अपनी अंतिम कविता 'चाँद मिल गया हमें' में कवि ने राजनीति के अंधकार में भटकने वाले मजबूर, बेबस और गरीब स्वतंत्र भारत के नागरिकों को उद्बोधन दिया है –

'संविधान पृष्ठ पर चाँदनी तलाशते
रो रहे हैं आज हम चाँदनी के वास्ते।'

कवि कहना चाहता है कि न्याय, स्वतंत्रता, समानता, आत्मगौरव, शक्ति और सुराज की चाँदनी को हम प्राप्त करना चाहते हैं तो अनाचार के विरुद्ध संघर्ष करना होगा, आँसू बहाने से उद्देश्य की पूर्ति संभव नहीं।

इस प्रकार हम पाते हैं कि 'अखिलेश' जी की रचनाओं का भाव-फलक बहुत व्यापक एवं प्रौढ़ है। इसके साथ ही इन्होंने अपनी कविताओं को विचारों से बोझिल नहीं, बल्कि काव्य-सौन्दर्य से विभूषित किया है, जिससे कथन में प्रभविष्णुता आ गयी है। यह कवि का वैयक्तिक वैशिष्ट्य है।

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
वीर कुँवर सिंह वि०वि०, आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मेरी दृष्टि में' अखिलेश

— डॉ० विश्वरंजन जी

श्री 'अखिलेश' जी की पुस्तक "मेरी दृष्टि में" पढ़ने के बाद वे मेरी दृष्टि में कैसे लगे, मैं यह जरूर कहना चाहूँगा, क्योंकि पाठकीय सन्नद्धता के शिष्टाचार में यह सर्वथा अपेक्षित है। मैं "मेरी दृष्टि में" संग्रहीत रचनाओं की व्यावहारिक आलोचना अथवा इसकी कोई समीक्षा लिखने कीं हिम्मत तो नहीं कर सकता; किंतु रचनाओं का आपरिशंसन क्यों मैं कर रहा हूँ, यह बता सकने का कार्य कर सकता हूँ। इसलिए, मेरी कोशिश है कि श्री 'अखिलेश' जी मेरी दृष्टि में कैसे हैं, मैं अत्यंत श्रद्धा-भाव से उस बोध को व्यक्त करूँ।

सर्वप्रथम, मैं डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के मत से सम्मति स्थापित करता हूँ कि अखिलेश जी उदात्त भावनाओं को सजीव चित्रण करने वाले कवि हैं। कला अभिव्यंजना ही तो है। और, मैं यह मानता हूँ कि प्रत्येक कलाकार अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं, कल्पनाओं की अभिव्यंजना में कितना विशिष्ट है, कितना मौलिक है, कितना स्पष्ट है यह उसके निजी अध्ययन-अभ्यास, साधना-प्रयास, अनुभव-विश्वास पर निर्भर करता है।

अखिलेश जी ने कर्मपथ पर आस्थापूर्वक चलते हुए एक जीवन जिया है, वृद्धावस्था में भी यौवन की ऊर्जा से पूर्ण हैं। सहज ही अनुमान्य है कि उन्होंने रचना कर्म में एक लम्बे समय से अपने को लगाया है। जिस कालखण्ड में (अनुमानतः पचास वर्षों से अधिक हो गये) अखिलेश जी ने रचना-यात्रा शुरू की थी, उस समय की रचनाधर्मिता की दशा-दिशा का प्रभूत प्रभाव पड़ा उन पर; इसीलिए जहाँ उनकी रचनाओं में प्रकृति, राष्ट्रीयता, मानवता, वेदना, करुणा, उद्बोधन जैसे विषय आये हैं, वहाँ आशा-आकांक्षा के उद्गार भी व्यक्त हुए हैं। यह रचना-वितान अखिलेश जी की उदात्त भावनाओं का परिचायक है।

भारत की सांस्कृतिक चेतना अखिलेश जी के रचना-संस्कार में समायी हुई है। भारत का सांस्कृतिक आभिजात्य भवन को भुवन मानने का है : शृणुवन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः। भारत का उदार चरित्र मानता है वसुधैव कुटुम्बकम्। अखिलेश की पंक्तियाँ हैं —

विश्व-वाटिका में यह पुष्पित
जीवन-पुष्प पदों में अर्पित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर स्वीकार इसे करुणामय
पूर्ण अर्चना कर दे मेरी
सफल साधना कर दे मेरी।

× × ×

वसुन्धरा के जन-मन का तू सखे आज बन प्रिय जीवन-धन
हे मानव तू देव-तुल्य बन।

× × ×

विश्व सेवा में निरंतर
ही रहे मन-प्राण तत्पर
विश्व के ही साथ रोने और हँसने का मुझें अधिकार दो तुम

× × ×

कवि ऐसे जग की रचना कर
शोणित मय न गगन न धरा हो
भातृ भाव से विश्व भरा हो

किन्तु, सांस्कृतिक क्षरण से जो अपसंस्कृति विकसित हुई है उससे उत्पन्न विद्रूपताएँ भी अखिलेश जी की दृष्टि में विविधता के साथ समायी हैं। सांस्कृतिक विघटन के युग में जीते हुए अखिलेश जी के ये बोध कभी व्यंग्य के तेवर में प्रखर हुए तो, कभी मार्मिक अभिव्यक्तियों में मुखर हुए, कभी ये क्षोभ और संत्रास मुक्ति की कामना बन वन्दना में स्वरित हुए।

आज विश्व करता क्रन्दन रे
आज विकल जग का जीवन है
आज विकल यह धरा गगन है

× × ×

घूमे रहे रावण ही रावण दुख ही दुख आराम नहीं
गाँव नगर लंका नगरी से सज्जनता का नाम नहीं

× × ×

अर्थ के अभाव से सभी का ज्ञान ग्रस्त
मन त्रस्त, रोग कितना भयानक यह

अखिलेश जी मनुहारों के कवि हैं, इसीलिए वे गीत-चेतना के कवि हैं। यह भिन्न बात है कि वर्णनात्मकता के वैविध्य को दर्शाने वाली कविताएँ भी उन्होंने लिखी हैं। कई रचनाएँ उपदेशात्मक मुद्रा वाली हैं। सूक्ति, उपदेश,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संदेश के संवाहक के रूप में कविता का प्रयोग स्वातंत्र्य समर के काल में किया भी गया, बखूबी किया गया। अखिलेश जी की रचनाओं में लघुता-बोध, दैन्य भाव, समर्पण-संकल्प आदि प्रभावकारी ढंग से व्यक्त हुए हैं। राष्ट्र-प्रेम का स्वर भी उनकी रचनाओं से सुनायी पड़ता है।

छायावाद काल का भाषा संस्कार अखिलेश जी की काव्य भाषा पर पड़ा हुआ स्पष्टत: दिखायी पड़ता है। महादेवी के गीतों की राह पर अखिलेश जी के कुछ गीत भी चलते हुए मिले –

विरह टीस दो, प्रिय तुम केवल
× × ×
मेरे प्राणों के दीपक जल
× × ×
साथी फिर मधुमास आ गया
× × ×
युग युग से मानव प्यासा रे
× × ×
बरसो हे नभ के श्यामल घन

राजनीतिक प्रतिबद्धता को कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से खूब महारत से सम्प्रेषित किया है। किन्तु, रचना को उसकी शर्तों पर बदस्तूर कायम रखते हुए; न कि चुनावी सभा में गाये जाने वाले प्रचार गीत जैसा उसे बनाया। कविता का कलापक्ष महत्त्व रखता है। "मेरी दृष्टि में" कुछ रचनाएँ संग्रह में यदि नहीं रहतीं, तो कवि के राजनीतिक प्रतिपक्षी उन्हें अधिक श्रद्धेय मानते। चयन-संकलन में वैविध्य के प्रति सतर्कता जरूरी होती है। कितने मनोरम गीत हैं। पृष्ठों में जगह खाली न रह जाये तो मुक्तक भरे गये, सौन्दर्य-बोध का अभाव दर्शाता है। अखिलेश जी ने कई किस्मों की रचनाएँ की हैं, यह तो विदित हो जाता है। कह सकते हैं, आत्माभिव्यक्ति के लिए रचनाएँ अखिलेश जी ने की हैं और आवश्यकता पड़ने पर सप्रयोजन रचनाएँ भी उन्होंने कीं।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' के अभिनन्दन वन्दन के स्वरों में मेरा भी एक स्वर सादर समर्पित है।

भगवान बाजार, रामनारायण लाल पथ
छपरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

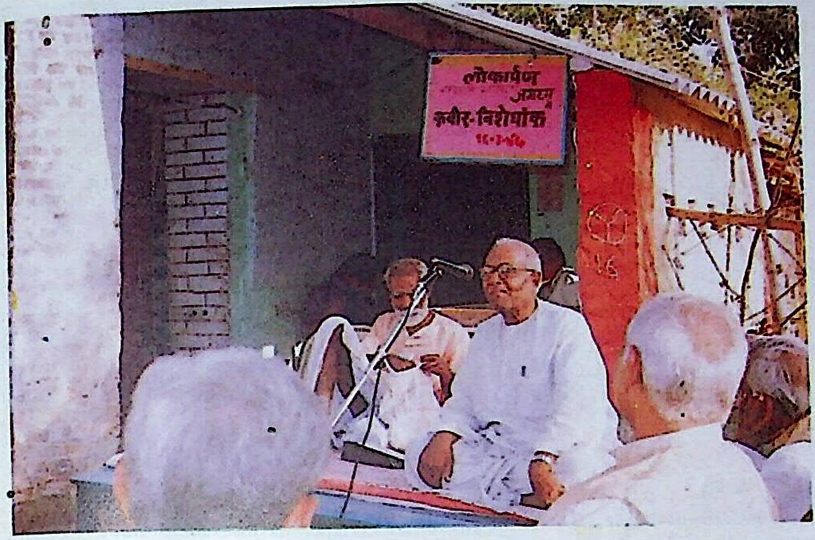

लोकार्पण 'जगरम' कबीर विशेषाङ्क
अध्यक्षीय भाषण करते हुए डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

बक्सर जिला वैश्य महा सम्मेलन बाँयें से तीसरे
माननीय शंकर प्रसाद जी टेकरीवाल मन्त्री भू खनन विभाग बिहार सरकार
चौथे डा० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डुमरांव राजगढ़ श्री बिहारी जी के मन्दिर में दशहरा पूजा के अवसर का चित्र—बीच में कुर्सी पर श्रीमान् महाराजा बहादुर कमल सिंह जी, दाहिने 'अखिलेश' जी दिनाङ्क : २१ अक्टूबर ९६

अयोध्या गोलीकाण्ड में मारे गये कारसेवकों के प्रति श्रद्धाञ्जलि एवं पूर्ण उपवास दिवस का आयोजन डा० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अध्यक्ष विश्व हि० प० जिला बक्सर मध्यस्थ क्रम बाँये से तीसरे स्थान पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

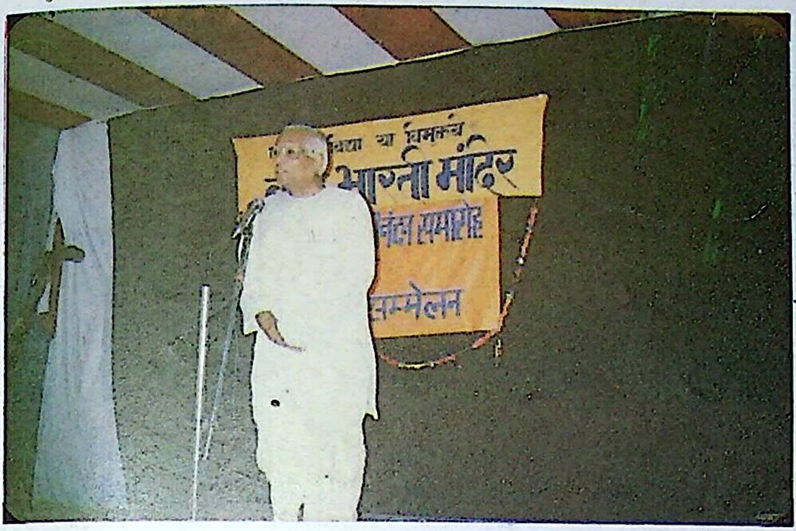

बाल भारती मन्दिर के डुमराव अभिनन्दन समारोह
में उपाध्यक्ष डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

डुमरांवगढ़ : बिहारी जी के प्राङ्गण में संस्कार भारती द्वारा आयोजित कृष्ण रूप सज्जा क्रम दाहिने से डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश', श्रीमान् महाराजा बहादुर कमल सिंह एवं श्री हरद्वार सिंह — शिक्षक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुर साहित्य मण्डल, बक्सर ३९ वाँ अधिवेशन के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री उमाशङ्कर जी मिश्र, प्रथम अवर न्यायाधीश, बक्सर द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए श्री 'अखिलेश' जी । दिनाङ्क ४ जून १९९५

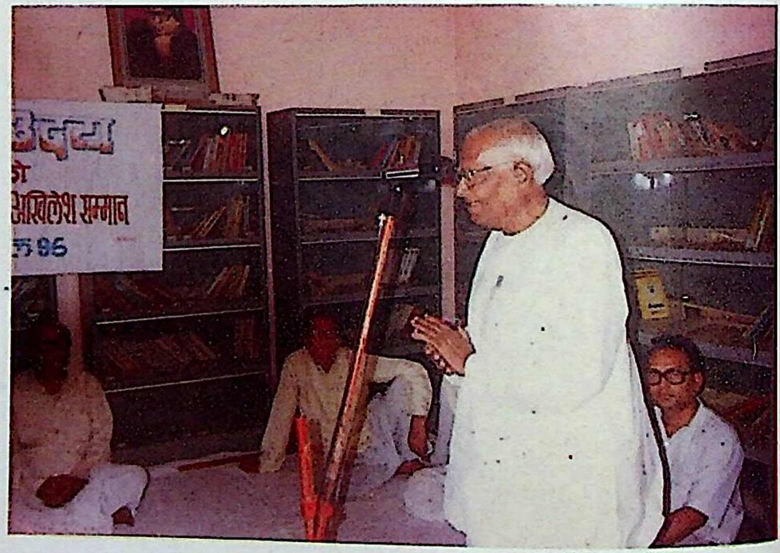

कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' सम्मान समारोह मे सम्बोधन देते हुए दिनाङ्क १९ अप्रैल १९९५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय दलित साहित्य अकादमी देहली द्वारा आयोजित २४-२५ सितम्बर, १९९६ दलित साहित्यकार सम्मेलन तालकटोरा स्टेडियम, न्यू देहली । डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड पदक एवं सम्मान प्राप्त करते हुए ।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी तालकटोरा स्टेडियम मंचीय दृश्यावली दिनाङ्क २४-२५ सितम्बर ९६ । दाहिने श्री ओमप्रकाश केशरी 'पवन नन्दन' श्री रामस्वरूप अग्रवाल एवं डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरस्वती विद्या मन्दिर में सम्मान प्राप्त करते हुए 'अखिलेश' जी

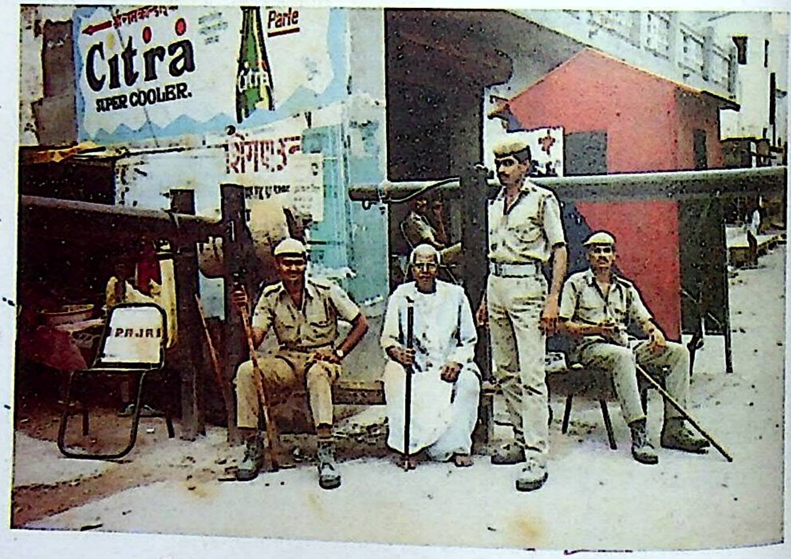

अयोध्या राम मन्दिर में गिरफ्तारी पुलिस के बीच में
डॉ० कालूरामजी शास्त्री 'अखिलेश'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँयें से तीसरे, (माननीय शंकर प्रसाद जी टेकरीबाल, मन्त्री, भू खनन, बिहार सरकार उनके बाद प्रबन्धक डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश'

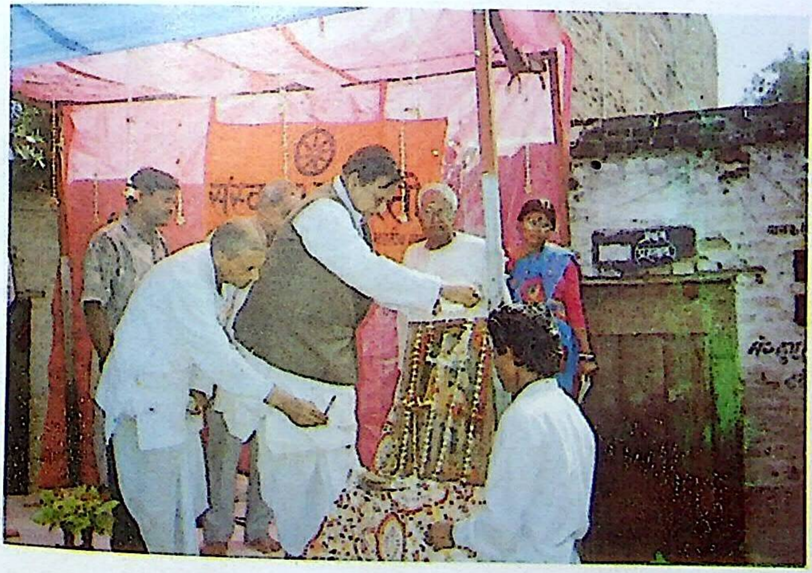

तुलसी जयन्ती — माननीय श्री शैलेन्द्रप्रसाद जी श्रीवास्तव राष्ट्रीय अध्यक्ष संस्कार भारती; माल्यार्पण करते हुए, दाहिने श्री 'अखिलेश' जी, उपाध्यक्ष संस्कार भारती बिहार प्रदेश ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कार भारती कार्यक्रम : डुमरांव में बाँयें से कुर्सीपर ‘अखिलेश’ जी, डॉ० शान्ति जैन, पटना

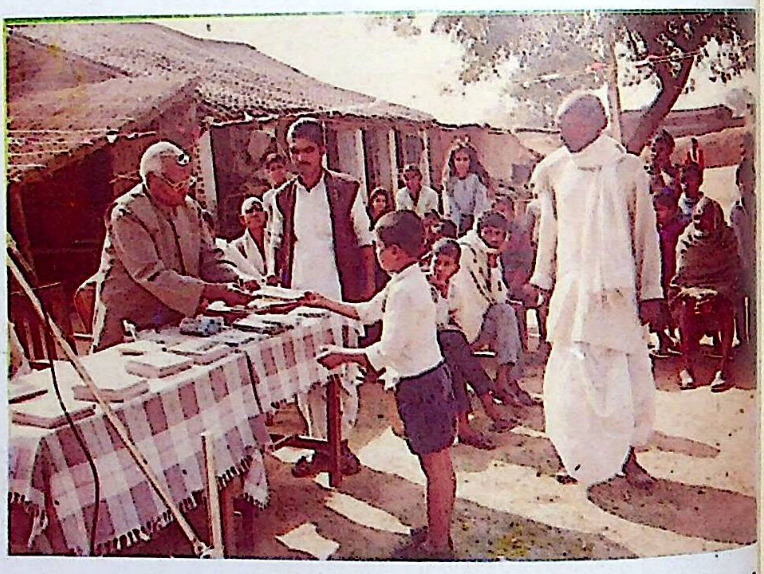

नवानगर सरस्वती शिशु मन्दिर में पुरस्कार वितरण करते हुए ‘अखिलेश’ जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरल एवं उदार हृदय कवि

— श्री कृष्णानन्द कृष्ण

'मुस्कुराहट आपकी मेरे लिए उपहार है, दे सकें तो दीजिए मुझको इसी से प्यार है' को अपने संपूर्ण जीवन और लेखन का आधार मानने वाले उदार-चेता, सरल व्यक्तित्व और सादगी के कवि डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' के दर्शन का सौभाग्य बक्सर में आयोजित एक सम्मान-समारोह में हुआ, जिसमें भोजपुरी/हिन्दी के युवा कवि प्रकाश उदय को सम्मानित/पुरस्कृत किया गया था। वैसे इनकी रचनाओं से परिचय तो पहले से ही था। प्रथम साक्षात्कार में उनको देखकर ऐसा नहीं लगा कि वे पहली बार मिल रहे हैं। बक्सर में देखा प्रत्येक साहित्यकार को पूछ-पूछ कर खिला रहे थे। जब तक हम लोग स्टेशन नहीं पहुँचे वे साथ रहे। ऐसा मित्रवत् व्यवहार बहुत कम मिल पाता है। इनके बारे में डुमराँव राज्य के पूर्व जेनरल प्रबन्धक ने लिखा है -'अपने जीवन में मैंने आज तक श्री कालूरामजी ऐसे उच्च व्यक्तित्व का मित्र नहीं देखा है, न पाया है।'' अक्षरशः सत्य है। आपके सहृदय व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए महाकवि (स्व०) केदार नाथ मिश्र 'प्रभात' ने लिखा है —

'डुमराँव-यात्रा में मुझें एक ही चीज मिली, आप जैसे सहृदय-हृदय-हार ... का निर्मल प्रेम भाव। इसे युगोकर रखूँगा।'

महाकवि का यह कथन उस दिन उनको देखकर लगा। सत्य है। सहृदय होने के साथ-साथ श्री कालूराम जी बड़े ही संवेदनशील हैं। अपने आस-पास के जीवन-जगत् में घटने वाली घटनाओं से रूबरू होते रहें हैं तथा उन घटनाओं से प्रभावित संवेदित होने के फलस्वरूप उन संवेदित क्षणों को उन्होंने मर्मस्पर्शी काव्य के रूप में रूपायित भी किया है। इनके काव्याकाश का अवलोकन करने पर पता चलता है कि इनके काव्य का फलक विषय की दृष्टि से काफी भिन्नता लिये हुए है।

उनकी कविताओं का संकलन 'मेरी दृष्टि में' विषय की विभिन्नता के साथ-साथ संवेदना के स्तर पर जीवन-जगत् के बहुआयामी, मर्मस्पर्शी क्षणों से लैस है। चाहे वह प्रकृति से प्रभावित हो, या सामाजिक, राजनैतिक, भ्रष्टाचारों से या किसी घटना से संवेदना की डोर उससे छुट नहीं पाई है। कवि को अपने जीवन का एक लम्बा अनुभव है। उसने समाज को देखा, परखा है। उसके हर हरकत पर भी उनकी पैनी नज़र है।। जब उनके मन में छद्मवेशी लोगों के प्रति आक्रोश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का भाव पनपता है तो वह व्यंग में कहता है–

पद की बदौलत कद में लंबे हैं
चलते फिरते अहंकार के खम्भे हैं
मुख पर प्रसन्नता वाणी में विनम्रता
हृदय में दुष्टता, लोकतंत्र के अचंभे हैं।

आजादी मिली, प्रशासन तंत्र अपना हुआ। लोगों के दिल में खुशी की फुलझड़ियाँ फूटीं किन्तु यह सब कर्पूर गंध की भाँति तुरंत हवा में विलीन हो गया। देश आजाद हुआ लेकिन आम आदमी को आज़ादी नहीं मिली। दलीय स्वार्थ, कुर्सी और पद का मोह इतना अधिक बढ़ गया कि आम आदमी हाशिए पर चला गया। इन त्रासद स्थितियों से कवि रूबरू होता हैं। उसके कोमल हृदय-तंत्र मर्माहत होते हैं। इन्हीं आहत क्षणों की अभिव्यक्ति 'मौसम ठंढा-ठंढा रे' और 'चाँद मिल गया हमें' कविताओं में हुयी है।

सभी दलों का स्वारथ ऐसा
कुर्सी मिले, मिले पद पैसा
सभी दलों के झंडे में है लगा स्वार्थ का डंडा रे।

कवि आज की राजनैतिक गुटबाजियाँ, भ्रष्टाचार के बहते नरक-कुंडों, व्यक्तिगत स्वार्थ और मार-काट से मानसिक रूप से परेशान है। आजादी के सूर्य के निकलने का शोर तो वह सुनता है किन्तु सूर्य किरणों को धूमिल और उदास देखकर वह उदास हो जाता है। उसे लगता है कि आज वह आजाद होकर भी गुलाम की जिन्दगी बसर कर रहा है। इसकी मार्मिक अभिव्यक्ति 'यह कैसा मधुमास रे' और 'अपने ही मलिकाँव' शीर्षक कविताओं में हुआ है। कवि का आक्रोश देखने लायक है –

है गुलामी सी अपनी हालत
अपने ही मलिकाँव में
अपनी ही करनी का फल है
आशा बेसुध हर्ष विकल है।
बनी आज तो अपनी करनी
बेडी अपने पाँव में।

कवि अपने इर्द-गिर्द के परिवेश में डूबा हुआ अपने समाज की एक-एक इकाई का सूक्ष्म निरीक्षण करता है। निरीक्षण के दौरान वह सिर्फ आक्रोश ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्त नहीं करता वरन् वह लोगों को एक ऐसे समाज, ऐसे विश्व की रचना करने के संदेश देता है जिसमें ऊँचे-नीच का भाव नहीं हो। आपस में छल-कपट न हो और निर्बलों की रक्षा की जाय। वह धरा-धाम के मनुष्यों से अनुनय विनय करता है कि अपने मन से द्वेष का भाव निकाल करके एक स्वस्थ समाज का निर्माण करें, जिससे भ्रातृ-भाव का संचार हो। यानि कवि सत्य, शिव और सुन्दर का संयोग एकसाथ धरती पर उतारने का हामी है। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

हे ! मानव तूँ देवतुल्य बन
द्वेष-भाव उर से निकाल कर
भ्रातृ-भाव उर में सम्हाल धर
जिससे पावनतम हो तेरा
घृणाभावमय कलुषित तम मन।

× × ×

कवि ऐसे जग की रचना कर।
शोषिण भय न गगन न धरा हो
भ्रातृ भाव से विश्व भरा हो
जहाँ मनुज के निर्मल-मन में
द्वेष भाव रह पाय न आकर।

सामाजिक समस्याओं, उलझनों एवं राजनैतिक क्रिया-कलापों के निरीक्षण के अलावा कवि कल्पना की दुनिया में भी रमता है। जीवन के हर्ष-विषाद, सुख-दुख की चिंताओं को संवेदना के साथ अनुभव करता है। उन भावों को अपनी लेखनी से मूर्त्तरूप देने की भी कोशिश करता है। प्रकृति के विभिन्न रूपों से साक्षात्कार करते हुए कवि उसके मनोहारी रूपों को भी अपने काव्य का उपजीव्य बनाता है। वह इन सारे दृश्यों को भाव-विभोर होकर ग्रहण करता है और अमूर्त क्षणों की मूर्त्त अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं के माध्यम से करता है। 'मैने देखा चन्दा जी भर' इस संग्रह की ऐसी ही उत्कृष्ट कविता है। कवि ने अपनी आशाओं-आकांक्षाओं को मूर्त्त रूप देने का प्रयास किया है। चाँद शीतलता, आशा और उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है। कवि ने चन्दा को भिन्न-भिन्न दृष्टियों से देखा-परखा है। वह कभी उसे निर्माण-कार्य में संलग्नता के फलस्वरूप उत्पन्न श्रम-स्वेद के उज्ज्वल-प्रतीक में देखता है तो कभी सूर्यास्त के समय में देखता है तो कभी सूर्यास्त के समय संध्या सीपी में गिरते स्वर्णिम कलश के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्योतिर्जल के रूप में जो अन्धकार रूपी सागर के भीतर से चाँद के रूप में प्रकट होता है।

निर्माण शान्ति का लोक मधुर
था करने में कोई तत्पर
टपकी तन से तम-धरती पर
श्रमजन्य स्वेद की बूँद अमर।
स्वर्णिम कलशी का ज्योतिर्जल
संध्या सीपी में गिर अविरल
तम सागर से निकला सुन्दर
अनुपम विशाल मुक्ता बनकर।

इस तरह हम देखते हैं कि कविवर श्री कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जी के भीतर का कवि मन अत्यंत संवेदनशील, कल्पनाशील और नाजुक है जो अपने समय और समाज सत्य को नजरअंदाज नहीं कर पाता। वह समयानुसार अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों के शुष्क प्राणों में संवेदना का संचार करता है तो जरूरत पड़ने पर सोयी हुयीं चेतना को जगाने के लिए हाथ में चाबुक लेकर समाज विरोधी धाराओं पर प्रहार भी करता है। अन्य रचनाओं में आँसू जमकर बन गया ताज' 'मेरे प्राणों के दीपक जल', 'गोडसे का पश्चाताप', साथी फिर मधुमास आ गया', प्रेम पन्थ पर मैं चलता हूँ आदि कुछ ऐसी कविताएँ हैं। जिनमें शाश्वत मूल्यों की झंकार सुनाई पड़ती है। ये कविताएँ कवि को विशिष्ट श्रेणी में लाकर खड़ी कर देती हैं। ये कविताएँ मानव-मन को उद्वेलित करने के साथ-उर्जस्वित भी करती हैं। वह अपने प्राणों के दीपक को जलाकर मृत्यु से भी होड़ करने की कामना करता है। कवि जीवन की वर्त्तमान त्रासद स्थितियों से लेकर मानवीय अंतर्विरोधों, प्रकृति के करुण चित्रों के माध्यम से अपनी संवेदना और आक्रोश को प्रकट करता है। ये कविताएँ 'अखिलेश' जी को काव्य-जगत् में एक विशिष्ट स्थान दिला पायेंगी इसलिए नहीं कि इनमें काव्य-सौष्ठव उभर कर आया है बल्कि इसलिए कि इनमें कवि-हृदय सहज सरल बनकर स्वाभाविक रूप में कल-कल, छल-छल करती हुयी सरिता के रूप में आया है।

दक्षिणी अशोक नगर
रोड नं० ८ बी, कंकड़ बाग, पटना (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक पहचान प्रतिभा की

– श्री हरिनन्दन कुमार, डुमराँव

मानव के भीतर प्रतिभा, अदृश्य एक्स-किरण जैसी अन्तरभेदी कोई असाधारण शक्ति है जैसे किसी वस्तु की अन्तर-स्थिति एक्स-किरण से स्पष्टतः उजागर हो जाती है, उसी तरह मानवीय प्रतिभा स्थूल और सूक्ष्म विषयों के अन्तः गह्वर में प्रवेश कर महत् उपलब्धियों को प्रस्तुत करती है। जीवन-जगत् के ज्ञान और भाव-बारीकियों को स्पष्ट करने और उसके आधार पर अभिनव सृष्टियों को उरेहने का कार्य प्रतिभाओं द्वारा ही संभव होता है। प्रतिभा पराश्रित, परानुगामी नहीं होती, वह नई राह बनाती है, नवीन दिशाओं को उद्घाटित करती है। चाहे वह ज्ञान-योग का क्षेत्र हो, चाहे कर्म-योग का अथवा भावयोग का – प्रतिभाशक्ति से ही इनमें नूतन संभावनाओं के संस्कारयुत् नवीन अध्याय जुड़ते हैं।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' का व्यक्तित्व अवश्य ही प्रतिभा की एक पहचान है। एक सम्पन्न वैश्य परिवार में इनका जन्म बम्बई में हुआ। बचपन के कुछ दिन कलकत्ता में व्यतीत हुए, मध्यप्रदेश में मात्र आरंभिक शिक्षा हुई। जन्म से परिवेश में त्वरित परिवर्तन और विद्युत् वेग से इनके अन्तस् पर सबका अमिट प्रभाव। संभवतः प्रतिभा के लिए विशेष पृष्ठभूमि की अपेक्षा नहीं होती, निमिष फ्लैस में वह चित्रों को ग्रहण कर लेती है। शिक्षा विधिवत् नहीं हो सकी, फिर भी अन्तस् ने जिन किरणों को सँजोया,, जन्मजात प्रतिभा शक्ति संस्कार से वे निरंतर परिपुष्ट, प्रौढ़ एवं तीव्र होती गईं। बचपन में ही इनकी मौलिक सूझ-बूझ, चिन्तन- मनन एवं उद्भावनाओं को देखकर विज्ञ गुरुजनों ने इनकी प्रतिभा पर आश्चर्य प्रकट किया था। शारीरिक शक्ति, मेधा शक्ति, उद्भावना शक्ति, साहस और सोच के नये ढंग इनमें बचपन से ही दीखने लगे। माँ के दिवंगत हो जाने से बाल्यावस्था में ही वात्सल्य और स्नेह का साया इनके सिर से बराबर के लिए ओझल हो गया। पिता जी की इच्छा और आदेश के अनुसार ये पैतृक पेशा – व्यापार के कारबार देखने लगे। कुछ समय पश्चात् इनका विवाह-संस्कार सम्पन्न हुआ।

कदाचित् ऐसा भी होता है जब परम्परा व उत्तराधिकार के साथ उत्तराधिकारी के स्वतंत्र विचारों से टकराहट हो जाती है। परम्परा को हू-ब-हू स्वीकार करने और सम्पत्ति के उत्तराधिकार के लिए स्वतंत्र विचारों की बलि दी जाय अथवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतंत्र विचारों को अक्षुण्ण रखकर सम्पत्ति इत्यादि अधिकारों का उत्सर्ग किया जाय – गंभीर द्विधात्मक स्थिति आमने-सामने होती है। अक्सर तो परम्परागत रूढ़ियों एवं ऐश्वर्य ग्रहण के आकर्षण का पलड़ा भारी होता है, किन्तु अत्यन्त विरल होने पर भी, इसके भी उदाहरण मिलते हैं, जहाँ स्वतंत्र निर्णय और विचारों की रक्षा के लिए बड़े से बड़े साम्राज्य भी न्योछावर किये गये हैं।

अखिलेश जी के जीवन में भी यह स्थिति आयी। पिता का यह कथन कि 'मैं जो कुछ कहूँ, तुझे उसका अक्षरशः पालन करना है- दूसरी ओर युवा अखिलेश का स्वतंत्र विचारों का आग्रही ही अंतस् – घोर असमंजस की स्थिति-

'अनुचित उचित विचारू तजि, जे पालहिं पितु बैन

या

अनुचित उचित विचार करि, जे पालहिं पितु बैन

प्रथम अवधारणा–भारतीय परम्परा का उच्चतम आदर्श। दूसरी स्थिति-विकल्प में–व्यक्ति विचार स्वातंत्र्य का आग्रह। दूसरी अवधारणा में विचारों की स्वतंत्रता ही व्यक्ति का अस्तित्व है, उसकी अस्मिता है। अखिलेश ने विकल्प को ही ग्रहण किया। फलतः घर और सम्पत्ति से पूर्णतः वंचित। तब तक इनको तीन बच्चे भी हो चुके थे। पिता का आदेश हुआ–तुम अपना परिवार लेकर घर से निकल जाओ। घर और पिता की सम्पति को "बटाऊ की नाई" छोड़ कर चल देने की बात तो नहीं कही जा सकती वह तो किसी लोकोत्तर मानसिकता की स्थिति होती है। अत्यन्त भारी मन से इन्होंने पिता के आदेश को शिरोधार्य किया। एकान्त साधन रहित, पास में पाथेय भी नहीं, पिता के स्नेह का संबल भी नहीं, परिवार को लेकर घर से निकल पड़े। समृद्ध पिता का पुत्र आज अकिंचन राह का पथिक मात्र।

जीवन के मौन अन्तस् की तीव्र पुकार हुई – तुम्हारी सूझ-बूझ, योग्यता और धीरज की आज कठिन परीक्षा है। पूर्वजों के अर्जित वैभव से अलग तुम्हारे व्यक्तित्व के मूल्य का निर्धारण है और "बिना लीक तीनों चले, शायर, शूर सपूत" की तरह एकाकी अपने जीवन-मार्ग का निर्माण करते हुए ये धैर्य के साथ आगे बढ़े। फिर 'नाव ज्यों-ज्यों निकट कूल आती गई, उर्म्मियों के थपेड़े पिछड़ते गये'। प्रतिकूलता अनुकूलता में परिणत होती गई। अपने अथक परिश्रम और कठिन अध्यवसाय से इन्होंने पर्याप्त ऐश्वर्य और विपुल साधन अर्जित किया। शिक्षित एवं वणिक समाज में अपनी अच्छी साख बनायी। बक्सर जिला वैश्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलन के अध्यक्ष भी हुए। अनेक देशों की यात्राएँ कीं। वहाँ के कार्यक्रमों में भाग लिया।

बच्चों का भरण-पोषण, उनकी शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त उनके विवाह इत्यादि सम्पन्न कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया। वे पूर्णत: स्वावलम्बी बने। वे आज भी वात्सल्य और स्नेह से पूर्णत: सिक्त हैं। जिसने अपने पिता के स्नेह से वंचित होने की पीड़ा झेली थी, वे बच्चों के प्रति निष्करुण हृदय कैसे हो सकते। अपनी विधिवत शिक्षा न होने के कारण इनका अतृप्त मानसी सम्यक् शिक्षा ग्रहण संस्कार की ओर पुन: उन्मुख हुआ। काफी देर हो चुकी थी, किन्तु सुधार परिष्कार एवं शिक्षा के लिए कभी देर नहीं होती, इनके लिए जीवन के अन्तिम क्षण भी लाभदायक होते हैं। अधिकारी लोगों के सान्निध्य साहचर्य से इन्होंने संस्कृत, साहित्य और व्याकरण का विधिवत् अध्ययन किया। केवल शिक्षार्थी ही नहीं परीक्षार्थी भी बने। जहाँ आज के छात्रों के लिए परीक्षा एक विवशता है, वहाँ ये ऐसे परीक्षार्थी, बने जिन्हें अपनी तौल का निश्चित एहसास होता है। प्रथमा, मध्यमा के क्रम से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। जीवन की विभिन्न स्थितियों एवं संदर्भों में जहाँ जिन विषयों की जानकारी की अपेक्षा हुई, त्वरित गति से कामयाबी के साथ ये आगे बढ़ते गये। अखिलेश का व्यक्तित्व वह केन्द्र है, जहाँ से अनेक दिशाओं को प्रभविष्णुता के साथ स्पर्श करने वाली अनगिन रेखाएँ नि:सृत होती हैं। कला, साहित्य, चिकित्सा विज्ञान, विधिशास्त्र, वाणिज्य-ज्ञान, व्याकरण एवं काव्य-शास्त्र के अध्ययन-मनन के साथ, दर्शनशास्त्र, समाज-विज्ञान, राजनीति-शास्त्र में भी इनकी गति एवं प्रवृत्ति अपनी पहचान रखती है। सामाजिक, आर्थिक संबंधों एवं उसके समुचित विकास के संदर्भों पर इनका चिन्तन अत्यन्त मौलिक एवं महत्वपूर्ण है। ८७ वर्ष की अवस्था में ये अभी ला कॉलेज के द्वितीय वर्ष के नियमित छात्र हैं।

खेलों में शतरंज इनको विशेष प्रिय है जिसके मोहरों की आड़ी-तिरछी, सीधी एवं वक्र गतियों का पूर्वानुमान इनकी बुद्धि सहज ही कर लेती है। इन्होंने अपने हाथों से अनेक जीवंत चित्रों का अंकन किया है। पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन् के चित्र में एकान्त यथार्थ एवं गंभीर चिन्तन मननशील जीवंत मुद्रा अंकित हुई है। कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा समानान्तर रूप में इनमें विद्यमान है। इनकी कुछ विशिष्ट कविताओं के संकलन 'मेरी दृष्टि में' के मुख पृष्ठ पर इनकी लोकमंगलमयी उद्भावना इस रूप में अंकित है -

'मुस्कुराहट आपकी मेरे लिए उपहार है'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुस्कुराहट हर्ष संचारी भाव का सात्विक अनुभाव है। वह प्रसन्नता व्यंजक है। लोक मुख मंडल पर विराजती हुई मुस्कुराहट के लिए कवि आकांक्षी है। लोक मंगल और आनन्द के क्षण ही कवि के लिए होली, दिवाली और ईद के त्योहार हैं। किसी के जीवन का सम्पूर्ण उपक्रम एकान्त लोक मंगल के लिए ही समर्पित हो यह तो अत्यन्त विरल है। भावन प्रक्रिया में उस बिन्दु को छूने वाले क्षण भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। इनकी कविताओं में बुद्धि तत्त्व, राग तत्त्व एवं कल्पना तत्त्व का सुन्दर समन्वय हुआ है। भावयित्री प्रतिभा से विभावन व्यापार अन्तस् में अंकित हो उठता है और उसी अन्तस् में अंकित छवि को कारयित्री प्रतिभा कल्पना तत्त्व के योग से नूतन सृष्टि में परिणत कर देती है। उदाहरणार्थ, 'आँसू जमकर बन गया ताज' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियों को हम देखें। ताजमहल का अनुपम सौन्दर्य कवि के भावन का विषय है। सौन्दर्य कारक तत्त्वों के विवेचन में बुद्धि लीन है और उनके संयोजन से नई सृष्टि की रचना में कल्पना तत्पर –

यह मूक वेदना का लघु क्षण,
रह गया खड़ा रुक गये चरण,
जिसके नयनों में प्रेम-क्षीर,
व्याकुल चंचल फेनिल अधीर,
× × ×
मन में भीषण विह्वल हिलोर,
ले प्रेम सिन्धु कर रहा शोर,

तीव्रतम विरह-व्यथा का स्तंभित क्षण है ताजमहल। बड़ी मार्मिक व्यंजना है – 'रह गया खड़ा, रुक गये चरण चरण'।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' के बहुआयामी व्यक्तित्व की किंचित् रेखाओं की ओर इंगित करना ही यहाँ अभीष्ट है, विस्तृत विवेचन संभव नहीं। इनके मन की अभिलाषा जैसे फल अनुगामी है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मेरी दृष्टि में' दृष्टिकोण की सफल अभिव्यक्ति

— डॉ० गौरीशंकर पाठक

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार "काव्य का लक्ष्य है जगत् और जीवन के मार्मिक पक्षों को गोचर रूप में लाकर सामने रखना जिससे मनुष्य अपने संकुचित घेरे से अपने हृदय को निकाल उसे त्रिकालदर्शिनी और विश्वव्यापिनी अनुभूति में लीन करे।" जगत् और जीवन के मार्मिक पक्षों के प्रति मानव-हृदयस्थ अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति काव्य है। जगत् और जीवन के ये मार्मिक पक्ष–सौन्दर्य, प्रेम, क्रोध, घृणा, आश्चर्य, शोक, उत्साह वैराग्य इत्यादि शाश्वत हैं। परिवर्तनशील है दृष्टिकोण और शैली। दृष्टिकोण पर प्राय: मन:स्थिति और विचारधारा का प्रभाव अधिक होता है। मन:स्थिति विचारधारा की अपेक्षा अधिक परिवर्तनशील है। अत: व्यक्ति-विशेष की काव्य-रचना उसके परिवेश और उसकी शैली के अतिरिक्त रचना विशेष रचनाकाल में उसकी मन:स्थिति और समग्र रूप से उसकी विचारधारा का भी परिचायक होती है। डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' के काव्य संग्रह 'मेरी दृष्टि में' का नामकरण इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर किया गया लगता है।

मन:स्थिति की परिवर्तनशीलता का मुख्य कारण संवेदना है। परिवेश के दृश्य में परिवर्तन होने के साथ -साथ संवेदनशील द्रष्टा की मन:स्थिति परिवर्तित होती है और तदनुसार समय के विभिन्न अंतरालों में उसके हृदय में विभिन्न भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति कविता होती है। मन:स्थिति की परिवर्तनशीलता संवेदना का परिचायक है जो कवि का आवश्यक गुण है। 'मेरी दृष्टि में' के कृतिकार डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' अपनी इस रचना के आलोक में अपनी विशिष्ट शैली के संवेदनशील कवि प्रतीत होते हैं। उनका हृदय कभी समाज में छाई अराजकता से व्याकुल हो उठता है तो कभी प्राकृतिक सौंदर्य पर मुग्ध हो परिस्थितियों की विषमता को भूल-सा जाता है। कभी परिस्थितियों की जटिलता पर क्रुद्ध हो कहता है –

इस वीणा के तार न छेड़ो
इसमें आग मचलती है

तो दूसरे ही क्षण स्वयं को संयत करते हुए अपने आपको आश्वस्त-सा करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम नूतन निर्माण करेंगे
अनाचार का नाश करेंगे।

अपने परिवेश के प्रति अपना दृष्टिकोण डॉ० अखिलेश बेबाक शब्दों में, बिना लाग-लपेट के करते हैं-

पंगु हुई कानून व्यवस्था
जन साधारण आतंकित

और,

स्वतंत्रता का दूध मिल गया पानी में

या,

लगी चरित्र पर जो कालिख
उस पर चूना पोतवाएंगे॥

परिवेश को देखते-देखते एक नजर डॉ० अखिलेश स्वयं पर भी डालते हैं :-

बैल बना हूँ मैं तेली का

और,

जिंदगी रंगीन थी अब उम्र की ढलान रे

व्यवसाय में ईमानदारी के प्रति अपनी आस्था कवि इन शब्दों में व्यक्त करता है-

सही तौल होगी कहीं तौल लो तुम
धनी बात का हूँ पसंगा नहीं हूँ

ईमानदारी ही नहीं कुर्बानी की लगन है।

आग लगा कर अपने घर में
प्रेम पंथ पर मैं चलता हूँ

अपने घर में आग लगाने वाला कोई विक्षिप्त नहीं है। इसके पीछे वह अपना उद्देश्य व्यक्त करता है –

मुस्कुराहट आपकी मेरे लिए उपहार है।

प्रकृति के वर्णन में डॉ० अखिलेश छायावादी तर्ज का आश्रय लेते हैं–

आशा के आँगन में उतरीं
सुन्दर सरस उमंगें
आज शिराओं में धरती की
रूप सिन्धु लहराया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन दर्शन के प्रति न तो कवि उदासीन है और न मौन -

लहरों की लय पर अपने सब
सुख-दुख के यह गीत गा रही
जीवन नौका बही जा रही

अथवा

जीवन-चक्र विषम चलता रे।

उदीयमान ज्ञान-ज्योति-पुंज आराध्य है -

स्वागत ज्योतिर्मय स्वागत,
ज्ञान ज्योति की धवल धार से
कर दे निर्मल शाश्वत

और प्रेम के प्रति संवेदना तो कवि का जन्मजात गुण है। प्रेम चाहे प्रेयसी से हो या मित्र से अथवा स्नेही स्वजन से, प्रेमीजन के संयोग-वियोग में -

हृदय सिन्धु की सरस हिलोर,
चूमती मन के अंतिम छोर,
भावों की नैया करती नृत्य,
लहर पर बनते रेखाचित्र।

इस प्रकार प्रस्तुत संग्रह में संकलित डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' की कविताएँ पाठक के हृदय में शृङ्गार, वीर, करुण, हास्य, रौद्र और शान्त रसों की निष्पत्ति करने में सक्षम हैं। अलंकारों के यथा अवसर् प्रयोग से काव्य-सौन्दर्य में वृद्धि हुई है–

विश्व वाटिका में यह पुष्पित
जीवन पुष्प पदों में अर्पित

और,

हो जाएँ लोचन-घट रीते

और,

थे पवित्र तुम सुर-सरिता से
हिमकर से तुम शीतल के

और,

दीपशिखा पर मैं पतंग सा
प्रतिपल हँस-हँसकर जलता हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इत्यादि पंक्तियों में अलंकारों का प्रयोग आकर्षित करता है और भावों को मुखर करता हैं।

वैसे तो पूरे संग्रह में अभिधा और लक्षणा की प्रधानता है लेकिन कहीं-कहीं कवि की अभिव्यक्ति व्यंजना के धरातल को छूती-सी लगती है –

हृदय सिंधु की सरस हिलोर
चूमती मन के अंतिम छोर

इत्यादि –

कुल मिलाकर कविता संग्रह 'मेरी दृष्टि में' डॉ० कालूराम शास्त्री अखिलेश के जगत् और जीवन के प्रति दृष्टिकोण और अनुभूतियों को सरस अभिव्यक्ति देने के लिहाज से एक सफल रचना है।

प्रोफेसर्स कालोनी
के०बी० रोड, आरा (बिहार)

'मेरी दृष्टि में' : एक समीक्षा

– डॉ० दीनबन्धु पाठक

मानव-जीवन खट्टे-मीठे अनुभवों का समन्वय है। सामान्य जन केवल अपने सुखों की ओर देखता है और दुःखों को देखना नहीं चाहता, आँखों से ओझल हो जाने देना चाहता है। यही मानवीय प्रवृत्ति है, सामान्य मानव की। इस 'सामान्य' रूपी छोटे शब्द में सर्वाधिक गिनती है। इस लोक का जीवन न सदा सर्वत्र लहलहाते वसंत से बँधा है और न तो सूर्य की प्रखर तीक्ष्णता से। वास्तव में जीवन का आनंद तभी है जब सुख और दुःख के समन्वित रूप को अपनायें। दुःख से न भागें और सुख से चिपके न रहें। दुःख के अंदर ही सुख की ज्योति है और दुःख ही सुख का ज्ञान कराता है। महामानव वही है जो इन सारी परिस्थितियों को समझे और 'स्व' के अतिरिक्त दूसरे के दुःख से भी दुःखी हो, उसके दुःख को दूर करने में मदद करे। लोक के लिए विचार करने वाला मानव ही श्रेष्ठ है क्योकि वह 'स्व' से बहुत ऊपर है।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' की रचना 'मेरी दृष्टि में'' से उनके अंतर्मन की स्थिति का पता चलता है जो उन्हें सामान्य से ऊपर का स्थान प्रदान करता है। उनकी इस रचना में दृष्टि पैनी है जो जीवन के हर पल को, हर बिन्दु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को, हर कोण से देख पाती है। उनकी भावना लोक के प्रति है, संसार के हर वर्ग के कल्याण के प्रति।

कवि अपने आरंभ में ही साधना सफल करने का निवेदन करते हैं जो मंगलाचरण के समान है। साधना भी कैसी? प्रेम-प्रसार की, मानवता-विकास की, कालिमा हरने की। ये शब्द उनके विश्वबंधुत्व के विचार को प्रकाशित करते हैं।

विश्व का तम हटाने की अभिलाषा और आँखों में आँसू के संयोग और ऐसे समय चन्दा का प्रकाश पपीहा को स्वाती के बूँद के समान मिलता है। जीवन की नौका चलती रहती है, अपनी चाल से। वह रुकती नहीं है। किन्तु हाथ से पतवार छूट जाने की स्थिति के कारण दिशाविहीन है। ऐसे ही दुःखों से निराश लोक की पीड़ा हरने का उद्देश्य है श्री 'अखिलेश' का।

चाँद का प्रकाश आशा की किरण फैलाता है, दुनिया से तम हटने की; किन्तु बादल में चाँद के छिप जाने से फिर निराशा होने लगती है कि कहीं पैशाची शक्तियाँ जीवित न हो जायें। कवि फिर से सभी लोगों का 'अभिनंदन' करता है क्योंकि दुनिया वाले यह न समझें कि विश्व तम हटाने में उसने मूल को ही तो नहीं छोड़ दिया है। इसी क्रम में कवि यह भी बतलाता है कि जीवन–चक्र सुखमय और विषम दोनों का समन्वित रूप है। सुखमय जीवन को पाने को सभी आतुर हैं। जीवन की विषमता से विश्व क्रंदन भी कवि को सुनाई देता है। कवि मानव को मर्यादित बनने की सलाह देता है ताकि चारों ओर तम के ऊपर आनंद का आलोक प्रसारित हो सके और मानव रामराज में पहुँच जाये।

श्री 'अखिलेश' जी विश्व के तम को दूर करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने को भी तैयार हैं। अपने दम में दम रहने तक प्राणों के दीपक से विश्व-तम को हटाने को वे आतुर हैं। वे जगत् को निराश नहीं होने देना चाहते हैं। उन्हें वे याद दिलाते हैं कि मधुमास का आनंद बस आया ही आया है और मनुष्यों ! दिवाली प्रति वर्ष आती ही है।

श्री अखिलेश' अपने कविता के माध्यम से कहना चाहते हैं कि विश्व तम से मानव सदियों से परेशान है – 'युग-युग से मानव प्यासा रे'।

कवि अपना परिचय भी बताते हैं कि मैं लोक के लिए पहला जीवन दीप जलाने को आतुर हूँ। विश्वमानव के प्यास बुझाने के लिए कवि नभ के श्यामल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घन को बरसने की विनती करते हैं ताकि जग में सौन्दर्य और सुख का संचरण हो। इसके लिए वे अपने घर में आग लगाकर हँस-हँसकर जलने को तैयार हैं। विश्व में फैले अंधकार को दूर करने के लिए वे माँ से भी प्रार्थना करते हैं।

श्री शास्त्री दु:ख के अंदर सुख की ज्योति देखते हैं और अपने प्रिय लोक को सुख देकर अपने लिए केवल दु:खों की माँग करते हैं। इसके बदले उन्हें केवल प्यार चाहिए लोक का। मानव-जाति को वे बतलाते हैं कि होली आनी ही है और ठूँठ वृक्ष भी अँखुवायेगा, आँसू ताज बन जायेगा। अंतत: विश्व में आनंद का आलोक फैलेगा और सबों को 'स्वागत ज्योतिर्मय स्वागत' कहना ही होगा।

कवि, कवियों को आनंदमय जग की रचना करने की सलाह देते हैं। वे युग को बदलकर एकसाथ नूतन निर्माण का आह्वान करते हैं। अंतत: चाँद मिल गया का प्रावधान होता है। किन्तु चाँदनी लुटी हुई है। और समस्त विश्व चाँदनी के लिए परेशान है।

श्री शास्त्री का गीत संग्रह प्रखर है। विश्व के अंधकार को हटाकर आनंदमय प्रकाश फैलाने के लिए कवि उदात्त दिखाई पड़ता है। इसके अतिरिक्त पुस्तक में श्री शास्त्री के विभिन्न चित्र उन्हें सामाजिक रूप से चैतन्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। विश्व में आनंद का सौन्दर्य फैलाने के बदले वे लोक से मात्र मुस्कुराहट का उपहार की अपेक्षा करते हैं।

प्रोफेसर्स कालोनी
के०बी० रोड, आरा (बिहार)

'मेरी दृष्टि में': एक अध्ययन

— डॉ० विमलकिशोर मिश्र

डॉ० कालूराम शास्त्री "अखिलेश" की मौलिक कृति है, "मेरी दृष्टि में"। सम्भवत: प्रत्येक कृतिकार की कृति उसी की दृष्टि में लिखी जाती है। कृति में कृतिकार के स्वयं का अनुभव होता है। स्वयं की मार्मिक अनुभूतियाँ होती हैं। कवि की अपनी पैनी दृष्टि होती है। दूसरों की उधार दृष्टि से रचनाकार अपनी रचना नहीं रचता। सच तो यह है कि 'मेरी दृष्टि में' एक गीत काव्य है। अथवा उसे गीत संकलन कहा जा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तुत गीत काव्य में उनसठ गीतों का संकलन हुआ है। कवि की उम्र अट्ठासी वर्ष हो चुकी है। जीवन की लम्बी यात्रा में मात्र उनसठ गीत ही लिखे गए हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि कवि का जीवन काफी संघर्षपूर्ण एवं व्यस्त रहा है। उसी व्यस्तता में जब कभी स्थानीय चर्चा रुझान हुई तो कोई न कोई गीत हृदय से स्वतः फूट पड़ा है। सभी गीत जमकर कभी नहीं लिखे गए हैं। भिन्न-भिन्न समय में विभिन्न विषयो पर लिखे गए हैं। अतः भिन्न-भिन्न अवस्था में लिखे गए गीतों में समय-विशेष की उन पर छाप है। संभव है आज की अवस्था में और आज की दृष्टि में कदाचित् उन गीतों में कवि को कहीं वैचारिक परिवर्तन भी करना पड़े।

इसमें जरा भी शक की गुंजाइश नहीं कि कवि ने संवेदनशील हृदय पाया है। जीवन की देखी-सुनी और घटी घटनाओं के प्रति कवि उदासीन नहीं है। उसे यथा-स्थान गीतों में अंकित करता गया है। अखिलेश के गीतों का फलक बहुआयामी है। उसमें कहीं राजनीति है तो कहीं समाज। कहीं आर्थिक परिप्रेक्ष्य है तो कहीं प्राकृतिक सौन्दर्य है। मतलब जीवन और जगत् में जो कुछ भी अनिवार्य तथ्य हैं। उन सब पर उसके गीत गुंजरित हुए हैं। कमला की एक प्रार्थना सिद्ध कर रही है कि सरस्वती की उपासना कम किन्तु लक्ष्मी की साधना अत्यधिक की है। जीवन जगत् के केन्द्र बिन्दु अर्थ की उसने सही पहचान की है। जबतक जीना है, खास कर इस युग में तो अर्थ पर ध्यान देना सबके लिए परमावश्यक है। सुखमय गार्हस्थ्य के लिए अर्थोपार्जन सचमुच अनिवार्य है।

कवि जीने की कला जानता प्रतीत होता है। यदि जीने की कला नहीं जानता तो अट्ठासी वर्ष की उम्र तक तगड़ा नहीं रहता और बाघ की तरह गर्जता नहीं। मतलब कठोर कर्म के द्वारा ही सही, मगर उसने वर्तमान जीवन को सुखमय बना लिया है। चाँद को जीभर देखने वाला कवि दुखी कदापि नहीं हो सकता है। सौन्दर्य से शक्ति मिलती है और सुख मिलता है। इस प्रकार मन-रमण बात लिखने वाला कवि सौन्दर्य का आकलन करता है और प्रेमी-हृदय का होता है। लोक-मंगल की कामना रखने वाला शिव का आकलन करता है और वह भगवान का भगत होता है। सत्य का उद्‌घाटन करने वाला रचनाकार दार्शनिक होता है, संत होता है।

'अखिलेश' जी के कुछ गीतों से ऐसा ध्वनित होता है कि कवि सौन्दर्य का प्रेमी है। जीभर चाँद को कोई नहीं देखता। जीभर यदि देखा जा सकता है तो एकमात्र चन्द्रमुखी प्रियतमा को ही भले, कवि इस प्रियतमा को काव्यगत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लालित्य से ढंक देता है मगर वह कवि के काव्य में झाँकती रहती है। कविता तो नारी-हृदय की चीज है। बिना उस नारी को हृदय में बिठाये किसी कवि का काव्य नहीं लिखा जा सका। उस प्रियतमा या उस नारी-सौन्दर्य को लाख कोई ढ़कने का प्रयत्न करे मगर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने पर झट वह प्रिया दृष्टिगोचर होने लगती है। जैसे कालिदास के काव्य में शकुन्तला झाँक रही है। ब्यास के कृतियों में अष्ट सखियाँ झलमला रही हैं। कवि की वही प्रियतमा वाल्मीकि के आगे सीता बन जाती है। बाणभट्ट की कादम्बरी भी कवि हृदय की प्रियतमा ही है। उसी प्रियतमा की आवाज शैली बराबर सुना करता था। लिखा है– In solitudes her voice came to me through the whispering woods etc.

समूचे गीत संकलन का "मोटो" और कवि के जीवन का "मोटो" 'मुस्कुराहट' को बना दिया गया है। सबसे मुस्कुराहट पाने की आकांक्षा रखने वाला कवि दुनिया से कितना आनन्द लेना चाहता है, सोचने की बात है॥ संसार में तो पीड़ा है, दु:ख है। मुस्कराहट है किसके पास ? जो किसी को दे सके ॥

मुस्कुराहट वैसे संचारी भाव है॥ हास्य छः प्रकार के होते हैं।

अट्टहास (Laugh) और मुस्कान (Smile) में अन्तर होता है। मुस्कान बड़े लोगों की हँसी का नाम है। बड़े लोग किसी से मिलने पर मृदु मुस्कान बिखेरते हैं। यह एक प्रकार का ड्रामा है, नाटक है। दूसरों को प्रसन्न करने के लिए इस प्रकार का नाटक करना एक प्रकार का व्यायाम कहा जा सकता है। प्राचार्य पाण्डेय सुरेन्द्र ने "ई हरनाकुश मन" में लिखा है - "मुसुकियात मुस्कियात ओठ दुखा गहल" आज के लोगों की यह मुसकान दिखावटी है, खतरनाक है, ठगने वाली है।

प्रो० कलक्टर सिंह केसरी ने एक कविता लिखी थी "यह हँसी नहीं मुस्कान नहीं"। वह मुस्कान बच्चे की एक किलकारी थी जिस पर निछावर होकर उन्होंने कविता लिखी थी। राम की किलकारी में काग भुशुंड गायब हो गए थे। इस मुस्कान को आध्यात्मिक मुस्कान या आनन्ददायक मुस्कान जरूर कहा जायेगा।

कहते हैं कि राम का एक नाम था स्मितानन। वे किसी से मिलते थे, मुस्कराते हुए मिलते थे। तुलसी ने लिखा है -'कहत राम विधु वदन रिसौहे, सपनेहुँ लखेउ न काउ'। खैर यह हुई मर्यादा पुरुषोत्तम राम की मुस्कान। यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुस्कान सबको सुलभ नहीं हो सकती। अनुमानतः कवि की अपेक्षित मुस्कान सर्वसाधारण से न होकर हृदयेश्वरी से ही अपेक्षित हो सकती है जो उसे जीवन में सम्बल देती रही है।

सर्व साधारण के पास ईर्ष्या है, द्वेष है, विकार है, साधारण आदमी की स्थिति मुस्काने की है ही नहीं। गुप्तजी ने जीवन के दो ही अंग गिनाये हैं – "हँसना, रोना बस यही जीवन के दो अंग"। हँसना सस्ती चीज है। रोना कीमत अधिक है। उर्मिला उपालम्भ देती है- "तुम्हारे हँसने में है फूल हमारे रोने में मोती"। यही कारण है अँग्रेजी का एक कवि लिखता है :- Laugh and the whole world laughs with weep, and you weep alone.

कालूराम जी शास्त्री हैं, संस्कृत के विद्वान् कवि हैं, हिन्दी और भोजपुरी दोनों के कवि हैं। 'कलश' के सम्पादक रह चुके हैं। अतः सम्पादक भी हैं। लेख लिखते हैं। एक साहित्यकार हैं। भोजपुरी और भोजपुर उन्हें पसन्द आया है। हिन्दू संस्कृति के पोषक हैं। उन्होंने जीवन में बहुत ,कुछ देखा है। ऐसे महापुरुष का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

रीडर एवं अध्यक्ष
प्राचीन इतिहास
श्री शंकर सिंह विद्यालय, सासाराम (बिहार)

'अखिलेश' गीत काव्य पर एक दृष्टि

–डॉ० रामनन्दन ओझा

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' का गीत संग्रह 'मेरी दृष्टि में' मैंने पढ़ा। समूचे संग्रह में विभिन्न विषयों के गीत लिखे गये हैं। कवि की दृष्टि में उनकी निजी अनुभूतियाँ गीतों में अभिव्यक्त हुई हैं। उनसठ गीतों का यह संग्रह बहुत ही मार्मिक एवं संवेदनशील बन पड़ा है। जगजीवन या युगजीवन की गहराई भी इसमें कम नहीं है। 'मेरी दृष्टि में' में निर्बन्ध काव्य के दोनों भेद यथा–गीतिकाव्य एवं मुक्तककाव्य को समुचित स्थान मिला है। दो या चार गीतों के उपरान्त इस संग्रह में एक मुक्तक अवश्य ही मिल जाता है। गीतिकाव्य की ढेर सारी विशेषताएँ 'मेरी दृष्टि में' में समाहित हैं। इस काव्य की विशेषता है – तरलता, सरलता, सरसता तथा मौलिकता। इस काव्य में सुन्दर ध्वनि, कोमल कल्पना, कलापूर्ण अभिव्यक्ति तथा अनुभूति की विभूतियाँ हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि ने गीति काव्य की रचना जीवन, प्रेम, करुणा, वेदना, दुःख, दैन्य, धार्मिक, दार्शनिक, देशभक्ति आदि विषयों को लेकर की है। गीति काव्य के विभिन्न लक्षण हैं यथा– संगीतात्मकता, रागात्मक अन्विति, अन्तर्मुखी दृष्टिकोण, तीव्र भावात्मकता, हार्दिकता, प्रवाह आदि। इन लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन से पता चलता है, एकाध स्थानों को छोड़ कवि गीतिकाव्य रचना में सजग है। आवेशमयी मन:स्थिति की उपज ही गेय है। अर्थात् आवेशमयी मन:स्थिति की रचना होने के कारण उसकी अभिव्यक्ति गेय हो उठती है :–

"माँ कमले अब मेरी सुन ले।
नहीं धनिक जैसा है साधन
फिर भी करता हूँ आराधन
बहुत दिनों से हृदय जल रहा इसको ही तू दीप समझ ले।

'अखिलेश' के भक्ति गीतों एवं प्रेम गीतों में संगीतात्मकता अधिक है।

अन्तर्मुखी दृष्टिकोण में गीतिकार की दृष्टि अपेक्षाकृत सीमित, वैयक्तिक और आत्मनिष्ठ होती है। गीति में प्रणेता की आशा-निराशा, क्षोभ, उत्साह आदि का आलेखन होना चाहिए, उसमें स्वानुभूति की प्रमुखता होती है। एक़ सुन्दर उदाहरण लें –

'मन-सिन्धु-सीप का मुक्ताधन
सुधि-सुधा विर्निमित अश्रुराज
यमुना तट पर बन गया ताज।'

गीतिकाव्य का उक्त भावाविष्ट आवेग वास्तविक होना चाहिए, काल्पनिक नहीं। उसके पीछे सहज अन्त:प्रेरणा आवश्यक है, अन्यथा गीत में दोष आ जाएगा। इसलिए उसमें हार्दिक अनुभूति की निश्छल भावना की अभिव्यक्ति होनी चाहिए–

अक्ल नहीं जिसकी चकराती
सन्मुख देख गरीबी-हाथी
जिसे न अपने होने का गम, जिसे न मेरे मरने का गम
मुझे न रुचता ऐसा बालम।

'अखिलेश' के प्रगीतों में गीतिकाव्य की पूरी विशेषताएँ मिलती हैं। इस काव्य में अन्तर्मुखी दृष्टिकोण तथा भावाविष्ट आवेग के साथ भावानुभूति की निश्छलता, रागात्मक अन्विति, भावात्मक ऐक्य, संगीतात्मकता और कुछ अंशों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में प्रवाहमयता के भी दर्शन होते हैं। मनुष्य की भावना जब शिखर पर पहुँचती है तब प्रेम की उत्पति होती है। प्रेम जीवन की मूल भावना है। अत: समस्त विश्व-साहित्य में प्रेम-गीति प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।। कवि गाँधी का अनुयायी है, इसलिए आदर्शवादी है। फिर भी कवि का हृदय मोम के समतुल्य होता है। उनके गीतों में प्रेम की तन्मयता देखते ही बनती है। निम्नलिखित पंक्तियों में कवि अपनी प्रेयसी से कैसी मीठी मनुहार करता है –

फोड़ो मत इस प्रेम घड़े को
बंद करो नित के झगड़े को।

यहाँ 'घड़ा' शब्द कितना व्यंजक और सटीक बैठा है। कवि का प्रेमगीत वासनात्मक नहीं, व्यंग्यात्मक एवं सुधारात्मक है।

इस संग्रह में राष्ट्रीयता प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। उनकी राष्ट्रीय कविताओं में कला के साथ जोश-खरोश की भावना है। उदाहरणार्थ :–

नाश हेतु तम के उद्यत हो, जागा मेरा शुभ्र प्रकाश
जाग रहा है अर्जुन मेरा और कृष्ण का भृकुटि-विलास।

इस पंक्तियों में जोश है। 'जागा' शब्द जोशीला है। इसमें 'अर्जुन' और 'कृष्ण' के प्रयोग से ऐसा लगता है कि पौरुष को निमंत्रण दिया जा रहा है।

इस काव्य में रहस्यपरक गीति भी संकलित है। अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय निवेदन ही रहस्य है। अज्ञात प्रियतम के प्रति स्नेह की तीव्रंता में प्रेमी उस स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ वह अपने प्रेम को अपनापन समझने लगता है तथा अपने स्वाभिमान को खोने लगता है। संयोग नहीं, वियोग ही प्रिय है। यथा -

'विरह टीस दो प्रियतम केवल
हो जाये लोचन-घट रीते
पल-पल मुझे वर्ष सा बीते
तन की भी कुछ रहे न सुध-बुध दुनिया कहे देखकर पागल'।

समूचा गीत-संग्रह इस प्रकार भरा पड़ा है विशेषताओं से। अन्य विषयों का भी उल्लेख और प्रतिपादन जमकर हुआ है। कवि शास्त्री है, संस्कृत के पंडित हैं। शास्त्रीयता की मुहर हर गीतों में लगी है। काव्य की भाषा भी परिमार्जित है। ऐसी कृति का मैं आदर करता हूँ और कवि को भूरिश: साधुवाद प्रस्तुत करता हूँ।

निदेशक, करीमन ओझा बैगनी बालिका उच्चविद्यालय, सहजौली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिलेश के गीत की एक कड़ी

- श्री सत्यनारायण शास्त्री

'अखिलेश' जी के गीत की एक कड़ी है – "युग-युग से मानव प्यासा रे"। मानव-जीवन की यह अमिट प्यास है। यह प्यास आज तक किसी की बुझी नहीं। लगता है जैसे प्यास ही जीवन है। यदि प्यास नहीं रहे तो जीवन भी समाप्त-प्राय हो जाय। प्यास को लेकर ही मानव जी रहा है, जीता जा रहा है। प्यास लालसा है। लालसा यह कि अब उसकी प्यास बुझे, तब उसकी प्यास बुझे। मगर प्यास बुझने के मान का नहीं।

मानव-जीवन के दो भाग हैं - एक भौतिक, दूसरा अध्यात्मिक। भौतिक जीवन जीने वालों के समक्ष बहुत बड़ा झमेला है। भौतिक-जीवन की आकांक्षाएँ अनन्त हैं। एक पूरी होती है कि दूसरी उभर जाती है। अंग्रेजी का एक विद्वान् लिखता है– Man's life is full of desires, unrest and desatis–faction etc.

ऐसी दशा में मानव की प्यास सांसारिक पदार्थों से बुझे तो कैसे बुझे? रहा दूसरा पक्ष आध्यात्मिक। वह भी जैसे अपूर्ण ही है। आध्यात्मिक पक्ष के भक्ति-भाव पर ध्यान देने से पता चलता है कि भक्तों की लालसा ज्यों की त्यों सदैव बनी रहती है।

विद्यापति कहते हैं - 'जन्म-जन्म हम रूप निहारन नैन न तिरपित भेंल।

सूरदास लिखते हैं "अखियाँ हरिदर्शन की प्यासी।"

तुलसीदास का कथन है–"जन्म-जन्म सियराम-पद यह वरदान न आन।"

तात्पर्य यह कि इस प्यास को सदैव बरकरार रखने के लिए भक्तों का भी आग्रह है। जायसी के शब्दों में – "फिर-फिर भूजै-तजै न बारू" की सी जीवन की दशा है।

मानव की इस अमिट प्यास को जीवन में कवि 'अखिलेश' ने सच्चाई के साथ देखा-परखा है। यह उनकी जिन्दगी की निजी अनुभूति है। कवि की अमिट प्यास का जीवन-दर्शन समूचे गीत-संग्रह का मुखौटा है।

ऐसे जीवन पारखी कवि को उसके अभिनन्दन के अवसर पर मैं कोटिशः बधाई देता हूँ और उनके दीर्घजीवी होने की कामना करता हूँ।

सुहागन ज्वेलर्स
गोपाली, चौक, आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, सहृदयता के प्रतीक

— श्री ओम प्रकाश केसरी 'पवनन्दन'

'बड़े भाग मानुस तनु पावा'। श्री रामचरितमानस की यह चौपाई मनुष्य जीवन की पराकाष्ठा को दर्शाती है। भगवान की सृष्टि में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मात्र मनुष्य का जीवन पाना ही बड़भागिता नहीं है, वरन् मनुष्य का जन्म पाकर मनुष्य में मनुष्यता का आ जाना सोने पर सुहागा है।

मनुष्यता की इस कसौटी पर बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, सहृदयता के प्रतीक, परमादरणीय बाबूजी डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' हर कोण से खरे उतरते हैं।

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' मात्र एक व्यक्ति नहीं हैं वरन् एक संस्था हैं। मात्र एक व्यक्ति में विराट् व्यक्तित्व का समावेश, गुणों का भंडार, समाज के लिए समर्पण-भाव, अनेक संस्थाओं का स्तम्भ होना दुर्लभ नहीं तो कठिन अवश्य है।

माँ सरस्वती एवं माँ लक्ष्मी का ऐसा सामंजस्य एकसाथ किसी विरले में ही देखने एवं सुनने को मिलता है, जो डॉ० साहब में है।

पिता की उपेक्षा का शिकार होना, संघर्षों से जूझना, झंझट, बातों को सहना और हर मुसीबत में मर्द होने का अहसास दिलाते रहे। समाज को उनकी मर्दानगी पर निम्न पंक्तियों का जिक्र समीचीन है :–

"मर्द वो जो आँसू का हर कतरा पी ले,
दर्द की टीस को सीने में सी ले।
सहकर गम का हर लमहा-लमहा
जिन्दगी को हँस-हँसकर जी ले।"

डॉ० साहब संघर्ष में भी जीते रहे और उसकी आग में तपकर कुन्दन बनकर अपनी चमक से देश एवं समाज को आज तक नई दिशा प्रदान कर "अकेले चना भाँड नहीं फोड़ता" कहावत को झुठला रहे हैं।

मिलनसार, हँसमुख, आत्मीय व्यक्तित्व, समाज के प्रति समर्पित, साहित्य-साधना के अग्रदूत डॉ० साहब से हमारा परिचय एवं सम्पर्क लगभग पाँच वर्ष पूर्व मुंगेर-यात्रा में तथा विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान प्रदीपिका' के माध्यम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से हुआ। पिता की तरह दुलारने वाले डॉ० साहब की जिह्वापर साक्षात् माँ सरस्वती सदा विराजमान रहती हैं। तभी तो उनसे आशीर्वाद पाकर प्रत्येक व्यक्ति लाभान्वित होता रहता है, यह अपना अनुभव है।

साहित्य-साधना में लगे रहने वाले एवं अनेक संस्थाओं के स्तम्भ डॉ० साहब प्रान्त एवं देश की अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुके हैं।

इसी बलबूते पर आप विदेश की यात्रा कर चुके हैं।

अपनी पुस्तक 'हिन्दुस्तान, हिन्दू, हिन्दुत्व' का विमोचन लंदन में हुआ एवं 'मेरी दृष्टि में' का १९ अप्रैल ९५ को बक्सर में हुआ। आप अनेक पत्रिकाओं के सम्पादन से भी जुड़े हैं।

डॉ० साहब में इतनी विशेषताएँ हैं कि विस्तृत चर्चा की जाए तो पूरा ग्रंथ तैयार हो जाए। लेकिन मात्र संकेत के माध्यम से ही "गागर में सागर" भरने वाली बात यहाँ लिखी जा रही है।

साहित्य-सेवा-समाज-सेवा के साथ-साथ रजिस्टर्ड होमियोपैथिक चिकित्सक के रूप में डॉ० साहब निःशुल्क सेवा करके मानवता की सेवा करने में अग्रणी हैं।

डॉ० साहब जहाँ एक ओर गम्भीर रहते हैं तो दूसरी ओर अपने विनोदी स्वभाव से लोगों को ठहाका लगाने पर भी मजबूर कर देते हैं। यह मेरा उनके साथ अधिवेशनों एवं सम्मेलनों में साथ रहकर देखने का अनुभव है।

आपके सम्बन्ध में जितना भी कुछ लिखा जाय वह कम पड़ेगा, आपके विराट् व्यक्तित्व के सामने बौना ही दिखायी पड़ेगा। फिर लोभ संवरण नहीं हो पाता है।

आपके नाम के प्रथम अक्षर से कुछ पंक्तियाँ निम्न रूप में हैं–

"**डा**ल हैं आप साहित्य-संस्कृति के,
काम - मोह नहीं आपके जीवन में।
लूटाया व्यक्तित्व अपने देश हित,
राकेश सा सदैव माथे पर शोभित।
मन्दिर है आप मनुष्यता के आंगन के,
शालीनता हैं जीवन के हर पल में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्त्रीशिक्षा के लिए रहते हर दम चिंतित,
अक्सर होते वर्तमान माहौल पर व्यथित।
खिलखिलाहट रहती सदा ओठों पर,
लेख्य है आपका जीवन धरती पर।
शतायु से भी अधिक हो आपका जीवन,
'पवननन्दन' का न्योछावर आप पर जीवन।

आप जैसे महान् व्यक्ति का जीवन जो दूसरों की भलाई एवं उत्थान में बीत रहा है ऐसे महामानव के बारे में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

मात्र दो पंक्तियों के द्वारा अपनी लेखनी को विराम दूँगा–

"जीते सभी अपने लिए, कौन जीता दूसरों के लिए,
जीना है उसी का जीना, जो जी सके समाज के लिए।"

प्रधानाचार्य
सरस्वती विद्यामंदिर, बक्सर (बिहार)

'अखिलेश' जी : डुमराँव के सधे साहित्यकार

— डॉ चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल'

मेरा स्थानान्तरण शिक्षक-प्रशिक्षण-महाविद्यालय, सासाराम से शिक्षक-प्रशिक्षण-महाविद्यालय, डुमराँव में १९६५ ई० में व्याख्याता के पद पर हुआ। जब मैंने प्रशिक्षण-महाविद्यालय, डुमराँव में अपना पदभार ग्रहण किया उस समय लगभग तीन महीनों तक डुमराँव की साहित्यिक गतिविधियों से मैं अपरिचित ही रहा।

वहाँ की साहित्यिक गतिविधियों से परिचय कराने वालों में श्री विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, व्याख्याता, प्रशिक्षण विद्यालय, डुमराँव और विश्वनाथप्रसाद 'शैदा' के नामों को मैं अगली पंक्ति में रखूँगा।

उस समय श्री त्रिपाठी जी श्री 'अखिलेश' जी से अधिक प्रभावित थे और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते नहीं थकते। उन्होंने 'अखिलेश' जी से मेरा परिचय कराया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस समय डुमराँव के साहित्यकारों में उनकी गणना अच्छी थी। श्री 'अखिलेश' जी में एक ऐसी आकर्षणशक्ति थी, जिससे तत्कालीन सभी साहित्यकार उनके इर्द-गिर्द मँडराते रहते थे।

यों तो हम लोगों की कवि गोष्ठियाँ हर सप्ताह निर्णीत तिथियों और स्थानों पर होती रहती थीं। या हम यों कहे, हम जहाँ पर दस जुट जाते, वहीं हमारी मधुशाला बन जाती और फिर तो हम लोगों की कविताएँ लयात्मक गीतों में थिरकने लगतीं। किन्तु मुझे आज भी याद है कि इन स्वर-लहरियों के केन्द्रबिन्दु श्री 'अखिलेश' जी ही थे।

मुझे याद है एक दिन कवि-गोष्ठी का आयोजन श्री 'अखिलेश' जी के आवास पर भी हुआ था। और उस गोष्ठी में तत्कालीन डुमराँव के सभी कवियों ने भाग लिया था शायद। उस दिन मैं अपनी कोई भी कविता नहीं सुना सका, क्योंकि मैं कुछ अस्वस्थ था।

उन दिनों मेरे अन्दर किसी भी कवि गोष्ठी में जाने के लिए ललक रहती थी, किन्तु आज के इस दोषपूर्ण माहौल में वह ललक मेरे मन से सिमटती जा रही है। आज के मंचों पर अपने को ही सबसे बड़ा गिनाने की प्रवृत्ति, अहंकार में साहित्यकारों को उचित सम्मान नहीं देने की प्रवृत्ति, कभी-कभार मंचों पर के झगड़े आदि कल के साहित्यकारों के लिए अवमानना सी महसूस होती है। ये प्रवृत्तियाँ श्री 'अखिलेश' जी में न पहले थीं और न आज हैं। मैं महसूस करता हूँ कि श्री 'अखिलेश' ऐसे सहिष्णु, कर्मठ और प्रभावकारी व्यक्तित्व वाले कम ही साहित्यकार होंगे।

अपनी एक रचना पर भी कोई साहित्यकार अमरत्व को प्राप्त कर सकता है क्यों कि वह रचना नहीं वरन् उसमें उसका व्यक्तित्व अपनी गंभीरता, सहिष्णुता और लोचदारी के साथ झाँकता रहता है। श्री 'अखिलेश' जी की रचनायें कम हैं, किन्तु व्यक्तित्व की ओजस्विता और लालित्य के साथ।

मुझे वह दिन भी याद है जब कि एक गोष्ठी में हम साहित्यकारों ने डुमराँव से डुमराँव के साहित्यकारों की छवि को उद्दीप्त करने के लिए डुमराँव क्षेत्र के कवियों की रचनाओं का एक कविता-संग्रह निकालने का प्रस्ताव गोष्ठी में रखा। उस समय भी इस काव्य-संग्रह में श्री 'अखिलेश' जी का योगदान सराहनीय था या यों कहें कि इस संग्रह के प्रकाशन में भी श्री 'अखिलेश' जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केन्द्र-बिन्दु बने रहे। कभी-कभी तो ऐसा महसूस होता था कि उनके बिना यह संग्रह प्रकाशित ही नहीं होगा।

अब यह प्रश्न उठा कि विभिन्न कवियों के कविता-संग्रह का नाम क्या रखा जाय। बहुत माथा-पच्ची के बाद पुस्तक का नामकरण भी श्री -अखिलेश' जी की देन है और उस का नामकरण हुआ 'नवरत्न'।

तब और आज भी उस नामकरण के उदेश्य रहे हैं। पहला यह कि राजा भोज के किले का नाम भी नवरत्न है, जो इस के नामकरण में आभासित होता रहेगा और दूसरा यह कि इस पुस्तक में नौ कवियों की कवितायें संग्रहीत हैं।

यह पुस्तक वाराणसी में छपी, जिसका सम्पादन श्री अम्बिकादत्त त्रिपाठी 'व्यास' ने किया है। इस पुस्तक-प्रकाशन में भी 'अखिलेश' जी का कम योगदान नहीं रहा।

मेरा कहने का तात्पर्य है कि डुमराँव की साहित्यिक गतिविधियों में श्री 'अखिलेश' जी का जितना पहले हाथ था, शायद उतना हाथ किसी का नहीं रहा है और आज भी उनकी रचनाओं की गरिमा कम नहीं हुई है। अगर उनके व्यक्तित्व की परख करनी है तो सिर्फ 'नवरत्न' में प्रकाशित उनकी कविताओं को पढ़ें और समझें कि 'अखिलेश' जी क्या थे और क्या हैं। उनसे सम्बन्धित एक घटना मेरे दिमाग में आज भी खट-खटा रही है।

मेरा "अर्जुन" नामक उपन्यास श्री शिवजी पाठक के प्रेस में छप रहा था। यह घटना आज से लगभग १० वर्षों पहले की है। मैं गाड़ी से उतरा और पैदल ही श्री शिवजी पाठक के बाबा-प्रेस की ओर चल पड़ा। मैं कुछ सोचते हुए आगे बढ़ रहा था। कड़वी गाँव से कुछ इधर ही एक कार रुकी और उस कार में से आवाज आई, "आप कौन, पाण्डेय कमलजी?"

मैं अचम्भे में पड़ गया कि उस अनजान कार से मुझे कौन पुकार रहा है! मैंने गौर से झाँका कर उस चेहरे पर अपनी पैनी दृष्टि गड़ाई और तब धीरे से मेरे मस्तिष्क में पुरानी यादगारी उभड़ने लगी। मैंने हँसते हुए कहा– "कौन, अखिलेश जी?"

"हाँ, हाँ, मैं अखिलेश ही हूँ। आपको कहाँ जाना है?"

"बाबा प्रेस में।"

"तो मेरी गाड़ी में बैठिये, मैं आपको वहाँ पर छोड़ कर आगे बढ़ जाऊँगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे नकारने पर भी उन्होंने मुझे गाड़ी पर बैठा ही लिया। गाड़ी की अल्प समय की दौड़ में कुछ साहित्यिक, कुछ व्यक्तिगत और कुछ सामाजिक चर्चायें हुईं। चर्चाओं को संक्षिप्त करने में हम लोग लगे ही थे कि उनकी गाड़ी प्रेस पहुँच गई। हम दोनों ने एक दूसरे को प्रणाम किया और पुनः गन्तव्य स्थान के लिए हम दोनों रवाना हो गये।

उस दिन की आत्मीयता ने मुझे यह कहने के लिए विवश कर दिया कि ये कालूराम अखिलेश नहीं, वरन् अखिलेश भाई हैं, जवारी भाई।

'मैंने सुना है, आपने साहित्यकारों को पुरस्कृत करने के लिए किसी ट्रस्ट की स्थापना भी की है। यह कम सौभाग्य की बात नहीं। मेरी शुभकामना है कि अखिंलेश भाई की प्रतिभा और सहयोग की भावना उत्तरोत्तर बढ़ती रहे।

विश्वामित्र मार्केट, बाई पास रोड
कोइरपुरवा, बक्सर (बिहार)

अभिनंदन

— श्री किशोरचन्द्र सरकार

पूजा-सम्मान-स्नेह और सेवायें अर्पित करना भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा का विषय रहा है। किसी के यहाँ दो-चार देवता होंगे, दस-बीस देवदूत होंगे पर यहाँ के आध्यात्मिक इतिहास में हमारे शरीर में जितने रोम-कूप हैं उतने देवताओं की कल्पना की गयी और पूजन किया गया है। अर्थात् तैंतीस करोड़।

जहाँ भी संवेदनायें हैं – सासें हैं। वे सभी शक्ति से संचालित होकर शक्ति के अंश हैं और "शक्ति" ईश्वरीय सत्ता का ही दूसरा नाम है। अत: सब को ईश्वर भाव में पूजा करना, सम्मान करना, स्नेह देना एवं सेवा करना ही हमारे सनातन धर्म की शिक्षा रही हैं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस से किसी भक्त ने पूछा– "केशव सेन" जी के यहाँ (जो उस समय के समाज सुधारक एवं एक धार्मिक इकाई माने जाते थे उनकी भी उस समय बड़ी ख्याति थी ज्ञानियों के रूप में) क्यों बड़ी भीड़ रहती है। रामकृष्ण जी ने कहा – क्योंकि वहाँ ईश्वर विशेष शक्ति के साथ प्रगट हो रहा है। देखते नहीं कहीं कम प्रकाश होता है कही ज्यादा प्रकाश। उसका तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब जगह ही है। परन्तु जहाँ ज्यादा प्रकाश रहता है वहाँ ज्यादा लोग रहते हैं– प्रकाश का अर्थ गुणों के प्रकाश से है, जो व्यक्ति जितना ही गुणी होता है लोग उतना ही उसका आदर करते हैं, उनके समीप रहते हैं जिससे "जो गंधी कुछ नहीं तो ऊबास सुबास" प्रतिभावान, गुणी या ईश्वरीय सत्ता से सम्पन्न संतों का सान्निध्य सदा आनंददायक एवं कल्याणकारी ही होता है

अर्थात् गुणी लोगों का संग करना एवं उन्हें सम्मान देना लोक धर्म है कवि-लेखक-देशभक्त-कलाकार राष्ट्रहित के लिए ही जीते हैं। "परमारथ के कारणे, साधुन धरा शरीर" समाज के सच्चे प्रहरी होते हैं समाज की वर्तमान स्थिति से अपनी रचनाओं द्वारा समाज के सुधीजनों को अवगत कराते हुये निःस्वार्थ भाव से जनों का मनोरंजन करते हुये भविष्य के लिए उचित-निर्देश देना और देते रहना ही उनका उद्देश्य होता है, पर हम हैं कि उन्हें विदूषक के अतिरिक्त और कुछ मानते ही नहीं, मात्र अपना सस्ता मनोरंजन उनसे करके उन्हें भूल जाते हैं। ऐसा सर्वथा अनुचित है।

हम उन्हें कुछ भी न दें। क्योंकि वे इतने निःस्वार्थी होते हैं कि किसी से कुछ चाहते भी नहीं, मगर कम से कम उन्हें अपना दुलार देना, उन्हें समय-समय पर सम्मानित करना चाहिये। इससे लेखक के द्वारा दिये गये कल्याणकारी साहित्य के ऋण से मुक्ति पाते हैं हम, यह एक मानव-धर्म है।

इसी सन्दर्भ में पूज्य श्री महेश्वराचार्य जी की ओर से यह प्रस्ताव सुनकर कि "श्री कालूराम जी शास्त्री 'अखिलेश' के लिए एक अभिनंदन ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना है, मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मै आभारी हूँ कि दो शब्द मुझे भी लिखने को कहा गया और मैंने अपने बड़े भाई श्री अखिलेश जी के सम्पर्क में रह कर जो कुछ देखा है, पाया है उसे यथा मति प्रगट करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

डुमराँव का साहित्य–दीप वैसे तो ज्यों-त्यों कर जलता ही रहा है परन्तु १९६८ में जब सर्वश्री अम्बिकादत्त त्रिपाठी 'व्यास' जी के सम्पादन में "नवरत्न" एक काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ, डुमराँव के चुने हुये नौ साहित्यकारों एवं कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन जब एकसाथ प्रकाशित हुआ, जिसमें श्री कालूराम जी भी थे, तब से हमारा परिचय हुआ और सच पूछिये तो पहचान की वह पहली मुहर लगी, जिसे डुमराँव के साहित्य की एक ऐतिहासिक घटना कही जा सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नवरत्न" से सर्वश्री अखिलेश जी का परिचय एक कवि के रूप में ही नहीं - जो कृष्ण-कृष्णा, "वंशी शतक तथा "सिंह-शावक" लिख चुके थे तथा संसार, आज, आर्यावर्त, विश्वामित्र एवं कृषक में आप छपते रहे हैं बल्कि अपने परिश्रम के बल पर जमीन से उठकर आसमान छूने वाले सरस्वती पुत्र ही नहीं, लक्ष्मीपुत्र के रूप में भी परिचय मिला है। इतना ही नहीं, बाघ मारने वाले बहादुर के रूप में भी परिचय मिला है।

मेरी दृष्टि में आप बुढापे में भी जवान हैं शरीर से ही नहीं दिल से भी। चैलेंज को स्वीकार करने में इन्हें देर नहीं लगती और बखूबी आपने सदैव उन पर विजय भी प्राप्त किया है। अभी आपका परिचय यहीं नहीं समाप्त हो जाता। आप एक कुशल सिद्धहस्त चित्रकार हैं। इस उम्र में कानून की परीक्षा दे रहे हैं जानकर तो मैं हतप्रभ ही रह गया।

आप अन्याय नहीं बर्दाश्त कर सकते। बिना वजह किसी के सामने झुकना भी नहीं जानते। इसके कारण कुछ लोग इन्हें अहंकारी मानते हैं पर मैं तो इनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण मानता हूँ। अभी हाल में "हिन्दू-हिन्दुत्व और हिन्दुस्तान" गद्य और "मेरी दृष्टि में" शीर्षक से एक कविता पुस्तक प्रकाश में आयी है। दोनों रचनायें निर्विवाद प्रशंसनीय हैं किसी कवि ने कहा —

"जीवन विशषताओं में है साधारणता का कहाँ मान।
जीवन है सागर का गर्जन जीवन सरिता का नहीं गान।।

और जिनके पास समाज को देने के लिए इतनी सारी विशेषतायें भरी हों - क्या हमारा दायित्व नहीं बनता कि इस प्रतिभावान पितामह की इस मिट्टी के लाल की अभ्यर्थना करें? अभिनंदन करें?

आइये! मिट्टी के इस गौरव के सपूत का हम शत शत हार्दिक अभिनंदन करें और इनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को भी धन्य बनायें।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अखिलेश' व्यक्तित्व, कृतित्व

— स्वामी फंदोतीर्णानंद पुरी

भोजपुर की धरती रत्नगर्भा है। प्राचीन ग्रंथों में भी राजा भोज के दरबार में नवरत्नों की कहानियाँ मिलती हैं। आज भी भोजपुर के "नवरत्न" के भग्नावशेष विराजमान हैं। कहा जाता है कि राजा भोज विद्वानों का आदर करता था और उन्हें अपने राज्य में आश्रय देता था। इसी भोजपुर से सटे तत्कालीन शाहाबाद और अब के बक्सर जिले के डुमराँव नामक स्थान में बाबू कालूराम का जन्म एक सुसंस्कृत वैश्य परिवार में हुआ जहाँ इनकी साहित्यिक चेतना के विकास का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ।

उस समय भी डुमराँव उज्जैनवंशीय राजाओं का गढ़ था और विद्वानों की संगति में रहने का अखिलेश जी को अवसर मिला। जहाँ से शुरू हुई इनकी साहित्य साधना की यात्रा। कुलीन परिवार में जन्म के कारण साधनों से भरपूर तो थे ही, विद्वानों के साथ ने सोने में सुहागा का काम किया और इनकी रचनायें देश के विभिन्न नामी-गरामी पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगी और साहित्य-साधना की अनवरत धारा माँ भारती के भंडार को परिपूरित करने लगी।

स्वर्गीय डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' यहीं प्रयाग संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक थे जिनकी रचनायें 'आज' में छपती थीं। स्वर्गीय शैदा एवं सत्यनारायण सौरभ जैसे विद्वानों की मंडली उस जमाने में डुमराँव में विराजमान थी और डॉ० कालूराम जी मंडली के रत्नों में एक रहे। आत्म चिन्तन मनन, स्वाध्याय के अवसर और साहित्यिकों का साथ अखिलेश को गौरव गरिमा पूर्ण स्थान दिलाने में समर्थ हुआ है।

'प्रणयी' जी ने ४५ वर्ष पहले एक बार अपने पत्र में लिखा था। "डॉ० कालूराम जी अखिलेश हिन्दी साहित्य के एक मननशील विद्वान् एवं कवि हैं। डॉ० केदारनाथ मिश्र "प्रभात" को डुमराँव में भ्रमण के दौरान एक ही वस्तु मिली थी और वे थे कालूराम जी। अंग्रेजी राज में डुमराँव क्रान्तिकारियों का गढ़ रहा है (चुटुर राय, कुमारी तिवारी, शिवप्रसाद मिश्र जैसे स्वतंत्रता के दीवाने इसी डुमराँव में पैदा हुए)। क्रान्ति के दौरान अखिलेश जी भी अछूते नहीं रहे और स्वराज के स्वर्णिम सपने आँखों में तैरते रहे। देश आजाद हुआ। आजादी तो मिली लेकिन देश को सही आजादी मयस्सर नहीं हुई। रक्षक ही भक्षक हो गये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसे देखकर अखिलेश जी का हृदय विदीर्ण हो गया और यह मुक्तक फूट पड़ा-

सींच सींच सेवा हुई नित्य सवेरे शाम
कलमें बढ़ तरुवर हुईं फले डाल पर आम।
किन्तु जीभ की आँख ने देखा असली रूप
मिली धतूरे पर चढ़ी उसे आम की चाम।

अखिलेश जी की पहुँच गरीबों की झोपड़ियों तक है। गरीबी को इन्होंने नजदीक से देखा है। फटे, गन्दे, मैले वस्त्रों में लिपटे गरीब, असहाय बच्चे, बूढ़ों, जवानों के मुँह में अपने हाथों से दवा डाली है। अन्न-वस्त्र की मदद की है अतः गरीबी से इनका सावका है और सरकार के गरीबी मिटाने के खोखले दावों पर इनका कतई विश्वास नहीं है। इन दावों की घोषणा पर कवि हृदय के ये उद्गार मुक्तक के रूप में आते हैं –

पक्के मकान कच्चे हो नहीं सकते,
पके हुए पकवान कच्चे हो नहीं सकते।
वस्तुओं के दाम भी जवान हुए हैं,
ये जवान बच्चे हो नहीं सकते।।

अंग्रेजी राज में अखिलेश जी ने क्रान्तिकारियों को देखा है, शरण दी है रक्षा की है। "शहीदों की टोली निकली सिर पर "बाँधे कफनवा" और "अपना बलकवा के सतुआ दुलम भइले कुकुरा के दुधवा पियावे रे ओटरवा" गीत गाते हुए नेताओं को देखा है। आजादी के बाद इन नेताओं की हालत देख अखिलेश जी का क्रान्तिकारी मन वैसे ही लोगों को तलाशता है किन्तु किसी को नहीं पाता और आँखें पथरा जाती हैं और हृदय रो उठता है तथा कवि अपने भाव को निम्न के रूप में उभरता है –

मौसम है बरसाती फिर भी क्यों होती बरसात नहीं,
नभ के आँगन में सूरज है फिर भी दिखता क्यों प्रात नहीं
वे दिन भी थे सागर में जब लाखों थे जल जात खिले
आज ढूँढ़ने पर क्यों इसमें साथी मिलता जलजात नहीं"

अखिलेश जी ने जिन्दगी का उतार-चढ़ाव देखा है। बचपन के सुनहले दिन, जवानी की रंगीन रातें, प्रौढ़ावस्था के सुनहले सपने और अब सामने खड़ी है बुढ़ापे की तस्वीर 'उधो मन नाही दस बीस"। मन अभी वैसा ही है। मन पंछी उड़ कर अतीत की ओर जाता है किन्तु वहाँ अब वीरानी ही मिलती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बच्चे जवान हैं पहचानते नहीं, जवान बूढे हो गये, और बूढे मर गये। कितने जाने अनजाने हो गये। कवि हृदय एक बार फिर हाहाकार कर उठता है और इस मुक्तक की रचना कवि हृदय से होती है–

कितने फागुन बीत गये फागुन की मस्ती मिली नहीं,
लहरों से लड़ रही जिन्दगी अबतक कश्ती मिली नहीं।
ढूँढ़-ढूँढ़ कर हार गया मैं दौड़ धूप सब व्यर्थ हुई।
हर पथ पर शूल मिले मुझको फूलों की बस्ती मिली नहीं।

अखिलेश जी की लेखनी में दम है, पकड़ है, रवानी है ओज है, विशिष्टता है और है जिन्दगी का सूक्ष्म निरीक्षण। हम भोजपुर के इस वयोवृद्ध साहित्यकार का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि डॉ० कालूराम शास्त्री अखिलेश जी अपनी सेवा से हिन्दी का भंडार भरते रहें और शतायु हों।

अद्वैत आश्रम
रामडिहरा (रोहतास)

'अखिलेश' की भोजपुरी कविता

- श्री विजयानंद तिवारी, सं० 'जगरम' (भोजपुरी)

कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जी भोजपुरी जनपद के एगो चर्चित साहित्यिक विभूति बानीं। हिन्दी कविता-गीत में उहाँ के अवदान त बड़ले बा, भोजपुरी माटी के निछाछ गंध-रस-रूप ले ले उहाँ के भोजपुरी कविता संख्या में कम, बाकिर गुण में बेजोड़ बाड़ी स।

भोजपुरी के अमर सपूत बीर कुँवरसिंह पर अनेक साहित्यकार लोग आपन कलम चलवले बा। स्व० राकेश जी, चन्द्रशेखर मिश्रजी, कमला प्र० मिश्र, 'विप्र' जी आदि कवियन के काव्य में वीरवर कुँवरसिंह के व्यक्तित्व उजागर भइल बा। कालूराम जी पाछा काहें रहवि? डुमराँव त जगदीशपुर के सबसे नगीच के पड़ोसी बा! कालूराम जी के प्रवाहमय छंद देखीं –

गौरव के मेहराइल अगिया
र वा जगा दिहलीं कण कण में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश-प्रेम के पावन गंगा
र् वा बहा दिहलीं जीवन में।
आ रहल इयाद बा अबहीं तक
अइसन राउर ललकार रहे
मुरदा उठि के प्रिय स्वदेश हित
रण में भाँजत तलवार रहे।

बाबू कुँवर सिंह के बहादुरी भरल जीवन के ओजपूर्ण शब्दन में वर्णन भइल बा एह कविता में।

मारवाड़ से भोजपुरी क्षेत्र में पधारल श्री कालूराम जी का अन्दर भोजपुरी बोली से अगाध प्रेम बा। एगो गीत में एकर बानबी देखीं –

"भोजपुरिया बोली बोलि बोलि
सरगे से जब एहिजा अइली
किंहुक किंहुक के हम चिचिअइलीं
हंसि हंसि फूलन के शरमइलीं
मंगली चन्दा तितली मंगलीं
आपन बात बुझवलीं बुझनी
मिसरी अइसन रस घोलि घोलि
भोजपुरिया बोली बोलि बोलि।"

भोजपुरी भाषा का बारे में एगो बड़ा प्रेरक पद कालूराम जी कहेलीं–

"भोजपुरिया भाषा हमनी के मधुर प्राण बा श्वांस बा
चन्दा मामा के एकरा में गारल गइल मिठास बा।"

निश्चह ही ई ऊ चन्दा मामा न हवे जिनका पर आर्मस्ट्रांग आ अउर अन्तरीक्ष यात्री पांव रोपले आ धूसर माटी उठा ले अइले। ई चन्दा मामा त भारतीय साहित्य में आ जन-जीवन में रचल-बसल उ मिथक ह जवना में शीतलता बा, अमृत रस बा। ओह रस के गारल जा सकेला। कोइनाइल लइकन के मनावे खातिर जेकरा के आरे-बारे, नदी का किनारे आ बबुआ का कटोरी में भी बोलावल जा सकेला।

चालीस बरिस पहिले बक्सर से प्रकाशित 'कृषक' अखबार में कालूराम जी के "भोजपुरिया माटी" शीर्षक कविता प्रकाशित भइल रहे। ओइमें भोजपुरी माटी के गौरव गान सरस-प्रवाह भाषा में परोसल गइल बा–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई माटी भारत गौरव धन
ई माटी सुन्दर नंदन बन
ई माटी कस्तूरी चंदन
ई माटी काशी बृन्दावन
ई माटी में शस्त्र-शास्त्र के
सबसे नीमन भरल ज्ञान बा।
सरगो के माटी ले नीमन
ई माटी पावन महान बा।

भोजपुरी भाषा में गोस्वामी तुलसीदास पर रचल कालूराम जी के कविता भाव आ शिल्प दूनों दृष्टि से बेजोड़ किया। कुछ पंक्तियाँ देखीं –

प्रकट भइल रामायन के रवि खिलल प्रेम के कमल महान।
भक्ति भाव के उड़ल महकिया मह मह महकल सकल जहान ॥

'जगरम' प्रेस
बक्सर (बिहार)

'अखिलेश' के गीत

- श्री महेन्द्र पाण्डेय

कालूराम 'अखिलेश' का 'मेरी दृष्टि में' कविताओं, गीतों एवं मुक्तकों का संकलन किसी खास विधा का संकलन के रूप में नहीं देखा जा सकता किन्तु अधिक संख्या में गीतों के संकलित होने के कारण मूलत: मैं इसे गीत संकलन ही कहूँगा। यद्यपि कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' की तरफ से इसे 'संकलन' तक लिखने का कोई प्रयास नहीं है पर है यह मूलत: गीत संकलन ही।

कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' का यह संग्रह जो उन्हें बहुत नजदीक से जानते हैं उनके लिए या जो इस संकलन पर गहराई से अन्दर प्रवेश करते हैं उन्हें उनके आद्योपान्त जीवन की संघर्ष गाथा के रूप में दिखाई पड़ता है।

इस बहुआयामी व्यक्तित्व का जीवन कटनी से प्रारंभ होकर उनकी कर्मभूमि डुमराँव में प्रवेश करता है। कवि कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जब अपने पैतृक गृह से किसी कारणवश चले तो लक्ष्मी उनसे रुष्ट थीं और सरस्वती का यह पुजारी अपनी काव्य प्रतिभा के सहारे डुमराँव जैसी एक छोटी जगह में जीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संघर्ष में रत हुआ। इस कर्मभूमि पर वे अत्यन्त संघर्षशील रहे हैं।

'अखिलेश' के गीतों में निराशा की अनुभूति और ईश्वरवादी होने के कारण प्रार्थना के स्वर हैं। निराशा, आशा, संघर्ष और प्रार्थना के स्वर उनके गीतों में भरे पड़े हैं। प्रारंभ में ही गीतकार कवि अपनी साधना को सफल करने की प्रार्थना करता है भले ही यह साधना उनको कर्म से प्राप्त होती है। संग्रह के कई गीतों के आधार पर हम उन्हें ईश्वरवादी एवं यथार्थ दृष्टा कह सकते हैं पर उनके विविध गीतों में कई गीत ऐसे हैं जिनका मूल्यांकन आज के संदर्भ में करने योग्य है।

उनके गीतों में एक खास बात यह है कि वे संवेदनात्मक तत्त्व से भरे हुए हैं और इस संवेदना के साथ संघर्ष का स्वर भी मुखर है। संवेदनात्मक संघर्ष कालूराम शास्त्री के गीतों में भरे पड़े हैं। उनके गीतों की यह खास विशेषता है- उदाहरणस्वरूप इन गीतों को देखा जा सकता है मैंने देखा चन्दा जी भर' जीवन नौका बही जा रही 'बादल में लुक छिप चाँद चला' मेरे प्राणों के दीपक जल' बरसो हे नभ के श्याम घन' इत्यादि इन गीतों में प्रसाद-सा सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। गीतकार इन गीतों में कभी जीवन को खोता है तो कभी जीवन को पाता है, कभी तूफानों से लड़ता है तो कभी हार कर भी संघर्ष को सबल बनाने में जुट जाता है। ये कविताएँ आत्मनिमंत्रण देती हुई दिखती हैं जिससे पाठक उनकी संवेदनायुक्त संघर्ष में शामिल हो जाता है।

इन गीतों में कुछ राष्ट्रीय चेतनायुक्त गीत भी शामिल हैं। यह इन गीतों का एक दूसरा पक्ष है। राष्ट्रीय चेतना रचनात्मक संवेग उनके गीतों में व्यंजित होता है।

गाँधी जी के प्रति आस्था रखने वाले 'अखिलेश' गाँधी के ही लोगों द्वारा उनकी हत्या की साजिश को धिक्कारते हैं, और गोडसे से पश्चात्ताप कराते हैं। यही नहीं, महात्मा गाँधी की मृत्यु के बाद आजादी का सूरज जो निकला उसे वे सही सूरज नहीं मानते। उन्हें वह सूरज लाल किले में कैद दिखाई पड़ता है। आजादी जो मिली वह सच्ची आजादी नहीं थी और भारत में स्वार्थ, भ्रष्टाचार-वृद्धि ने गरीबों का हक मारकर इस देश में आनेवाले सूर्योदय को अंधकार से भर दिया है। गाँधी के रामराज्य की कल्पना उनकी मृत्यु के साथ ही रावणराज्य में तब्दील हो गयी है। भारत के नौनिहाल अपनी तंगो तबाही अपने कातर नेत्रों से देखते रह गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजादी परोक्ष रूप से पुनः सामंतों के घर चली गयी और देश की जनता गरीबी में जीने के लिए अभिशप्त है। छल-प्रपंच से लोगों को ऐसा छला गया कि देश की स्थिति बद से बदतर हो गयी। इन भावों की अभिव्यक्ति आप– "आजादी का सूर्य कैद है लाल किले के आँगन में" इस गीत में देख सकते हैं। पुनः इन्हीं भावों की व्यंजना "अपने ही इस गीत में दिखाई पड़ती है। वे स्वीकार करते हैं कि व्यक्ति को अपनी करनी के फलों का ही भुक्तभोगी होना पड़ता है और वह इस जनता के राज में जनता के शासकों द्वारा जनता को गुलाम बना देने की जो साजिश की गयी उसका खुलासा करते हैं। जनतंत्र की सारी हरियाली सूख चली है और आजादी की नाव में जो छिद्र पहले ही हो चुका था, अब बढ़ता चला जा रहा है।

यही अभिव्यक्ति 'यह कैसा मधुमास रे' से संज्ञापित होती है। राष्ट्रीय चेतना के स्तर पर कालूराम 'अखिलेश' ने जो लिखा वह अपने आप में एक अच्छा प्रयास है– "इस वीणा के तार न छेड़ो इसमें आग मचलती है" में कालूराम की आँखें लोकतंत्र की दुर्दशा पर झुक जाती हैं और वे कुछ इससे भी आगे बढ़कर आक्रोश की ज्वाला भड़काते हुए अपनी तलवार खींचे हुए नजर आते हैं। वे दिल्ली को अपनी हुंकार द्वारा कँपा और पिघला देना चाहते हैं। इस हुंकार में अपनी हुंकार न हो बल्कि पूरे देश का हुंकार उभर कर सामने आता है।

कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' ने अपनी प्रतिभा की कूँची हर रंगों में रँगी। कभी वे एक कवि पति को पत्नी की सलाह में पत्नी द्वारा कवि को दुत्कार दिलवाते हैं कि सिर्फ कविताएँ रोजी-रोटी नहीं बन सकतीं। प्रशंसा के मधुर स्वर खाली पेट नहीं भर सकते। कर्मठ हाथों से जमीन की जुताई भी करनी हैं ताकि कर्म का फल लहलहाये। केवल कविता दलदल से तो उत्तरदायित्व हीनता का कलंकित कमल ही खिल सकता है। जो व्यक्ति दोनों में सामंजस्य बैठा कर चलते हैं वे ही सफल कवि हैं।

जीवन संघर्ष एक रंग 'मेरी बात सुनो हे रानी' में भी दिखाई पड़ता है। यहाँ कवि व्यक्ति से समष्टि की वैचारिक धरातल पर आते हुए अपनी पत्नी से कहता है– मैं जीवन की इस फटी तिलंगी को साट रहा हूँ और तुम हो कि खींचातानी में लगी हो। खींचातानी से जीवन और समाज की बात बिगड़ जाती है। इसलिए इस प्रेम घड़े को फोड़ने का प्रयास मत करो और अन्त में पत्नी से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रहसन के अंदाज में कहते हैं कि यदि मै कुबड़ा हूँ तो तुम भी कानी हो अर्थात गलतियाँ दोनों में हैं, कमियाँ दोनों में हैं, बुद्धिमान सामंजस्य बैठाकर चलते हैं। और सफल होते हैं। "खोल नयन मन युग बदला रे' लिखने वाले अखिलेश को जब आजादी की आशाएँ, आकांक्षाएँ फलीभूत होती नहीं दिखीं तो उन पर क्या गुजरी होगी।

स्वतंत्रता का दूध सब मिल गया पानी में
लिखा यह जायेगा इतिहास में, कहानी में

कालूराम 'अखिलेश' उपरोक्त रचना में वर्तमान की अर्थ लोलुपता पर कड़ा प्रहार करते हैं।

कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' ने कविताओं में कुछ मौलिक बिंबों की रचना की है–

अहिरिन ने भरी नदिया
दही की दी पटक नभ पर
गये बन चाँद ओ तारे
सभी छीटें बिखर जमकर

इन पंक्तियों में दही की नदिया को नभ पर ऐसे पटका गया कि दही के छीटों ने आकाश में चाँद और तारों की रचना की। इसी तरह कुछ स्थानों पर कालूराम ने अपने मौलिक बिंब दिये हैं जो कि गीत पुराने शिल्प में है। आज के गीतों का शिल्प एवं बिंब विधान उनमें हैं वे गीतों को सपाट स्पष्ट अभिधा[1] शैली में लिखते हैं जब कि आज क गीत-व्यंजना मूलक होते हैं।

इस संकलन में कुछ कविताएँ भी हैं और मुक्तक भी वे कविताएँ कम बयान ज्यादा हैं पुराने शिल्प में भी छन्दों के मामले में उनपर प्रसाद, पंत एवं दिनकर हावी लगते हैं और कुल मिलाकर इन विविध रंगों में कवि का अपना व्यक्तित्व संदर्भ छूटा नहीं। वह पत्नी के साथ भी है और समाज के साथ भी उसी सहृदयता से दिखाई पड़ता है। वे कभी पर्व-त्योहारों और अनेक उत्सवों में शामिल दिखाई पड़ते हैं तो कभी मौसम, किसानों, चाँद और बादलों के साथ दिखाई पड़ते हैं। यहाँ तक कि जीवन की उठान से लेकर जीवन की ढलान तक कालूराम व्यापक फलक पर फैले नजर आते हैं।

१. "चान्द मिल गया मुझे चान्दनी मिली नहीं" यह गीत व्यंजनामूलक है इसके अतिरिक्त और गीत भी व्यंजनामूलक है– सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह वैचारिक संघर्ष-यात्रा संग्रह के अन्तिम गीत में यह कहती हुई समाप्त होती है कि –

चाँद मिल गया हमें, चाँदनी मिली नहीं
क्षुब्ध राष्ट्र सिन्धु है कुमुदनी खिली नहीं

♦

अभिनन्दन - वन्दन

श्री पद्मराज कुमार जैन

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' से मेरा परिचय नया नहीं है। वे डुमराँव के प्राचीन वासी हैं और आरा वे प्रारम्भ से ही आया-जाया करते हैं। डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के वे मित्र हैं। 'प्रणयी' जी पहले डुमराँव के संस्कृत विद्यालय में शिक्षक थे। अखिलेशजी की अभिरुचि संस्कृत में विशेष रूप से थी। अत: वे दोनों मित्र बन गए थे।

जैसा कि मैंने सुना है कि बाद में प्रणयी जी आरा जैन कॉलेज में प्रोफेसर हो गए। कालूराम जी उनसे मिलने बार-बार आया करते थे। प्रणयीजी का चुनाव कॉलेज में डा० नेमिचन्द शास्त्री के अभिमत से हुआ था। अत: कालूरामजी का भी लगाव शास्त्री जी से हो गया। उनकी संस्कृत अभिरुचि देखकर शास्त्री जी ने संस्कृत की परीक्षा देने की राय दी। फलत: वे शास्त्री परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए।

आरा में महावीर जयन्ती प्रत्येक वर्ष मनाई जाती रही है। उस जयन्ती में सभी विद्वान् लोग भाग लेते थे। कॉलेज के सभी प्रोफेसर उस जयन्ती में सहयोग देते थे। अत: कालूराम जी भी प्रत्येक वर्ष जयन्ती में भाग लेने आते थे। मैं उनसे बराबर मिला करता था। मुझे भी बराबर प्यार देते थे। इस प्रकार वे मुझसे काफी दिनों से परिचित हैं। बीच में थोड़ा समय सम्पर्क नहीं रह सका था पर 'आरण्य ज्योति' पाक्षिक के प्रकाशन के साथ ही हमारी घनिष्ठता पुन: बढ़ गई। जब भी वे आरा आते हैं मुझे नहीं भूलते, स्वयं मिलने चले आते हैं।

संस्कृत के तो एक जाने-माने विद्वान् हैं हीं, हिन्दी के भी वे समर्थ लेखक सिद्ध हो चुके हैं। आरा से निकलने वाला "कलश" उन्हीं की देन है। प्रणयीजी उसके सम्पादक थे और अखिलेशजी सहायक सम्पादक थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिलेश जी की अनेक रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी है । समय समय पर वे हिन्दी में गीत लिखा करते थे। उन्हीं गीतों का एक संकलन अभी हाल में प्रकाशित हुआ है – "मेरी दृष्टि में।"

"मेरी दृष्टि में" के अनेक विषय हैं और उन सभी विषयों पर अखिलेश जी की विधिवत कलम चली है। उन गीतों पर जो उनके विचार हैं वे सर्वथा स्वतन्त्र हैं। हो सकता है दूसरों की दृष्टि में दूसरे विचार हों।

हिन्दी के सिवा भोजपुरी की भी सेवा अखिलेश जी ने की है। भोजपुरी में वे अच्छी कविता लिख लेते हैं। अखिलेश जी गीत और मुक्तक लिखने के अभ्यासी हैं। उनके मुक्तक चोट करने वाले होते हैं।

तात्पर्य यह कि अखिलेश जी का साहित्यिक मूल्य और अवदान कम कीमती नहीं है। भोजपुर और भोजपुरी को उन्होंने गले लगाया है यह कम गौरव की बात नहीं है। इतनी वृद्ध अवस्था हो चुकी और अब भी सक्रिय हैं। वे एक वीर पुरुष हैं। परिश्रम से उन्होंने धनोपार्जन किया और सुखी परिवार बनाया है, बसाया है।

सच्चाई ईमानदारी उनका व्रत है। परिश्रम उनका धर्म है और विद्या से घनिष्ठ सम्बन्ध उन्हें बचपन से रहा है। वे एक वैराग्य पुरुष हैं। उनका अभिनन्दन ग्रन्थ छप रहा है, यह उनके अनुरूप है। मैं अभिनन्दनीय पुरुष अखिलेष जी का अभिनन्दन करता हूँ और ग्रन्थ की सफलता चाहता हूँ।

महाजन टोली १
आरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयस्कीय व्यक्तित्व

– डॉ० अरुण मोहन भारवि

श्री कालूराम जी भोजपुरी ही नहीं, हिन्दी साहित्य के भी पुरोधाओं में अग्रगण्य हैं। मैं इन्हें बचपन से इनकी साहित्य सेवाओं के कारण जानता हूँ। प्राय: सरस्वती के उपासक लक्ष्मी के कोपभाजन होते रहे हैं। श्री कालूराम जी इसके अपवाद हैं। सरस्वती के इस साधक की साधना का ही यह प्रतिफल है कि यह महान् व्यक्तित्व भले ही कभी 'लक्ष्मीपति' न बना हो लेकिन कभी 'लक्ष्मी दास' भी नहीं बना।

हिन्दी एवं भोजपुरी के सरस गीतकार एवं समर्थ साहित्यिक डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' के साथ कालूराम जी ने भोजपुरी पत्रिका 'कलश' का प्रकाशन-सम्पादन कर भोजपुरी की श्री वृद्धि की है। 'मेरी दृष्टि में' में काव्य-संग्रह में आपकी विहंगम एवं सूक्ष्म दृष्टि का परिचय मिलता है। काव्य आपका प्रिय विषय रहा है। 'नवरत्न' के आप एक रत्न हैं। आप पर बक्सर या भोजपुर नहीं वरन् सम्पूर्ण शाहाबाद को गर्व है। भोजपुरिया आन-बान एवं शान के आप प्रतीक हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ एवं रचनात्मक क्रियाशीलता आपकी पहचान हैं। डुमरॉव की सम्पूर्ण गतिविधि की आप धूरी हैं। विश्वास है इस अभिनन्दन-ग्रन्थ से कालूराम जी के बहुआयामी व्यक्तित्व को रेखांकित करने में सम्पादक को सफलता मिलेगी।

आप एक समर्थ साहित्यकार एवं सफल समीक्षक हैं। आपके सम्पादन में सम्पादित इस अभिनन्दन ग्रंथ से साहित्य की श्रीवृद्धि होने के साथ ही श्री कालूराम जी के अयस्कीय व्यक्तित्व से नयी पीढ़ी को परिचित होने का श्रेय मिलेगा।

मैं अभिनन्दन ग्रंथ की सफलता की मंगल कामना करता हूँ। इस स्पृहणीय एवं महान् कार्य के लिए मेरी पूर्व बधाई स्वीकार करें।

शारदा सदन
बक्सर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संघर्षमय जीवन के धनी

– डॉ० कृष्णाचन्द्र पाण्डेय

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश' जी अपने परिश्रम से कठिन संघर्षपूर्वक आगे बढ़े है। एक साथ कई मोरचों पर लड़ते हुए जिस प्रकार इन्होंने अपने लिए राह बनायी है, वह सर्वथा स्तुत्य है।

वे निरभिमान और बहुत ही स्नेही कवि हैं। उनकी 'माँ कमले अब मेरी सुन ले' नामक कविता उनका भाग्योदय करती है। वे विश्वशान्ति के पुजारी हैं। आशावादी हैं। जहाँ उनके लेखों द्वारा 'भारतीय संस्कृति' उजागर होती है वहीं उनकी कविताओं द्वारा 'भारतीय लोकतंत्र के अचम्भे भी प्रकट होते हैं।

इतनी निर्भीकता और दृढ़ता, इतनी सादगी और इतनी विनम्रता एकसाथ कम लोगों में मिलती है।

वे न केवल एक विद्वान् के रूप में प्रत्युत् सच्चे मित्र के रूप में अपना स्नेह मुझे देते रहे हैं।

यह अभिनन्दन-ग्रन्थ अखिलेश जी के अनुकरणीय आदर्शों को दीप्तिमय कर भावी पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

मैं उनके दीर्घायुष्य और सार्थक संघर्षशील जीवन की शुभकामना करता हूँ।

राजनीतिशास्त्र विभाग
काशी विद्यापीठ, वाराण्सी

चिन्तनपरक संस्मरण

– आनन्द संधिदूत

असिअइला का बाहों जे असकति आइल ना बलुक आशीतिवर्षीय किशोर नियर उत्साह से मातल बुझाइल। उनकर पहिली भेंट में केहू परिचय ना करावल बाकि समझत ई देर ना लगाल कि जरूर इहें का कालूराम जी शास्त्री अखिलेश होइब। काहें कि जेतना आत्मविश्वास का साथ ऊ पांडेय कपिल, कृष्णानंद कृष्ण, अशोक द्विवेदी का बीच में बइठल रहलीं आ सम्मानस्नात रहलीं ओह से साफ लागल कि एह गोष्ठी से राउर गहिरा सम्बन्ध होई आ जइसन कि बाद में मालूमा भइल कि उहें का नाँव पर कालूराम शास्त्री अखिलेश पुरस्कार के स्थापना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल रहे आ पहिली बेर युवाकवि प्रकाश उदय के दिहल जाये वाला कार्यक्रम में हमनी का बहुराइल रहलीं जा।

बक्सर का ज्योति पुस्तकालय में चले वाला ई साहित्यपरोजन ओइसे त दिन भर चलल बाकिर एतना सघन रहे कि परिचितने से दूइ-चार गाल बात हो पावल नया परिचित बनावे के प्रति त बड़ा कम रहे। सम्पर्क का नाँव पर अखिलेश श्री से खाली उनका पुस्तक मिलल जवना में कविता का अलावा ढेर मात्रा में तस्बीरियों छपल बाड़ी सी। एह तस्बीरन में इहाँ का दुनियाँ का विभिन्न स्थानन पर घूमत आ अनेक नामी-गिरामी अदिमिन का बीच में बतिआवत लउकत बानीं। एह में जेतना आत्मविश्वास उनका में लउकत बा आ जवना तरे ऊ ठाढ़ चाहे बइठल बानी ऊ बड़ा आकर्षक बा। विशेष करके पेरिस का टावर का समने त अइसे ठाढ़ बानीं जइसे भारत के आत्माभिमान टावर का सामने टावर नियर खड़ा बा।

उहाँ के कविता त हमके प्रभावित ना कइलसि लेकिन एकरा खातिर वय के प्रभाव जिम्मेदार बा। ई ओइसहीं बा जइसे मुक्तिबोध-धूमिल के पढ़त श्रीधर पाठक के कविता सिम्पिलिआइल लउके। ईहो सही बा कि कविता त खाली कविता ह कविताकार के आपन एगो आवश्यकता होले, इच्छा होले आ सुख-दुख के समजिआउत विनिमयो होला। एह तमाम झंझठ में कविता करे के होला आ कवितओं लमहर दूरी तक यशवासना, धनवासना आ पद प्रतिष्ठा में अझुराइल नेटाह-पोटाह भइल रहेले। एह तरे अगर खाली एह कुल का बीच में एक देशा इंशान के निराले के होखे त खाली एक बेर नीं हजारो बेर के परिचय आ सम्पर्क नन्ही गो हो जाई। ओह में हमरा अइसन बौना के जवन पेट का पाछा एगो कमरा में डेबिट-क्रेडिट करत बा, कालूराम जी नियर गहिराह समाज सिद्ध का सामने औकात का!

एह से एह मोबारक मौका पर जब कि अखिलेश जी का अभिनन्दन ग्रंथ के सम्पादन एगो दूसर अशीतिवर्षीय साहित्यकार महेश्वराचार्य जी का द्वारा हो रहल बा हम आपन प्रसन्नता भेज रहल बानीं आ कालूराम जी शास्त्री अखिलेश का चरण में आपन प्रणाम पठवत बानी।

इलाहाबाद बैंक
मिर्जापुर (उ०प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्चर्यमय व्यक्तित्व

— श्री रामदेव सिंह

मैं श्री कालूराम जी अखिलेश को २० वर्षों से जानता हूँ। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इनका अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित होने जा रहा है।

मेरे लिये यह गर्व की बात है कि इनके साथ मुझे रहने का मौका मिला। सन् १९७४ की बात है हम दोनों व्यक्ति श्री सूर्यनारायण दे एडवोकेट कलकत्ता के कक्ष में बैठे थे। इनकी भविष्य वाणी का सटीक फल देखकर सूर्यनारायण दे आश्चर्य में पड़ गये। दूसरे हस्तरेखा विशेषज्ञ जो वहाँ पर मौजूद थे उसकी हस्तरेखा देखकर कालूराम जी ने अतीत की बातें बतायी उसे सुनकर वह शर्मिन्दा हो गये। सत्यनारायण दे एडवोकेट ने मेरे सामने इन्हें ज्योतिष ज्ञान विशेषज्ञता का प्रमाण पत्र दिनांक ६-८-७४ को दिया।

साहित्य एवं व्यापार में भी इनकी योग्यता के सम्बन्ध में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है।

मैं इनके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

मैनेजर (काटन परचेज) केशोराम इन्डस्ट्रीज
कलकत्ता - ७०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्याञ्जलि अभिनन्दन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कालूराम 'अखिलेश' आद्यक्षरी

श्री पाण्डेय कपिल

काव्य - कर्म जिसके जीवन का है शौक और
लू की गर्मजोशी वाला जिसका परिवेश है
राग - रम्य रचना के रसिकों का प्रेमी है जो
मन जिसका कवि-यश का प्रार्थना - निवेश है
अक्षर की और शब्द ब्रह्म की पूजा के हेतु
खिलते हुए फूलों का बना जो विनिवेश है
लेख लक्ष्मी जी का, अनुलेख माँ सरस्वती का,
'**शा**स्त्री' नामधारी कालूराम 'अखिलेश' है

इन्द्रपुरी
पटना (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलश'

– डॉ० स्वर्ण किरण, सोहसराय

अखिल भुवन के मंगल हित संतत आकांक्षी,
कर्मव्रती, क्या कर्मपंथ से कभी हटे तुम?
विघ्नों की क्या कमी कभी भी इस जगती में
पर साहस से सपने में भी नहीं कटे तुम।
स्वतंत्रता संग्राम से न तुमने मुँह मोड़ा,
जनजीवन के सुख के हित तुम सतत समर्पित।
जीवन-यात्रा में यदि हो आशा का संबल
खुशी जीत की निश्चय मिलती है वहाँ अतर्कित
दानवीर, क्या दानशीलता की है सीमा
भौतिक सुख-सुविधा क्या सबको सुलभ असीमित?
अपने को चमकाने का क्या अर्थ जगत् में,
चमकें सब तो सुखकर परिवर्तन परिलक्षित।
मानवता यदि व्यथित, नींद क्या आती सुखकर,
अंतर्व्यथा सृजन का कारण बनती हरदम।
कविता, लेख, विचार क्रांति के लिए जरूरी,
या कि जरूरी नमित सवल संगठन दैहिक दमखम।
संकल्पित मन क्या न प्राप्त करता है मंजिल,
निःश्रेयस् का मार्ग मार्ग सच हृदयावर्जक।
छल-छद्मों से दूर स्नेहपूरित अंतस्तल,
एक महा मानव तुम नूतन युग के सर्जक।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनव अभिनन्दन

– सूर्यदेव पाठक 'पराग', मड़ौरा

हे कविवर अखिलेश! तुम्हारा है अभिनव अभिनन्दन !

मानवता के तुम प्रतीक हो
सज्जनता की नई लीक हो,
कोमल भाव-कमल-दल मद के
मधुपायी नव चंचरीक हो,
सघन छाँव बन शान्ति विधायक, वरदायक हरि चन्दन !

नेह-नीर की निर्मल धारा
तन-मन से जो कभी न हारा
जिसके लिए समान समादृत
मन्दिर-मस्जिद और गुरुद्वारा
आजीवन व्रत लिया दूर करने को जग का क्रन्दन!

सुधा-वर्षिणी तेरी वाणी
बनी रही जग की कल्याणी,
नर-नर में भरते समरसता
सब समान तेरे हित प्राणी,
तेरे यश का धरती पर करता अन्तरिक्ष गुरु गर्जन!

फैले कविता-लता निरन्तर
बने जगत् के लिए महत्त
सघन तमिस्रा हर कर मन की
ज्योति कर दे नव प्रकाश भर
बनो शताधिक जीवन जीकर मानव के दृग् अंजन!
हे कविवर अखिलेश! तुम्हारा है अभिनव अभिनन्दन !!

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूज्य बाबा ! पद वंदन !

— आचार्य जगन्नाथ, बक्सर

आभार तुझे क्या दूँ,
तू तो मूर्धन्य धन्य हो!
देखी, श्रद्धा की दीप-शिखा
तू विनयी तो अनन्य हो ।
अदना कद मेरा, फिर भी
तूने सादर जो भेंटा -
मैंने संकोच भाव से
गुदड़ी में लाल समेटा - ।
चरणों की धूलि तुम्हारी
होगी मेरा दृग-अंजन,
डेगा-डेगी कवि हूँ मैं,
पर तू हो बात-प्रभंजन!
"मेरी दृष्टि में" पाया
कितना मिठास अनुरंजन
मेरी तोतर वाणी पर
तू ने जो बात कही है -
वह मंच 'पवननन्दन' का
थपकी सौगात सही है ?
हूँ याद आप को, यही
नहीं क्या मेरा भाग्य बड़ा है।
चरणोदक लेने को तेरा,
मेरा मन मुग्ध खड़ा है।
जो कविता मैंने देखी
तेरा स्वभाव उन्मन में
मस्ती होगी वह कहाँ?
भला, अलका के नन्दन बन में ?
तेरे उपवन में उड़कर
है एक विपंची,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हस 'जगन्नाथ' का प्राण-पुष्प
चरणों पर है गदराया
चाहो तो उसे उठाकर
अपनी "दृष्टि में" देखो
हे काव्य गुरू मणियों की
एक माला बना सरेखो।

◆

'अखिलेश' अभिनन्दन

— श्री जवाहर लाल 'बेकस', रोहतास

जो सरस्वती का वरद पुत्र, लक्ष्मी का संचित धन है।
उस 'अखिलेश - कालूराम' का सादर अभिनन्दन है॥

कर्मठता के बल पर कस्तूरी सदृश सौरभ सा।
संकीर्णता से ऊपर उद्भुत, व्यक्तित्व दुर्लभ सा।
धरती से ऊपर ब्रह्माण्ड सा हे भूगोल अविनासी -
हो विराट् हस्ती इस जग में धरा-धाम-औ-नभ-सी।

इतना सुलझा अरु विशालतम जिसका यह जीवन है।
उस 'अखिलेश कालूराम' का सादर अभिनन्दन है॥
तेरे मुखमण्डल पै टिकी हुई हैं सबकी आँखें।
कभी तुम्हारे भीतर-बाहर, कभी आप में झाँके।
कभी स्नेह सागर के अंतस्तंल में समा-समा कर।
तेरी गहराई को स्नेहिल सपनों में हम आँके।

जो साहित्य-अनुरागी जिसका भावुक यह तन-मन है।
उस 'अखिलेश-कालूराम' का सादर अभिनन्दन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्तों के बजते सितार पर काव्यमयी वाणी हो।
गंगा जल में निर्मल तुम छलछल बहते पानी हो।
वयोवृद्ध साधक-आराधक हे अखिलश अनुरागी
सिद्ध संत सा ईश्वर जैसे तुम अद्भत प्राणी हो।

जिससे हर आँखों में उमड़ा निश्छल अपनापन है।
उस 'अखिलेश-कालूराम' का सादर अभिनन्दन है।।

करते हैं हम दीर्घ कामना तेरे अभिनन्दन की।
माँ सरस्वती के वरदपुत्र की और लक्ष्मी के धन की।
'बेकस' के ये शब्द समर्पित तेरे उन कदमों पर-
जिन पर न्योछावर है आयु मेरे इस जीवन की।

जिसकी खुशबू से महमह धरती का चमन-चमन है।
उस 'अखिलेश-कालूराम' का सादर अभिनन्दन है।।

सम्पादक पनघट
रोहतास

कवनो उपमा ना ठाँटी

— श्री स्वामी फन्देतिर्णानन्द पुरी, रामडिहरा

डा० कालूराम नाँव से जाने सब डुमराँव।
होमियोपैथिक दवा के पुडिया पहुँचल गाँवे गाँव।।
वर्ष सतासी में भी जेकर लगन पढ़े के बाटे।
ओकरा आगे उपमा कबहीं ना ठाटी ना ठाटे।।
जेकरा मन में देश प्रेम के नदी हिलोरा लेले।
और लेखनी मन के बोली आ कागज पर बोले।।
अजर अमर अस जे विद्या से आपन नेह लगावे।
सुरसती के बरद पुत्र काटें ना आदर पावे।।
पत्र-पत्रिका आ किताब में बा 'कालू' के बन्दन।
ए अखिलेश तोहार करीला हम सादर अभिनन्दन।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनन्दन वन्दन

– श्री सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी 'व्याकुल'

जय जय जय हे कालूराम
अखिल ईश है तेरा नाम
बल-बुद्धि विद्या के धाम
करते कर्म सतत निष्काम

निर्भय, निडर और निर्भीक
बल पौरुष के एक प्रतीक
खींची है साहस की लीक
चीता वधा निशाना ठीक

बली भाग्य का पाया साथ
झुका न कहीं तुम्हारा माथ
ध्रुव सम जब तुम हुए अनाथ
ईश्वर ने कर दिया सनाथ

जन्मत: पाया ही सहवास
जिह्वा पर वाणी का वास
जीवन में नहीं हुए हतास
कर्मों में रखते विश्वास

कैसे करूँ मैं अभिनन्दन
अक्षत पुष्प न है चंदन
स्वयं तुम्हीं हो वन-नन्दन
करता हूँ तेरा वन्दन

सम्पादक समर्पण (त्रैमासिक)
कुदरा, डैमूर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमन चरणों पर, माथे चन्दन

– जगदीश 'पंथी'

(एक)

कविवर कालूराम जी हिन्दी के विद्वान
भोजपुरिया शास्त्रीजी अखिलेश महान
काव्य-कला में आपकी अलग बनी पहचान
साधक जैसे देव का करने बैठा ध्यान

(दो)

अक्षत, चंदन आरती कविता कीरति गान
दुख के क्षण को भी दिया शास्त्री ने सम्मान
'आँसू को चन्दा कहें', 'मिलन मधुर मुस्कान'
'कवि ऐसे जग की रचना कर' दिया सभी को मान

(तीन)

'जीवन विहग विकल है साथी', यह कैसा मधुमास रे
'आजादी का सूर्य कैद है' लिए मिलन की आस रे
'जनमत को तुम मत ठुकराओ' मत करना परिहास रे
कविवर शास्त्री की वाणी को, बहुमत का विश्वास रे

(चार)

डा० कालूराम शास्त्री जी 'अखिलेश' शतत वन्दन है
टूटे-फूटे शब्द फूल, माला, अक्षत् माथे चन्दन है
क्या भेजूँ - क्या लिखूँ अभावों में 'पंथी' सारा जीवन है
हे वाणी के परम यशस्वी पूत तुम्हारा अभिनन्दन है

राबर्ट्सगंज
जिला सोनभद्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्राचार

Sri Maheshwara Charyajee
Editor

Dt. 29/10/95

I have great pleasure to know through your letter that "Dr. Kaluram Shastri "Akhilesh" Abhinandana Grantha is going to be published throwing many sided social, cultural and literacy achievements of Dr. Shastri. Dr. Shastri has devoted his whole life for the growth of Hindi liturature and upliftment of the people of Bhojpur region. His contribution towards Vishya Samaj is also remarkable. His entire work is a positive contribution to the vast field of Hindi literature. His live for Indian nation, Indian Culture and Indian people in deep rooted.

The people of Bhojpur in general and Dumaraon in particular deserve our thanks for honouring a creative personality like Dr. Shastri. Though, he is old now his spirit is still young. I pray God for his long life and good health. In return I would like to say that your smile is also a gift to us.

"Grow old with me
the rest is yet to come
I am old
the best is yet to come."

With these words, I wish for the successful publication fo his abhinandana Grantha.

Dr. Yugal Kishore Mishra,
M.A. (Gold Medalist) Ph.D.
University Professor, Gaya

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माहेश्वराचार्य जी
संपादक

दि० २७/१/९६

डॉ० कालूरामजी स्व. डॉ० रामनाथ पाठक जी के अभिन्न मित्र रहे हैं। उनके साथ आपने लगभग एक वर्ष तक भोजपुरी पत्र 'कलश' का कुशल सम्पादन किया। इस पत्र के माध्यम से आपने भोजपुरी की बड़ी सेवा की है। आप हिन्दी भोजपुरी के लेखक, कवि तथा कुशल सम्पादक है। हिन्दी भोजपुरी में आपने काफी रचनाएँ लिखी हैं। संस्कृत के आप प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। 'मेरी दृष्टि में' आपके सुलझे विचार, मान्यताओं का हिन्दी में एक बढ़िया काव्य संग्रह है।

डा० अखिलेश जी के अक्षय यश सदा स्वस्थ समृद्धि एवं सौभाग्य के लिए हृदय से शुभकामनाएँ।

डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
जमशेदपुर (बिहार)

आदरणीय पवननन्दनजी

दि० २१/१०/९५

नमस्कार,

डॉ० कालूराम शास्त्री एक प्रतिभासंपन्न विभूति प्रतीत हुए। हम लोगों की दृष्टि तथा ज्ञान कितना सीमित है कि अनेक प्रतिभाएँ अपने में ही मस्त रहकर महान कार्य कर रही हैं परंतु दूरदृष्टि के अभाव में हम उन्हें नहीं जानते। विज्ञापन, प्रचार तथा प्रसार का युग है। जो अपने को प्रचारित नहीं करेगा उसकी मृत्यु जीवन काल में ही हो जाएगी। अंग्रेजी के कवि लांग फेलो की कविता ? of life ऐसे लोगों के प्रति एक सन्देश - `Unsuing, Unknown' अपने अखिलेश जी को हमारी कुटिया तक पहुँचाया यह हमारा भाग्य है। हमारी हार्दिक शुभकामना स्वीकारें।

राजेश्वरी शाडिल्य
संपादक भोजपुरी लोक (मासिक) पत्रिका
लखनऊ - यू.पी.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्ड – २

'अखिलेश' के हिन्दी, भोजपुरी, निबन्ध, भाषण, कविताएँ, हाइकू साहित्य, समाज-सेवा, व्यवसाय से सम्बन्धित पत्राचार एवं विशेष अभिरुचि–जन्य तथ्यपरक जानकारियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्राचार

भोपाल में संस्था संस्कार भारती द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के अवसर पर सुश्री सिन्हा नृत्य प्रस्तुत करते हुए । बाँये डॉ० कालूराम शास्त्री अखिलेश एवं सरकार्यवाह श्री हो०वें० शेषाद्रि ।

विदेश से लौटने पर डॉ० कालूराम अखिलेश का भव्य स्वागत

पिछले दिनों विश्व हिन्दू परिषद् के तत्वावधान में लंदन में हुए सम्मेलन में भोजपुर जिला विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष श्री कालूराम अखिलेश ने इस जिले तथा बिहार प्रान्त से प्रतिनिधित्व किया। श्री अखिलेश को सम्मेलन में भाग लेने जाते समय हजारों लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। उनके नेतृत्व में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों को पूरा किया गया। श्री अखिलेश भोजपुरी तथा हिन्दी भाषा के कवि भी हैं। विश्व हिन्दू परिषद् से लौटने पर उन्होंने परिषद् के सदस्यों तथा जनता के नाम अपने सन्देश में कहा कि विश्व का प्राचीन धर्म सनातन ही है जो अब हिन्दू धर्म के नाम से जाना जाता है श्री अखिलेश ने हिन्दू धर्म को अति सहिष्णु बताते हुए लोगों से अपील की के वे सांप्रदायिक सद्भाव, मैत्री एवं मानवीय मूल्यों के लिए अहिंसक संघर्ष करें।

दिनांक : ३० नवम्बर १९८९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन बात

एह साल देश के कोना-कोना बाढ़ के भयंकर चेंगुरा में आ गइल रहे। गंगा आ सोन के किनारे बसल भोजपुर के अधिकांश इलाका बाढ़ के पानी से पानी-पानी हो चलल। एक मोका पर कलश के सम्पादक कविवर कालूराम जी 'अखिलेश' डुमराँव, डुमराँव में बनावल गइल बाढ़ सहायता समिति के अध्यक्ष भइलीं, प्रखण्ड विकास-पदाधिकारी, डुमराँव मंत्री बनलीं आ डुमराँव नगरपालिका के चेयरमैन श्री शिवकुमार खेमानी के साथ-साथ आउर कई गो लोग सदस्य के रूप में चुनल गइलन।

एह समिति के द्वारा सभसे पहिले २२ अगस्त' ७८ के ब्रह्मपुर के बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में कपड़ा, सलाई आ मोमबत्ती बाँटल गइल। बाद में बड़का-छोटका नैनीजोर में 'अखिलेश जी' खुदे जा के ओहिजा के बाढ़-पीड़ितन में जिनिगी के निबाहे के सामान कपड़ा बगैरह बँटली। बक्सर के नौजवान अनुमंडलाधिकारी श्री अजय कुमार जी के प्रेरणा से डुमराँव से तेरह हजार रुपया एकाठा भइल आ बँटाइल। नीचे के चित्र में बायाँ ओर बाढ़-पीड़ित में श्री अजय कुमार जी कपड़ा बाँट रहल बानी आ उहाँ के बगल में अध्यक्ष कविवर अखिलेश जी खड़ा बानी।

एह जन-कल्याणकारी काम खातिर कलश-परिवार के ओर से हम समिति के अनेक-अनेक धन्यवाद दे रहल बानीं।

दिसम्बर १९७८

रामनाथ पाठक "प्रणयी"

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात्रि ९ बजे **गांधी साहित्य परिषद पटना** के सौजन्य से राजगढ़ प्रांगण में एक अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन श्री कालूराम अखिलश की अध्यक्षता में हुआ।

कवि सम्मेलन के पूर्व मुख्य अतिथि महाकवि रामदयाल पांडेय एवं अन्य आगंतुक अतिथि कवियों के प्रति श्री हरिनंदन कुमार ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। युवा कवि श्री मार्कण्डेय शारदेय ने मुख्य अतिथि को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महाकवि ने साहित्य और राजनीति दोनों के वर्तमान स्वरूपों पर स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने त्रस्त साहित्यिकता के प्रति जन जागरण का आह्वान किया।

सन् १९९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाढ़ पीड़ित साहाय्य समिति का गठन (१९७८)

डुमराँव (भोजपुर) ३ सितम्बर (निस)। पिछले सप्ताह अनुमण्डलाधिकारी श्री अजय कुमार की अध्यक्षता में एक बैठक हुई जिसमें बाढ़-पीड़ितों की सहायता वास्ते एक समिति का गठन किया गया। समिति के अध्यक्ष श्री कालूराम "अखिलेश" चुने गये।

नगरपालिका अध्यक्ष श्री शिव कुमार खेमानी श्री रामेश्वर नाथ तिवारी तथा सहायक परियोजना कार्यपालक पदाधिकारी डुमराँव के अथक प्रसास से करीब १० हजार रुपये बाढ़-पीड़ितों के सहायतार्थ जमा किये गये जो २२ अगस्त को ब्रह्मपुर क्षेत्र के बाढ़-पीड़ितों में वितरित किया गया।

सन् १९७८

◆

व्यापरियों की बैठक

गत दिनों नगर के व्यापारियों की बैठक कालूराम 'अखिलेश' शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से 'डुमराँव नगर व्यवसायी संघ' का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष कालूराम अखिलेश, शंकर प्र० केसरी -उपाध्यक्ष, द्वारिका प्र० केसरी संयुक्त –उपाध्यक्ष, ललन प्र० अकेला –महामंत्री तथा ठाकुर प्रसाद कोषाध्यक्ष चुने गए। अध्यक्ष सहित सभी पदाधिकारियों ने १३ सदस्यों की कार्यकारणी भी घोषित की गई।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्व हिन्दू परिषद के बक्सर जनपद का गठन

डुमराँव, २५ मार्च (आ.सं.)। विश्व हिन्दू परिषद की बैठक स्थानीय राज प्रयाग संस्कृत उच्च विद्यालय के प्रांगण में, श्री सिद्धेश्वर उपाध्याय की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में विश्व हिन्दू परिषद की बक्सर जनपद शाखा का गठन किया गया। निर्वाचित पदाधिकारियों में श्री कालूराम 'अखिलेश' अध्यक्ष श्री रामअवतार पाण्डेय, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री विनोद बिहारी पाण्डेय, उपाध्यक्ष, श्री गणेश दुबे, मंत्री, श्री लक्ष्मी चन्द वर्मा, कोषाध्यक्ष, श्री सौरभ सिंह एवं अमरनाथ वर्मा, सह सचिव एवं श्री विश्वनाथ जी उपाध्याय संस्कृत प्रमुख हैं।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद् आरा विभाग के दो अधिकारी श्री अरुण एवं श्री रामकवल शर्मा उपस्थित थे।

बक्सर जनपद के अध्यक्ष श्री कालूराम अखिलेश द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि आगामी ३ अप्रैल को राज्य स्तरीय अधिकारियों की देख-रेख में प्रखंड स्तर पर विश्व हिन्दू परिषद् का गठन किया जायेगा।

सन् १९८४

◆

भारत माता पूजनोत्सव

बक्सर जिला संस्कार भारती के तत्वाधान में भारत माता पूजनोत्सव के अवसर पर एक काव्य गोष्ठी आयोजित हुई। इसकी अध्यक्षता डॉ० कालूराम शास्त्री अखिलेश ने की। गोष्ठी में प्रमुखतया सर्व श्रीकालूराम अखिलेश, प्रभंजन भारद्वाज, महेश्वर ओझा महेश, राजनारायण सिंह, शिव बहादुर पांडे, अरुण कुमार, ओमप्रकाश केशरी 'पवनानन्दन', सरयू प्रसाद जायसवाल, श्रीमती उर्मिला सिन्हा, बद्री नारायण जायसवाल, श्रीकांत चतुर्वेदी आदि ने अपने काव्य प्रस्तुत किए।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैश्य लोग राजनीतिक दृष्टि से मजबूत हों : साहु

बक्सर, ८ दिसम्बर। वैश्यों को अपना हक प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने के आह्वान के साथ बक्सर जिला वैश्य सम्मेलन गत मंगलवार को यहां किला मैदान में सम्पन्न हो गया। इसमें राज्य के तीन मंत्रियों सहित कई अन्य प्रमुख लोगों ने भाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए वैश्य महासम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद रजनी रंजन साहु ने कहा कि जब तक हम राजनीतिक रूप से मजबूत नहीं होंगे, तब तक अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसलिए हमें नीचे से ऊपर तक सभी स्तरों पर राजनीतिक रूप से मजबूत होना होगा।

मुख्य अतिथि ग्रामीण विकास विभाग के उपमंत्री बृजबिहारी प्रसाद ने कहा कि आज वैश्य समाज शिक्षा एवं राजनीतिक मामलों में काफी पिछड़ा हुआ है, इसलिये इसे सबसे पहले दूर करना होगा, उसके बाद ही हम हर मोर्चे पर मजबूत हो सकते हैं। उन्होंने वैश्यों से अपने हक के लिए तलवार उठाने का आह्वान किया।

विशिष्ट अतिथि राज्य के दो मंत्रियों शंकर प्रसाद टेकरीवाल तथा डा. रामचन्द्र पूर्वे ने भी वैश्य समाज के लोगों का आह्वान किया कि वे अपने हक की प्राप्ति के लिए एकजुट हो जायें। जब तक वैश्य समाज में एकजुटता नहीं आयेगी तब तक उन पर अत्याचार होता रहेगा।

सम्मेलन को ईश्वर चन्द्र चौधरी, गंगा प्रसाद, श्रीमती बनारसी देवी, सुदामा प्रसाद, डा. अरुण केसरी सहित कई अन्य वक्ताओं ने भी संबोधित किया। सम्मेलन की अध्यक्षता बक्सर जिला वैश्य महासम्मेलन के जिलाध्यक्ष कालूराम शास्त्री ने की। इसके पूर्व वैश्य समाज के लोगों ने गाजे-बाजे एवं परंपरागत तौर-तरीके के साथ नगर में एक भव्य रैली निकाली जो विभिन्न मार्गों में तब्दील हो गयी। सभा के अन्त में वैश्य सम्मेलन के जिलाध्यक्ष कालूराम शास्त्री ने गरीबों के बीच कम्बल वितरित किये।

९ दिसम्बर १९९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती मनायी गयी

बक्सर, संस्कार भारती बक्सर जनपद के तत्वावधान में स्थानीय सरस्वती विद्या मन्दिर में आयोजित मानस प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती समारोह का उद्घाटन संस्कार भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा० शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव एवं प्रान्तीय अध्यक्ष डा० जितेन्द्र सहाय ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

उद्घाटनकर्ता श्रीवास्तव जी ने गोस्वामी जी को हमारे आस्था के प्रतीक माना एवं मानस को विश्व का सबसे बड़ा ग्रंथ बताया।

मुख्य अतिथि डा० सहाय ने गोस्वामी जी को क्लासिकल माना। अन्य वक्ताओं में प्रान्तीय उपाध्यक्ष डा० कालूराम शास्त्री अखिलेश एवं डा० सतीश कुमार रहे। स्वागताध्यक्ष डा० महेन्द्र प्रसाद ने अतिथियों का स्वागत किया। जनपद अध्यक्ष महेश्वर ओझा महेश ने भाषण पढ़ा एवं मंत्री ओमप्रकाश केशरी पवनानन्दन ने मंत्री का प्रतिवेदन।

पूरे कार्यक्रम का संचालन पवननन्दन ने किया। श्री हरिशंकर गुप्ता द्वारा निर्देशित राम-लक्ष्मण-सीता गोस्वामी जी को क्रमशः मनोज कुमार गुप्ता, उमेश जायसवाल, निधि गुप्ता एवं हनुमान केसरी ने मंच पर सत्कार किया। पुजारी बने अनिल गुप्ता।

डा० जितेन्द्र सहाय की अध्यक्षता एवं डा० कालूराम शास्त्री के संचालन में विशेष काव्यगोष्ठी के माध्यम से श्रीमती उर्मिला सिंहा, डा० जितेन्द्र सहाय, डा० कालूराम शास्त्री अखिलेश, महेश्वर ओझा महेश, अरुण कुमार, रामेश्वर मिश्र वितान, पवनानन्दन, रामेश्वर सिंहा, पीयूष, राधिका देवी, राजनारायण सिंह, जगन्नाथ प्रसाद राय, विद्यासागर पाण्डेय शिवबहादुर पाण्डेय, विष्णुदेव तिवारी, लक्ष्मीकान्त मुकुल, विजयानन्द तिवारी आदि कवियों ने अपने काव्यपाठ से श्रोताओं को आह्लादित किया।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

''ठूठ वृक्ष अँखुआया चेतना तरंग से''

श्री कालूराम शास्त्री 'अखिलेश', चौक रोड, डुमराँव, जन्म – १९/४/१९०९; विधिवत स्कूली शिक्षा चौथी कक्षा तक ही प्राप्त कर सके। बाद में स्वाध्याय के बल पर १९७८ ई० में कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री की डिग्री हासिल किया। १२ वर्ष की उम्र से ही लिख रहे हैं। 'आज' (वाराणसी) अग्रसेन (धनबाद) आर्यावर्त, प्रदीप (पटना) गांडीव (वाराणसी) 'संसार' 'कृषक' 'विश्वामित्र' आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित। डा० रामना पाठक 'प्रणयी' के साथ मिलकर १९७७ में 'कलश' का प्रकाशन सम्पादन। १९७६ में भोजपुर जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मानित। डुमराँव से प्रकाशित 'नवरत्न' (१९६८) के एक कवि, (सम्पादक-आचार्य अम्बिकादत्त त्रिपाठी 'व्यास') रचनाएँ :- कृष्ण-कृष्णा, वंशी-शतक सिंह-शावक, (प्रबंध काव्य); हिन्दुस्तान हिन्दू-हिन्दुत्व एक कविता संग्रह (प्रेस में)

◆

दिनाङ्क : १०-९-१९९५

आदरणीय शास्त्री जी आपकी भेजी हुई दो कीमती पुस्तकें प्राप्त हुईं। पढ़ने के बाद भेंट की प्रबल इच्छा को संजोये मैं रह रहा हूँ। मैं भेंट करूँगा। आपको धन्यवाद। ईश्वर से प्रार्थना आप दीर्घायु हों।

चन्द्रशेखर प्रताप सिंह
एडवोकेट, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

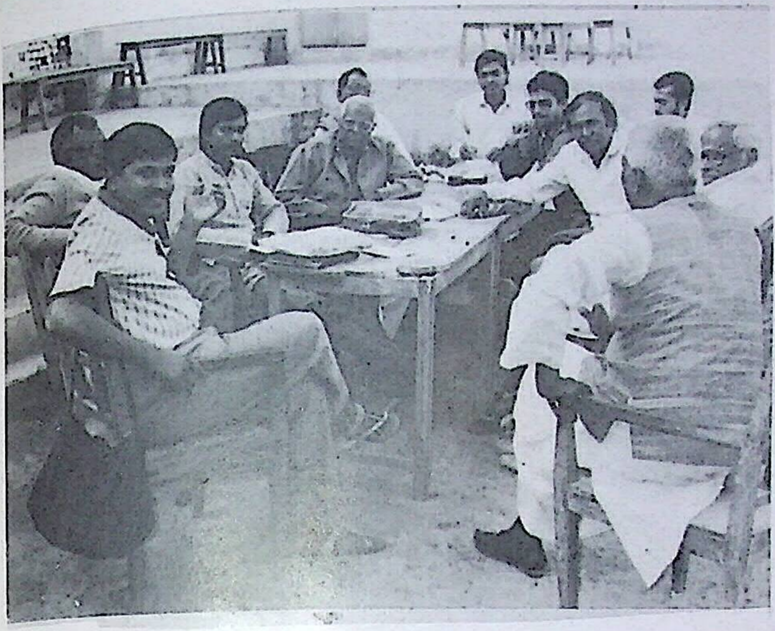

रचनाओं पर आलोचनात्मक साहित्यिक गोष्ठी

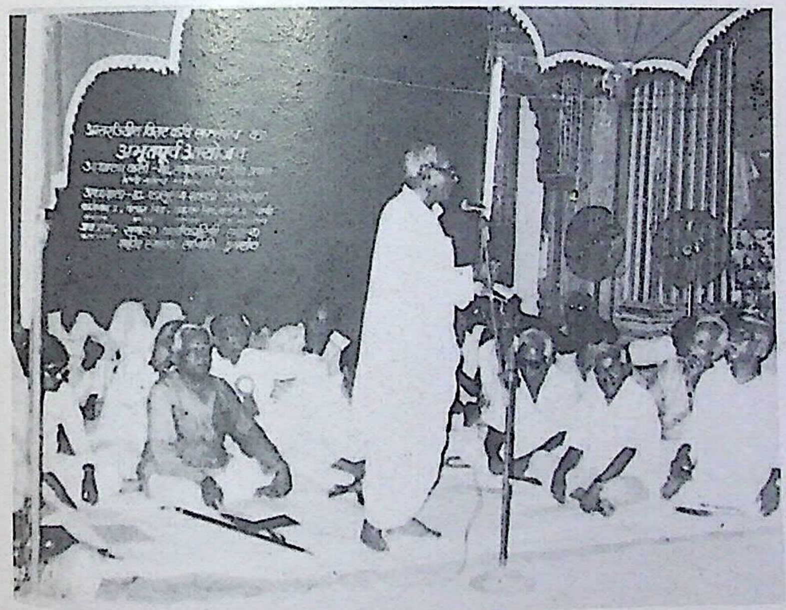

अन्तर्राज्यीय कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री 'अखिलेंश' जी साथ में पाण्डेय कपिल जी अध्यक्ष भोजपुरी साहित्य सम्मेलन; भाषण करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

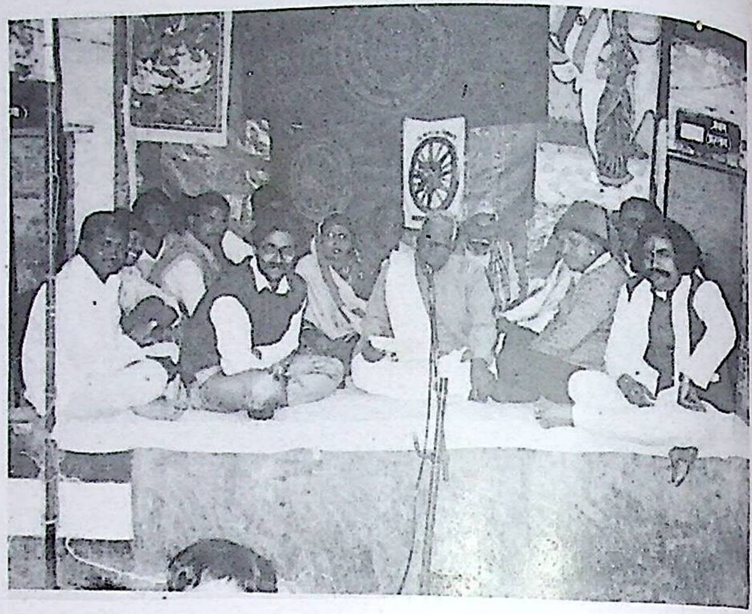

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सरस्वती विद्या मन्दिर, बक्सर में 'अखिलेश' जी

नवरत्न साहित्य परिषद में कार्यकारी अध्यक्ष की हैसियत से सम्बोधित करते हुए 'अखिलेश' जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

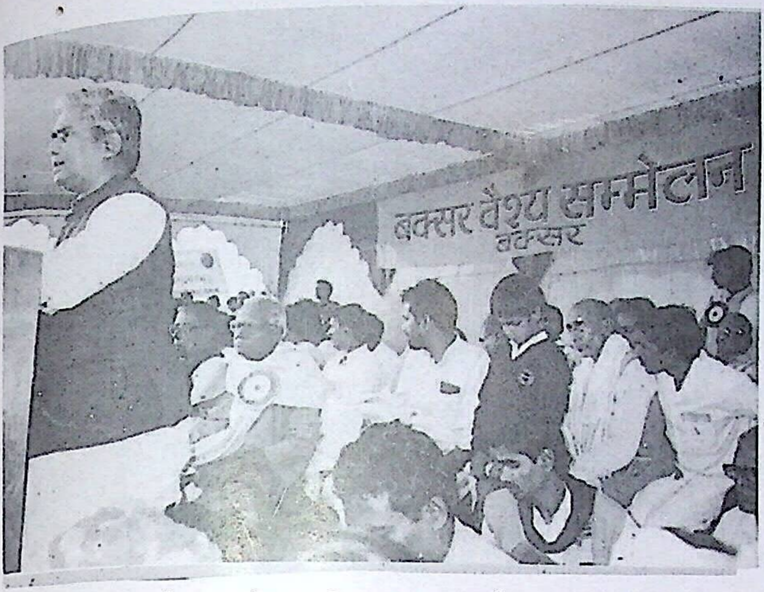

बक्सर जिला वैश्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए 'अखिलेश' जी

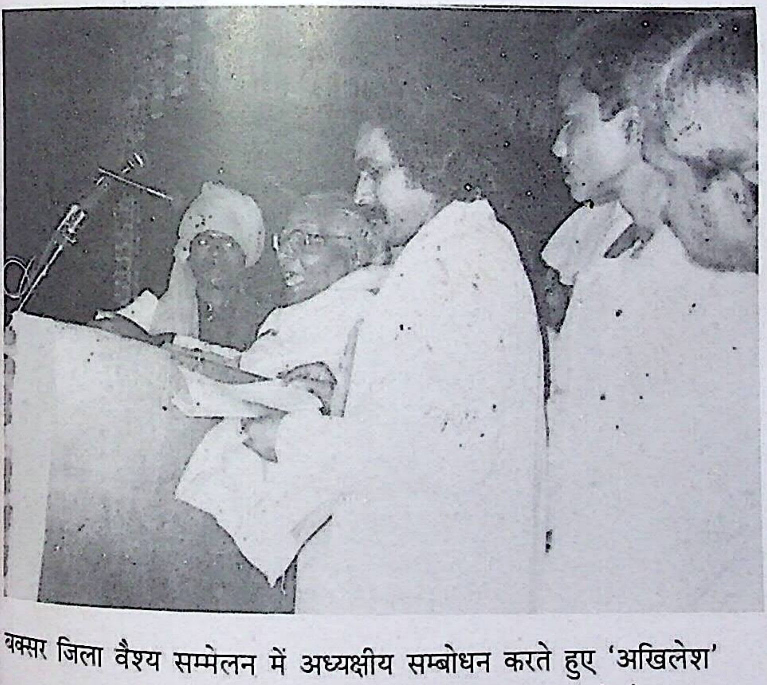

बक्सर जिला वैश्य सम्मेलन में अध्यक्षीय सम्बोधन करते हुए 'अखिलेश'
साथ में ओमप्रकाश पवननन्दन केशरी बीच में खड़े है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योरुप यात्रा के क्रम में डुमराँव की जनता एवं शिवजी पाठक सम्पादक बाबा टाइम्स माल्यार्पण करते हुए

योरुप यात्रा में जाते समय श्री 'अखिलेश' जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

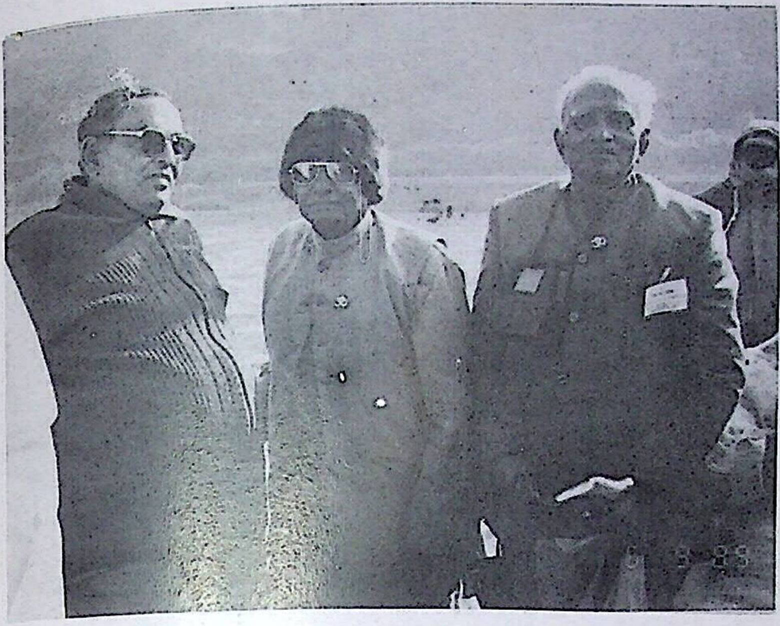

स्वीजरलेण्ड की यात्रा में श्री पुरुषोत्तमदास झुनझुनवाला केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष पूर्वांचल विश्व हिन्दू परिषद के साथ 'अखिलेश' जी

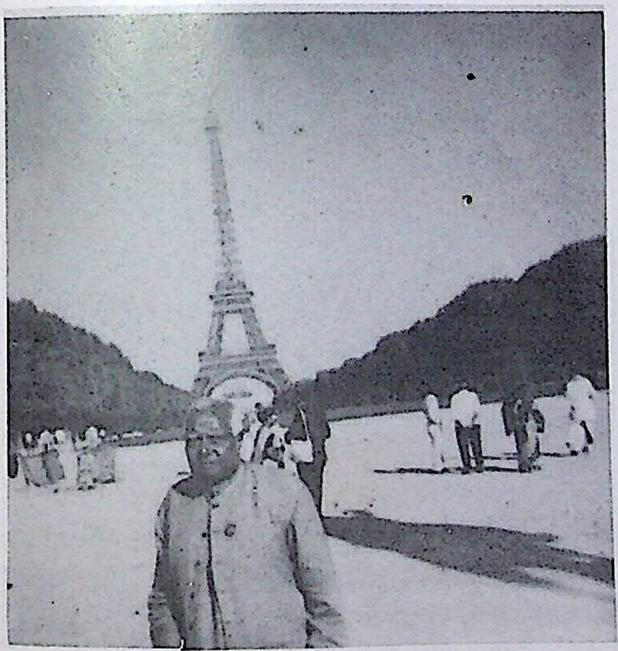

एफिल टावर पेरिस क्षेत्र में श्री 'अखिलेश' जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

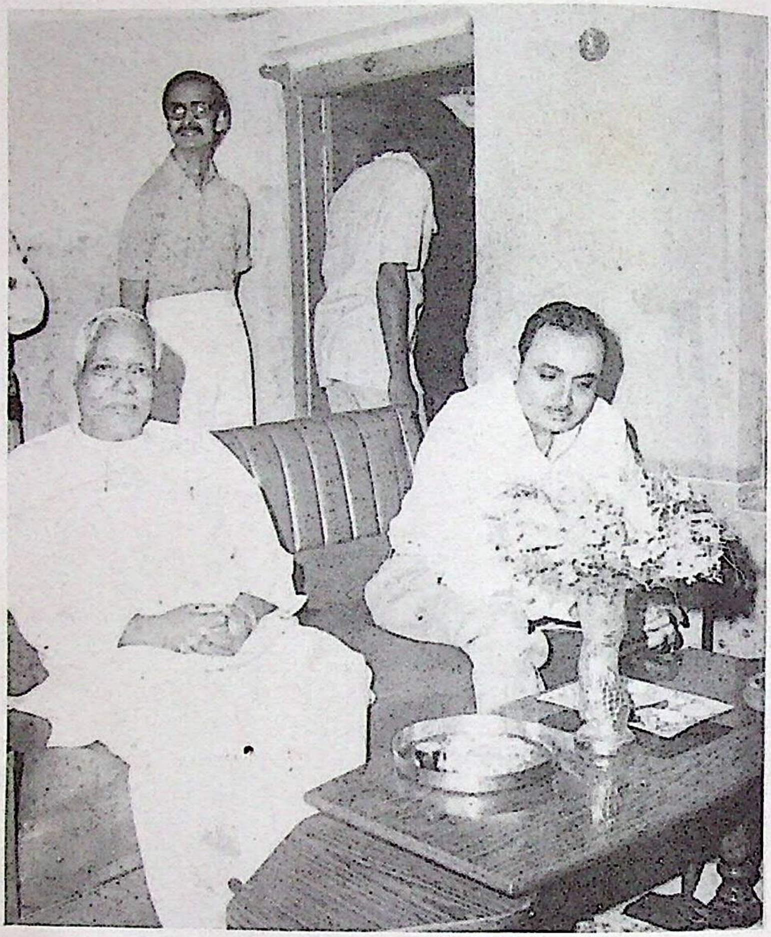

महाराजा बहादुर श्री कमल सिंह जी, डुमराँव के साथ निजी कक्ष में
'अखिलेश' जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

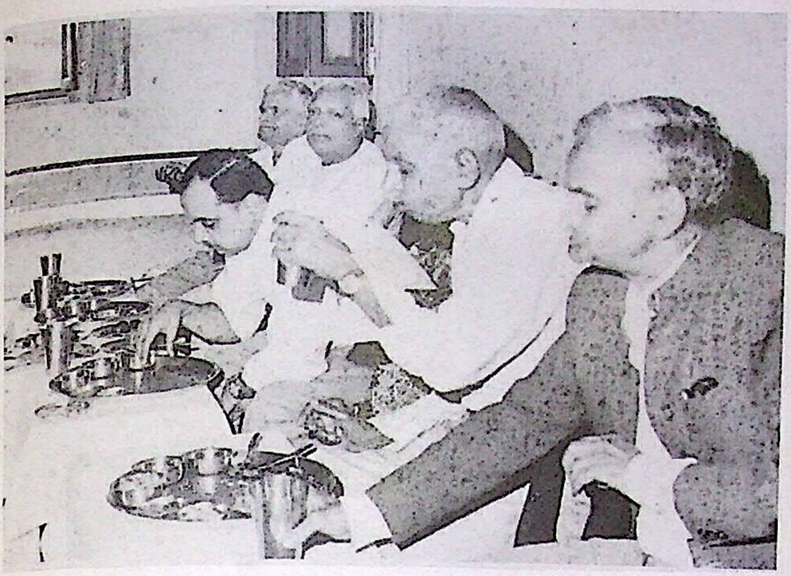

अपने घर में :– क्रम बाँयें से दूसरे 'अखिलेश' जी श्रीमान् महाराजा कमल सिंह जी के साथ भोजन पर

वाराणसी में :– माननीय सुधाकर पाण्डेय एम.पी. के साथ 'अखिलेश' जी उनका स्वागत करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डेहरी ओनसोन में :- बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यक्रम में मंचस्थ दाहिने से अध्यक्ष रामगोपाल अग्रवाल एवं 'अखिलेश' जी

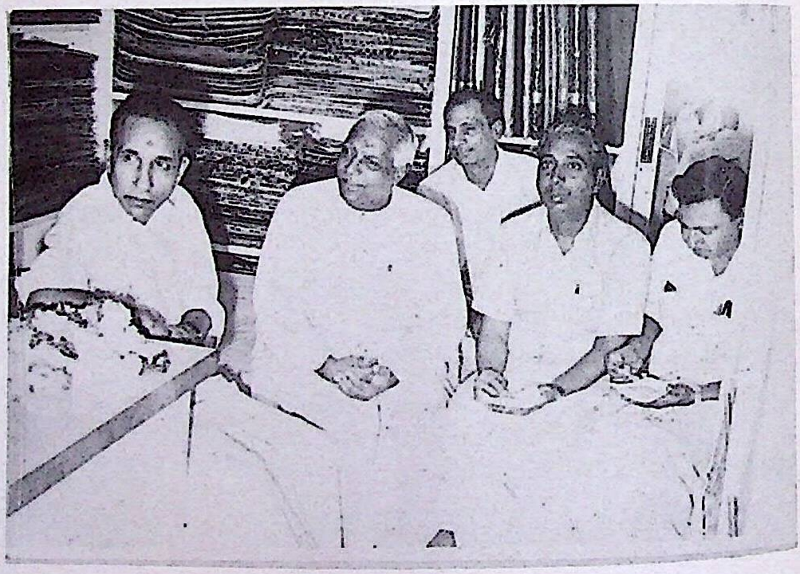

वाराणसी दुकान में :- बायें से माननीय सुधाकर पाण्डेय एम.पी., डॉ० कालूराम शास्त्री 'अखिलेश', श्री नत्थूलाल शाह अन्त में पाँचवे स्थान पर श्री श्यामलाल शाह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न

डुमराँव (भोजपुर), २९ मार्च। कवि कालूराम अखिलेश 'शास्त्री' निवास पर डुमराँव नगर व्यवसायी संघ के तत्वाधान में संघ के अध्यक्ष कालूराम अखिलेश की अध्यक्षता में ऐतिहासिक नगर डुमराँव की होली में ऐतिहासिक नगर डुमराँव की होली की शुरुआत 'स्नेह मिलन समारोह'।

उक्त संघ के महामंत्री ललन प्र० अकेला सहित उपाध्यक्ष शंकर प्रसाद केसरी, अनन्त प्रसाद केसरी, दिलीप कुमार बजाज एवं अन्य सदस्यों ने आगत पत्रकारों, बुद्धिजीवियों समाजसेवियों कवियों तथा व्यवसायियों का भव्य स्वागत किया। उपस्थित लोगों को अबीर गुलाल का टीका लगाया।

इस 'स्नेह मिलन समारोह' में नगर के युवा गायक गिरधारी प्रसाद तथा प्रदीप कुमार शरण ने अपने गायन से लोगों को मुग्ध कर दिया। उपस्थित सैकड़ों लोग प्रदीप के गीतों को सुनकर लोट-पोट हो गए। प्रसिद्ध कवि कालूराम अखिलेश ने भी अपनी कविता से लोगों का मन मोह लिया। नगर के चर्चित कवि किशोर सरकार डुमराई ने अपनी कविता के माध्यम से जन समूह को अभिभूत कर दिया।

पूर्व वार्ड आयुक्त भोला प्र. केशरी, अधिवक्ता शम्भु शरण 'नवीन' पत्रकार दशरथ प्रसाद विद्यार्थी बैंककर्मी एवं ट्रेड यूनयिन नेता मो. यासीन, रमाकान्त ओझा, जी.के. प्रसाद, आदि वक्ताओं ने नगर व्यवसायी संघ के पदाधिकारियों को हार्दिक धन्यवाद देते हुए आशा व्यक्त किया कि भविष्य में भी ऐसा मिलन समारोह का आयोजन होता रहेगा।

मुख्य अतिथि मुकुन्द सिंह ने नगर के सभी लोगों को सुरक्षा देने का वादा किया तथा इस मिलन समारोह पर हार्दिक खुशी जाहिर करते हुए भविष्य में इस तरह का आयोजन प्रति माह करने की सलाह दी।

समारोह के अन्त में संघ के सक्रिय सदस्य अनन्त प्र. केसरी ने आगत अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Office of the Municipal Committee Murwara.
From, The President,
Municipal Committee Murwara.

To, The Executive Engineer, Date : 6th June/36
Jubbulpore

Sir,

I have the honour to invite your kind attention to this office letter No. 170/A dated 12-4-36 reg : instalation of the clock on the Kamania Gate and request you to kindly favour the undersigned with your suggestions early without which the fixing of clock can not be undertaken.

Thanking you in anticipation.
I have the honour to be
Sir
Your's most obedient

Surya Prasad
President
Muncipal Committee Murwara.

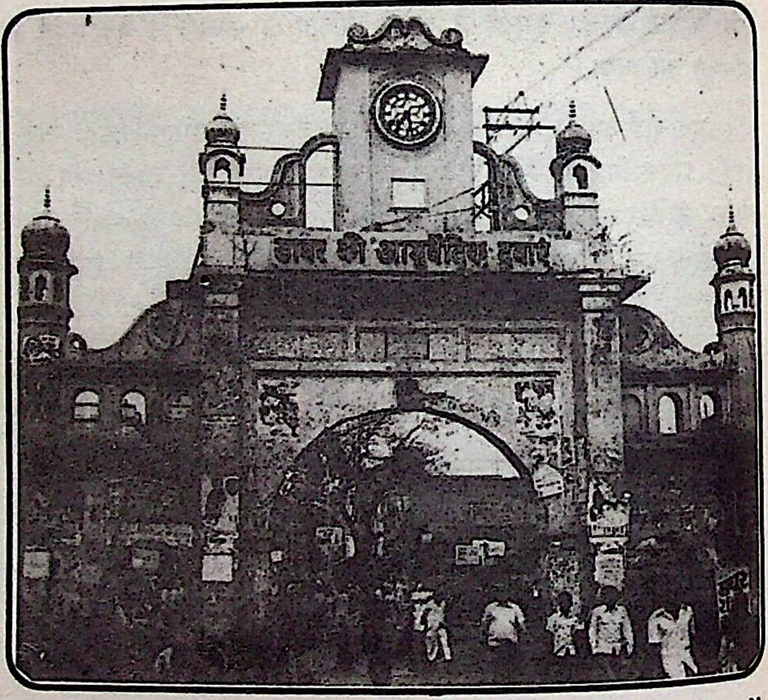

यह टावर श्री मोतीलाल जी बजाज द्वारा कटनी की जनता की सेवा में समर्पित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी महा सभा

दिनाङ्क : २४-१०-७३

प्रिय कालू राम जी

इहाँ के समाचार आछा बा। राउर समाचार खातिर मातु काली जी से मनावत रहीला जे सुन के दिल खुश होय।

आगे समाचार ई बा कि स्वास्थ्य मंत्री श्री केदार पांडे का भोजपुरी के आगा बढ़ावे खातिर बैखरा ले ले बा। ऊ भोजपुरी साहित्यकारन से बतिया के एगो रहता धरे के चाहत बाड़े। कोर्स बुक, पुस्तकालय आ अउर अउर समस्यन पर विचार होई आ काम होई।

रउरा से हाथ जोरी आ विनती बा कि ७ नवम्बर १९७३ दिन बुद्ध के साँझ के ६ बजे पांडेयजी का छज्जूबाग (पटना) वाला डेरा पर पधारीं। जरूर आईं। अइसन मौका रोज-रोज ना आवे।

राउरा
रघुवंश नारायण सिंह

◆

श्री अखिलेश जी ! दिनाङ्क : १८-१-४९

आप की 'बापू' शीषर्क कविता मिली धन्यवाद! कविता स्वीकृत कर ली गयी है जो यथासमय प्रकाशित कर दी जायेगी। विशेष कृपा –

आपका
मंगला प्रसाद पाण्डेय
संपादक, दैनिक आज, वाराणसी

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय महाशय, दिनाङ्क : १०-८-४१

आपकी कविता 'मेरा मन कहता है मुझसे' शीर्षक मिली। 'प्रदीप' के किसी अंक में वह सुविधानुसार प्रकाशित हो जायेगी, और वह ग्रंथ आपकी सेवामें भेज दिया जायेगा।

धन्यवाद

भवदीय
मु० मिश्र
साप्ताहिक संस्करण सम्पादक : प्रदीप, पटना

◆

बन्धुवर अखिलेश जी! दिनाङ्क : १-७-४६

आपकी भेजी हुई एक कविता १५ अगस्त को मिली बहुत-बहुत धन्यवाद। परन्तु उसी के साथ आप से मांग की गयी थी कि आप अपना परिचय एवं चित्र भी भेजें परन्तु आपने नहीं भेजा - भेजने का कष्ट करें।

अगर हो सके तो साथियों से रचना भी भिजवाने का कष्ट करें। परिचय, चित्र एवं उत्तर की आशा में

प्र०सं० "बापू"
बुधजन डॉगरा, खुजनेर

◆

श्री कालूराम "अखिलेश"

डुमराँव राज हास्पिटल के प्रांगण में, शनिवार दिनांक ३ अक्टूबर १९५९ को ९ बजे प्रातःकाल, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के कर कमलों द्वारा महाराजा बहादुर रामरण विजय प्रसाद सिंह एक्सरे क्लीनिक के उद्घाटन के शुभ अवसर पर आपकी उपस्थिति का प्रार्थी।

कमल सिंह एम.पी
महाराजा डुमराँव

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री कालुरामजी बजाज, दिनाङ्क : २३-८-६६

सप्रेम बन्दे। आपको यह प्रसन्नता होगी कि पुस्तकालय की ओर से आगामी दिनांक १४/९/६६ को "हिन्दी दिवस" के उपलक्ष में एक कवि सम्मेलन का आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर किया गया है, जिसमें, 'नीरज', 'काका', 'भ्रमर' सुमन, कवियित्री 'सुमित्रा जी', गुलाब आदि कविगण भाग ले रहे है।

आपसे अनुरोध है कि उक्त सम्मेलन में भाग लेकर आयोजन को सफल बनायें।

शुभेच्छु
ओम प्रकाश झुनझुनवाला
अध्यक्ष साहित्य समारोह उपसमिति, रानीगंज

◆

आदरणीय शास्त्री जी दिनाङ्क : १३-१०-८९

सप्रेम नमस्कार!

युरोप भ्रमण में आपका साथ बड़ा ही आनन्द-दायक रहा। आपकी कविता का रसास्वादन करने का हमें सुअवसर मिला। आपके ज्ञानवर्द्धक बातचीत से मैं काफी प्रभावित हुआ। इस उम्र में भी आपकी सक्रियता देखकर मुझे उत्साह एवं बल मिला।

युरोप भ्रमण के समय खींचे गये आपके छाया चित्र भेज रहा हूँ। शेष कुशल है।

आशा है आप सानन्द होंगे।

आपका
पुरुषोत्तमदास झुनझुनुवाला
केन्द्रीय उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष पूर्वांचल विश्व हिन्दू परिषद्

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Dear Ganpat Babu Date : 6th May 1993

I trust this will find you in the best of everything.

We are indeed grateful for your having accomodated and subsequently settled the differences in our accounts for which we had requested Shri Kaluram Bazaz, to represents us.

We hope that we may now have long lasting and cordial business dealings over the years to come.

With regards

Your sincerely
(C.V. Singh)
Dumraon Textiles Limited

◆

Shree Kaluram Bazaz Date: 14 Nov. 1989

M/s Sohan Agencies

Dear Mrs. and Mr. A. Ramamurthy,

Invite to be present on the august occasion of the marriage of Selvan Athiban Bose, - son of my elder brother Sri A. Subash Chandra Bose - with selvi K. Manimozhi - daughter of honourable Chief Minister of Tamilnadu Dr. Kalaignar M. Karunanithi on 3.12.89 at Madras. Invitation is enclosed and we would deem it our special previlege to have you to attend this marriage in person.

With regards and all good wishes,

Your's,
A. Ramamurthy
(Industrialist & Businessman)

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रिय कालूराम जी ! दिनाङ्क : ६-१-९०

बहुत दिनों से मैं डुमराँव नहीं जा सका अत: आपसे भेंट नहीं हो सकी - इधर हमारे पोते मुन्ना आये थे - उनसे आपके बारे में पूरा पता चला। बड़ी खुशी हुई कि आप विदेश भी गये थे।

मैनेजर साहेब को भी एक पत्र मैंने लिखा है - नये वर्ष के उपलक्ष में - और आपको भी अपनी शुभकामनायें भेज रहा हूँ - आशा है आपकी प्रतिभा अब निखरकर सबके सामने आवेगी - और सब लोग समझेंगे कि आप क्या असल में है - वैसे मैं तो बहुत पहले से पहचानता था -

कभी-कभी पत्र लिखकर खोज-खबर लेते रहियेगा।

मैं आऊँगाँ तो विशेष बातें होंगी -आपसे बात भी करने में बड़ी प्रसन्नता मालूम होती है। देखें कब तक साक्षात्कार होता है

भवदीय
श्याम सुन्दर सिंह
डी.एस.पी.(बिहार)

◆

प्रिय महोदय, दिनाङ्क : २८-१०-७८

प्रकृति के प्रकोप से आक्रान्त बिहार की जनता के सहायतार्थ आपके द्वारा भेजा गया एक हजार एक (१००१.००) रुपये का चेक सधन्यवाद प्राप्त किया।

आपके इस बहुमूल्य दान, सौहार्दपूर्ण भावना एवं सहयोग के लिए मुख्य मंत्री जी हृदय से आभारी हैं।

आपका
यशवन्त सिन्हा
(मुख्यमंत्री, बिहार)

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाई जी! दिनाङ्क : २५-२-९५

आपके घर मैं २०/२/९५ को गया था। आप बनारस गये थे। आपके न रहने पर मैं बक्सर चला गया आप जब बनारस से आ जायं तो कृपया डॉ० जितराम पाठक की स्मृति ग्रंथ के लिए एक रचना लिखकर उक्त पते पर भेज दें। शेष मिलने पर –

आपका
महेश्वराचार्य

◆

आदरणीय शास्त्री जी दिनाङ्क : ९-६-१९९५

सादर

आपके सम्मान-समारोह की जानकारी मिली हार्दिक प्रसन्नता हुई। बहुत दिनों से कोई समाचार नहीं मिला था। डा० आंजनेय ने एक दिन यहाँ मुझे बताया।

मेरी ओर से शत शत बधाई!

आपका
अशोक 'द्विवेदी'
(संपादक पाती, भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका)

◆

प्रिय बन्धु! दिनाङ्क : ५-१०-८९

सादर वन्दे।

आपके द्वारा लिखी 'हिन्दुस्तान हिन्दू हिन्दुत्व' पुस्तक आपके पुत्र के द्वारा प्राप्त हुई। पढ़कर बहुत प्रेरणा मिली। निराश जीवन को बल मिला।

इस हिन्दू द्रोही युग में आपके साहस की किन शब्दों में प्रशंसा करूं। यह समझ में नहीं आ रहा है। कोई शब्द ही नहीं मिल रहा है।

परन्तु भगवान से यह प्रार्थना करता हूँ कि आपकी जैसी हस्ती को अजर अमर अवश्य रखें जिससे हिन्दुओं को चेतना मिलती रहे।

आपका
शम्भू शर्मा 'पागल', साहिबगंज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनाङ्क : २९-८-९५

आदरणीय शास्त्री जी!

नमस्कार,

"जगरम" में डॉ. कमला प्रसाद "विप्र" के 'विप्रत्व, आ उनका प्रमुख कृतियन क पारखी दृष्टि से भेट भइल। रउरा साहित्य आ भोजपुरी साहित्यकारन का प्रति अनुराग से उत्साह बढ़ेला। 'पाती' के १३ वाँ अंक छप चुकल बा। अभी पटना से आइल नइखे। आवते रउरा किहाँ पठाइब। ढेर दिन से राउर समाचार ना मिलल बनारस २० जुलाई से २९ जुलाई ले रहनी। उहाँ केहू बतावल कि रउवा बनारस आइल बानी आ संकटमोचन का आसपास ठहरल बानी। हम प्रकाश उदय के दउरवनी बाकिर बहुत हेरलो, खोजलो पर भेंट ना भइल। एने निलय के कुछ पता नइखे। कवनो चिठ्ठी-पत्री के जबाबों ना मिलल।

उमेद बा स्वस्थ होखबि!

राउर

अशोक द्विवेदी

सम्पादक पाती भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका

◆

दिनाङ्क : १८-१२-१९८९

प्रिय अखिलेश जी!

बहुत दिनों के बाद आप ने मुझे याद किया - अपनत्व दर्शाया - आभारी हूँ - कृतकृत्य हूँ। गोविन्द सिकारिया दो सामग्री आपके सम्बन्ध में आज ही मुझे दे गये।

"भोज संस्कृति" व "हिन्दुस्तान, हिन्दू, हिन्दुत्व" दोनों सामग्री अच्छी लगी। पत्रिका भी काफी अच्छी लगी और पत्रिका में विदेश से लौटने पर आपके भव्य स्वागत की रिपोर्ट भी पढ़ी।

पत्रिका भी बड़े मनोयोग से पढ़ी। मैं भी भारतीय दर्शन-संस्कृति अध्यात्म का प्रबल पक्षधर हूँ। दुनिया में ऐसी उदार-उदात्त संस्कृति ऐसा उच्चतम - उत्कृष्टतम पूर्णतम भी कह दीजिये - दर्शन का दर्शन होना असम्भव सा है।

पत्रिका की प्रारंभिक कविता, 'कामना' और अन्तिम अभिनन्दन बहुत पसन्द आई, बार बार अभिनन्दन!

आशा है आप स्वस्थ होंगे।

रवीन्द्रनाथ ओझा, बेतिया

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूज्यनीय शास्त्री जी दिनाङ्क : ८-११-१९८९

प्रणाम

राउर नेह से ओतप्रोत पत्र पा के मन बड़ा अगरा गईल। रउआ लन्दन गइल रहीं आ आगउनी समाचार मिलल। रउआ बहुत बड़ उद्देश्य ले के गइल रहीं - उद्देश्य के पवित्रता आ ओह भावना के आकलन करे के सामर्थ्य त नइखे बाकिस अनुभव करतानी आ आवे वाला समय ही समुचित सम्मान देई। उम्र के एह ढ़लान पर कर्म क्षेत्र के ई उठान चढ़ाई चढ़ल रउए अस आदमी के वश के बा हमनी का त आश्चर्य से कठया मार जाता। रउआ निश्चित रूप से समय के प्रवाह में दिग्दर्शन-दीप बानी – ! राउर सनेह के अजस्र धार एनियो हमरा मिलत रही एह आशा आ विश्वास से।

राउर

डॉ. कामेश्वर प्रसाद पाण्डेय, भागलपुर

◆

परम पूज्य एवं आदरणीय, दिनाङ्क : ६-१०-८९

सादर प्रणाम एवं चरण स्पर्श, मेरा स्वीकार करें।

आपके द्वारा मेरे पास भेजी गयी हिन्दुस्तान-हिन्दू-हिन्दुत्व की सूत्रमय रचना का जितनी बार गीद्ध दृष्टि से अवलोकन करना चाहता हूँ उतनी ही बार निरन्तर नवीनता का सूर्य सामने प्रादुर्भाव होता है और ज्ञान के ताप की प्यास बुझाने जब भी इसमें जितनी डुबकी लगाकर सांस लेता हूँ कि फिर से नया सूर्य सामने आ जाता है और प्यास बुझती ही नहीं है। मनन चालू है।

आपने सूत्र का भी सूत्र बना डाला। केवल कुछ प्रिंटिंग भूल है। समस्त रचना अतुलनीय है।

फिर आत्माओं का मिलन होगा ही, यह सत्य है।

आपका कृपाभिलाषी

रघुवीर

इण्डियन यार्न ट्रेडिंग कार्पोरेशन, कलकत्ता

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धेय भाई, दिनाङ्क : ६-६-९५

भोजपुरी साहित्य मंडल बक्सर के आयोजन में अपने के देख के गर्व के अनुभव भइल। नाम से त परिचय एगो अरसा से रहल हा। 'मेरी दृष्टि में' अपने के कविता-संग्रह अपने के सारस्वत साधना के बतावे वाला कहल जाई।

'नालंदा दर्पण' में समीक्षा देवे के कोशिश रही।

'कलश' के अंक देखे के मिलल रहल हा। अपने के लगनशीलता, दूरदर्शिता आ उदारता के कायल होवे के पड़ल बा।

अपने के
(डॉ०) स्वर्णकिरण
सं० 'नालंदा दर्पण'
सोहसराय

◆

श्रद्धेय कालूराम जी, दिनाङ्क : २०-३-९६

आपकी बहुमुखी प्रतिभा से प्रभावित होकर मेरे मन में बहुत दिनों से आपके सम्बन्ध में कुछ लिखने की लहरें हिलोरें ले रहीं थी किन्तु मैं इसी ऊहापोह में पड़ा सोचता रह गया था कि क्या लिखूँ और कैसे लिखूँ। मैं न लेखक ठहरा न कवि। मेरे लिए तो आपके सम्बन्ध में कुछ लिखना सूर्य को दपक दिखाने जैसा ही लग रहा था। फिर भी मन माना नहीं और वह शुभ घड़ी आ गई कि अनायास ही हाथ में लेखनी आ गई और भावनाओं के साथ साथ कागज पर सरकने लगी। आपको मैं जिस रूप में देखता आ रहा था, सोच आ रहा था उसकी ही तस्वीर लेखनी के माध्यम से उतारने की धृष्टता की है मेरी धारणा है कि आपके साथ मैं पूरा-पूरा न्याय करने में असमर्थ जिसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ कुछ बन पड़ा लिख दिया वह इसके साथ संलग्न है

आपका शुभचिंतक
चन्द्र विजय सिंह
डुमराँव

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्दिरा गान्धी इमरजेन्सी गुब्बारे की हवा निकल गई

आश्चर्य, २७-७-७५ दिन के ११ बजे आदरणीय पिता जी डा० कालूराम शास्त्री अखिलेश घर पर डुमराँव में थे। अकस्मात् तत्कालीन थाना प्रभारी श्री राम सागर पाण्डे पी.ओ. तथा पुलिस जवानों के साथ घर पर पहुँचे और पिताजी को बुलाने के लिये मुझसे कहा – मैंने पिताजी को आवाज दी की वे दरवाजे पर आ गये। थाना प्रभारी इन्हें जीप में बैठाकर थाना ले गये हवालात में बन्द कर दिये।

बाद में पता चला केश २७/७/७४ दफा ४३/१ २७ए रेड बीथ ३३ डी; आई आर ३०/६ बी. एफ. डी. आई. आर. की तोहमत इन पर जबरन लगाई गई कुछ खास मकसद से।

उस समय आरा में माननीय वाई. एन. श्रीवास्तव एस.पी थे इसकी सूचना जब उन्हें प्राप्त हुई (श्रीमान् महाराजा बहादुर डुमराँव के द्वारा) उन्होंने तत्काल स्थानीय थाना इन्सपेक्टर श्री वैदही शरण सिंह जी को बुलाकर पूर्ण जानकारी प्राप्त की और स्वयं केश सुपरवाइज करके रीलीज आर्डर लिखकर एस.डी.ओ. को देने का आदेश दिया।

आश्चर्य के साथ डुमराँव के प्रबुद्ध नागरिकों एवं जनता ने कहा – इन्दिरा गाँधी इमरजेन्सी गुब्बारे की हवा निकल गई। मेरे आदरणीय पिता की तत्काल रिहाई –

भारतवर्ष में अपने ढंग का इमरजेन्सी की समयावधि का पहला आश्चर्य मय पर्दाफास। नेताशाही अफसरशाही का नंगा का नाच जिसे क्षेत्रीय जनता ने ताली पीट-पीटर देखा।

श्यामसुन्दर बजाज
एम.ए., एल.एल.बी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत

TWENTY FIVE NAYE PAISE

Date of application for the copy.	Date fixed for notifying the requisite number of stamps and folios.	Date of delivery of the requisite stamps and folios.	Date on which the copy was ready for delivery.	Date of making over the copy to the applicant.

To

The S. D.O. Buxar.

Ref:-Dumraon p.s. case no. 27(7)75 Under Section 37/43(1) 33 D.I.R.

Subject:- Release report.

Sir,

I beg to report that S.P.Bhojpur was please to supervise this case and evidence against accused Kaloo Ram Bajaj son of late Moti Lal Bajaj of Dumraon was found insuffient for/charge sheet.

In the above circumstance I request that he may kindly be released in this case from custody.

Yours faithfully
Sd/ Illegible
O/C Dumraon P.S.

31.7.75.

Copyed by S.S. Mitha — Compared by — Read by S.S. Mitha 21.8.75

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

COURT FEE INDIA ONE RUPEE 25 PAISE — COURT FEE INDIA 10 PAISE — TWENTY FIVE NAYE PAISE

Date of application for the copy.	Date fixed for notifying the requisite number of stamps and folios.	Date of delivery of the requisite stamps and folios.	Date on which the copy was ready for delivery.	Date of making over the copy to the applicant.
915/20-8-75	[illegible]	[illegible]	21-8-75	21-8-75.

न्यायालय एस०डी०ओ० [illegible] साहेब, बक्सर ।

/8/75 [illegible] थाना का नं० २०।७।७५

सरकार बनाम कालु राम बजाज वगैरह दफा ४३१।१। ३०।६०। [illegible]

३३ [illegible] ३०।६(। [illegible]

[illegible]

आर्डर शीट

१-८-७५ अभियुक्त कालुराम बजाज के तरफ से [illegible] करने हेतु एक आवेदन दिया गया है। Heard. The I.O. has prayed for release of the accused on the ground that the S.P.Bhojpur has supervised the case and found insufficients material against accused for c.s.

As such, the accused is enlarged from jail custody.

Sd/-Illegible

1.8.75.

Copied by S.S. Mishra 21-8-75 — Compared by [illegible] — Read by S.S. Mishra 21.8.75

[illegible]

21-8-75

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Date of application for the copy	Date fixed for notifying the requisite number of stamps and folios	Date of delivery of the requisite stamps and folios		Date of making over the copy to the applicant

To

The S. D.O.Buxar.

Reference:-Dumraon p.s. case no.27 dt. 28.7.75
U/S43(1)/33, 37(A) D.I.R. Read with 30(6) P.

Sir,

I beg to forward herewith the following accused po persons in connection with the case under reference and pray that they may kindly be remanded to Jail custody till 11.8.75 by the Time F. F. is expected to be submitted in [illegible] the court. case.

1. Nalco Ram Bajaj son of Moti Lal Bajaj of Dumraon P.S.Dumraon District Bhojpur.

2. Mishunji singh son of Dwarika singh of village [illegible] p.s.Simri district Bhojpur at present [illegible] Bhojpur p.s.Dumraon District Bhojpur.

3. Shaile Kumar Khemani son of Late Kashinath Khemani p.s. Dumraon Chouk P.S. Dumraon.

Your faithfully
Sd/-Illegible O/C Dumraon P.S.
28.7.75.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ELE - LANTERN PHONE NO

DUMRAON INDUSTRIES LIMITED

DUMRAON. E.R.
Bihar

Ref.________ 30. 6 195[illegible]

This is to certify that Shri Kalu Ram Bajaj has been the selling agent for the products of this Company since its commencement in 1942.

He has been the agent for the sale of hurricane lanterns for Bihar & U.P. & for Boot – Shoe Grindery product, such as tacks, heel pins, screwing wire & nails he has represented us through the country.

During this period he has been very loyal & conscientious in his work & has always endeavoured to expand business & sell our products on the best terms.

He has been very prompt in his payments & settlements of accounts & throughout, his services have given every satisfaction.

[illegible signature]
Chief Manager

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

SURYA NARAYAN DE
SOLICITOR.
Phone: Off. : 23-8109
Resi. : 34-3845

2, Church Lane,
Calcutta 6th Agst. 1974.

TO ALL to whom it may concern :

Sri Kaluram Bazaz of Dumraon (Bihar) is known to me for a long time in connection with his Astrological fore-tellings. His calculations are correct and dependable. In my estimation he may be ranked amongst the foremost astrologers in India. Further, the astrological contributions of Sri Bazaz are many and are illuminating.

[signature]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुर जिला

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

आरा (बिहार)

सम्मान-पत्र

जिन्होंने सरस्वती की साधना में अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया है, जिन्होंने हिन्दी-वाङ्मय की अखण्ड सेवा कर उसे विश्व वाङ्मय की कोटि में प्रतिष्ठित करने का अपूर्व प्रयास किया है और जिन्होंने विविध विषयक महत्त्वपूर्ण कृतियों का सर्जन कर माँ भारती के भाण्डार को समृद्ध बनाया है,

उन श्री कालू राम 'अखिलेश' को भोजपुर जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपने प्रथम अधिवेशन के शुभावसर पर हार्दिक अभिनन्दन के साथ यह सम्मान-पत्र सादर समर्पित करता है।

अध्यक्ष भोजपुर जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन आरा।	स्वागताध्यक्ष स्वागत-समिति	मुख्य अतिथि

दिनांक [illegible]

Verified

Attested

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

PRETTYFACE

Office : 33-2660
: 56-4077
: 34-7603
Resi. : 44-5103

Chamanlal Indrajit

HOSIERY MERCHANTS
& MANUFAC[illegible]

Office :- 135-1, MAHATMA GANDHI ROAD, (2nd Floor) CALCUTTA-7
Mills :- 21-A. DUM DUM ROAD, CALCUTTA-30

Ref. No. .... Dated .... 5·11·1974.

To whom it may concern.

This is to certify that Shri Kaluram Bajaj S/o Late Motilal Bajaj is an expert palmist. He has, by his art of palmistry, disclosed some astoundingly true information about the the personal lives of Shri ~~Et~~ Ashok Mehra, Shri Chandra Prakash Mehra, and myself.

For CHAMANLAL INDRAJIT
Gulab Raj
Partner.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Indian Post and Telegraphs Department

Certified that since I have joined in 1948 as the superpostmester Dumraon Mr. Kaluram Bazaz the Praprietor of me firm, Ramanand Kaluram, has supplied me cloth whenever required by me as the contracl rate & so far I have got knowledge he is an honest & fair dealing.

11-03-51 Sub Postmaster (Dumraon)

◆

आदरणीय भाई जी अखिलेश जी! दिनाङ्क : १३-२-९०

मैं उसी दिन शाहपुर आ गया – आपका प्रेम भूलता नहीं – मैं मानवता का प्रेमी हूँ – और वह मानवता आप में कूट कूटकर भरी है – आशा है, प्रेम भाव बनाये रखेंगे।

आपका ही
मंहेश्वरचार्य

◆

मान्य शास्त्री जी
सादर प्रणम

प्रभु कृपा से परिवार सहित आप स्वस्थ प्रसन्न होंगे। आज नववर्ष के आगमन पर हम सभी का अभिनन्दन स्वीकार करें।

संस्कार भारती परिवार परम पिता परमात्मा से आपके जन्म दिन १५ अप्रैल के आपके स्वस्थ, सुखी, समृद्ध, साधक, सदीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना करती है।

सदैव स्नेह मिलता रहे।

आपका
स्नेहाकांक्षी
....
संस्कार भारती

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजभवन
इटानगर
अक्टूबर १, १९९६

डॉ० अखिलेश जी,

आप द्वारा ताल कटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय दलित साहित्य अकादमी की सम्मेलन में दी गई "मेरी दृष्टि में" नामक पुस्तक प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद।

उक्त उपस्तक को अभी नहीं पढ़ सका हूँ, बाद में पढ़ूँगा।

शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय
(माता प्रसाद)
गर्वनर
अरुणाचल प्रदेश, इटानगर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी निबन्ध

सुगन्ध

दर्शन ग्रन्थों के अनुसार पृथ्वी का रंग-पीत एवं गुण गंध है। किसी भी पदार्थ की सड़न एवं मल से दुर्गन्ध उत्पन्न होती है। पृथ्वी, सभी सड़न एवं दुर्गन्धयुक्त पदार्थों को आत्मसात् करके अपने प्रजननीय गुणों में अभिवृद्धि कर लेती है। सभी प्राणियों का भरण-पोषण माँ पृथ्वी के आँचल से होता है। विभिन्न प्रकार के फल, पुष्प एवं अनाज, तेलहन के तरुओं का वनस्पति जगत् में अपना महत्व है। इसी शृंखला में विभिन्न पुष्पों का अपना सौन्दर्य अपनी आकर्षणमयी गरिमा और मनमोहक मादक सुगन्ध विख्यात है। गुलाब, जूही, चमेली, बेला, केवड़ा, मौलसिरी, गेंदा, रातरानी, खस, हिना अपनी जानी पहचानी सुगन्ध लहरियों की खुशबुओं की परम्परा में प्राचीन काल से चर्चित हैं।

"सुगन्ध" वनस्पति जगत् के अतिरिक्त प्राणियों से भी प्राप्त होती है। प्राणियों से प्राप्त होनेवाली खुशबू में कस्तूरी का (कस्तूरी मृग द्वारा) अपना विशेष स्थान है। मुश्क़ अम्बर भी इसका एक नाम है। सुगन्ध के प्रकारों का विवरण वर्तमान युग में सम्भव नहीं है। विज्ञान ने सुगन्ध की मात्राओं में विभिन्न सुगन्धों के आनुपातिक मिश्रण से नई सुगन्ध श्रेणियों को जन्म दिया है। सुगन्धों की परम्परा में सुगन्धित जल, सुगन्धित तेल एवं इत्रों के साथ-साथ अलकोहल से बने विभिन्न प्रकार के एसेन्स भी आए दिन बाजारों में बिक रहे हैं।

मूल प्रश्न यह है कि सुगन्ध के लिए ऊपर बताए गए माध्यम ही सुगन्धों के जनक हैं या अन्य क्षेत्र भी सुगन्ध के उद्गम स्थल हैं। सच पूछिए तो ज्ञान, भावना और कर्म के क्षेत्र भी सुगन्ध की उन्नततम गरिमा के क्षेत्र हैं। महापुरुषों की वाणी, कर्म और आचरणों से भी सुगन्ध उत्पन्न होती है। ऐसी सुगन्ध जो महापुरुषेतर व्यक्तियों के क्रिया कलापों को नई चेतना एवं सर्जनात्मक प्रेरणा प्रदान करती है। साथ ही उन्हें त्याग एवं बलिदान के लिए तत्पर करती है और उन्हें स्वार्थ के निम्न धरातल से परमार्थ के उत्तुङ्ग शिखर पर चढ़ाने को उत्साहित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करती है। जैन तीर्थंकरों का "अहिंसा परमोधर्मः" उद्घोष मनुष्य को ईश्वरोपम स्वरूप प्रदान करता है तो महात्मागांधी की अहिंसा अंग्रेजों के अस्त्रों-शस्त्रों की चुनौती को स्वीकार कर भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सफल भूमिका निर्वाह करती है। जैन तीर्थंककरों की अहिंसा लौकिकता से अलौकिकता के क्षेत्र में प्रवेश पाने का मार्ग है, तो गांधी की अहिंसा कर्म क्षेत्र में दूसरे पक्ष का हृदय परिवर्तन कर अपने अधिकारों को प्राप्त करने का अनुपम एंव अमोघ अस्त्र है।

"अक्षरं परमं ब्रह्म" अक्षर को परम ब्रह्म श्रुतियों में कहा गया है। अक्षर ब्रह्म की त्रिगुणात्मक प्रकृति जब तमोगुण प्रधान होती है तब अक्षर ब्रह्म कर्दम एवं दुर्गन्ध के पर्याय बनने लगते हैं। जब रजस् प्रधान होती है तब सुगन्ध एवं भोग का वातावरण निखरने लगता है परन्तु जब सत्त्वगुण प्रधान वृत्तियाँ अपनी उज्ज्वल तेजोमय किरणें प्रकाशित करती हैं तब हृदयकमल स्वयमेव विकसित होकर वातावरण को कमलमय करने लगता है। शब्द, ब्रह्म की सामर्थ्य एवं शक्ति का पूर्णलाभ तभी प्राप्त हो सकता है जब शब्द ब्रह्म अपने उद्गम स्थल से स्फुरित होते हुए वाणी और कर्म के माध्यम से अपने निर्मल स्वरूप को प्रकट करें। यह हृदय वाणी और कर्म का संगम ही लोकोत्तर सुगन्ध के क्षेत्र में परमानन्द का साक्षात्कार करा सकने में समर्थ है।

◆

दरिद्र-नारायण

सृष्टि का प्रारम्भ हो रहा था। जीव-जन्तुओं, कीट-पतङ्गों, जलचर-नभचरों के साथ ही मनुष्य ने भी धरातल पर जन्म लेकर अपने को धन्य समझा। नन्हें शिशु ने युवा होते ही अपनी जिज्ञासा के यौवन का भी कमनीय और सुखद रूप देखा। प्रकृति की अनुपम छटा; पुष्पों और फलों से लदी वनस्थली की गोद; सूरज, चाँद, तारे, हिमालय, निर्मल नदियों के जल की कलकल धारा प्रकृति का असीम अनन्त वैभव उसे विमुग्ध करने लगा। प्रकृति का यह असीम सौन्दर्य और मनोहारी रूप उसकी जिज्ञासा का विषय बन गया। चिन्तन की गहराई में उसका ज्ञान गोते लगाने लगा। इसी क्रम में उसने अपनी तपस्या की साधना और चिन्तन में विश्व स्रष्टा के मंजुल मनोहर विस्मयकारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विराट् रूप के दर्पण में अपने स्वरूप को देखा। सोऽहम् की ध्वनि गूँजी बूँद सागर हो गई, नर नारायण हो गया। यहीं से नर नारायण की कीर्ति-गाथा शुरू हुई। यह सृष्टि के आरम्भ का दर्शन है।

चिन्तन को गति मिली। नर के नारायण होने की प्रक्रिया का चिन्तन और मनन होने लगा। सभी व्यक्ति आकृष्ट होकर अपने-अपने भावों को अभिव्यक्ति देने लगे। इसी क्रम में दो मार्गों का दर्शन-विधान हुआ। प्रवृत्ति मार्ग और निर्वृत्ति मार्ग। प्रवृत्ति मार्ग गृहस्थ, नृप तथा पारिवारिक जीवन के लिए श्रेयस्कर सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। निर्वृत्ति मार्ग तपोधन साधुओं एवं ऋषियों के लिए। प्रवृत्ति मार्ग के केन्द्र में सत्य और सेवा भावना का वर्चस्व उद्भासित हुआ। निर्वृत्ति मार्ग के केन्द्र में त्याग की पराकाष्ठा एवं तप बल की महत्ता प्रकाशित हुई। इसलिये इस युग को सत-युग का सम्बोधन मिला। राजा हरिश्चन्द्र ने सत्य और सेवा तथा दान भाव को अपना कर प्रवृत्ति मार्ग के पथ पर अपनी जीवन-यात्रा के रथ को आगे बढ़ाया। प्रजा ने जय जयकार के गीत गाये। उनकी सेवा भावना और सत्यवादिता का विश्व में डंका बज गया। घर-घर में नर नारायण सत्य नारायण होकर प्रतिष्ठित हो गये। सत्यनारायण कथा की व्यापकता आज भी अपने आप में अपनी महत्ता सँजोये है।

इसी सतयुग में निर्वृत्ति मार्ग के धनी; तप त्याग के मूर्तिमान महापुरुष राजर्षि विश्वामित्र ने कठिन तपस्या और साधना के बल से तप:शक्ति और यश: श्री अर्जित की। वन में तपस्या करने वाले इस यशस्वी ऋषि के मन में भी सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की जय जयकार शूल बनकर चुभने लगी। सोचने लगे राजैश्वर्य एवं वैभव त्याग कर तपस्वी का; ऋषि का जीवन जीने पर भी मेरी जय जयकार जनता नहीं कर रही है। ग्लानि और क्रोध से हृदय भर गया। सत्यवादी हरिश्चन्द्र की जय जयकार ने तपस्या से सधे हुए पावन-मन में भी नागफनी के शूल उत्पन्न कर दिये। ऋषि का मन व्याकुल होकर ईर्ष्या से जलने लगा। उन्होंने अपनी तपस्या की साधना द्वारा सत्यवादी हरिश्चन्द्र से उनका राज, ऐश्वर्य और वैभव स्वप्नावस्था में दान स्वरूप प्राप्त कर लिया। प्रात:काल होते ही राजा हरिश्चन्द्र के सिंहासन और ताज के स्वामी राजर्षि विश्वामित्र हो गये। और इस दान की दक्षिणा चुकाने के लिए उन्हें अपनी पत्नी महारानी शैव्या, पुत्र रोहिताश्व तथा स्वयं को बेचना पड़ा। महारानी सेविका बन गई। महाराजा श्मशान घाट के कर प्राप्तकर्ता डोम के सेवक। कहाँ राजमहलों का ऐश्वर्य सुख भोग और कहाँ चिता पर जलते हुए मुर्दों की गन्ध, श्वान और गिद्धों से भरा श्मशान घाट। सत्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का मार्ग भी कैसा दारुण, भयङ्कर और क्लेश दायक है यह सत्यवादी हरिश्चन्द्र के जीवन में चरितार्थ हुआ।

सत्याश्रयी गृहस्थ जीवन कम्पायमान हो गया। सत्य और सेवा भावना भय राजैश्वर्य तथा त्याग तपस्या की श्रेष्ठता के द्वन्द्व ने जन-मानस को झकझोर दिया। ऐश्वर्य और वैभव की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी ने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। गृहस्थ परम्परा की सुखवहा स्वामिनी लक्ष्मी ही तो है। अतः सत्यनारायण की यात्रा आगे बढ़कर लक्ष्मीनारायण में प्रतिष्ठित हो गई।

इसके पश्चात् 'त्रेता' का आगमन हुआ। सत्य के तीन पाद रह गये। अतः इस युग को त्रेतायुग का सम्बोधन प्राप्त हुआ। राज्य-लक्ष्मी ने इस युग में भी अपने आकर्षण का नृत्य-स्थल कैकेयी के मन को बनाया। कैकेयी ने अयोध्या का राज; भरत के लिए माँग लिया। और राम के लिए वनवास। सत्य वचन से बँधे महाराज दशरथ ने अपने वचनों की रक्षा हेतु अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। परन्तु सत्य की मर्यादा कम नहीं होने दी - 'रघुकुल रीति सदा चलि आई; प्राण जाय पर वचन न जाई'। कैकेयी पुत्र भरत ने माँ के माँगे राज्य का स्वामित्व नहीं स्वीकार किया। राजसत्ता का लोभ भरत को अपने जाल में नहीं फँसा सका। वनवास से लौटने पर कुल की प़रम्परा और मर्यादा के अनुसार अयोध्या का राज राम को सौंपकर भरत अतिशय आनन्दित हुए। कैकेयी ने अपने साथ कौशल्या को और सुमित्रा को भी वैधव्य भोगने पर मजबूर कर दिया। सत्य की आदर्शवादिता और व्यावहारिक प्रामाणिकता को आतङ्कित करने में लक्ष्मी ने पुनः अपना कार्य किया। इस पर भी लक्ष्मीनारायण की पूजा का कार्य और सत्य के प्रति आकर्षण भी बना रहा। राजा हरिश्चन्द्र और दशरथ के साथ घटी घटनाओं के बाद भी श्रेष्ठ-जन सत्य के प्रति आस्थावान रहे। सत्य के प्रति आदर भाव रहते हुए भी लोग सत्यवादी होने का साहस जुटाने में भयभीत होने लगे।

द्वापर युग का आगमन हुआ। सत्य के दो पाद रह गये। इस युग में सत्यव्रती सत्यवादी महाराजा युधिष्ठिर का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इनके जीवन काल में भी राज्य लक्ष्मी ने भ्रातृकुलों में द्वेष-कलह और ईर्ष्या के बीजों का रोपण कर दिया जिसके कारण महाभारत संग्राम हुआ। कौरवों और पाण्डवों ने एक दूसरे का विनाश करने के लिए कमर कस ली। भीषण युद्ध हुआ, बन्धु-बान्धव, सगे-संबंधी, मित्र-गुरु सभी आपस में लड़ कर विनाश के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गर्त में गिर गये। इस युद्ध में सत्य को भी अपना बलिदान देने के लिए कृष्ण ने विवश कर दिया। धर्मराज युधिष्ठिर को राजसत्ता प्राप्त करने के लिए ऐश्वर्य और वैभव पाने के लिए 'अश्वत्थामा मारा गया' कहना पड़ा। राजलक्ष्मी की सत्ता के सामने सत्य को विगलित होना पड़ा। अब सत्य के तीन पाद समाप्त होकर केवल एक पाद शेष रह गया। कलियुग का आगमन हुआ। लक्ष्मी की महत्ता; श्रेष्ठता पूर्ण रूप से स्वीकृत हो गई।

कलियुग में सभी अर्थ-संग्रह की ओर अग्रसर हो गये। तथा धन, धरती सम्पत्ति अधिकार की रक्षा हेतु नाना प्रकार के साधनों की खोज हुई। इस खोज के माध्यम से दुनिया अणुबम, न्यूट्रान बम, हाइड्रोजन बम, लेंसर किरणें जैसे अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण और संग्रह में लग गई। यह विश्व की मानसिक स्थिति है जो भय और संशय से घिरे वातावरण के साथ-साथ विश्व पर अपना एकाधिकार जमाने की कोशिश में लगी है। दूसरी तरफ यह स्थिति है कि आर्थिक विषमता से उत्पन्न वातावरण से निपटने के लिए मानवीय विचारधारा को उजागर करने वाले व्यक्ति दीन-दुखियों की सेवा हेतु तत्पर हो रहे हैं। इनका कहना है कि महाविनाशकारी शस्त्रों के निर्माण की होड़ कभी भी शान्ति को जन्म नहीं दे सकती। अत: दीन-दुखियों की सेवा के माध्यम से ही स्थायी शान्ति के दर्शन विश्व में होंगे। यहीं से दीन-दुखियों को दरिद्रनारायण के नाम की मान्यता प्राप्त हुई। दरिद्र इस युग का नारायण हो गया। दरिद्र का प्रसन्न होना ही भगवान का प्रसन्न होना है। सेवा-भावना की यह महत्ता है। सेवा से ही समाज में सुख-शक्ति का निवास हो सकता है। जहाँ सच्ची सेवा निस्वार्थ भाव से होती रहेगी वहीं उन्नति और विकास के चरण गतिशील रहेंगे। सच्ची सेवा भावना चरित्र में चरितार्थ होना ही मनुष्य का धन्य होना है। किसी भी वर्ग, जाति, समाज और राष्ट्र के लिए मानवता की सच्ची सेवा ही उसकी अतुलनीय सम्पत्ति है। जिसने भी इस सेवा के रहस्य को समझ लिया उसे कुछ भी जानने को शेष नहीं है। परतन्त्रता के विनाश के लिए अहिंसा के बल की प्रतिष्ठा हुई। किन्तु आज आर्थिक परतन्त्रता के विनाश के लिए सच्ची सद्भावना और विवेक के साथ-साथ दृष्टिकोण में भी आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। संग्रह के दुर्ग को तहस-नहस होना है। दरिद्रनारायण को अपना हक और स्थान प्राप्त होकर रहेगा। ईश्वर का अंश धनिक वर्ग में नहीं, गरीबों में भी है। अत: लक्ष्मी अब केवल विष्णु की नहीं यावत् मात्र मानव विष्णुओं की होकर रहेगी।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदूषण ज्ञान गंगा का

ज्ञान "शब्द" और इसकी गरिमा से प्रायः सभी परिचित हैं। यह शब्द अपने आप में अतिशय महत्त्वपूर्ण है। वेदों, उपनिषदों, दर्शन एवं अन्य शास्त्रों के अवगाहन, चिन्तन, मनन और सतत-अध्ययन के बाद आज भी ज्ञान शब्द की सीमा कहाँ समाप्त होती है, सर्व साधारण को यह जानकारी होना शेष ही है। युगों के अन्तराल के बाद भी ज्ञान को सम्यक् प्रकार से – धार्मिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में ग्रहण करना क्या मानव के लिए सम्भव हो सका है। प्रत्येक विवेकशील, प्रबुद्ध, विद्वान् एवं चिन्तक व्यक्ति, इसका उत्तर 'न' कहकर ही देगा।

श्रीमद्भगवद्गीता में - "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" कहकर ज्ञान की गरिमा प्रगट की गई है। गीता कहती है – इस संसार में ज्ञान ही सबसे पवित्रतम है। इसके समान पवित्र यहाँ पर कुछ भी नहीं है। जिस व्यक्ति में ज्ञान की पवित्रता का उदय हो जाता है वह स्वयं पवित्र होकर समाज और राष्ट्र को धन्य कर देता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण के मुखारबिन्द से निसृत वाक्य अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं हो सकता है। श्रीकृष्ण के इस वाक्य की केन्द्रीय भावना आकर्षक एवं सभी के लिए वर्तमान समय में विचारणीय है। अतीत काल में भी इस पर विचार-विमर्श, टीका इत्यादि हुई है। फिर भी, यह विषय सर्वांगीण व्याख्यायित नहीं हो सका है। यही इस ज्ञान-गंगा की पवित्रता का विस्मयकारी स्वरूप है। आइये वर्तमान के सन्दर्भ में हम लोग भी शक्त्यनुसार इस पर विचार-विमर्श करें।

धन जिसके पास होता है, लोक व्यवहार में समाज उसे धनी कहता है। प्रत्यय भेद से उसे धनवान भी कहा जाता है। इसी प्रकार ज्ञान जिसके पास होता है उसे व्यक्ति एवं समाज अपनी विचारधारा के अनुसार ज्ञानी कहता है। अतः ऐसे ज्ञानी व्यक्ति क्या सम्यक् प्रकार से ज्ञान प्राप्त, ज्ञान के धनी हैं। यह प्रश्न स्वाभाविक है। इस प्रश्न का उत्तर पाने का यह लघु प्रयास है।

ज्ञानी किसे कहें, ज्ञानी कहाँ हैं, ज्ञानियों की संख्या कितनी है, विश्व में कितने ज्ञानी हैं। यह प्रश्न धार्मिक, राजनैतिक, साम्प्रदायिक, व्यावहारिक दार्शनिकों की दृष्टि में क्या स्थान रखता है; यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। ज्ञानी किसे कहा जाय जब इस बिन्दु से विचार शुरू होगा तब उपर्युक्त पाँच वर्ग को अलग-अलग संगठित इकाइयों के मुख्य प्रतिनिधियों के मापदण्ड अलग-अलग प्रकार के होंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये विभिन्न विचारों, धारणाओं, अनुभवों की सीमाओं से बँधे मापदण्ड ज्ञानी की पैमाइश अपने-अपने ढंग से करने लगेंगे। यदि इन सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को एकसाथ बैठाकर भी सर्व मान्य निर्णय लेने का आग्रह किया जाय तब भी ऐसा होना असम्भव ही प्रतीत होगा। अपनी धार्मिकता के परिवेश में विभिन्न धर्मानुयायी; अपने दलगत स्वार्थों एवं निजी स्वार्थों की रक्षा में रत राजनैतिक दल, अपने सम्प्रदायों की नेतागिरी में व्यस्त स्वार्थान्ध साम्प्रदायिक संगठन, अपने अध्ययन एवं प्राप्त अनुभवों के धरातल पर खड़े होकर भी ज्ञान की पवित्रता के सत्य स्वरूप को ग्रहण करने में सर्वथा असमर्थ रहते आये हैं और रहेंगे। क्योंकि ये सब अपनी श्रेष्ठता का मोह, सत्ता का लोभ, यशोभोग की बलवती कामना के चलते मिथ्याभिमान से ग्रसित होकर ज्ञानी होने का दम्भ करते हैं। और यही दम्भ ज्ञान की पवित्रता को दूषित कर अलगाववादी, आतंकवादी एवं हिंसक प्रवृत्तियों को जन्म देता है।

ज्ञान के सम्बन्ध में एक स्मरणीय उक्ति प्रचलित है। इस संसार में दो अक्ल है। प्रत्येक व्यक्ति इस विश्वास में है कि उसके पास डेढ़ अक्ल है। आधी अक्ल दूसरे के पास है। व्यक्ति के मानस में जन्मा यह अहंकार ही ज्ञान को अपवित्र करता है। ज्ञान-गंगा के दूषित होने की शुरुआत यहीं से होती है। यदि यह अहंकार अपने जन्म काल से ही शुद्ध विनयशीलता में परिवर्तित होने लगे तो ज्ञान गंगा की पवित्रता की रक्षा में सहभागी बन सकता है। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो इसके पश्चात् भी ज्ञान की पवित्रता की रक्षा के लिए अनवरत प्रयत्न करना पड़ता है। मानव मन के षट्विकार, क्रोध, मोह, लोभ इत्यादि भी ज्ञान गंगा को प्रदूषित करने में बहुत बड़े कारण हैं। इन विचारों से उत्पन्न प्रदूषण से भी ज्ञान गंगा की पवित्रता की रक्षा के लिए सतत जागरूकता की आवश्यकता होती है। साक्षी भाव से स्थिर होकर इन विकारों की गतिविधि पर निरीक्षण का क्रम जारी रखकर जब तक इन पर नियन्त्रण नहीं किया जाता, ये ज्ञान गंगा के प्रदूषण को बढ़ाते ही रहते हैं।

अब तक जितने भी अवतारी एवं महापुरुष हुए हैं वे अपने विवेक की सतत जागरूकता से ही मन के षट्विकारों का नियंत्रण कर ज्ञान की पवित्रता को प्राप्त हुए हैं अथवा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ रहे हैं।

सुरसरि गंगोत्री से निकलने वाली पावन गंगा भी मलोपहारणी (पापों को नाश करने वाली) है। हमारे शास्त्र गंग महिमा की इस अनुपम गाथा से भरे हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। एक कवि का कथन "एहो मेरे पाप तोंही गंगा के कछार में पछार क्षार करिहों" गंगा की पाप विनाशिनी शक्ति की महिमा में गाये गये अगनित श्लोकों, छन्दों और गीतों के तारक-समूह में एक तारे के समान है। आज इस पावन गंगा को ही हम लोगों ने प्रदूषित कर दिया है। लोकतन्त्र बहुमत पर आधारित होता है। बहुमत-बहुसंख्यक लोग ही गंगा को प्रदूषित करने वाले हैं। इस पर भी तुर्रा यह कि राम तेरी गंगा मैली। आज प्रशासकीय स्तर पर गंगा को प्रदूषण-मुक्त कराने का प्रयास हो रहा है। प्रशासन इसमें कहाँ तक सफल होगा यह भविष्य बतलायेगा। न्यायालय का आश्रय प्रदूषण फैलाने वालों पर कितना नियन्त्रण कर सकेगा यह भी सामने आयेगा।

इस चिन्तन का परिणाम यह निकलता है कि जब तक भारत के लोकतन्त्र की–बहुमत की यह मानसिकता नहीं बन जायेगी कि हमें ज्ञान-गंगा के पवित्रीकरण का संकल्प लेना है, ज्ञान गंगा को पवित्र रखना है। गंगोत्री से निकलने वाली गंगा; हरिद्वार, कानुपर, इलाहाबाद, बनारस, बक्सर, पटना, भागलपुर और कलकत्ता में भी इस संकल्प के बिना प्रदूषण मुक्त नहीं हो सकेगी। राष्ट्रीय जनसंख्या का अधिकांश भाग जब दृढ़-संकल्प लेकर ज्ञान की पवित्रता और हृदय प्रेम की मधुरता को बिना भेदभाव के प्रसारित करता है तभी राष्ट्र और समाज धन्य होते हैं।

◆

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी

"न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी" इस कहावत की प्रसवाभाव-भूमि का दर्शन करने की मेरी लालसा ने चिन्तन की गहराई में उतरने हेतु मेरे विवेक को विवश कर दिया। कहावतों का प्रचलन और बातचीत के अवसरों पर उनका उपयोग आम बात है। बुद्धिजीवियों और विद्वानों से लेकर कम पढ़े-लिखे व्यक्ति भी कहावतों का बोलचाल में प्रयोग करते पाये जाते हैं। परन्तु चिन्तन की गहराई और ऊँचाई पर पहुँच कर उस कहावत के उत्स का क्षेत्र जानने की जिज्ञासा कितनों में उत्पन्न हुई है, यह सोचने और समझने की बात है। है न। आइये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज हम "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी" इस कहावत की गहराई और ऊँचाई का दर्शन करने का प्रयास करें।

ऐसा लग रहा है कि इस कहावत के जनक ने बाँसुरी के प्रति नहीं, बाँसुरी के क्रिया-कलापों के प्रति बाँसुरी की मधुर सुरीली तान के प्रति बाँसुरी की मनमोहक ध्वनि से निकलने वाले सुरों द्वारा लगी चोट के प्रति अपना आवेशमय क्रोध उग्र रूप से प्रगट किया है। लग रहा है बाँसुरी की रसमय ध्वनियों ने उसके निजी स्वार्थ का पटक-पटक कर कचूमर निकाल दिया है। इसी स्थिति में उस व्यक्ति ने बाँसुरी का विनाश करने की बात मन में ठान ली। परन्तु बाँसुरी को तोड़ कर फेंक देने से फिर बाँसुरी नहीं बनेगी ऐसा सम्भव नहीं था। अस्तु, बाँसुरी जब बाँस से बनती है, उसे भी धरती पर से मिटाने की बात उसने सोची और इसी चिन्तन और सोच का परिणाम – "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी"– हमारे सामने प्रगट हुआ।

पर विचारणीय है कि बाँसुरी की मधुर ध्वनियों का पुनः प्रगट न होने का प्रण तो उसने ठान लिया था और पृथ्वी को बाँस-विहीन कर देने की बात भी सोच ली थी। पर बाँस से क्या केवल बाँसुरी ही बनती है कि बाँस मनुष्य द्वारा और उपयोगों में लाया जाता है। यह उसके समझने-विचारने की बात नहीं थी क्या? बाँस से ही घर के छप्पर छाये जाते हैं। और घर के छप्पर तले घर के सामानों की तथा पारिवारिक व्यक्तियों की धूप, शीत तथा वर्षा से रक्षा होती है। बाँस ही से डलिया और पंखे इत्यादि बनते हैं। कागज भी तो बाँस से बनता है। कागज की उपयोग्गिता – इसी कागज पर व्यक्ति की शैक्षणिक योग्यता का प्रमाण-पत्र, डिग्री के रूप में बनता है। घर-जायदाद-रूपी सम्पत्ति का रजिस्ट्रेशन, स्टाम्प पेपर भी तो कागज ही है। व्यापारिक लेखे-जोखे सभी कागज पर होते हैं। दुःख-सुख के सवाँद; पत्रों के माध्यम से आदान-प्रदान होते हैं। जन्म-कुण्डली, ग्रह-नक्षत्रों के प्रभाव और राज्यों के संधि-पत्र, समझौते, फैसले सब कागज पर ही होते हैं। दैनिक पत्रों के माध्यम से हमें देश-विदेश के समाचार प्राप्त होते हैं, नोटों के माध्यम से लेन-देन तथा बैंक चेक और डिमाण्ड ड्राफ्ट इत्यादि कागज नहीं तो और क्या है। इन बातों पर बिना ध्यान दिये, उस व्यक्ति ने बाँसुरी के साथ-साथ बाँस को मिटाने की घोषणा कर दी। और कहा – "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी"।

वाह! क्या कहने हैं। अपने क्षुद्र स्वार्थ के चलते विश्व की मानवता को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बड़े लाभ से वंचित करने की ठान लेना बता रहा है कि मनुष्य कितना स्वार्थी होता है, जरा सोचिये।

अभी-अभी ताजा खबरों के अनुसार रूस में गोर्वाच्योव ने लोकतन्त्र लाने की प्रक्रिया की शुरुआत की थी, परन्तु वोलशेविक क्रान्ति के समर्थक पिछलग्गुओं ने मौके की ताक-झाँक की नोक पर तख्ता-पलट नाटक शुरू कर दिया और सोचा कि गोर्वाच्योव को समाप्त कर देने से रूस में लोकतन्त्र की प्रक्रिया रुक जायेगी याने 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'। मार्क्सवाद के समर्थक केवल गोर्वाच्योव को ही लोकतन्त्र की प्रक्रिया का जनक समझ रहे थे परन्तु हाय रे दुर्भाग्य 'येल्तसिन' तो और दो कदम आगे निकले। जनता ने भी उनके आह्वान पर जमकर संसद भवन पर उनका साथ दिया और कम्युनिज्म समर्थकों को लेने के देने पड़ गये। गोर्वाच्योव और येल्तसिन ने "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी" की कहावत अपने अनुरूप बना ली। "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी" येल्तसिन और गोर्वाच्योव की समझ की कार्य-रूप में परिणति। कहिये कैसी इस कहावत की करामात रही रूस में देखी आपनें।

चिन्तन की गहराई और ऊँचाई भी अपने आप में समुद्र-सी गहरी और हिमालय-सी ऊँची होती है। परन्तु गहरे में उतरने पर एक बात और समझ में आ रही है। बाँसुरी तो नटनागर मनमोहन कन्हैया ब्रज में बजाया करते थे। गोपियाँ इस बाँसुरी की मधुर तान पर अपनी जान देती थीं। दही से मक्खन निकालती – मक्खन निकालना भूल जाती। गहने पहन रही होती तो गहना हाथ ही में रह जाता, पहनाना भूल जातीं, आँखों में काजल लगाने की प्रक्रिया भूलकर, पैरों में महावर की जगह काजल लगा लेतीं। कहने का तात्पर्य बाँसुरी की स्वर लहरियों पर उन गोप-बालाओं का मन भी नाचने लग जाता था। उनका मन लौकिक व्यापारों को भूलकर तन्मयता से बाँसुरी की राग में भाग लेने लगता था। इस स्थिति में ही किसी गोप बन्धु का मन अत्यन्त दुःख गया। घर की स्थिति और अपनी पत्नी की उस तन्मयता से उसके स्वार्थ को जो करारी चोट लगी, उसी कराह ने उसे यह अहसास करा दिया कि इस अनर्थ की जड़ बाँसुरी है और उसने बाँसुरी के साथ-साथ बाँस को भी पृथ्वी से नेस्त-नाबूत करने की ठान ली। बस, इस विचार को उस गोप के मन की भाव-भूमि से जन्म लेने का अवसर मिल गया "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।"

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्वनि प्रदूषण

बहुत दिनों से बलवती इच्छा लन्दन और यौरोपीय देशों की यात्रा करने की थी। २४ अगस्त १९८९ को अनायास सहज भाव से यह अवसर प्राप्त हो गया। २६-२७ अगस्त १९८९ में विश्व हिन्दू परिषद का विश्वस्तरीय सम्मेलन लन्दन से कुछ दूर केनिया वावल्ल में सम्पन्न हुआ। वहाँ की शिष्टता, शालीनता, सौजन्य भाव, अनुशासनप्रियता स्मरणीय थी। विषय ध्वनि प्रदूषण का है अतः इसी बिन्दु पर जो देखा, सुना और समझा गया वही बताने जा रहा हूँ।

देहली से लन्दन यात्रा के क्रम में विश्व हिन्दू परिषद के विदेश-विभाग के अधिकारी सभी सदस्य यात्रियों को यूरोप यात्रा के विषय में वहाँ की व्यवस्था में सहयोग किस प्रकार देते हुए यात्रा करनी है। यह समझा रहे थे। प्रथम सूचना यह थी लन्दन के विषय में कि वहाँ आप बहुत शान्त वातावरण पायेंगे। आपस में जोर से बोलते हुए शोरगुल करते हुए लोग नहीं मिलेंगे। चाहे हवाई अड्डा हो, होटल या शहर की सड़कें। सभी व्यक्ति अपने-अपने कार्य में शान्त मुद्रा में मार्ग में चलते नजर आयेंगे। यहाँ तक कि मोटर गाड़ियाँ भी कम से कम हॉर्न का इस्तेमाल करती हैं। अतः सभी सदस्यों को आपस में धीरे-धीरे बोलना श्रेयस्कर होगा। कृपया जल्दबाजी में किसी प्रकार का शोरगुल अशोभनीय होगा। और इस वास्तविक सत्य का साक्षात्कार भी हम लोगों ने लन्दन में किया।

वैज्ञानिकों ने अन्वेषण किया है कि ज्यादा आवाज – जो लाउडस्पीकर, बैण्ड बाजे या जोंर-जोर से रोने-चिल्लाने की ध्वनियों से कानों के पर्दे पर लगातार ध्वनि प्रकम्पन के जो धक्के लगते हैं उससे सुनने की शक्ति का क्रमशः ह्रास होता है। और लगातार यह वातावरण बहरा बनाने की प्रक्रिया शुरू करता है।

लन्दन में होटल, बसों की यात्रा सड़कों पर तथा विश्वस्तरीय विश्व हिन्दू सम्मेलन में इसका अनुभव हुआ। वहाँ पर रहने वाले व्यक्ति वे अंग्रेज हों या अन्य देशों के नागरिक, शालीनता के साथ कितनी मधुर आवाज में बात करते हैं। परन्तु भारत में स्थिति भिन्न है। यहाँ तो संसद-भवन और विधान सभा में भी शोर-गुल, अशोभनीय छींटा-कशी, गाली गलौज (असंसदीय बातें) यहाँ तक की कुर्सियाँ उठाकर भी आपस में भिड़ जाना तो प्रायः अखबारों में आता ही रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहने का तात्पर्य यह है कि हमने ध्वनि का सार्थक प्रयोग मानवहित में किस प्रकार हो यह सोचने-समझने का प्रयास ही नहीं किया। भारत में ध्वनि–स्वरों पर जितना अन्वेषण हुआ है (अतीत में) शायद उस शोध-अन्वेषण स्तर को प्राप्त करने में पाश्चात्य वैज्ञानिकों को अभी बहुत समय लगेगा।

तेज ध्वनि प्रदूषण में बहरे होने की प्रक्रिया तो बनती ही है इसके अतिरिक्त मानसिक विकृतियाँ भी जन्म लेती हैं। असम्मानजनक भावना वाले शब्दों के प्रयोग (शब्दों से उच्चरित होने वाली ध्वनि) से क्रोध का जागरण भी तो ध्वनि प्रदूषण का ही घातक परिणाम है। मानवीय सनातन संस्कृति में : "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्" यानी, सत्यमप्रियम्" की सार्थकता याने मधुर वचन बोले ऐसा होने से मानसिकता में प्रदूषण-विष उत्पन्न नहीं होगा। यही भावना है।

क्रोध के उत्पन्न होने के अन्य कारण भी हैं। परन्तु शब्दों का असंगत प्रयोग विशेष कारण है। अत: शब्द ध्वनि–वाणी विकार उत्तेजित करने वाले शब्दों का प्रयोग शास्त्र में अनुचित कहा गया है। ऐसे शब्द-स्वरों के प्रयोग से आये दिन बहुत से परिवारों को नष्ट होते देखा गया है।

ध्वनि और स्वरों के विषय में कुछ विशेष कहना आवश्यक है। किसी भी प्रकार की आवाज को ध्वनि कहते हैं। ध्वनि का सीधा और सरल अर्थ वैज्ञानिक परिभाषा में विद्युतीय तरङ्गें हैं। ब्राडकास्ट करने वाले यन्त्रों से ध्वनियाँ विद्युत तरंङ्गें बनती हैं। और ग्रहणशील यन्त्रों (रेडियो) के माध्यम से पुन: ध्वनियों में रूपान्तरित होती हैं। ध्वनि विद्युत लहरियों की विशेषता है कि वे आपस में टकराकर भी अपने स्वरूप में ही बनी रहती हैं। व्यक्ति विशेष की आवाज को आप रेडियो, टेलीफोन, टेलीविजन पर पहचान भी सकते हैं। बशर्ते व्यक्ति आपके सम्पर्क में आ चुका हो। ध्वनि और स्वरों के रहस्य को आप वैदिक ऋचाओं में भी देख सकते हैं।

महाभाष्य में एक प्रसंग है –"एक: दुष्ट: शब्द: स्वरतो वर्णतो वा स वाक वज्रम् यजमानम् हिनस्ति यथेन्द्र शत्रु: स्वरतोपम-राधात्" राक्षस यज्ञ कर रहे थे यज्ञ में इन्द्र के विनाश के लिए आहुति दी जा रही थी। "इन्द्रशत्रु स्वाहा" इस शब्द के उच्चारण में तत् पुरुष समासवाचक ध्वनि-स्वर का उच्चारण हो गया। अत: इन्द्र के शत्रु राक्षसों का ही विनाश हो गया। बहुब्रीही समास वाचक स्वर का प्रयोग होता तो इन्द्र का विनाश होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी तरह ध्वनि-स्वरों से होने वाले उतार-चढ़ाव के लय में बँध जाने पर संगीत-लहरियाँ उत्पन्न होती हैं। उन्हें ही राग-रागिनी कहा जाता है। इन्हीं रागरागिनियों के प्रभाव से दीपक राग गाये जाने पर दीपक प्रज्वलित हो जाते थे। मेघ मल्हार राग गाये जाने पर नभ में बादल छाकर पानी बरसाने लगते थे। आज भी संगीत की ध्वनियों से गायें ज्यादा दूध देती हैं। पेड़-पौधे अधिक फल फूल देते हैं, यह वैज्ञानिकों ने प्रमाणित कर दिया है।

◆

लोकभाषा एवं लोक-साहित्य

लोकभाषा, लोकगीत, लोक-साहित्य सहज भाव से क्षेत्रीयता से सम्बन्धित भाषा के विविध अङ्गों का स्वरूप प्रतिष्ठित करते हैं। यहाँ लोक शब्द; भाषा, गीत और साहित्य के साथ विशेषण के रूप में स्थापित किया गया है। परन्तु यहाँ लोक शब्द जब संज्ञा के रूप में व्यवहार में लाया जाता है तब इसका स्वरूप बहुत व्यापक हो जाता है। यथा मृत्युलोक, परलोक के व्यवहार से यह स्पष्ट है। भाषा के मूल उद्गम के विषय में विद्वानों की जो मान्यता है उसके अनुसार लोकभाषा क्षेत्रीय ग्राम्य जीवन की भाषा होती है। प्राचीन काल में इसका सहज स्वरूप भाषा व्याकरण के बन्धनों से मुक्त रहा है। बिहार प्रान्त में बोली जाने वाली भोजपुरी, मैथिली, मागधी, संथाली इत्यादि भाषाएँ लोकभाषा के ही विभिन्न रूप हैं। वैदिक काल से पूर्व बोली जाने वाली भाषा को ही लोंक भाषा कहा गया है। स्थान भेद से उक्त काल में भी लोकभाषा के विभिन्न रूप रहे हैं।

विभिन्न प्रकार की मानव प्रकृति जब विभिन्न विषयों की ओर मुड़ती है, उसके व्यापार सुखद-दुखद, सामाजिक, राजनैतिक-आध्यात्मिक एवं पारिवारिक भावों को अपना प्राकृतिक भाषा में सजाने-सँवारने का प्रयत्न करते हैं तब लोकभाषा में लोकसाहित्यका निर्माण होता है। यद्यपि यह सत्य है कि लोक-साहित्य का पूर्वकालिक स्वरूप भाषा-सौन्दर्य एवं शब्द-शैली एवं माधुर्यरस बोध के साथ स्थापित नहीं हुआ था। परन्तु जैसे-जैसे उस क्षेत्र की अन्य भाषाओं का विकास विद्वानों के द्वारा हुआ उसी के साथ-साथ लोक साहित्य का भी परिमार्जित रूप स्थापित होता गया। किन्तु जो सत्य गहरे में निहित है वह यह है कि लोक-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा अनपढ़, अल्प शिक्षित, शिक्षित तथा विद्वानों को भाव बोध हृदयङ्गम कराने में एक समान असमर्थ है। जबकि लोकभाषा से इतर भाषा अपनी दुरूहता, सामाजिकता तथा शब्दों की शैली के कारण अपढ़ और साधारण शिक्षित समुदाय से अपने हृदय का सम्बन्ध सहज भाव से नहीं जोड़ पाती है।

भारतीय हृदय का सामान्य स्वरूप जानने और पहचानने के लिए ग्रामीण अंचलों में प्रचलित (ग्राम्य गीतों) लोकगीतों की ओर ध्यान देना होगा। केवल पाण्डित्यपूर्ण अन्य भाषाइयों की रचना के अध्ययन से ऐसा सम्भव नहीं है। पण्डिता, भाषा ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती है ऊ लोकभाषा से उसकी समानान्तर दूरी बढ़ती जाती है। जनता के सभी वर्गों पर प्रभाव डालने वाली उसकी शक्ति क्षीण पड़ने लगती है। ऐसी ही स्थिति में सूफी सन्तों – कबीर, रैदास विद्यापति, भिखारी ठाकुर इत्यादि ने जन-जीवन से जुड़ी भाषा में अपनी रचना के माध्यम से अध्यात्म, धर्म, राजनैतिक सामाजिक रूढ़ियों पर सशक्त दिशा बोध दिया है एवं हृदयगत सूक्ष्म भावनाओं के मार्मिक तथ्यों का साक्षात्कार तथा प्रत्यक्षीकरण कराया है। इस प्रकार क्षेत्रीय विविधताओं के बीच जहाँ तक उन लोगों का ज्ञान पहुँचा है और साधारण व्यक्तियों के हृदय को छू सकने में समर्थ हुआ है, वह ज्ञान उनकी वाणी – लोकभाषा के प्रतिनिधित्व रूप का परिचायक हुआ है।

लोकभाषा की भाव धारा प्रकृति के सहज साहचर्य और पशुपक्षियों के विभिन्न स्वरूपों के साथ-साथ नदी, वृक्ष-लताओं को अपने साथ समेट कर चलती हैं और ग्रामीणों के हृदय से सहज ही अपना संम्बंध बना लेती हैं। ग्राम बधू के लोक गीत में इसकी छाप स्पष्ट देखी जा सकती है। एक ग्राम वधू का पति कमाने के लिए परदेश जाता है और बताई हुई अवधिं पर लौटकर घर नहीं आता है। तब वह ग्राम वधू इन्हीं प्राकृतिक आलम्बनों के माध्यम से अपने वियोग की दीर्घता को, हृदय की वेदना को लोकगीत के माध्यम से प्रगट करती है। वह विरह जन्य भाव प्रगटीकरण सरलता और सहजता का मूर्त रूप होता है। इसमें शब्दाडम्बर की शैली नहीं होती है। यथा "जौन आम के विरवा के, पिया दरवाजा पर अपना हाथे रोप के गइल रहली हो ओमे मोजरो आइल, फलों लाग गइल परन्तु पिया नाहीं अइलें"। इस कथन में कितनी विरहवेदना और मार्मिकता के साथ अपनी गोद सूनी होने का संकेत तथा पति के निर्मोही होने की भावाभिव्यंजना निहित है इसे रसिक हृदय साहित्यानुरागी के साथ-साथ साधारण अनपढ़ व्यक्ति भी समझ सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा के शेक्सपीयर होने का गौरव भिखारी ठाकुर को मिला है। उनकी रचनायें साधारण व्यक्ति से लेकर पिछड़े समाज में भी समाहित हैं। उनकी एक विशेषता यह भी रही है कि वे अपने दृश्य-काव्य के स्वयं पात्र बनकर मंचीय अभिनय भी करते थे।

उनके एक दृश्य काव्य 'बेटी बेचवा में' उन्होंने समाज में प्रचलित कन्या-विवाह पर कितनी करारी चोट दी है। उसी से उनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचय मिलता है। यथाः—

रूपया गिनाय लिहलऽ
पगहा धराय दिहला?
चेरिया के छेरिया बनवलऽ हे बाबूजी

पगहा धराय दिहलऽ में कितनी भावप्रवण विवशता है यह चित्र ध्यान देने योग्य है। पगहा तो गाय-बैल को बेचकर खरीददार को धराया जाता है। गाय-बैल मौन पशु हैं। वे कसाई के हाथों बिकने पर भी मुँह नहीं खोलते। चुपचाप जिसके हाथ में पगहा होता है उसके पीछे-पीछे चले जाते हैं। इसी संवेदनामय भावपक्ष को कितनी सशक्तता के साथ बेटी की मजबूरी के पक्ष में रूपायित किया गया है कि सहज ही सर्व साधारण का हृदय द्रवित हो जाता है नेत्र अश्रुपूरित हो जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि लोकभाषा, लोकगीत तथा लोकसाहित्य की अपनी गरिमा आज भी ज्यों की त्यों वर्तमान है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वर्तमान की सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, आर्थिक स्थितियों के परिवेश में ग्राम्य जीवन में जो उथल-पुथल हो रही है उसे सशक्त लोक-भाषा में अभिव्यक्ति दें। लोकभाषा के मर्म को पहचानने और जानने वाले जो विद्वान् अपनी रचनाधर्मिता में इन भावों को रूपायित करने में समर्थ हैं उनकी कीर्तिपताका सदा फहराती रहेगी। इसी कड़ी में 'लोहा सिंह' नाटक के लेखक श्री रामेश्वर सिंह 'कश्यप' का नाम भी अग्रिम पंक्ति में शोभायमान है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैश्य-संगठन : महत्त्वाकांक्षा

कुछ वर्षों से वैश्य बुद्धिजीवियों का सोच बन चुका है कि वैश्यवर्ग यानी वैश्यों की सभी जातियों, उपजातियों को मिलकर केवल वैश्य नाम से अपनी पहचान बनानी चाहिये तथा इन सभी जातीय, उपजातीय वैश्य बन्धुओं के आपस में रक्त-सम्बंध भी कायम होने चाहिये। वर्तमान समय की समग्रता में जो राजनैतिक गतिविधियाँ हैं उसके गर्भ से यह विचार उद्भूत है। वैश्य संगठन यदि इस विचार को सफलतापूर्वक अपने मुकाम पर पहुँचाने में असमर्थ रहेगा तो उसे नाना प्रकार के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्पीड़नों से गुजरना होगा और वह अपनी सामूहिक प्रतिष्ठा भी नहीं बचा पायेगा या स्थापित कर पायेगा। राजनैतिक एवं व्यावसायिक स्वार्थों की बात अलग है। कुछ वैश्य बन्धुओं की यह धारणा रही है कि वैश्य संगठित होकर नहीं रह सकते हैं। इसी प्रकार की विचार मंथन की प्रक्रिया के अन्तर्गत बक्सर जिला वैश्य महा सम्मेलन का रूप-निखरा, उसकी पूर्ण छवि २९ नवम्बर '९४ को बक्सर में महारैली के रूप में देखी गई। इसके पूर्व पटना में भी प्रान्तीय वैश्य महारैली सम्पन्न हुई थी। अब तो प्रान्त के अन्य जिलों में भी वैश्य महारैलियाँ हो रही हैं।

अतीत की अपेक्षा वर्तमान में व्यक्ति-व्यक्ति में महत्त्वाकांक्षा का जागरण हो रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद व्यक्ति के सोच में बड़ा परिवर्तन आया है। व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षा का अपना महत्त्व है। महत्त्वाकांक्षा के बल पर ही मनुष्य उन्नति के शिखरों पर चढ़ता है। सम्पत्ति, गौरव, यश सभी महत्त्वाकांक्षा के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। सच कहा जाय तो महत्त्वाकांक्षा वह सीढ़ी है जिस पर चढ़े बगैर आदमी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। लक्ष्य प्राप्ति हेतु सही साधनों को अपना कर बिरले व्यक्ति ही हिमालय-शिखर पर चढ़ पाते हैं। क्योंकि ऊपर चढ़ने के मार्ग में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, चरित्र और आचरण को सम्हाल कर ही आगे बढ़ना पड़ता है। चरित्र और आचरण को सम्हालने का कार्य बड़ी कठिनाई पैदा करता है। यह बात सभी जानते हैं कि वैश्य को महाजन कहा गया है। 'महाजनो येन गतः सपन्थः' महाजन जिस पथ पर चलें वही पथ चलने योग्य है। एक कहावत और भी है 'हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और होते हैं' आज इसी कहावत को चरितार्थ करने वाले लोग प्रायः मिलते हैं। गाँधी जी की फोटो जगह-जगह पर लगी हुई मिलती है– गाँधी जी आगे बढ़ रहे हैं पीछे चरण चिह्न छूट रहें है– फोटो के नीचे लिखा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है :- महाजनो येन गतः सपन्थः आज कांग्रेस के साधारण कार्यकर्ताओं की बात दर किनार, धुरन्धर महान् नेता भी उनके पथ – आदर्श पर चल रहे हैं क्या यह प्रश्न राष्ट्र के सभी विवेकशील शुभचिन्तकों के सामने मुँह बाये खड़ा है। हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। कांग्रेस ही नहीं और भी राजनैतिक दलों की तरफ आँख उठाकर देखें तो बहुधा यही चित्र वहाँ भी बनता है।

वर्तमान में प्रायः सभी तबके के व्यक्ति महत्त्वाकांक्षा की दौड़ में शामिल हैं। दलगत, जातिगत, वर्णगत, धर्मगत, वर्गगत तो उठा-पटक है ही, भीतरी स्तर पर भी सभी इकाइयों में आपस में बड़ा संघर्ष है। पर यह संघर्ष चरित्र और आचरण की बुनियाद पर होता तो कुछ दूसरा ही चित्र बनता। जो संघर्ष हो रहा है इसकी बुनियाद – लगीं मारना, छींना-झपटी, खून-खराबा, हत्या, समानधर्मा-स्वार्थों का संघटन खड़ाकर आपस में लडाने जैसी वृत्तियों पर खड़ी हो रही है। यही दुर्भाग्य है। और वैश्य संघटन भी इन कुवृत्तियों का शिकार होता नजर आ रहा है। नेतृत्व को धारदार होना चाहिए ऐसा बुद्धिमान पढ़े व्यक्तियों का कहना है। वे यह कहते भी हैं और भाषण देते हैं। परन्तु नेतृत्व करने वाले नेता में कैसी धार हो यह नहीं बताते हैं। नेता तलवार, चाकू, कैंची तो हैं नहीं कि लुहार के यहाँ भेजकर उस पर धार धरा ली जाय, राजनैतिक, धार्मिक, व्यवसायिक, जातीय एवं सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में नेता होते हैं। सबकी धार अलग–अलग ढंग की होती है। सभी में एक तरह की धार नहीं हो सकती। कुछ बिन्दुओं पर समानता हो सकती है। परन्तु विचारधाराओं में अलग-अलग दिशायें देखने को मिलेंगी। समानता की बात इस तरह हो सकती है कि सभी चरित्रवान हों और आचरण भी निजी स्वार्थ की सीमा में उलझ कर न रह जाय। दिशा बोध लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सुगम और सुलभ हो। उलझनों और झगड़ों से बचाने वाली नीति हो। ऐसा नेतृत्व ही धारदार हो सकता है। भाषण और नारों से नेतृत्व धारदार नहीं हो सकता। इसके लिए संयमित, चरित्रवान, आचरणवान जीवन जीना होगा। हमें दूसरों के सिर की हिफाजत करनी होगी – एक व्यक्ति रेल में सफर करने हेतु चढ़ा उसके सिर पर लोहे का एक बड़ा सन्दूक था, उस सन्दूक को वह बैठने की सीट से ऊपर बनी रैक पर रखने लगा। तभी एक बुढ़िया जो नीचे सीट पर बैठी थी बोली, सन्दूक गिर जायेगा, उस व्यक्ति ने कहा इसमें काँच का सामान नहीं है – कोई टूटने वाली वस्तु नहीं है। ऐसे सोच से अपने स्वार्थ की बात ही सामने आयेगी। दूसरे के स्वार्थ – याने बुढ़िया को चोट लग जाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह बात समझ में नहीं आयगी। ऐसे विचारों के व्यक्ति नेतृव करने योग्य नहीं हो सकते।

हमें विश्वास है कि वैश्य समाज में सही नेतृत्व का उदय होगा और वैश्य-बन्धु अपने उद्देश्य और लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे।

◆

परमाणु अप्रसार संधि शान्ति के स्थान पर युद्ध को प्रोत्साहित करेगी

विषय का शीर्षक अपने आप में महत्वपूर्ण है। परमाणु अप्रसार सन्धि याने परमाणु अस्त्रों के प्रसार को बाधित करना। जहाँ तक वह प्रसारित है उसके आगे प्रसारित न हो। क्या इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जिन राष्ट्रों के पास परमाणु शक्ति है वे राष्ट्र ही परमाणु शक्ति के स्वामी रहें। अन्य विकासशील, अविकसित राष्ट्र परमाणु अप्रसार सन्धि पर हस्ताक्षर कर उसका अनुसंधान न करें, कर रहे हों तो उसे बन्द कर दें।

इस ध्वन्यात्मक विश्लेषण से उनका तात्पर्य स्पष्ट है क्योंकि शान्ति की भावना का इसमें कहीं भी स्थान नहीं है। शान्ति के नाम पर परमाणु अप्रसार सन्धि की योजना का केन्द्र केवल परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों का अपनी प्रभुसत्ता बनाये रखने का, सुरक्षित रखने का एकमात्र कौशल है।

हिरोशिमा पर छः अगस्त १९४५ को सवा आठ बजे पहला परमाणु बम गिराया गया। एक लाख चालीस हजार लोग इसकी भयङ्कर विनाश–विभीषिका के शिकार हुए; उनका अस्तित्व मिट गया। उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग चिथड़े-चिथड़े होकर यत्र-तत्र बिखर गये तथा बचे-खुचे अधमरे, चीखते-चिल्लाते लोगों की आवाज सुनने वाला भी कोई वहाँ नहीं रहा। हिरोशिमा के मकानात जमींदोज़ हो गये। हजारों सूर्यों से भी ज्यादा रोशनी और ऊष्मा ने आग उगलकर कयामत की बरसा कर दी। ऐसा भंयङ्कर था परमाणु बम का विस्फोट।

इस परमाणु बम के विस्फोट से निकलने वाली विकिरण अब तक जापान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लाखों-लाख लोगों की जान ले चुकी है और उसका दुष्प्रभाव अभी भी लोगों की जान ले रहा है। जापान में पाँच लाख लोग लुकोमिया रोग के शिकार हैं। जापान में ऐसे रोगियों को हीवाकोवा कहते हैं।

परमाणु बम के ऐसे भयङ्कर उत्पाती परिणाम से सभी राष्ट्र भयभीत हैं। तथा सभी राष्ट्रों के निवासी भी भयभीत हैं। परमाणु अस्त्रों के जखीरों का क्रमवार समयावधि के साथ विनाश इसी भयंङ्कर विस्फोट की देन है।

परमाणु शक्तिसम्पन्न राष्ट्र नायकों का हृदय इसी भय या विनाशलीला से द्रवित एवं अभिभूत है। परन्तु अपनी प्रभुसत्ता की सुरक्षा हेतु वे चाहते हैं अन्य राष्ट्र परमाणु शक्तिसम्पन्न न हों और इसीलिये परमाणु अप्रसार संधि का सोच विश्व शान्ति के नाम पर रेखाङ्कित किया जा रहा है।

हाइड्रोजन बम के आविष्कारक 'एडवर्ड टेलर' का कथन है कि बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में परमाणु बम का प्रयोग जापान पर हो जाने से इस सदी का उत्तरार्ध अधिक शक्तिपूर्ण रहा है। अतः परमाणु अस्त्रों की एकतरफा निन्दा नहीं की जा सकती।

प्रश्न यह उठता है कि क्या परमाणु अस्त्र नहीं थे, तब युद्ध नहीं होते थे। इतिहास गवाह है प्रथम विश्वयुद्ध का। युद्ध तो मनुष्य की बढ़ती हुई राजनैतिक, आर्थिक, भौतिक सुखोपभोग की महत्त्वाकांक्षाओं की देन है। राष्ट्र-नायकों का अपनी श्रेष्ठता, प्रभुसत्ता बनाये रखने की कामना का ज्वलन्त राक्षसीय रूप है।

भारतीय संस्कार और संस्कृति तो देवता और दानवों के संग्राम की गाथा से सराबोर है। जहाँ युद्ध वहाँ शान्ति कहाँ। शान्ति हेतु सन्धियाँ कारगर साबित नहीं हुई हैं अतीत का इतिहास इसका साक्षी है। भारत-पाकिस्तान के युद्ध भी इसके गवाह हैं। ताशकन्द समझौता हुआ पर पाकिस्तान ने इस समझौते की अनदेखी कर भारत पर पुनः आक्रमण कर दिया। इस दूसरे आक्रमण में भी बुरी तरह से पिटकर शिमला समझौता स्वीकार किया। आज शिमला समझौते को भी मानने से दूर हट रहा है एवं काश्मीर को पाकिस्तान का अंग बनाने हेतु आतंकवाद के जरिये अघोषित युद्ध में लिप्त है। अमेरिका को परमाणु बम न बनाने का छलपूर्ण आश्वासन देकर भी उससे शस्त्रों की आपूर्ति पाकिस्तान की रक्षा के नाम पर करवा रहा है।

जिस अमेरिका ने कुवैत की मुक्ति हेतु अणुशक्तिसम्पन्न राष्ट्र और संयुक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्र संघ के माध्यम से सहमति के आधार पर सैनिक अभियान चलाया और आज भी कुवैत की मुक्ति के पश्चात् ईराक पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये हुए है। इन सब घटनाओं से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि अरब सागर के पेट्रोल भण्डारों पर ईराक का विशेष नियन्त्रण न हो इसी हेतु यह सैनिक कारवाई की। कुवैत मुक्ति तो एक ऊपरी सतह की बाजीगिरी थी जिसका नामकरण "कमजोर राष्ट्र की रक्षा करना महान् राष्ट्रों की विश्वनीति है" किया गया।

काश्मीर के मामले में विदेशी राष्ट्रों में ब्रिटेन से अधिक कौन जानेगा। भारतीय राष्ट्र का बँटवारा किस तरह, किस प्रकार, किन अनुबन्धों के तहत हुआ यह जानकारी ब्रिटेन को अच्छी तरह से है। परन्तु जो कुछ काश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान में हो रहा है उसकी अनदेखी राष्ट्र-संघ एवं कथित महान् राष्ट्र कर रहे हैं। विश्व में शान्ति की स्थापना हेतु वहाँ पर उनका प्रयास क्रियाशील नहीं हो रहा है। या जानबूझकर अपनी प्रभुसत्ता का सर्वोत्तम स्वरूप निखारने के हेतु ऐसा किया जा रहा हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहना युक्ति-युक्त होगा कि परमाणु अप्रसार संधि शान्ति के स्थान पर युद्ध को ही प्रोत्साहिंत करेगी। अतीत की राजनैतिक सन्धियों की शर्तों एवं समझौतों के गर्भ से युद्धोन्माद पैदा हुए हैं। इतिहास गवाह है।

युद्ध-मुक्त विश्व की कल्पना या स्थापना हेतु विश्व के छोटे-बड़े समस्त राष्ट्रों को महात्मा गाँधी के बताये मार्ग अहिंसा पर चलना होगा। तथा अहिंसा का निर्मल उज्ज्वल स्वरूप राजनैतिक, आर्थिक, सामजिक सभी क्षेत्रों में चारित्रिक स्तर तक निखारना होगा तभी युद्ध-मुक्त-विश्व की कल्पना साकार हो सकेगी। परमाणु अप्रसार सन्धि तो शान्ति के स्थान पर युद्ध को ही प्रोत्साहित करेगी।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दुत्व

हिन्दुत्व, शृंखलाबद्ध प्राग्वैदिक काल से आज तक अपने मूल स्वरूप को बनाये रखने में विभिन्न प्रकार की जटिल एवं विषम परिस्थितियों में भी सफल रहा है। इसके मूल स्वरूप को भ्रष्ट एवं आत्मासात करने के लिए हिन्दुत्वेतर धर्मों ने सशक्त प्रयास किये हैं। परन्तु उसकी दृढ़ गौरवमयी शक्ति ने उनके प्रयत्नों को विध्वंस ही नहीं किया बल्कि उन धर्मों पर अपने प्रभाव की प्रशंसनीय छाप डाली है। हिन्दुत्व के इस जुझारू रूप को कालदृष्टि से सात खण्डों में विभाजित किया जा सकता है। प्राग्वैदिक काल, वैदिक काल, जैन, बौद्ध, इस्लाम, सिख और इसाइयत। इन सात काल खण्डों में हिन्दुत्व ने कितने प्रकार के संघर्षों को देखा है, झेला है, भोगा है, एवं कितने सम्प्रदायों, कितने प्रकार के आचार-विचारों तथा धार्मिक विश्वासों को पचाकर भी अपने मूल स्वरूप में बनाये रहा है, यह इतिहास का विषय है। हिन्दुत्व के विशिष्ट गुण, धर्म, ज्ञान, आदर्शवादिता; संसार के श्रेष्ठ दार्शनिकों, विचारकों को; आज भी मानवमात्र की मंगल कामनामयी दिव्य भावना से आकर्षित कर रही है। हिन्दुत्व के मूल में विश्व कल्याण की कुंजी निहित है। वर्तमान में वैज्ञानिक उपलब्धियाँ मनुष्य के लिए ही नहीं, महाशक्तिसम्पन्न राष्ट्रों के लिए भी परस्पर में अविश्वास, संशय और रक्षा की प्रतिद्वन्द्विता में विनाशकारी भावनाओं का सृजन कर रही है। ऐसे में गौरवमय परम ज्ञान गुण, धर्म से समन्वित मानसिक स्थिति ही विश्व कल्याण की व्यवस्था सम्पादित कर सकती है। प्रश्न यह है कि परम मानसिक स्थिति कैसे बने। परम मानसिक स्थिति प्राप्त करने के लिए हिन्दुत्व के सारगर्भित विचारों का गौरवमय स्पन्दन, श्रवण, चिन्तन और मनन करने योग्य है।

'परम' शब्द अपने आप में जिस बोध को लिये है उस बोध का वाचक परम शब्द का अनुवाद किसी भी भाषा में नहीं है। संस्कृत भाषा का यह ऐसा श्रेष्ठ शब्द है जिसकी तुलना विश्व की किसी भाषा के शब्द से होना सम्भव नहीं है। प्रत्येक शब्द की अपनी आत्मा होती है उस आत्मा को जानना जरूरी है। परमात्मा, परमहंस, परमार्थ, परमपद, परमेश्वर इत्यादि शब्दों को देखिये। हिन्दुत्व ने अपने बोध काल से लेकर वर्तमान तक जो यात्रा की है वह अपनी गम्भीरता और सहिष्णुता के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता कायम किये हुए है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दुत्व की पावनता

महिमामयी गंगा हिमालय के गो-मुख से निकल कर हिन्दुस्तान के विस्तृत भू-भाग को अपनी पतितपावनी निर्मल-धारा से धन्य करती हुई बंगाल की खाड़ी में अपना अस्तित्व समुद्र को समर्पण करती है। अपने उद्गम स्थल से प्रवाहमान गंगा में समुद्र यात्रा तक छोटी-बड़ी अनेक नदियों के संगम स्थल हैं। तीर्थराज प्रयाग में गंगा, जमुना, सरस्वती का संगम स्थल है। संगम स्थल पर गंगा जमुना की धाराएँ अलग-अलग दिखाई पड़ती हैं; सरस्वती तो गुप्त रूप से मिली है। जमुना जी पुण्यसलिला हैं। परन्तु प्रयागराज से आगे गंगा नाम ही रह जाता है। जमुना पूर्ण रूप से गंगा में मिल जाती है। जमुना अपनी पहचान तीर्थराज प्रयाग में ही गंगा में समाप्त कर देती है। यह गंगा की महिमा है। प्रयाग से वाराणसी होते हुए जब बिहार प्रदेश में गंगा पहुँचती है तो उसमें सोनभद्र नदी आकर दीघाघाट दानपुर के पास मिलती है। यह नदी भी अपना अस्तित्व गंगा में समाप्त करती है। आगे फिर गंगा अपने नाम से ही बढ़ती है। गौरवपूर्ण गरिमा के धनी अनेक तीर्थस्थलों को अपने किनारों पर प्रेम देती हुई गंगा, गंगा ही बनी रहती है। हिन्दुत्व भी गंगा के समान ही महान् है। हिन्दुत्व ने भी नास्तिकता, आस्तिकता, निराकार, साकारवादी-आस्था, इस्लामिक, इसाइयत की प्रचण्ड धाराओं को आत्मसात किया है। ये प्रचण्ड धारा हिन्दुत्व के मूल रूप को समाप्त नहीं कर सकी। बल्कि हिन्दुत्व ने ही अपनी बहुआयामी संस्कृति का जो उन्नत स्वरूप है उसकी छाप सभी पर छोड़ी है और विश्व में अन्य वर्गों की साम्प्रदायिकता, दार्शनिकता के रूप को सजाया-सँवारा है। ऐसा हिन्दुत्व है जिसने निर्मल, निश्छल भाव से अपना प्राञ्जल स्नेह सभी धर्मावलम्बियों को दिया है। हिन्दुत्व भी गंगा के समान पावन है क्योंकि कहा जा सकता है गंगा का पर्यायवाची हिन्दुत्व है।

विभिन्नता में एकता

मोमबत्ती की लौ, किरासन तैलीय ढिबरी की लौ, सरसों के तेल से जलने वाले दिये की लौ, इसी प्रकार एरण्डी, महुआ, सूरजमुखी इत्यादि अन्य स्निग्ध पदार्थों से प्राप्त लौ प्रकाश देती है। घृत का दीपक भी प्रकाश देता है। प्रकाश तो प्रकाश है; अपनी क्षमता के अनुसार अन्धकार का विनाश करता है। पर जिन-जिन पदार्थों से प्रकाश मिलता है उन पदार्थों के गुण-धर्म अलग-अलग होते हैं। प्रकाश का गुण-धर्म एक है अन्धकार का हरण; किन्तु प्रकाश के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारणभूत सभी पदार्थों का गुण-धर्म अलग-अलग। प्रकाश; अन्धकार के मिटने पर, जो पदार्थ जैसा है; उसके स्वरूप को नेत्रों के माध्यम से हृदयंगम कराता है। पदार्थों के गुण-धर्म अग्नि (प्रकाश) के संयोग से गन्ध बनकर वायुमण्डल में व्याप्त होते हैं। प्राणेन्द्रिय को बोध होता है – मिट्टी के तेल से प्रकाश मिल रहा है; सरसों के तेल से प्रकाश उत्पन्न हुआ है। घृत से प्रकाश का उद्भव हो रहा है। इनका बोध नासिका के द्वारा मन को, बुद्धि को होता है। इन सबका प्रभाव शरीर के स्वास्थ्य पर पूर्णरूप से पड़ता है। यज्ञ में घृत का हवन होता है। किरासन तेल का नहीं क्योंकि घृत की गन्ध शरीर, मन को प्रसन्न करती है स्वास्थ्यवर्धक है घृतमायुः[१] ऐसा शास्त्रों में प्रतिपादित है। सरसों के तेल से काजल मिलता है। यह काजल नेत्रों के लिए लाभदायक है। अन्य तेलों या घृत से प्राप्त होने वाले काजल में यह गुण नहीं है। हिन्दुत्व ने इन गुण-धर्मों को सहेजा है। पदार्थ का क्या गुण-धर्म है इसकी जानकारी प्राप्त की है और सब पदार्थों से प्राप्त होने वाला जो प्रकाश है उसकी एकात्मकता के गुण-धर्म को देखा है, उसके दर्शन किये हैं। यही विभिन्नता में एकता का जो सर्वोपरि बोध है: यही भाव, प्राणिमात्र में जो चेतना; आत्मा का अनिर्वचनीय स्वरूप है वह भारतीय संस्कृति और सत्ता तथा धर्म का उन्नत शिखर है। यही हिन्दुत्व की विभिन्नता में एकता के दर्शन की मूल धारा है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का उद्घोष है। ईशावास्यमिदम् सर्वम् की अनुपम अवधारणा हैं।

अनिर्वचनीयता

विश्व में जितने प्रकार की खाद्य सामग्री है; उनकी एक बृहत् सूची बनायी जा सकती है। चाहे वे शाकाहारी वस्तुएँ हों चाहे आमिष भोज्य पदार्थ हों। इन सभी प्रकार के भोज्य पदार्थों की नामावली का कोष तैयार करने पर एक स्वतन्त्र मोटी पुस्तक तैयार हो सकती है। केवल मिठाइयों के नामों की संख्या २०० से अधिक है। अब आइये हम केवल गुड़, चीनी, मिश्री, बतासे की बात करें। इन चारों वस्तुओं के स्वाद में मौलिक अन्तर है। जीभ पर इन चारों पदार्थों का अलग-अलग स्वाद प्राप्त किया जा सकता है, पर इस स्वाद-भेद का विषय ज्ञान गम्य बनता है। इस स्वाद-भेद को मानव मात्र अपनी-अपनी भाषा में – चाहे वह कितना ही प्रबुद्ध और भाषाविद् क्यों न हो – प्रगट करने में नितान्त असमर्थ है। गुड़, चीनी, मिश्री, बतासा गन्ने का परिवर्तित रूप है। इनमें किसी अन्य पदार्थ का मिश्रण नहीं है। पर हमारा ज्ञान प्रबुद्धज्ञान केवल "मीठा' कहकर असमर्थता के बोध को जान लेता है। भाषा कितनी असमर्थ है यहाँ पर हम सभी

१. शुद्ध गाय का घृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की जानकारी मे आ जाता है। गुड़, चीनी, मिश्री, बतासे की स्वाद भेद रूपी आत्मा को आत्मा जानती है, पहचानती है पर ज्ञान गूँगा होकर आत्मा के सामने खड़ा हो जाता है। यह अनिर्वचनीयता प्रौढ़ ज्ञान की शैशव अवस्था का दिग्दर्शन कराती है। यही अनिर्वचनीयता शास्त्रों में नेति नेति कहकर ईश्वरीय महिमा प्रगट करती है। यही अनिर्वचनीयता हिन्दुत्व का सार है। इसी अनिर्वचनीयता को भारतीय सनातन संस्कृति सादर प्रणाम करती है। इसी अनिर्वचनीयता को हिन्दुत्व ने अपने समग्र रूप में देखा है। इसी के सौन्दर्य का पर्याय यह सम्पूर्ण विश्व है। इसी अनिर्वचनीयता के सौन्दर्य के पर्याय धर्म और सम्प्रदाय हैं। परन्तु इस अनिर्वचनीयता के दर्शन करने की क्षमता मात्रा जिस सम्प्रदाय के पास जितनी है वह उतना ही आनन्द प्राप्त कर सका है; जिसने पूर्ण दर्शन प्राप्त किये हैं वह दर्शन, वह विचार, वह सम्पद्राय, वह धर्म कैसा है, इसकी झलक श्रेष्ठ पुरुषों ने विश्व के चिन्तकों, दार्शनियों ने हिन्दुत्व के विकसित स्वरूप में देखी है। ऐसा गौरवमय हमारा हिन्दुत्व है।

क्षीरसागर में शेषशायी विष्णु

भाषा जहाँ पर सरलता से भावबोध प्रगट करने में असमर्थ होती है उसी भाव को चित्रकला के माध्यम से सशक्त, स्पष्ट अभिव्यक्ति दी जा सकती है ऐसा चित्रकला विशारदों का चिन्तन रहा है। डॉ० आनन्द कुमार खत्री का कहना है कि वेदों में भी चित्रकला का वर्णन मिलता है। वेदों में अग्नि के चित्र का वर्णन है। चित्रों की प्राचीनता का विवेचन विस्तृत शोध और गहन अध्ययन का विषय है। यहाँ पर केवल चित्रों की सार्थकता और सशक्त भावबोध प्रगट करने की क्षमता पर प्रभाव डालना है। मन्त्रद्रष्टा आर्ष ऋषियों ने समाधि में दिव्यचक्षुओं से जो देखा उसका वर्णन भाषा के अतिरिक्त चित्रकला और शिल्प कला के माध्यम से भी कराया गया है। सभी शास्त्रीय ज्ञान की बातें तर्क की कसौटी पर नहीं परखी जानी जा सकती हैं कारण मनुष्य का ज्ञान सीमित है। ज्ञान जहाँ समाप्त हो जाता है उसके बाद जो शुरू होता है उसे भी भारतीय महापुरुषों ने देखा है। गीता में एक श्लोक आया है 'य: ज्ञान: परतस्तु: स' जो ज्ञान के भी परे है वह वही है। हमें लौकिक चक्षु प्राप्त है – ज्ञान चक्षु अध्ययन-चिन्तन से प्राप्त होते हैं परन्तु दिव्यचक्षु तो गुरु की कृपा या प्रभु की कृपा से प्राप्त होते हैं। बात ज्ञानचक्षु के बाद दिव्यचक्षु की है। आइये, ज्ञानचक्षु के माध्यम से दिव्यचक्षु का अनुभव करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यावद् प्राणी जो योनिज हैं उनके जन्मकाल से माता के स्तन में दूध उत्पन्न होता है। इसी दूध से उस नवजात शिशु का पालन-पोषण होता है। एक गाय औसत में पाँच किलो दूध एक बेला में देने वाली मान ली जाय तो दोनों बेला में १० किलो दूध प्रतिदिन मिलेगा। यदि औसत क्षमता आठ महीने की ले ली जाय तो एक गाय का दूध २४०० किलो होगा – दो टन चार सौ किलो – अब सोचिये; यह सृष्टि जब से अस्तित्व में आई है तब से योनिज प्राणियों-पशुओं और मनुष्यों की जन्म-दर, जन्म की पीढ़ियों का आकलन और अनुमानित दूध की क्षमता सभी जीवधारियों की शारीरिक अवस्था के अनुसार कितना दूध उत्पन्न हुआ; जोड़ गुणा करके संख्या बनाइये। अटलाण्टिक, हिन्द महासागर, अरबियन सागर, बंगाल की खाड़ी इत्यादि में जितना जल है उससे कहीं अधिक दूध संसार में हुआ और उपयोगिता प्राणियों ने भोगी है। अब क्षीरसागर की सत्यता को देखिए। ज्ञान को गहरे में उतारिये; आपको भी क्षीरसागर के दर्शन हो जायेंगे। ऋषियों, महर्षियों ने क्षीरसागर के दर्शन दिव्य चक्षुओं से किये हैं। क्षीरसागर में विष्णु भगवान् को शेष शय्या पर शयन करते हुए देखा है। ऐश्वर्यों की स्वामिनी महालक्ष्मी भी उनके चरणों को दबा रही हैं सेवा कर रही हैं। विष्णु भगवान् की नाभि से कमलनाल का ऊपर बढ़ना और उससे ब्रह्मा की उत्पत्ति ऐसे ब्रह्मा की जिसके चारों हाथों में चारों वेद हैं। कितना अद्भुत् सत्य है। जिसे भारतीय मनीषियों ने दिव्य चक्षु से देखा है। विष्लृ व्याप्तौ धातु से विष्णु शब्द बना है ऐसी चेतना जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। उसी चेतना की विभिन्न आकृतियों की इकाइयों से निर्मित यह विश्व है। (जरायुज, स्वेदज, अण्डज, उद्भिज) इसी समग्रता को 'अनेक रूप रूपाय प्रभवे विष्णवे नमः' कहा गया है। विष्णु शेष शय्यांपर शयन करते हैं। यह विश्व नाना प्रकार के दुखरूपी विषों से परिपूर्ण है। ये सभी प्रकार के दुखरूपी विष, स्थूल रूप से विष होकर शेषनाग नाम में स्थिर हैं। ऐसी सम्पूर्ण विष–महाविष की इकाई से जिसे कोई भय न हो, जो निर्भय हो, वही शेषनाग को अपनी शय्या बना सकेगा। जहाँ निर्भयता है वहीं शक्ति का साम्राज्य है। जहाँ शक्ति का साम्राज्य है वहीं सम्पूर्ण ऐश्वर्य-महालक्ष्मी है। यह आध्यात्मिक यथार्थ-सत्य है; जो विष्णु के स्वरूप में प्रतिष्ठित है। विष्णु के पद्मनाभ से कमलनाल पर ब्रह्मा की उत्पत्ति और चारों वेदों का प्रगट होना यह बता रहा है कि व्यावहारिक स्तर पर माँ के साथ शिशु का संबंध जन्म काल में नाभि-नाल से जुड़ा रहता है; जिसे नालोच्छेदन क्रिया से अलग किया जाता है। नालोच्छेदन की क्रिया के साथ लौकिक संबंध विच्छेद देखते हैं। पर ज्ञान दृष्टि इस सम्बंध को जीवनपर्यन्त देखती और जानती है। साधारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्य जब बेहोश रहता है, उसके हृदय की धड़कन चलती है, यह विष्णु की शयनकालीन सत्ता का अंश है। यही धड़कन कुछ समय बाद शनैः-शनैः उस व्यक्ति को होश में लाने का कारण बनती है। यही होश, यही बौद्धिक चेतना, अंशरूप में ब्रह्मा है। प्रत्येक प्राणी में विष्णु और ब्रह्मा दोनों के अंश उपस्थित है। सृष्टि में जो कुछ भी जहाँ पर मनुष्य निर्मित है वह इसी ब्रह्मांश का कार्य कौशल है। सृष्टि की रचना में जिस व्यवस्था का हाथ है; वह विष्णु की नाभि से उत्पन्न होने वाली ज्ञानमयी जागृति – ब्रह्मा का विषय है। प्रत्येक प्राणी के हृदय में विष्णु का अंश और विवेक ब्रह्मा का अंश है। भारत के ऋषियों को दिव्य चक्षुओं से प्राप्त यह दृश्य चित्रकला के माध्यम से शेषशायी विष्णु भगवान्, क्षीरसागर महालक्ष्मी एवम् ब्रह्मा को रेखाङ्कित करता हुआ अपनी गरिमा का परिचय दे रहा है। यह सनातन धर्मरूढ़ हिन्दुत्व की अनूठी भूमिका का परिचय है।

परम सत्ता की व्यापकता

हिन्दुत्व में आरम्भिक काल से ही परमसत्ता की व्यापकता, सबके प्रति सम्मानपूर्ण भावना का उजागर रूप है। विभिन्न जातियों, उपजातियों, वर्णों, सम्प्रदायों, धर्मों, यहाँ तक कि पशु-पक्षियों, जड़-चेतन, तक में हिन्दुत्व ने परमसत्ता के दर्शन किये हैं। ज्ञान के क्षेत्र में जिस ऊँचाई पर खड़े होकर हिन्दुत्व ने विश्व को देखा है वह स्पृहा और श्रद्धा का विषय है। हिन्दुत्व ने आत्मा की वाणी को सुना है, समझा है, जाना और पहचाना है। मनुष्य की भाषा में अहङ्कार, द्वेष, लोभ, क्रोध और काम का संचरित, मिश्रित रूप सुनने और देखने को मिलता है जिसे हम मानवीय कमजोरी कहते हैं। यह कमजोरी जब नाना प्रकार से आचरण में उतरने लगती है तब विविध प्रकार के पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक उपद्रवों तथा विनाशकारी युद्धों को जन्म देती है। इन विकारों को शमन करना मानव मात्र के लिए कितना दुष्कर है, यह साधक ही जान पाते हैं। निवृत्ति प्रधान पुरुषों, साधु, संन्यासियों, तपस्वियों ऋषियों में भी ये विकार अनुकूल अवसर पाकर प्रगट होते पाये गये हैं। अतः प्रवृत्ति-मार्ग पर जीवन-यापन करने वाले इन विकारों से ग्रसित हों तो आश्चर्य क्या है। परम ज्ञान की गरिमा का आनन्द; जब वह व्यवहार और आचरण में उतरता है तब प्राप्त होता है। यह सभी व्यक्तियों के लिए आवश्यक है कि वे अपने धार्मिक विचारों और विश्वासों को अपने आचरण में उतारें, प्रगट करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसा करने पर ही उन्हें अपने सम्प्रदाय, धर्म, पंथ की गरिमा के प्रभाव का आनन्द प्राप्त होगा। अपनी श्रेष्ठता के अहंकार में यह होना सम्भव नहीं है। विश्व में एक परम सत्ता का अत्यन्त गहरे में साम्राज्य है यह केवल कल्पना की वस्तु नहीं है, वास्तविकता है। इसी सत्य और वास्तविकता से साक्षात्कार करना धर्म सिखलाता है। गीता का यह श्लोक पठनीय, चिन्तनीय और माननीय है :-

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता: समदर्शिन:।। अध्याय ५/१८

सत् असत् का निर्णय लेने वाली बुद्धि को पण्डा कहते हैं इतो जातार्थे प्रत्यय लगने से पण्डित शब्द बनता है। अत: श्लोक का अर्थ है –

ऐसे विवेकी पण्डित लोग विद्या विनय से सम्पन्न ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में भी सम भाव रखते हुए सभी प्राणियों में उसी एक परम सत्ता के दर्शन करते हैं। इसी भाव को रामायण में यों अभिव्यक्त किया गया है। "सियाराम मय सब जग जानी। करहु प्रनाम जोरि जुग पानी"। यह सम्पूर्ण संसार सियाराम मय है; मैं दोनों हाथ जोड़कर सभी को प्रणाम करता हूँ। ऐसी समतापूर्ण विनम्रता तथा श्रद्धा से भरी हुई दृष्टि एवं वाणी का धनी हिन्दुत्व है।

अन्य धर्म के धुरन्धरों, ने धर्माचार्यों ने, सम्प्रदायवादियों ने अपने धर्म को श्रेष्ठ बतलाने और उसकी श्रेष्ठता प्रतिपादित करने के क्रम में अन्य धर्मावलम्बियों पर विविध प्रकार से भयङ्कर प्रहार किये हैं जबकि भारतीय धर्म के प्रणेताओं, व्याख्याताओं ने यथा ऋषभ देव, महावीर स्वामी, जैन तीर्थङ्कर, बुद्ध इत्यादि अवतारी पुरुषों ने ऐसा अमानवीय प्रयास नहीं किया। अहिंसा 'स्याद्वाद' करुणा मैत्री के उत्तुङ्ग शिखरों से प्रेम की वह निर्मल धारा प्रवाहित की जिससे भारत के बाहर के निवासी एवं राष्ट्र भी इस परम कल्याणकारी भावना को समर्पित हो गये। इन महापुरुषों के प्रभाव से जाति-पाति, छूआ-छूत, ऊँच-नीच के भेद-भाव कम होकर समाप्त होने लगे। फिर भी यह कहने में हमें जरा भी सङ्कोच नहीं है कि आज भी छूआ-छूत, जाति-पाति, ऊँच-नीच, जातिवाद की समस्या बनी हुई है। हिन्दुत्व को इसे मूल से समाप्त करना है। इसे समाप्त करके ही हिन्दुत्व अपने दोषों से मुक्त होकर प्राञ्जल स्वरूप में स्थित हो सकेगा। विश्व हिन्दू परिषद इस प्रयास में लगी हुई है। सफलता हम सभी हिन्दू बन्धुओं के परस्पर सहयोग से अवश्य प्राप्त होकर रहेगी। तदनन्तर हिन्दुत्व का तेजोमय मार्तण्ड अपने गरिमामय प्रकाश से विश्व को आनन्द, तृप्ति और शान्तिमय वैभव प्रदान करेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा राम

भारतीय संस्कृति की आत्मा का मधुर स्वरूप श्रीराम – राजा राम में प्रगट हुआ है। अपने चरित्र की गरिमा में जितने भी चक्रवर्ती महाराजा हुए हैं उनमें सर्वश्रेष्ठ आदर्श और मर्यादा का चरित्र राजा राम में विकसित हुआ। राजा प्रजा के आदर्शमय नीतिगत सम्बन्ध; मर्यादित पारिवारिक जीवन; और स्नेहपूर्ण सामाजिक जीवन का जो महत्वपूर्ण समन्वय राजा राम में हुआ है वह और कहीं मिलना दुर्लभ है। महात्मा गान्धी ने भी इसीलिये स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में रामराज्य स्थापित करने हेतु अपनी समर्थ अभिव्यक्ति दी थी। उनका यह दृढ़ विश्वास बन गया था; राम सत्य है और सत्य ही राम है। राम; मर्यादा पुरुषोत्तम राम थे। राम की इन विशेषताओं ने ही भारतीय जीवन को राममय कर दिया। भारतीयों ने राम को प्रतिपल स्मरण रखने हेतु अपनी संस्तुति के नामकरण में राम को प्रधानता दी यथा रामलाल, रामनाथ, रामगुलाम, रामदयाल, रामभक्त। पुत्रियों को रामप्यारी, रामदेई, रामकली, रामदुलारी, आगे बढ़कर देखिये दतवन में राम दतवन, नमक का नाम रामरस, परस्पर मिलन में राम राम, जय राम; जय गोपाल, मरण में राम नाम सत् है कहने का तात्पर्य यह है कि सभी प्रकार से राम को अपने जीवन में प्रतिक्षण बनाये रखने के लिए ऐसा किया है। श्रद्धा और विश्वास राम में है। राम उनके भगवान् हो गये। राम की जन्मभूमि अयोध्या उनके लिए पवित्र तीर्थस्थली बन गई। भारत को स्वतन्त्र हुए चार दशक व्यतीत हो गये। राजाराम के आदर्शों को सत्ता में स्थापित करने में कितना समय और लगेगा यह प्रश्न शेष है। राम सच्चे अर्थों में हिन्दुत्व के आदर्श हैं, हिन्दुत्व के प्राण हैं।

संसार के सभी क्षेत्रों में बसने वाले मनुष्य पहले मनुष्य हैं इसके बाद और कुछ। सभी के पास कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय प्राण; मन और आत्मा है। परन्तु स्वार्थ की मात्रा में भेद के कारण स्वभाव और कार्यों में अन्तर होता है। आइये, राम के जीवन वृत्त को गहराई से देखने का प्रयत्न किया जाय। तपस्वी विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा हेतु बालक राम और लक्ष्मण को उनके पिता महाराजा दशरथ से माँग कर ले गये। उन्हें यज्ञ की रक्षा हेतु राक्षस समूह से युद्ध करना पड़ा। विश्वामित्र के साथ धनुष यज्ञ में जनकपुरी गये और धनुष-भंग के साथ-साथ परशुराम के साथ भी संघर्ष की स्थिति से निपटना पड़ा। सीता के विवाह होने के बाद ही कैकेयी द्वारा माँगे गये दो वरदान के कारण १४ वर्ष का वनवास भोगना पड़ा। सीता और लक्ष्मण उनके साथ वन गये। वन में सीत-हरण तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावण के साथ भीषण युद्ध हुआ। दशानन के वध के बाद विभीषण को लंका का राज्य देकर सीता, लक्ष्मण के साथ राम अयोध्या आये और राज्याभिषेक हुआ। राम अयोध्या के राजा बने। पर एक रजक के कहने पर साध्वी पतिपरायणा सीता का त्याग। कहिये, राजा राम ने अपने जीवन-काल में पारिवारिक सुखों का कितना वेदनामय पक्ष भोगा हैं। फिर भी मुख पर कितनी मधुर शान्तिमय मुस्कुराहट और आनन्द का उल्लास, जिसे देखकर भक्त का हृदय आनन्द से भर जाता है। राम के बारे में एक चौपाई भी रामायण की अतिशय महत्वपूर्ण है –

"नीति प्रीति परमारथ स्वारथ। कोउ न राम सम जान यथारथ॥"

इस चौपाई में नीति शब्द राजनीति, कूटनीति, अर्थनीति, समाजनीति, व्यवहारनीति इत्यादि सभी नीतियों से सम्बन्धित है; प्रीति शब्द भी इसी प्रकार किस व्यक्ति के साथ प्रीति का स्वरूप क्या हो इसे व्याख्यायित करता है; परमार्थ शब्द अपने आप में परम+अर्थ का वाचक है; किसी कर्म को करने के प्रथम उसके पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक परिणामों को जानकर उस कर्म को सम्पादन करने की कला; अन्त में स्वार्थ यह शब्द भी स्व+अर्थ का वाचक है। राम ने अपने लिए क्या किया, निजी स्वार्थ साधना हेतु उन्होंने कौन से कर्म किये यह विचारणीय है। यथा – वन में गये तो माता-पिता की आज्ञा मान कर गये; निजी स्वार्थ – आज्ञा पालन करने के आदर्श की स्थापना मात्र था। अतः इन चारों, नीति, प्रीति, परमार्थ-स्वार्थ को राम के अतिरिक्त सही रूप से किसी ने नहीं जाना है। उन्होंने अपने जीवन में इन चारों की श्रेष्ठता का दिव्य दर्शन कराया है। ऐसे महिमामय मर्यादा पुरुषोत्तम राम हिन्दुओं के आराध्य और पूज्य हैं। राम के इन्हीं आदर्शमय गुणों का दूसरा नाम हिन्दुत्व है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता और मैं

गीता में प्राय: विद्वानों ने कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग को निरूपित किया है। पर मैंने बुद्धियोग की चर्चा भी अध्याय १० के दसवें श्लोक में देखी है – ददामि बुद्धियोगं तं । इसके अतिरिक्त अध्याय आठ के आठवें श्लोक में अभ्यासयोग की चर्चा हुई है – 'अभ्यासयोगयुक्तेन' । अत: मेरी दृष्टि में अभ्यासयोग की साधना ही प्रथम सोपान है बिना अभ्यास के सांसारिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में सफलता के साथ प्रवेश नहीं किया जा सकता। इसलिये अभ्यास-योग का मेरे चिन्तन में विशेष महत्व है।

अभ्यास योग : - अभ्यास चाहे वह किसी भी कार्य हेतु किया जाय, **निरन्तरता बनी रहने पर समयाबद्ध पूर्ण लगन के साथ शनैः-शनैः** व्यक्ति लक्ष्य के नजदीक पहुँचता हुआ, लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। इस सम्बन्ध में किसी कवि का एक दोहा –

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान॥

रस्सी कोमल होती है; सिल याने पत्थर पटिया कठोर – अतीत काल में कूप के अगल-बगल दो खम्भे गाड़कर बीच में पत्थर की पटिया लगाई जाती थी। गाँव की औरतें पत्थर पटिया पर से रस्सी डालकर उससे गगरा बाँध कर कूप से जल भरा करती थीं। अत: सभी के द्वारा इस प्रकार कूप से जल प्राप्त किया जाता था। पर रस्सी के निरन्तर आवागमन से जल भरने की प्रक्रिया में – पत्थर की पटिया पर रस्सी के आवागमन की लीक याने गड़हे के रूप में निशान बन जाता था। ये गड़हे या निशान कह रहे हैं कि कोमल रस्सी के पुन:-पुन: आवागमन ने मेरे जैसे कठोर पत्थर पर भी गड़हे – निशान बना दिये हैं। तथा ऐसे ही अभ्यास के माध्यम से जड़मति भी सुजान हो जाता है; कूप पर लगी पत्थर की पटिया भी यही घोषणा कर रही है।

किसी भी कार्य हेतु की गई समयावधि पर निरन्तरता को अभ्यासयोग ही कहा जायगा। कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, हठयोग, योग-साधना, ध्यानयोग याने सभी प्रकार के क्षेत्रों में अभ्यास योग ही महत्वपूर्ण प्रथम सोपान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्म-योग

कर्म तो सभी मनुष्यों को करने पड़ते हैं। बिना कर्म किये कोई भी व्यक्ति विश्व में नहीं रह सकता। अधिकतर व्यक्ति रागद्वेषादि विकारों के प्रभाव में कर्म करते हैं और अधिकतम व्यक्ति सुखोपभोग की वासना के वशीभूत होकर कर्म करते हैं। कुछ व्यक्ति अपने स्वभाव और स्वधर्म से प्रेरित होकर कर्म करते हैं। कर्मों के प्रकार विभिन्न हैं। कौन-सा कर्म करने योग्य है; और किन कर्मों को नहीं करना चाहिये यह व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति तथा स्वभाव एवं मन पर निर्भर है। राग द्वेषादिक विकार और इन्द्रियाँ उसे कर्म करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। मोह, माया तथा संसारिकता के सुखोपभोग के जाल से निकलना कठिन कार्य है।

कौरवों और पाण्डवों की सेना युद्ध हेतु समर भूमि में आमने-सामने खड़ी है। ऐसी स्थिति में यदि सत्य और तथ्यों के सन्दर्भ में देखा जाय तो अर्जुन, अगर सेना के मध्य भाग में स्थित रथ में श्रीकृष्ण से युद्ध न करने की अपनी इच्छा न प्रगट करते तो गीता का उपदेश किसे दिया जाता। अर्जुन का 'यह कथन कि मैं अपने सगे, सम्बन्धियों, गुरुजनों, धृतराष्ट्र पुत्र, पौत्रों, पितामह इत्यादि सुहद जनों को मारकर राज्य को प्राप्त करना नहीं चाहता। इन युद्ध की इच्छा वाले स्वजनों को देखकर मुख सूखा जा रहा है; मेरे अंग-प्रत्यंग शिथिल हुए जा रहे हैं; शरीर में कम्प और रोमाञ्च हो रहा है। मैं खड़ा रहने की स्थिति में नहीं हूँ। मैं शोकग्रस्त हो गया हूँ। मेरा मन भ्रमित हो रहा है। गाण्डीव हाथ से गिर रहा है। हे कृष्ण ! इस युद्ध में इन अपने स्वजनों को मारकर; निज कुल का कल्याण भी नहीं देख रहा हूँ। मुझे न राज्य की इच्छा है न सुखोपभोग की कामना; न विजय की चाह है। जिनके लिए यह युद्ध हो रहा है वे सब मारे ही जायेंगे तब फिर विजय और राज्यसत्ता किनके लिए।

अर्जुन के मन की ऐसी शोचनीय भ्रमित स्थिति थी। अर्जुन मन की इस विषम परिस्थिति से उबरकर (स्वधर्म) क्षत्रियधर्म अनुमोदित युद्ध में पुनः प्रवृत्त हो जाय इसी हेतु गीता का उपदेश अर्जुन को हुआ। श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा-तुमने जो कहा वह तुम्हारा ज्ञान याने कर्त्तव्यबोध नहीं है केवल मोह है, भ्रमित ज्ञान है। पाँच ग्राम माँगे जाने पर पाँच ग्राम का न मिलना और युद्ध के द्वारा ही विजय प्राप्त होने पर निर्णय की उपलब्धि का सङ्केत पाकर युद्ध की तैयारी दोनों पक्षों से समान भाव से हुई। अब कुरुक्षेत्र की भूमि पर दोनों पक्ष की सेनायें युद्ध हेतु खड़ी हुई हैं। अतः ऐसे समय में तुम युद्ध से विरत हो जाओगे तो तुम्हारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शत्रु यही कहेंगे – अर्जुन कायर है; डरपोक है; प्राणों के मोह से युद्ध से विरत हो गया यह सोचकर कि मैं (अर्जुन) कर्ण, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य के हाथों मारा जाऊँगा। कौरव पक्ष की तरफ से ऐसी बातें सुनकर फिर तुम्हें क्रोध आयेगा और तुम धनुष-बाण उठाओगे। अत: तुम्हें इस धर्मयुद्ध में संग्राम करना है। इससे मुँह नहीं मोड़ना है। जय-पराजय और मरण-जीवन की परवाह न करते हुए क्षात्र धर्मोचित इस रण में भाग लेना है। आत्मा अमर है; जिस प्रकार पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहने जाते हैं; उसी प्रकार जीर्ण देह त्याग कर आत्मा नया शरीर ग्रहण करती है। इस तरह नाना प्रकार के तर्क-वितर्क भी जब अर्जुन की मनस्थिति को बदलने में समर्थ नहीं हुए तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखाया। उस विराट रूप के मुँह में काल से ग्रस्त दुर्योधन, दु:शासन, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, जयद्रथ इत्यादि सभी प्रवेश कर रहे थे। अन्य वीर जबड़ों में भी फँसे थे। श्रीकृष्ण ने कहा, देखो ये सब मरे हुए हैं तुम्हें निमित्त मात्र होना है।

मयैव निहिता: एतान् सर्वे निमित्तमात्रं भव सव्य साचिनं

गीता का ज्ञान स्वधर्म आयोजित कर्म में प्रवृत होने के लिए अर्जुन को दिया गया। कर्म क्या है; अकर्म क्या है; निष्काम किसे कहते हैं। इसकी सूक्ष्म एवं सर्वोपरि व्याख्या गीता में प्रतिपादित की गई है। बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी कर्म के मर्म को जानने में असमर्थ हो जाते हैं। गी०, अ. ४/१६

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता:

क्योंकि कर्मों की गति बड़ी गहन, कठिन तथा दुर्गम होती है, कर्मों की गति ऐसे विषम वातावरण का निर्माण कर देती है कि क्या किया जाय, क्या न किया जाय यह निर्णय लेना सहज नहीं होता। इसी को लक्ष्य कर श्री कृष्णने कहा - "गहना कर्मणो गति:" (अ० ४/१७) और साथ ही साथ यह भी कहा है कि कर्मफल की इच्छा रखने वाले, सकाम कर्म करते हुए अपने इष्ट देवताओं की पूजा करके इच्छित फल प्राप्त करते हैं। तब फिर तो सभी व्यक्तियों को इच्छित फल की प्राप्ति अपने इष्ट देव के माध्यम से होनी चाहिए। परन्तु ऐसा नहीं होता है; इच्छित फल सभी को सर्वदा देव पूजन से, यज्ञ से प्राप्त नहीं होते हैं। श्री कृष्ण ने यही तो कहा है – कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन (अ० २/४७) कर्म करने का अधिकार तुम्हें है, परन्तु फल प्राप्त करना तुम्हारे अधिकार में नहीं है। फिर भी मनुष्य कर्म करते हैं। इच्छित फल प्राप्त न होने पर संतप्त होते हैं, दु:खी होते हैं; अपने इष्ट देवता को कभी-कभी भला-बुरा भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कह जाते हैं। अतः निष्काम भाव से, अनासक्त भाव से कर्म करने को कहा गया। मथुरा पर जरासन्ध ने चढ़ाई कर दी। श्रीकृष्ण ने युद्ध किया और युद्ध के मैदान से हटकर चले भी गये। द्वारकापुरी बसाकर अन्यत्र रहने लगे। इस घटना के पश्चात् श्री कृष्ण का नाम 'रणछोड़' भी पड़ गया। विष्णु सहस्रनाम में इसका उल्लेख है। श्री कृष्ण ने अनासक्त भाव से जरासन्ध से युद्ध किया था। यह भी उन्हें ज्ञात था कि इसकी मृत्यु का निमित्त मैं नहीं भीम हैं और आगे हुआ भी ऐसा ही। कौरव सेना के प्रमुख वीरों की मृत्यु का निमित्त अर्जुन को होना था। "मयैव निहिता एतान सर्वे निमित् मात्रं भव सव्य साचिन"। श्रीकृष्ण ने अनासक्त भाव से जरासन्ध के साथ युद्ध किया था। इसी अनासक्त भाव की मनस्थिति को कर्म-योग की संज्ञा दी गई है। याने कर्म-फल के प्रति सम्मभाव। जय-पराजय, हानि-लाभ जो भी हो उसे सम भाव से भोगा जाय। सुख और दुःख से रहित होकर।

इसके अतिरिक्त सुखपूर्वक जीने की कला का उपदेश भी गीता में दिया गया है याने दुःख से पूर्ण मुक्त जीवन –

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ (गीता, अध्याय ६/१७)

जिस व्यक्ति के आहार–विहार रूपी कर्म और इनके अतिरिक्त भी वह जिन कर्मों को करे; उन्हें युक्तिपूर्वक याने समझदारी से, अपनी समर्थता-योग्यता, शक्ति और परिस्थिति का मूल्यांकन करते हुए करे। कल्पनायें भी कर्म हेतु जो की जाय वे भी सामर्थ्य और योग्यता के आधार पर की जाय तो ऐसे कर्म; कर्म-योग की श्रेणी में आते हैं और दुःखों का हनन करने वाले होते हैं। इस प्रकिया से जो व्यक्ति कर्म करते हैं वे हमेशा सुखी रहते हैं। उपनिषदों में भी बताया गया है - 'कुर्वन्नेह कर्माणि जिजिविषेत् शतं समाः' कर्म' करते हुए सौ वर्ष तक जीने का शुभ सङ्कल्प – जीवेत् शरदः शतम्। सुखपूर्वक जीते हुए सौ शरद ऋतुओं को भोगो।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवमूल्यन

अवमूल्यन शब्द अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। मुद्रा शब्द के साथ जब इसका प्रयोग होता है, तो अर्थशास्त्रीय प्रक्रिया की दृष्टि से देश के नागरिक एक तरह की बेचैनी अनुभव करते हैं। मुद्रा का अवमूल्यन होना ही वस्तुओं के दाम महँगे हुए हैं, इस तथ्य का पूर्ण समर्थन करता है। प्रकारान्तर से वस्तुओं का महँगा होना ही मुद्रा का अवमूल्यन होना है। इस प्रकार का अवमूल्यन मुद्रास्फीति से होता है। कभी-कभी किसी वस्तु की माँग और आपूर्ति में भी जब सन्तुलन बिगड़ जाता है और उस वस्तु की माँग बढ़ जाती है, तब मुद्रा के अवमूल्यन के कारण ऐसा हुआ है यह नहीं कहा जाता। ऐसे बढ़े हुए भावों को "काला बाजार" कहते हैं। मुद्रा के "अवमूल्यन" से बढ़े हुए भावों में और काला बाजारी जन्य बढ़े भावों में यह मौलिक अन्तर है।

दूसरे राष्ट्रों की मुद्राओं के साथ जो परिवर्तित विनिमय मूल्य किसी राष्ट्र की मुद्रा के होते हैं, उसे भी मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं। इसका प्रभाव भी वस्तुओं के मूल्यों पर पड़ता है। आयात होने वाली वस्तुएँ देश में महँगी बिकने लगती हैं। देश से निर्यात होने वाली वस्तुएँ भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं रहती हैं। मुद्रा स्फीति के द्वारा जब महँगाई बढ़ती है, तब वास्तव में वह मुद्रा का अवमूल्यन ही होता है। इस प्रकार के अवमूल्यन को रोकने में सरकारी हस्तक्षेप अब तक मजाक ही बने हैं। सरकारी घोषणा, नियमन और नियन्त्रण अब तक के अनुभवों के अनुसार जनहित की रक्षा करने में पूर्ण असमर्थ साबित हुए हैं। गहरे में उतर कर देखने पर लगता है कि वर्तमान समय में मुद्रा का जितना अवमूल्यन सरकारी सहमति या असहमति से हुआ है उससे अधिक अवमूल्यन व्यक्तिगत चरित्र का हुआ है। स्वतंत्रता इतिहास के ४० वर्षों में भौतिक और आर्थिक विकास हुए हैं पर इस विकास के साथ ही चोरी, डाके, रहजनी, बलात्कार की घटनाओं में भी बहुत वृद्धि हुई है। जन-मानस पीड़ित, उद्वेलित और दुखित है। सच पूछिये तो व्यक्ति समाज की इकाई है। व्यक्तिगत पतन ही समाज के पतन का मूल कारण है।

यदि हम सुखी समाज की कामना करते हैं, तो हमें समाज की इन व्यक्तिगत इकाइयों को चरित्रवान बनाना ही होगा। समाज का प्रत्येक व्यक्ति चाहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह कम पढ़ा-लिखा हो, अपने बच्चों को अधिक से अधिक शिक्षा दिलाकर उन्हें विद्वान् बनाना चाहता है। इसी प्रकार निर्धन पिता भी अपने बच्चों को धनवान बनते देखना चाहता है। ऐसे उदाहरण आज भी बहुतायत से मिल रहे हैं कि बाप ने चपरासी का जीवन जीया है किन्तु बेटा न्यायाधीश की जिन्दगी जी रहा है। बाप ने किसी प्रकार सिपाही का पद पाकर जिन्दगी बशर की है तो बेटा एस०पी० और आई० जी० बन गया है। यह सब पिता की चेष्टा का परिणाम है और हो रहा है। परन्तु आज कितने पिता इस प्रकार सोचते हैं कि उनमें मानवगत कमजोरियाँ या चरित्र की कमी है तो रहे, बेटों को चरित्रवान बनाना ही है। चारित्रिक सम्पदा सबसे बड़ी सम्पदा है। इसके अभाव में व्यक्ति का, समाज का, राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकेगा। इसके अभाव में व्यक्तिगत सुख-शांति, आदर्श समाज एवं राष्ट्र की स्वतंत्रता मजाक बन कर रह गई है। सभी तबके के व्यक्ति एक घुटन महसूस कर रहे हैं। मजा यह है कि फिर भी अपने बच्चों को चरित्रवान बनाने के लिए उनमें कोई बेचैनी नहीं है।

नेताओं ने लम्बे-लम्बे लच्छेदार भाषण देकर भावात्मक उपदेशों के प्रति जनता में अरुचि उत्पन्न कर दी है। कारण, जैसा वक्तव्य देते हैं वैसा स्वयं उनका आचरण नहीं है। लगता है आज का सबसे बड़ा संकट नेताओं के चरित्र अवमूल्यन का है। मुद्रा का अवमूल्यन चरित्र अवमूल्यन का भी कारण बन गया है। यदि आज व्यक्ति अपने नैतिक अवमूल्यन का पूर्ण मूल्यांकन कर नैतिकता के वास्तविक मूल्य को स्थापित कर सके तो राम-राज्य क्षण मात्र में आ सकता है। परन्तु स्थिति बड़े बेढंगे ढंग से उलझी हुई है। जैसी व्यवस्था चल रही है उसमें सभी यह सोच रहे हैं कि हम अपने को सुधार भी लेंगे तो उससे क्या होगा? प्रत्येक व्यक्ति जो प्रबुद्ध एवं जागरूक है, कह रहा है कि मेरे अकेले के चरित्रवान बनने से कुछ होने वाला नहीं है। भ्रष्टाचार का कैंसर राष्ट्र की हर रग में घर कर चुका है। तब राष्ट्र का चरित्र व्यक्ति के चरित्र के माध्यम से कैसे उन्नत हो? प्रश्न अब यहाँ आकर रुका हुआ है। चरित्र-सुधार की शुरुआत हमें अपने से करनी होगी। यदि हम अपने प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, निष्ठावान एवं ईमानदार हैं तो हमें कल से नहीं आज से ही अपनी सन्तानों को चरित्रवान बनाना है। जब तक प्रत्येक व्यक्ति का यह संकल्प नहीं होगा तब तक वह स्वयं सुख-शान्ति का जीवन नहीं जी सकेगा और न दूसरों को जीने देगा। अतः हमें मानव मात्र के कल्याण के लिए , राष्ट्र एवं संसार के कल्याण के लिए नैतिक अवमूल्यन और चारित्रिक अवमूल्यन का विघटन कर "सर्वे भवन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया:'' के सिद्धान्त को जीवन में उतारना है। अपने दैनिक कार्यों में प्रतिबिम्बित करना है।

♦

महाराजा अग्रसेन

पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएँ अपने सन्दर्भ में घटनाएँ होती हैं। परन्तु प्राचीन कथानकों में इन घटनाओं के काल (समय) की प्रामाणिकता धुँधलाई हुई होती है। अत: शोधकर्ता विद्वान् भी इस धुँधलाहट के कारण किसी एक काल बिन्दु पर एकमत होने पर, सहमत नहीं हो पाते। इसी कारण महाराजा अग्रसेन के राज्य-काल के सम्बन्ध में भी विद्वानों ने अलग-अलग समय की स्थापना अनुमान के आधार पर की है।

डॉ० सत्यकेतु विद्यालङ्कार ने महाराजा अग्रसेन के राज्य-काल के सम्बन्ध में ''अग्रवंश वैश्यानु कीर्तनम् '' को आधार मानकर उसी को महाराजा अग्रसेन के राज्य-काल के बारे में प्रमाण माना है। उनके अनुसार महाराजा अग्रसेन कलियुग संवत् १०८वें वर्ष तक राज्य करते रहे हैं (अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास, पृ० सं० १४९)।

महाराजा अग्रसेन के राज्य-काल की अवधि द्वापर युग की अन्तिम बेला तथा कलियुग का प्रारम्भ था। डा० सत्यकेतु विद्यालंङ्कार, अग्रसेन के पूर्वजों को वेशालक वंश के समकालीन प्रमाणित कर महाराज.अग्रसेन के पूर्वज राज काल को ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार ईसा पूर्व १४०० या १२००तक माना है। शास्त्रों के मतानुसार यह काल वर्तमान समय से लगभग ४००० वर्ष पूर्व का होता है।

श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र विरचित पुस्तक ''अग्रवालों की उत्पत्ति'' में महाराज अग्रसेन के सम्बंध में भी वर्णन मिलता है। पुरुष सूक्त एवं गीता के आधार पर उन्होंने वर्ण व्यवस्था की स्थापना करते हुए वैश्यों के लिए कृषि, गोरक्षा, वांणिज्य वैश्यजा कर्म स्वभाव को ही मान्यता प्रदान की है। परन्तु महाभारत के शान्ति पर्व में यह कहा गया है कि जब समाज के विधान टूट जाये, दस्यु, चोर-डाकू, छल, कपट करने वाले बन जायें तो सभी वर्णों को आयुध ग्रहण करना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिये पहले की मान्यता का आधार "वर्ण व्यवस्था" कर्मगत थीं और जाति व्यवस्था जन्मगत थीं। इस क्रम में मनुस्मृति में आया है जन्मना जायते शूद्रः संस्काराभ्याम् द्विजो भवेत्" जन्म से सब शूद्र जाति के होते हैं संस्कार के द्वारा द्विज संज्ञा प्राप्त करते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीनों की द्विज संज्ञा शास्त्रों में प्रतिपादित है।

पौराणिक कथानक के अनुसार बल्लभ नामक एक प्रतापी और यशस्वी राजा हुए थे। जिनको 'अग्र' नाम के पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई थी। कालक्रम में इसी पुत्र का नाम अग्रनाथ एवं अग्रसेन भी हो गया। इन्होंने दक्षिण देश में प्रतापनगर को अपनी राजधानी बनाया था। महाराजा अग्रसेन के ऐश्वर्य, समृद्धि और बल वैभव को देखकर तथा इनसे प्रभावित होकर इन्द्र ने भी इन्हें अपना मित्र बनाया था एवं इस मित्रता के फलस्वरूप मधुशालिनी नामक अप्सरा भी इन्हें भेंट दी थी। इसी कालखण्ड में नागराज कुमुद की माधवी नामक अत्यन्त रूपवती-गुणवती कन्या थी जिसके विवाह हेतु नागराज कुमुद ने महाराजा अग्रसेन से विवाह की प्रार्थना की। महाराज अग्रसेन ने नागराज कुमुद के प्रस्ताव को स्वीकार कर माधवी के साथ विवाह कर लिया। यही कारण है कि आज तक अग्रवालों में नागों को 'मामा' कहा जाता है तथा मातृकुल के नाते अग्रवालों के घर-घर में आज भी उनकी पूजा होती है।

महाराजा अग्रसेन पौराणिक मान्यता के अनुसार सूर्यवंशी थे। अहिंसा में पूर्ण आस्था रखते थे। परन्तु शत्रुओं द्वारा आक्रमण होने पर बड़ी वीरता के साथ युद्ध में अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते थे। इन्होंने अपने जीवन-काल में १८ यज्ञ किये थे। पर यज्ञों में पशु-बलि देनी पड़ती थी। अतः १८वाँ यज्ञ इन्होंने बीच में ही रोक दिया और क्षत्रिय धर्म छोड़कर वैश्य धर्म अपना लिया। 'उरू चरितम्' तथा महालक्ष्मी व्रतकथा से भी इस बात की पुष्टि होती है। इसके साथ यह कथानक भी मिलता है कि परशुराम जी भी महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा आये थे। इन्हीं महाराज अग्रसेन के वंशज अग्रवाल नाम से विख्यात हुए।

कर्टियस ने इनके बारे में लिखा है कि सेना के उच्चाधिकारी गियास को गुप्तचरों ने सूचित किया था कि व्यास नदी के उस पार गंग रिदाई और प्रेसियाई दो अत्यन्त बलकारी और संगठित जातियाँ हैं तथा राजा अग्रनिस (अग्रसेन) अपने देश की रक्षा हेतु दो लाख पैदल सेना, २० हजार घुड़सवार, २ हजार घोड़े वाले रथ, ३ हजार भयानक हाथियों की सेना लिये खड़े हैं। वे सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पराक्रमी और युद्ध वीर हैं। न्याय का यहाँ पर राज है। सब प्रजा खुशहाल रहती है। इन पर विजय हासिल करना टेढ़ी खीर है।

महाराजा अग्रसेन के पुत्र और कन्याओं के वंशज अग्रवाल कहलाये। अग्रवाल का अर्थ है अग्र के बालक। अग्रवालों के साढ़े सत्रह गोत्र हैं – ऐरण, कुच्छल, कंसल, गर्ग, गोयल, गौन, जिन्दल, ढिंगल, तायल, तिंगल, धारण, नांगल, बंसल, बिंदल, मंदल, मित्तल, मंगल, सिंगल – वर्णानुक्रम से गोत्रों की तालिका दी गई है।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन से मान्यताप्राप्त अठारह गोत्रों की सूची इस प्रकार है – ऐरण, कुच्छल, कंसल, गर्ग, गोयल, गोयन, पिन्दल, ढिंगल, तिंगल, तायल, धारण, नांगल, बंसल, बिंदल, मंदल, मंगल, नित, सिंगल। सम्मेलन ने अंग्रेजी में 'Agrawal' रूप को मान्यता दी है।

मुगलों के राज्य-काल में भी अग्रवालों की विशेष उन्नति हुई। अकबर ने अग्रवालों को अपना वजीर बनाया था। टोडरमल तथा मधुशाह इनके प्रमुख प्रसिद्ध वजीर थे। भामाशाह ने राज्य की रक्षा हेतु अपना सम्पूर्ण कोष महाराजा राणा प्रताप को समर्पित कर दिया था। यह ऐतिहासिक सत्य भी सभी को विदित है।

साहित्य के क्षेत्र में भी अग्रवालों का भरपूर योगदान रहा है। प्रमुख साहित्यिक प्रतिभाओं के नाम इस प्रकार हैं – अतीत काल के साहित्यिक कवि श्री भगवतीप्रसाद अग्रवाल, कुलावतंस साहू, सहजपाल साहू, खेमचन्द्र कवि, जगजीवन अग्रवाल, कवि द्यानतराय, कवि दरगहमल्ल, कवि हेमराज, कवि विहारीदास अग्रवाल, कवि मानसिंह अग्रवाल, कवि विनोदीलाल अग्रवाल, कवि जगतराम अग्रवाल, कवि पृथ्वीपाल, कवि भाऊ गर्ग, कवि मूलचन्द , कवि बृन्दावन अग्रवाल, कवियोगी दास अग्रवाल, निहालचन्द अग्रवाल, परमेणी सहाय अग्रवाल, नन्दराम अग्रवाल, कवि वासीलाल, कवि संतलाल, कवि ऋषभदास अग्रवाल, बाबू दयाचन्द शीतलप्रसाद अग्रवाल, बैरिस्टर चम्पतराय अग्रवाल, सेठ शिवचन्द भारतीय। इनका समय वि. संवत् १६५१ में लगायत वि० संवत् १९४३ है। इनका विस्तारपूर्वक वर्णन डॉ० स्वराज्य मणि द्वारा विरचित पुस्तक पृ० २३८ से लगायत २४० में प्राप्त है।

व्यवसाय के क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र तथा राजनीतिक क्षेत्र में भी अग्रवालों को जो ऐश्वर्य एवं सम्मान प्राप्त हुआ है वह भी समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशित होता रहता है। शैक्षणिक जगत् में भी अग्रवालों (वैश्य) के नौजवान ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ उनकी प्रतिभायें दूसरों से दो कदम आगे न हों।

इन्हीं सब कार्यों की महत्ता और महाराजा अग्रसेन के प्रशासकीय गुणों के आलोक में भारत सरकार ने उनका पोस्टेज स्टाम्प जारी कर उन्हें सम्मानित किया था। स्वतन्त्र भारत ने इन्हें जो आदर-सम्मान दिया वह उनकी महानतम उपलब्धियों को उजागर करने में यथेष्ठ है। आज जिस व्यवस्था को समाजवाद का नाम दिया जा रहा है उस व्यवस्था का पूर्ण स्वरूप महाराजा अग्रसेन की देन है। उनका आदेश था कि कोई भी अग्रवाल (वैश्य) किसी भी ग्राम, नगर में बसने-रहने के निमित्त आता है तो सभी प्रत्येक घर से एक-एक रुपया नगद एवं एक-एक ईंट देकर उसका सम्मान करें। और इसी प्राप्ति तथा सम्मान के माध्यम से वह आगत बन्धु घर बनाकर व्यवसाय भी शुरू कर लेता था। यह अग्रसेन-वाद ही आज समाजवाद के नाम से विख्यात हो रहा है।

सकल वैश्य समुदाय जो वर्तमान में विभिन्न जातियों, उपजातियों में विभक्त है अग्रवाल (वैश्य) की ही शाखा-प्रशाखा है। कहने का तात्पर्य सभी वैश्य बन्धु अग्रवाल अंश के ही वंश हैं। अतः परस्पर में सौहार्द, सौजन्यता तथा सम्बन्ध की स्थापना वर्तमान युग की माँग है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम सभी वैश्य अग्रवाल हैं – हम सभी को संगठन हेतु अपने को वैश्य कहना और लिखना चाहिये।

"तराजू, मीटर उठाते हैं, तलवार भी उठाई है
प्रजाहित, सौजन्यता न्यायपूर्ण, सरकार भी चलाई है
दमन की न चाह है बस अपनी रक्षा हेतु अब
संगठित होकर रहेंगे यह सौगन्ध हमने खाई है।"

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्ति के लक्ष्य बिन्दु

विश्व में सफलता के शिखरों को छूने वाले कुछ इने-गिने व्यक्ति ही मिलेंगे। व्यक्ति के लक्ष्य बिन्दु सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक या धार्मिक चाहे जो हों, अपने उद्देश्यों में सफलता हेतु उन्हें प्रयत्न करना पड़ता है परन्तु बिरले व्यक्ति ही सफल होते हैं। सफलता-प्राप्ति हेतु भीष्म प्रयत्न करना पड़ता है। प्रयास तो अपनी योग्यता-क्षमता के अनुसार सभी करते हैं पर सफल सभी व्यक्ति नहीं होते। इसका कारण क्या है? आइये, इस पर विचार किया जाए।

अगर गम्भीरता से विचार किया जाए तो विदित होगा कि अपने उद्देश्य की सफलता के लिए योग्यता, दक्षता के अतिरिक्त धैर्य और दृढ़ विश्वास भी सहायक तत्व है। विश्वास की दृढ़ता के अभाव में कुछ व्यक्ति तो कार्य की शुरुआत ही नहीं करते और शुरुआत करते हैं तो भी बीच हीं में उत्साहरहित होकर कार्य करना बन्द कर देते हैं और कहने लगते हैं "अपने वश का यह कार्य नहीं।" ऐसे व्यक्ति आपके सम्पर्क में भी आये होंगे। जरूर आये होंगे। यह जीवन संघर्षमय है। जीवन में आप, हम सभी संघर्षशील हैं याने जीवन संग्राम है, उस संग्राम के आप, हम एक स्वनियोजित सैनिक हैं। परिणाम अनुकूल हो या प्रतिकूल-संघर्ष करना ही नियति है। इस संघर्ष में कुछ व्यक्ति तो इतने हतोत्साहित हो जाते हैं कि आत्म-हत्या कर मृत्यु का वरण कर लेते हैं। इस तरह मृत्यु का वरण करने वाले को अपना भविष्य अन्धकारपूर्ण लगने लगता है। उन्हें प्रकाश की हल्की-सी रेखा भी जीवन के भविष्य में दृष्टिगोचर नहीं होती। सभी रास्ते बन्द लगने लगते हैं तब वे एक अवाञ्छित निर्णय लेते हैं – आत्म ...

आत्म-हत्या करने वालों की संख्या कम ही है, पर अखबारों में रोज दो-चार खबर आत्म-हत्या की पढ़ने को मिल ही जाती है।

प्रेमी युगल का उद्देश्य जब सामाजिक, जातीय कारणों के घेरेबन्दी में आबद्ध हो जाता है तब वे ऐसी घटनाओं को नादानी में अञ्जाम दे बैठते हैं। यदि धैर्य, साहस और विवेकशील होकर निर्णय लेते तो ऐसे निर्णय के परिणाम उनके जीवन को रोशनी अवश्य प्रदान करते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैचारिक दीनता ही सफलता-प्राप्ति में प्राय: बाधक बनती है। वैज्ञानिकों ने विश्लेषण करके कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। यदि उन निष्कर्षों पर अमल किया जाय तो प्रत्येक व्यक्ति जीवन को सुखमय बना सकता है। अपने लक्ष्यों, उद्देश्यों को सफलतापूर्वक जी सकता है।

अपने स्वस्थ एवं उन्नत विचारों को हमेशा अपने चिन्तन का विषय बनाकर सफलता के मार्गों को खोजते रहिए। जिन महपुरुषों ने जिस मार्ग पर चलकर सफलता प्राप्त की है उनके बताये मार्ग का अनुसरण करिये। आपकी इच्छा-शक्ति जैसे-जैसे दृढ़ होती जायेगी, आपको सफलता के रास्ते मिलते जायेंगे। चाहे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक या पारिवारिक जो भी क्षेत्र हो। नियति, प्रकृति, आस-पास का वातावरण सभी से अनायास सहयोग प्राप्त होने लगेगा। आपके विचारों से एकदम अन्यथा आपका साथ देने वाले लोग आपको मिल जायेंगे। बाधायें दूर होती नजर आयेंगी। केवल आप लक्ष्य-साधन हेतु प्रयत्न करते रहें। साधन की पवित्रता के प्रति जागरूक रहें।

चौराहे पर सीढ़ी लगाकर कोई छत पर नहीं जा सकता, क्योंकि चौराहा छत-विहीन होता है। आपको अपने उद्देश्यों की सफलता के लिए अपनी बौद्धिक क्षमता, शारीरिक क्षमता, आर्थिक क्षमता का भी सही गणित जानना होगा। यदि आप इस गणित में सफलता के साथ जी लेंगे। अपना मूल्यांकन सही तौर पर करते हैं तो सफलता निश्चित ही प्राप्त होगी। यदि आप अपना मूल्यांकन सही तौर पर करने में असमर्थ हैं तो असफलता ही हाथ लगेगी। बेचैनी और घबराहट भी हाथ लगेगी।

आज की परिस्थिति में पढ़कर डिग्रियाँ प्राप्त कर बेकार नौजवानों की भीड़ बढ़ती जा रही है। व्यवसायपरक शिक्षा की तरफ झुकाव कम होने के ये परिणाम हैं। परन्तु यथार्थ कुछ और ही कह रहा है। मेरी दृष्टि में इस बढ़ती बेकारी के लिए अधिक मायने में शिक्षा-पद्धति, शिक्षार्थी, शिक्षक तथा अभिभावक भी दोषी हैं। सरकार भी कम दोषी नहीं परन्तु उपाय क्या ?

महापुरुषों के जीवन में झाँकने से जो सत्य प्रगट होता है वह कुछ कहता है बशर्ते हम सुनने को तैयार हों। जो महापुरुष हुए हैं उन्हें विद्यालयों या परिस्थितियों ने महापुरुष नहीं बनाया है। हाँ विद्यालय परिस्थितियाँकारक तत्त्व जरूर बनी हैं। हम महात्मा गाँधी को ही लें। भारत की स्वतन्त्रता हेतु असहयोग आन्दोलन के निर्णायक निर्माता वे रहे हैं। अपने आत्मचिन्तन, मनन के बल पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमत्कारी निर्णय, तकली चलाना, चरखा चलाना, सूत कातना, खादी पहनना, विदेशी वस्तु का बहिष्कार आन्दोलन, सत्याग्रह जैसे कार्यक्रमों का अपनी सूझबूझ से संचालनपूर्ण अहिंसात्मक भाव से संघर्ष में रत रहने की दृढ़ता को स्थापित करना और अन्त में स्वतन्त्रता प्राप्ति।

अतः मेरे कहने का सारांश यही है कि किसी लक्ष्य पर बढ़ने और सफलता प्राप्त करने हेतु दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ क्रियाशील होना नितान्त आवश्यक है। लक्ष्य राजनैतिक, सामाजिक, व्यावसायिक, धार्मिक जो भी हो, जब तक अपनी शक्ति का सही मूल्यांकन करते हुए हम अपनी शक्ति के निबंधन के साथ आगे नहीं बढ़ेंगे, सफलता मिलने वाली नहीं है। हमारी क्रियाशीलता में कथनी, करनी और विचारशीलता का संगम होना चाहिए। इस संगम को ही हम चरित्र बल कहते हैं। जब तक चरित्र बल निर्मल नहीं होगा, हमें सुखानुभूति का पूर्णांक नहीं प्राप्त होगा।

◆

भक्ति योग

संस्कृत की 'भज् सेवायां' धातु से भक्त और भक्ति शब्द बने हैं। वह कृष्ण का भक्त है याने कृष्ण का सेवक है। वह कृष्णं की भक्ति करता है याने कृष्ण की सेवा करता है। भक्ति योग का अर्थ इसी सन्दर्भ में लिया गया है। सेवा-भाव के माध्यम से आत्मा याने परमात्मा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया को भक्ति योग के नाम से जाना जाता है। यह द्वैत-भाव की साधना का सशक्त माध्यम है। 'तत् त्वमसि' वह तू ही है भगवान् और भक्त के यथार्थ को स्पष्ट करता है।

भक्ति योग साधना; याने भक्ति योग के साधन में भी अभ्यास द्वारा चित्त-वृत्तियों को सभी तरफ से हटाकर, समेटकर अपने इष्ट-देव की तरफ एकाग्र करना पड़ता है। यदि चित्त की वृत्तियाँ एकाग्र नहीं हो सकीं तो इष्ट साधनता में सफलता नहीं मिलती है। इष्ट के प्रति श्रद्धावान होना ही भक्त होनां है। भक्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योग साधना के दो मार्ग – निराकार और साकार की साधना। निर्गुण और सगुण की उपासना।

भक्त जब भगवान् की अनन्य भाव से सेवा करने लगता है तब उसे इस अभ्यास क्रम में जो अनुपम अनुभव होता है वह उसे क्रमशः दिव्यता की ओर उन्मुख करता है। शनैः शनैः यह स्थिति उसे परम सत्य का साक्षात्कार करा देती है। संत तुलसी इसके उदाहरण हैं। एक बार एक व्यक्ति जब अलख-अलख रटता हुआ, जप करता हुआ, उनके समीप पहुँचा तब तुलसी ने कहा :-

हम लख हमहीं हमार लख हम हमार के बीच।
तुलसी अलख ही का लखे राम नाम जपु नीच ॥

पुनः कुछ समय के अन्तराल पर दिव्यत्व की ओर अग्रसर हुए तब उनके अनुभव ने इस दोहे की संरचना की –

तुलसी जाके मुखन ते धोखेहु निकसे राम।
ताके पग की पान ही मेरे तन कीं चाम ॥

अन्त में भक्ति-योग की चरमावस्था में तुलसी को परम सत्य का दर्शन हुआ और उन्होंने प्रेमपूर्ण-भक्तिभाव में विभोर हो कर यह चौपाई कही –

सियाराम मय सब जग जानी।
करौं प्रणाम जोरि युग-पाणी ॥

निर्गुण की उपासना – निराकार की उपासना में भक्ति भाव के माध्यम से ज्ञान को परम ज्ञान की स्थिति में साधना के द्वारा परिवर्तित करना पड़ता है। "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं। निर्गुण उपासना भक्ति योग - भक्ति मार्ग का दूसरा स्वरूप है। संत तुलसी दशरथ-पुत्र राम के उपासक थे - सगुण स्वरुप के। संत कबीर निर्गुणिया उपासक थे। ये भी परम भक्त थे। पर सगुण स्वरूप के उपासक न होकर निर्गुण के उपासक थे। दशरथसुत राम के उपासक न होकर राम-नाम के उपासक थे। कबीर का कथन है :-

दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम को मर्म है आना ॥

संत कबीर; राम नाम का जो मर्म है उसकी जानकारी सभी को नहीं है ऐसी उद्घोषणा कर रहा है। उनके विचार से राम का कोई स्वरूप नहीं। राम नाम के मर्म को; केन्द्रीय अस्तित्व को पहचानो - रमु क्रीडायां धातु से राम शब्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की उत्पत्ति; जो सब में क्रीड़ा कर रहा है वही राम है। संत तुलसी ने भी आगे बढ़कर कहा है राम ते अधिक राम कर नामा।

यह तो सगुण और निर्गुण उपासना की बात – याने भक्ति योग साधना की बात हुई। अब कृष्ण और अर्जुन के सम्बन्धों को देखें। अर्जुन कृष्ण के बहनोई होते हुए भी कृष्ण के पूर्ण भक्त थे। भक्त में जो गुण होने चाहिए अपने इष्ट देवता के प्रति वे सभी गुण अर्जुन में विकसित हो गये थे।

गुरु-भक्ति भी गुरु-सेवा होती है और गुरु की सेवा करने वाला शिष्य गुरु भक्त भी कहलाता है। शिष्य और भक्त में भाषाई भेद है – अनुभव में – अध्यात्म में दोनों का एक ही अर्थ है। अर्जुन ने अपने को श्रीकृष्ण का शिष्य बताया है – (गीता अ० २-७)

कार्पण्यदोषोपहतस्वभांवः, पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे, शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥

बौद्धिक दुर्बलता के कारण कर्तव्य भूल रहा हूँ, धैर्य खो चुका हूँ। मेरे लिये जो श्रेयस्कर हो बताइये। मैं आपका शिष्य हूँ। शरणागत हूँ। मुझे उपदेश दीजिये।

मूर्ति की पूजा करने वाला विग्रह का पूजक भक्त होता है। पर जहाँ साक्षात् श्रद्धा का परम स्वरूप; परम मेधावी ऐश्वर्यशाली व्यक्तित्व उपस्थित हो; उसके प्रति समर्पण भाव से व्यक्ति की, भक्त की विनम्रता समर्पित हो जाय उस व्यक्ति की संज्ञा शिष्य–सी होगी। अर्जुन अपने शिष्यत्व भाव का निवेदन कर उपदेश हेतु प्रार्थना-विनय कर रहे हैं। यह कृष्ण के प्रति अर्जुन का भक्ति-भाव है; अपने मन और बुद्धि का पूर्णरूप से समर्पण कर कल्याणकर मार्ग जानने को उत्सुक है – यह मन की एकाग्रता बुद्धि समर्पण भाव ही भक्ति योग है।

गीता का श्लोक अ०, १८-५५ इस प्रकार उपरोक्त भावों को स्पष्टता प्रदान करता है:–

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥

तत्त्वतः – सत्यतः मुझको, जितना, जैसा मैं हूँ शुद्ध भक्ति से यथा रूप जाना जा सकता है तत् पश्चात् मुझको जान कर भक्त मुझ में प्रवेश करता है। (मेरे धाम में प्रवेश करता है)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त की भगवान् के साथ एकाकार होने की दो विधियाँ हैं। नदियाँ समुद्र में गिरकर तद्वत हो जाती हैं। याने समुद्र में गिर कर नदियाँ अपना अस्तित्व समाप्त कर समद्र बन जाती हैं। परन्तु समुद्र में जलचर मछलियों का या अन्य जल में रहने वाले प्राणियों का अस्तित्व बना रहता है। इसे इस प्रकार समझा जाना चाहिये। सगुण का उपासक भक्त मछली की तरह अपने अस्तित्व को भगवान् में प्रवेश कर बनाये रखता है। भक्त और भगवान् दोनों की उपस्थिति समझने और दर्शन करने योग्य भाव । और निर्गुण-भाव के उपासक भक्त नदियों की तरह समुद्र में मिलकर समुद्रवत् हो जाते हैं। याने ऐसे भक्त निर्वाण को प्राप्त करते हैं। परन्तु सगुणोपासक श्रद्धालु भक्तों की कामना यह होती है कि हम जहाँ कहीं भी जैसे हो इस रूप-माधुरी का, इस सौन्दर्य के सागर का इस परमानन्दमय स्वरूप का ध्यान और इसकी सेवा निरन्तर करते रहें। इसी सगुणों- पासना का प्रकार नवधा भक्ति-भाव है।

◆

ज्ञान योग

मन की गति बड़ी चंचल है। एक क्षण में अमेरिका तो दूसरे क्षण में चीन पहुँच जाता है। इन्द्रियों के साथ होकर उनसे प्राप्त होने वाले सुखों में रस लेने को बेचैन हो जाता है। मन बड़ा मायावी है। गहराई से देखा जाय तो सभी प्रकार के विचारों का जनक मन ही है। बुरे और भले दोनों प्रकार के विचारों का सङ्कल्प मन ही करता है। और जब सङ्कल्प सघन हो जाता है तो उसकी क्रियाशीलता में शरीर सहभागी बन जाता है। इस मन के सम्बन्ध में (गीता अ० ६-३४)–

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥

हे कृष्ण! मन बड़ा दुराग्रही, हठीला, विचलित करने वाला और बलवान् है। अतः इसे वश में करना वायु को वश में करने से भी अधिक कठिन है।

हम श्वास लेना बन्द नहीं कर सकते हैं। श्वास बन्द करते ही प्राण छटपटाने लगते हैं। यदि प्राणायाम के माध्यम से रेचक, पूरक, कुम्भक की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधना के बल पर सफलता प्राप्त भी करले तो प्राणवायु पर नियन्त्रण हो जायगा। परन्तु चित्तवृत्तियों पर नियन्त्रण तो मन की चंचलता नष्ट होने पर ही प्राप्त होती है। मन पर नियन्त्रण प्राप्त करना दुष्कर कार्य है। तब कृष्ण कहते हैं (अ० ६-३५)–

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येणं च गृह्यते ॥

हे महाबाहो ! मन को वश में करना यथार्थ में बड़ा कठिन है। परन्तु अभ्यास के द्वारा इसके रागादि विषयों को निरुद्ध किया जा सकता है। अभ्यास के द्वारा मन विरक्त भाव को प्राप्त हो सकता है। इस हेतु सतत अभ्यास की आवश्यकता है।

बहुत से बुद्धिजीवी भक्त कथावाचक हैं। रामायण, महाभारत, गीता, श्रीमद्भागवत इत्यादि की कथा कहते हैं। कथा निरन्तर समय-समय पर कहने का अभ्यास, मन के विरक्त – सांसारिक माया-मोह से मुक्त करने का प्रयास ही होता है। उन कथावाचकों की कथा सुनने हजारों-लाखों की भीड़ उमड़ पड़ती है। सभी कथा सुनकर प्रसन्न होते हैं। कथावाचकों की प्रशंसा करते हैं। उनके चरणों में शिर झुकाते हैं। पर सत्य क्या है - श्रोताओं को और वक्ताओं को क्या पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि होती है ? यह प्रश्न है यदि मन के काम, क्रोध, लोभ इत्यादि विकारों का शमन नहीं हुआ तो क्या हुआ। विचारणीय विषय है। कुछ क्षणों के लिए मन, हृदय और बुद्धि को सुखद हर्ष की प्राप्ति हुई। परन्तु विचारों में स्थायी भाव से कितना बदलाव आया यह देखने और समझने की बात है। टेपरिकॉर्डर पर ये कथायें टेप की जाती हैं। वीडियो कैसेट भी इनके बनते हैं। घर पर देखे-सुने जाते हैं। यह सब अभ्यास है। इस अभ्यास के माध्यम से शायद हम कुछ हो जायँ। पर फिर भी मन पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं हो पाता। परिस्थितियों से क्रोध भी उत्पन्न हो जाता है। वासना भी जागृत हो जाती है। लोभ और मोह के नाटक भी खेले जाते हैं।

हम पूजा-पाठ, दान, हवन, यज्ञ इत्यादि शास्त्र-विहित प्रक्रिया से कराते हैं। इन कार्यों से हमें सुख, यश, ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। परन्तु कृष्ण कहते हैं – (अ० ४-३३)

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ज्ञानयज्ञः परंतप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्र, पुष्प, फल, वस्त्र, धन इत्यादि के सम्पन्न किये जाने वाले यज्ञों से ज्ञान-यज्ञ श्रेष्ठ है। जितने भी प्रकार के शुभ कर्म हैं वे ज्ञान में समाप्त होते हैं। माने ज्ञान ही वह केन्द्र है जिसे प्राप्त करने हेतु समस्त कर्म व्यापार होता है। कहने का तात्पर्य ज्ञान ही श्रेष्ठतम विभूति है – उसे ही प्राप्त करने के लिये मनुष्य जीवन मिला है । गीता में इसे और स्पष्टता से भी कहा गया है (अ० ४-३८)

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ।।

इस संसार में परमज्ञान से बढ़कर कोई भी वस्तु पवित्र नहीं है, उदात्त नहीं है। ऐसा ज्ञान सभी प्रकार के योगों का परिपक्व फल है। करणीय कर्मों, शुभ कर्मों के करने वालों की आत्मा स्वयं इस ज्ञान को समय के साथ प्राप्त करती है। पुनः गीता अ० ४-३९ में कहा गया है :-

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।

श्रद्धालु व्यक्ति - जिनकी आप्तवाक्यों में, उपदेशों में श्रद्धा है तथा इन्द्रियाँ जिनके वश में हैं वे व्यक्ति भी इस परम ज्ञान को प्राप्त होते हैं। और परम शान्ति को प्राप्त कर लेते हैं।

विचारणीय विषय ध्यान देने योग्य श्रीकृष्ण का कथन-ज्ञानी व्यक्ति परम शान्ति को प्राप्त होता है। परम शान्ति किसे कहते हैं – शास्त्रों में शान्ति पाठ है।

हे परमात्मन्, द्युलोक में, अन्तरिक्ष लोक में पृथ्वी में जल में, औषधियों में वनस्पतियों में जैसी शान्ति है उसी प्रकार की शान्ति हमें दो।

तात्पर्य मन-राग द्वेष मुक्त होकर इन्द्रियों में संयम को प्राप्त करे। मन की चंचलता समाप्त हो जाय। ज्ञानी पुरुष की आत्मा इस प्रकार परमात्मत्व को प्राप्त कर शान्ति को प्राप्त करती है ऐसी परम शक्ति जो उसका साथ कभी नहीं छोड़ती। ऐसी शक्ति को ही परम ज्ञान की स्थिति कहा गया है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी आलेख

डुमराँव नगर पर आलेख

डुमराँव नगर के सम्बन्ध में यहाँ के बड़े-बूढ़ों से जो जानकारी प्राप्त हुई है उस दृष्टि से आज जहाँ डुमराँव नगर बसा है यह स्थल जंगली क्षेत्र था। सत्रहवीं शताब्दी में यहाँ चेरोखरवार रहते थे। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" इस कहावत को पूर्णरूप से चरितार्थ करते थे। डोमा, अकलू, लालू, और चुरामन ये चारों भाई चेरोखरवार गिरोह के सरदार थे। आज का डुमरेजिन माई का स्थान डोमा के आधिपत्य में था। अकलू का इलाका अकालूपुर के नाम से विख्यात है। लालू नवपुलियापर जिसे लालगढ़ कहा जाता था, अपना अधिकार जमाये थे। चुरामन के नाम पर चुरमनपुर डुमराँव बक्सर रोड पर आज भी अवस्थित है।

उस समय एक ब्राह्मण अपनी नवविवाहिता पत्नी की ससुराल से विदाई कराकर अपने घर लौट रहा था। डोमा चेरोखरवार ने अपने दल के साथ उस ब्राह्मण का जेवर, कपड़ा तथा रुपया लूटने हेतु उस पर धावा कर दिया। इस संघर्ष में ब्राह्मण मारा गया। उसकी नवविवाहित पत्नी ने वहीं पर अपने कपड़ों में आग लगाकर अपने प्राण दे दिये। उसी ब्राह्मण की मृत्युस्थली पर डुमरेजिन माई के नाम से मंदिर बना है जिसकी पूजा आज बड़े धूमधाम से क्षेत्रीय निवासी करते हैं।

चेरोखरवार वंशजों के इस उत्पात से इस इ़लाके के आस-पास के सभी लोग भयग्रस्त और दुःखी थे। अतः सेभरी से भूमिहार ब्राह्मणों का एक दल डोमाखरवार के इलाके में आकर बस गया; तथा मठिता से राजा होरिलशाह (भोजपुरवंश) को निमंत्रण देकर यहाँ महल बना कर रहने के लिए प्रेरणा दी। इनकी प्रेरणा से प्रेरित होकर महाराजा होरिलशाह यहाँ आये और उन्होंने होरिलनगर बसाया। कुछ समय बाद होरिलनगर और डुमरेजिन स्थल दोनों मिला कर डुमराँव नगर के नाम से प्रचलित हुए।

लोगों का कहना है कि १७०८ ईस्वी के लगभग होरिलशाह ने डुमराँव राजगढ़ का निर्माण कराया था। सही इतिहास की जानकारी तवारीखे उज्जैनीया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मिल सकती है, मुझे वह उपलब्ध नहीं। अत: लोगों के बताये गये आधार पर ही जो जानकारी मिली उसी को रेखाङ्कित कर रहा हूँ।

भोजपुर वंशज महाराजा होरिलशाह के घराने के अन्तिम महाराजा श्री राधा प्रसाद सिंह जी हुए। इनके कोई संतान नहीं थी। इन्होंने अपने वसीयतनामे में अपनी मृत्यु के बाद अपनी पत्नी महारानी वेणी कुवँर को डुमराँव राजघराने का स्वामित्व प्रदान करने के साथ-साथ अपने नाम पर दत्तक पुत्र लेने का अधिकार भी प्रदान किया।

महारानी वेणी कुवँर ने अपने अन्तिम समय में जगदीशपुर के उज्जयनी बाबू साहेब के घराने से नाबालिग को गोद लिया। इसी क्रम में नाबालिग के स्वामित्व और डुमराँव राजघराने से सम्बन्धित परिवार में मुकदमेबाजी का श्रीगणेश हो गया।

महाराजा बहादुर केशो प्रसाद सिंह इस मुकदमेबाजी में विजयी हुए और डुमराँव स्टेट के स्वामी बने। तदनन्तर कालक्रम में महाराजा बहादुर केशो प्रसाद सिंह के ज्येष्ठ पुत्र श्री मान महाराजा रामरण विजय सिंह एवं उनके स्वर्गारोहण के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र वर्तमान महाराजा कमल सिंह जी डुमराँव स्टेट के स्वामी हुए।

महाराजा बहादुर कमल सिंह से डुमराँव राज की जमींदारी, जमींदारी एवोलेशन एक्ट के अंतर्गत बिहार सरकार द्वारा अधिग्रहण कर ली गई। यह बात सभी जानते हैं। डुमराँव राज के अतीत पर नजर डालने से डुमराँव राजघराने की गौरवमयी परम्परा और प्रशासनिक कार्य आज भी इस क्षेत्र के निवासियों के हृदय को गुदगुदा देते हैं। मन प्रसन्न होने के साथ-साथ रोमांच भी हो जाता है।

इस लेख के लेखक ने अपनी आँखों से जैसा जो कुछ देखा है वह वर्तमान पीढ़ी को आश्चर्यवत् लगता है। डुमराँव राज के मैनेजर उस समय डुमराँव नगर-पालिका के चेयरमैन होते थे। नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति वार्डों से चुनकर कमिश्नर बनाये जाते थे। सड़कें साफ-सुथरी, सुन्दर, गलियों, नालियों की बेहतर सफाई, ब्लीचिंग पाउडर के माध्यम से। बैलगाड़ी पर पानी की टंकी लगी हुई होती थी उसके द्वारा सड़कों पर पानी का छिड़काव; सभी तरह से नगर-पालिकाओं से प्राप्त होने वाले लाभ यहाँ की जनता को होते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज तो सड़कों की, गलियों की, नालियों की हालत दयनीय हो रही है। जगह-जगह गड्ढे और कीचड़-भरे रास्ते से लोगों को गुजरना पड़ता है। इस तरह की गन्दगी अभी तक जीवन में यहाँ नहीं देखी गई। वर्तमान राजनीति जितनी गलीच और गन्दगी से भरी हुई है उतनी ही डुमराँव की सड़कें और गलियाँ भी। लगता है राजनीति के सही स्वरूप का विज्ञापन डुमराँव की सड़कें और गलियाँ हैं तथा स्वतंत्र भारत दर्शन के बिगड़े माहौल का लघु चित्र।

डुमराँव के मन्दिर

डुमरेजिन माई, डुमराँव राजगढ़ में बिहारी जी का मन्दिर दक्षिण के मन्दिरों की शैली से निर्मित अपने भव्यरूप की झाँकी प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लेता है। तत्पश्चात् काली जी का स्थान भी दर्शनीय है जिसे श्री पन्नालाल जैसवाल सजाने-सँवारने में लगे हैं। इसके अतिरिक्त अन्य मन्दिर भी दर्शनीय हैं।

डुमराँव नगर के चारों कोनों पर अतीत काल में सुन्दर तालाबों का डुमराँव राज ने निर्माण कराया था। ये तालाब नगर की शोभा और गौरव थे। इनके किनारों पर बने सुन्दर घाट और तट पर बने मंदिर आज भी इन स्थलों के अतीत की गौरवमयी उज्वल गाथा के साक्षी हैं। अब इन तालाबों की वैसी शोभा नहीं रह गई; न वैसा स्वच्छ जल है; न रमणीयता। कुछ तालाबों के किनारे लोगों ने अपने-अपने घर बना कर कब्जा जमा लिया है। जमींदारी चली गयी। स्वतंत्रता प्राप्त हुई; जनतंत्र आ गया। जनता मालिक हो गई। "गरीब की लुगाई सबकी भौजाई" कहावत चरितार्थ हो गयी। दबंगों ने डुमराँव के सौन्दर्य को अपनी रखैल बना लिया।

डुमराँव राजगढ़ बिहारी जी के मन्दिर में सावन के महीने भर समैय्या होती थी। बाहर से प्रसिद्ध नर्तकियाँ, गायक, शास्त्रीय संगीत के विद्वान् बुलाये जाते थे। महीने भर आसमान से स्वर्ग उतरकर इस नगर में आकर ठहरता था। सभी नागरिक मौज और मस्ती का जीवन व्यतीत करते थे। जमींदारी जाने के साथ यह सब चला गया। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की जन्मभूमि भी डुमराँव नगर है जो विश्वविख्यात शहनाईवादक हैं। मल्लिक घराने के तबलावादक और गायक आज भी यहाँ रह रहे हैं। परन्तु जो कद्र उन्हें पहले प्राप्त थी, अब नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डुमराँव के चिकित्सा स्थल

डुमराँव राज अस्पताल; डॉ० जगनारायण सिंह का अस्पताल एवं सरकारी अस्पताल। इसके अतिरिक्त यहाँ निजी क्लीनिक भी चल रहे हैं। वर्तमान में यहाँ चिकित्सा की अच्छी व्यवस्था है, यह सहज भाव से कहा जा सकता है।

शिक्षण संस्थान

शिशुओं के लिए निजी शिक्षण संस्थान के अतिरिक्त सरकारी प्रबंधन के शिक्षण संस्थान भी चल रहे हैं। इनमें सर्वप्रथम डुमराँव राज उच्च विद्यालय अपने में महत्वपूर्ण है। इस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर निकले छात्र देश के विभिन्न भागों में विविध स्थलों पर यथा – प्रशासन, विज्ञान, न्यायालय, वकालत, इंजीनियरिंग, व्यवसाय आदि में उच्च स्थलों पर नियुक्त होकर जन-सेवा करते हुए डुमराँव नगर को गौरव प्रदान कर रहे हैं।

बालिकाओं के लिए भी महारानी ऊषारानी बालिका विद्यालय तथा महारानी ऊषारानी उच्च विद्यालय है जो इस क्षेत्र की बालिकाओं के जीवन को महत्वपूर्ण बनाने में अपना प्रशंसनीय योगदान कर रही हैं। दो वर्ष पहले वर्तमान महाराजा बहादुर कमल सिंह ने बालिकाओं की संगीत, नृत्य एवं वाद्य में अभिरुचि देखकर यहाँ पर महारानी ऊषारानी ललित-कला-शिक्षण-संस्थान की भी स्थापना की है। इसमें भी बालिकाएँ सहर्ष शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। यह संस्थान भी प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त यहाँ स्वनामधन्य धरिक्षण कुँवरी डिग्री कॉलेज के अतिरिक्त सुमित्रा देवी महिला कॉलेज भी है जिसके द्वारा यहाँ छात्राओं को बी०ए० की डिग्री भी प्राप्त करने में सुविधा हो रही है। शिक्षा, शिक्षक और छात्र, छात्राएं तथा शिक्षण संस्थानों की समस्याएं तथा गतिविधियों के बारे में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। दैनिक अखबारों में प्रतिदिन जानकारियाँ छपती हैं।

डुमराँव नगर का व्यवसाय एवं उद्योग

व्यावसायिक दृष्टि से शहाबाद जिले में दक्षिणी शहाबाद का क्षेत्र डालमियाँ नगर प्रसिद्ध औद्योगिक स्थल था। शहाबाद जिले का विभाजन भोजपुर और रोहतास दो जिलों के रूप में हुआ। अतः औद्योगिक दृष्टि से उत्तरी क्षेत्र भोजपुर जिला शून्य था। डुमराँव राज की हरीकेन लालटेन की एक इकाई डुमराँव में स्थापित थी। इसमें दस-बारह हजार हरीकेन लालटेनें प्रतिमाह बनती थीं। अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह नहीं है। तथापि क्षेत्र के विकास हेतु श्रीमान महाराज कमल सिंह ने एक औद्योगिक इकाई डुमराँव टेक्सटाइल की स्थापना लगभग ३० वर्ष पहले की। इस इकाई में सूत का उत्पादन होता है। कपास बाहर से मँगाई जाती है। लगभग ३ वर्ष पहले सुप्रभात स्टील लि० की स्थापना हुई है। यह इकाई पटना के 'बूबना' परिवार की है। इसमें स्टील के पाइप निर्मित होते हैं। भोजपुर ग्लेज टाइल का कारखाना सरकारी क्षेत्र में १४ वर्षों से बन कर तैयार है। परन्तु उत्पादन-कार्य नहीं हो रहा है। सरकारी क्षेत्र का यह उद्योग बिहार सरकार की बौनी-योग्यता का प्रदर्शन कर रहा है। इसके पूर्व भी भगवती पेपर मिल यहाँ खुलने वाली थी। कुछ वर्षों तक मशीनें आकर पड़ी रहीं, फिर वापस दूसरे स्थान पर भेज दी गयीं। वह कारखाना भी नहीं खुला।

भारत के आजाद होने के पहले डुमराँव नगर कपड़े, किराने के व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ से दक्षिण शहाबाद : मोहनियाँ, भभुआ, मुगलसराय तक कपड़ा और किराना जाता था। सभी जगह के व्यवसायी आते थे और थोक माल यहाँ से खरीद कर अपने क्षेत्र में ले जाकर बेचते थे। सरकार द्वारा मूल्य निर्धारण कानून; शॉप इस्टैब्लिशमेंट एक्ट, लाइसेन्स प्रणाली, कपड़ा, गल्ला, बेजीटेबल घृत इत्यादि पर तथा नाप-तौल लाइसेंस; सेलटेक्स ७ इ०सी० एक्ट के चलते व्यापार की स्वतंत्रता पूरी तरह से बाधित हुई। साधारण मैट्रिक पास तथा ग्रेजुएट भी कानूनी अड़चन और अव्यवस्था से व्यापार करने का साहस नहीं कर पाते और जो साहस करके कारोबार करते भी हैं तो नुकसान उठाकर कारोबार बंद कर देते हैं। इस तरह के सरकारी दखल के चलते इस क्षेत्र का थोक व्यवसाय खत्म हो गया। मूल्यनियंत्रण प्रणाली के चलते व्यवसाय की पवित्रता को भी काफी धक्का लगा। अब थोक दुकानदारी नहीं के बराबर है।

वर्तमान में भोजपुर में भोजपुर जिले के बक्सर अनुमण्डल को भी जिले का दर्जा मिल गया। अब बक्सर जिला हो गया। डुमराँव को अनुमण्डल बनाये जाने की चर्चा पुरानी होने लगी थी; परन्तु वर्तमान बिहार सरकार ने विधिवत डुमराँव को अनुमण्डल होने की घोषणा कर दी है।

डुमराँव का साहित्यिक क्षेत्र

राजधानी होने के कारण डुमराँव नगर का साहित्यिक माहौल भी श्रेयस्कर रहा है। यहाँ नगर की उच्चस्तरीय साहित्यिक चेतना एवं संस्कृति के सुदृढ़ प्रमाण एवं आधारस्तम्भों में दिवंगत कवियों एवं लेखकों की सूची में जो नाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिले हैं उनमें सर्वश्री अतिराजराय, नकछेदी तिवारी, पं० अक्षयवर मिश्र, परमेश्वर दयाल, प्रि० मनोरंजन प्रसाद, फूलन जी, सुगन जी, चौ० गंगाप्रसाद जैसवाल, हरिहर प्रसाद 'बेकार' (भोजपुरी), सत्यनरायण सौरभ, विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', पं० ईश्वर दयाल, विमला देवी 'रमा', उर्दू के कवियों में 'बेवाक' शोला इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान में अम्बिकादत्त व्यास की रचनाएँ, गद्य-पद्य में किशोर चन्द्र सरकार 'किशोर', रमेश 'मुफतिश' गजलकार, श्री शिव शंकर प्रसाद जैसवाल अध्यात्मिक कवि एवं रचनाकार हैं। उनकी प्रसिद्ध कविता "बतावा सुगना है" ... वर्तमान में पल्लवित हो रही, यही साहित्यिकता है। यों तो अपने को कवि कहने वाले यहाँ स्वनामधन्य दर्जनों कवि हैं।

इसके अतिरिक्त साहित्य गोष्ठी एवं साहित्य सम्मेलन में वरिष्ठ साहित्यिक, कविवृन्द एवं आलोचकों को भी सम्मानित करने का सौभाग्य इस नगर को प्राप्त हुआ है। आने वाले श्रेष्ठ विद्वद्जनों में सर्व श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', राम गोपाल 'रुद्र', नेमीचन्द्र जी शास्त्री, रामनाथ पाठक 'प्रणयी', श्रेष्ठ कवि एवं भोजपुरी के स्वनामधन्य गणेश दत्त किरण प्रमुख हैं।

डुमराँव की राजनीति

सन् १९४२ की अगस्त की क्रांति के बाद भी राजनीति में चुटुर, कुमारी ये दो नाम सर्वोपरि रहे हैं। सबकी जबान पर राजनीति की चर्चा में ये दोनों विभूतियाँ प्रथम स्थान प्राप्त करती थीं। डुमराँव नगर की राजनैतिक-शक्ति, वोट के माध्यम से एक व्यक्ति को ए०एल०ए० बना देने की रही है। परन्तु आश्चर्य का विषय है कि नगर का एक व्यक्ति भी आज तक एम०एल०ए० नहीं हो सका। श्रीमान् महाराज बहादुर दो बार एम०पी० स्वतंत्ररूप से चुनाव जीत कर अवश्य हुए है। अगस्त क्रांति में इस नगर के पाँच व्यक्ति शहीद हुए हैं। यह डुमराँव की स्वतन्त्रता संग्राम की अपनी विशेषता है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेमीचन्द शास्त्री : आश्चर्यमय व्यक्तित्व के धनी

व्यक्तित्व किस कहते हैं? इस संबंध में अब तक कोई ऐसी रूपरेखा का निर्धारण नहीं हुआ है, जिसके द्वारा व्यक्तित्व का चौखटा निर्मित किया जा सके। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी वेश-भूषा, क्रियाकलाप, बात-व्यवहार, शिक्षा, योग्यता, मिलनसारिता एवम् उत्तरदायित्व निर्वाह करने की क्षमता में अभिव्यक्त होता है। परम आदरणीय श्रीनेमीचन्द्र जी शास्त्री का व्यक्तित्व वास्तव में आश्चर्यमय व्यक्तित्व था। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो ऐसे व्यक्तित्व के धनी विरल पुरुष ही मिलेंगे। मेरा परिचय शास्त्री जी से स्व० श्री रामनाथ,पाठक 'प्रणयी' ने लगभग ४४-४५ वर्ष पूर्व कराया था। शास्त्री जी के प्रति 'प्रणयी' जी की परम आदर भावमय अपार श्रद्धा थी। शास्त्री जी के सम्पर्क में आते ही मुझ पर भी उनकी मधुरवाणी और विद्वत्ता का हृदयग्राही प्रभाव पड़ा था। जैसे-जैसे मैं उनके अधिक सम्पर्क में आता गया। मेरे श्रद्धा-सुमन, मौन-भाव से उनके प्रति समर्पित होने लगे। सन् १९६० ईस्वी में शहाबाद हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, आरा की कार्यकारिणी का गठन हुआ। इस कार्यकारिणी समिति का मैं भी एक सदस्य था। इस सदस्यता को लेकर शास्त्री जी से सम्पर्क के अवसर बढ़ते गये और जब सम्पर्क के अवसर प्राप्त होते, बड़ी आत्मीयता से मेरी कविता सुनते तथा मेरे संस्कृत भाषा एवं संस्कृत साहित्य के ज्ञान को देखकर मुझे संस्कृत भाषा के माध्यम से परीक्षा देने की प्रेरणा भी देते। वे कहते – "अखिलेश जी, आपको कुछ परिश्रम नहीं करना है, आप नवीनोत्तर मध्यमा परीक्षा दें, निश्चय ही उत्तीर्ण हो जायेंगे। मैं आपमें वह योग्यता एवं क्षमता देख रहा हूँ।"

उस समय मेरी स्कूली परीक्षा सम्बन्धी योग्यता लोअर प्राइमरी थी। यह मैंने कटनी, जिला-जबलपुर में प्राप्त की थी। परन्तु संस्कृत-व्याकरण एवं साहित्य का ज्ञान व्यक्तिगत चिंतन, पठन के आधार पर अच्छा था। सन् १९५३-५४ ईस्वी में पूजनीय ब्रह्मचारिणी पं० चन्दाबाई हेतु अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य चल रहा था। इस प्रकाशन हेतु शास्त्री जी के स्नेहादेश से प्रेरित होकर मैंने भी एक गीत की रचना की थी। वह गीत इस अभिनन्दन ग्रन्थ के पृष्ठ १४९ पर छपा था। शास्त्री की इस गीत को सुनकर भाव-विभोर हो गये थे। तदनन्तर सन् १९६८ ईस्वी में शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चर्तुदश अधिवेशन डुमराँव नगर में सम्पन्न हुआ। इसके अध्यक्ष पद की गरिमा शास्त्री जी को ही सौंपी गयी थी। संरक्षक श्रीमान् महाराजा बहादुर कमल सिंह थे। शास्त्री जी का अध्यक्षीय भाषण २१ पृष्ठों का था। यह भाषण केवल अध्यक्षीय भाषण नहीं; शास्त्री जी के हृदय-जगत् के विविध भाव-सुमनों का पुष्पित मनोमुग्धकारी उपवन था।

हिन्दी भाषा एवं लोकभाषा भोजपुरी के प्रति उनका अनुराग तथा इन भाषा-द्वय की श्रीशोभा-वृद्धि हेतु उनके सुझाव कितने सार्थक, स्पष्ट, सटीक एवं व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी रहे हैं, इसकी प्रशंसा आज का विद्वद् समाज अभी भी कर रहा है तथा उन्हीं अतीत की कड़ियों से जुड़ा वर्तमान यह गौरव प्राप्त कर रहा है कि विश्व के किसी भी अन्य राष्ट्र में नहीं केवल भारतवर्ष में – वह भी बिहार प्रान्त के आरा नगर में जगजीवन कॉलेज के स्नातकोत्तर विभाग में लोकभाषा भोजपुरी की पढ़ाई होने लगी है। शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इस चतुर्दश अधिवेशन का उद्घाटन श्रद्धेय हजारी प्रसाद द्विवेदी की विद्वत्तापूर्ण अनुपमेय भाषा और सरल भाव बोध-शैली में हुआ था। क्षेत्रीय जनता को और भी प्रमुख श्रेष्ठ विद्वान् एवं साहित्यकारों के अतिरिक्त कवियों को भी सुनने का अवसर सहज भाव से प्राप्त हुआ था। शास्त्री जी का अध्यक्षीय भाषण अपने आप में महत्वपूर्ण था। साहित्य की सभी विधाओं पर उनकी गरिमामय तीक्ष्ण दृष्टि प्रशंसनीय थी। उनके अध्यक्षीय भाषण की प्रमुख विशेषता 'शहाबाद की अधुनातन साहित्यिक देन शीर्षक अंतर्गत प्रतिभामूर्ति प्रो० जगदीश पाण्डेय का महनीय व्यक्तित्व, उनके निबन्धों की गौरव गरिमा, डॉ० भुवनेश्वर मिश्र माधव के वैयक्तिक निबंधों की उन्मुक्त भाव-धारा और वैयक्तिक चेतना का स्फुरण। प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी के "खजूर का पेड़" शीर्षक निबन्ध का विशेष उल्लेख है। तथा यह विशेष रूप से बताया गया कि प्रो० रानाति के वैयक्तिक निबंधों में साधारण और सामान्य विषयों को अत्यन्त रोचक शैली में निबद्ध कर आत्मीयता, विनोदशीलता और स्वच्छन्द कल्पना विहार का परिचय होता है तथा इनकी शैली सरल, आडम्बरहीन और आत्म-निष्ठ है। इसमें आचार्य शिवपूजन सहाय और राजा राधिकारमण सिंह जैसे यशस्वी साहित्यकारों की भी विशद चर्चा है।

शास्त्री जी ने और भी स्वनामधन्य शहाबाद के सभी साहित्यकारों की चर्चा की है परन्तु लेख का कलेवर बढ़ने एवं विषयान्तर होने के भय से मैं उनकी चर्चा नहीं कर रहा हूँ। इस सन्दर्भ में शास्त्री जी ने शहाबाद के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यिक कार्य-कलापों की स्थापना एवं संवर्धन हेतु अमूल्य दिशा बोध दिया है यह निर्विवाद है।

भाषा के अन्य विषय — हिन्दी भाषा के समक्ष समस्यायें, हिन्दी भाषा में नये शब्दों का चयन, नयी कविता, अकविता एवं नयी कहानी, अकहानी पर उनके चिन्तन की पैनी-दृष्टि विषयवस्तु की गहराई और उसके अत्युच्च शिखरों का स्पर्श करती हुई देखी जा सकती है। उन्होंने सरल एवं स्पष्ट भावाभिव्यक्ति के माध्यम से आलोचना के साथ-साथ रचनात्मक वास्तविकता को उजागर किया है। इसके अतिरिक्त साहित्य की सभी विधाओं के विकास की आगामी योजनाओं पर भी इन्होंने अपने निर्भीक विचार व्यक्त किये हैं।

कथित चतुर्दश शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन डुमराँव में हुआ था अत: शास्त्री जी ने भी अपने ठहरने का स्थल मेरे घर को ही बनाया था। जैन धर्मावलम्बी होने के कारण जैसी स्वच्छता उन्हें अपने घर में उपलब्ध थी वैसी सुविधा एवं स्वच्छता मेरे घर पर मिलने का उन्हें पूर्ण विश्वास था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कविवर केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' आदि विद्वानों का निवास-स्थल मेरा घर था। यह सुखद संयोग भी सहज-भाव से जुड़ गया था। इस अवसर पर शास्त्री जी से मिली उत्साहवर्धक प्रेरणा से प्रभावित होकर मैंने संस्कृत भाषा के माध्यम से परीक्षा देने का सङ्कल्प लिया। शास्त्री जी दिग्गज विद्वान् होने के साथ-साथ चलते-फिरते मुखर शिक्षानुरागी भी थे। आरा जैन कॉलेज तो उनका शिक्षण स्थल केन्द्र रहा है पर इसके अतिरिक्त जिस व्यक्ति को ये प्रतिभासम्पन्न देखते उसे उत्साहित और प्रेरित करने तथा शिक्षा जगत् की उच्चतम सीढ़ियों पर उसे चढ़ाने हेतु स्वयं अवलम्ब बनकर भी खड़े हो जाते। इस तरह का उदार शिक्षाप्रेमी और विचारशील व्यक्तित्व मैंने अपने जीवन में नहीं देखा। स्व० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' को भी इन्होंने एम०ए० परीक्षा देने की प्रेरणा दी। इसके बाद इन्हें पी-एच०डी० की डिग्री भी शास्त्री जी ने अपने निर्देशन और सान्निध्य द्वारा प्रदान कराई थी। मुझसे 'प्रणयी' ने स्वयं कहा था– शास्त्री जी ऐसी योग्यता एवं क्षमता के धनी हैं कि एकसाथ चार विषयों पर निर्देशन देकर चार व्यक्तियों को पी-एच०डी० करा सकते हैं। यह थी शास्त्री जी की अगाध विद्वत्ता और उनकी स्मरणशक्ति का चमत्कार। अपरिचितों को परिचित बनाकर निष्काम स्नेह भाव का वर्णन शास्त्री जी के व्यक्तित्व की अद्भुत विशेषता थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चर्तुदश अधिवेशन डुमराँव नगर में सम्पन्न हुआ। इसके अध्यक्ष पद की गरिमा शास्त्री जी को ही सौंपी गयी थी। संरक्षक श्रीमान् महाराजा बहादुर कमल सिंह थे। शास्त्री जी का अध्यक्षीय भाषण २१ पृष्ठों का था। यह भाषण केवल अध्यक्षीय भाषण नहीं; शास्त्री जी के हृदय-जगत् के विविध भाव-सुमनों का पुष्पित मनोमुग्धकारी उपवन था।

हिन्दी भाषा एवं लोकभाषा भोजपुरी के प्रति उनका अनुराग तथा इन भाषा-द्वय की श्रीशोभा-वृद्धि हेतु उनके सुझाव कितने सार्थक, स्पष्ट, सटीक एवं व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी रहे हैं, इसकी प्रशंसा आज का विद्वद् समाज अभी भी कर रहा है तथा उन्हीं अतीत की कड़ियों से जुड़ा वर्तमान यह गौरव प्राप्त कर रहा है कि विश्व के किसी भी अन्य राष्ट्र में नहीं केवल भारतवर्ष में — वह भी बिहार प्रान्त के आरा नगर में जगजीवन कॉलेज के स्नातकोत्तर विभाग में लोकभाषा भोजपुरी की पढ़ाई होने लगी है। शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इस चतुर्दश अधिवेशन का उद्घाटन श्रद्धेय हजारी प्रसाद द्विवेदी की विद्वत्तापूर्ण अनुपमेय भाषा और सरल भाव बोध-शैली में हुआ था। क्षेत्रीय जनता को और भी प्रमुख श्रेष्ठ विद्वान् एवं साहित्यकारों के अतिरिक्त कवियों को भी सुनने का अवसर सहज भाव से प्राप्त हुआ था। शास्त्री जी का अध्यक्षीय भाषण अपने आप में महत्वपूर्ण था। साहित्य की सभी विधाओं पर उनकी गरिमामय तीक्ष्ण दृष्टि प्रशंसनीय थी। उनके अध्यक्षीय भाषण की प्रमुख विशेषता 'शहाबाद की अधुनातन साहित्यिक देन शीर्षक अंतर्गत प्रतिभामूर्ति प्रो० जगदीश पाण्डेय का महनीय व्यक्तित्व, उनके निबन्धों की गौरव गरिमा, डॉ० भुवनेश्वर मिश्र माधव के वैयक्तिक निबंधों की उन्मुक्त भाव-धारा और वैयक्तिक चेतना का स्फुरण। प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी के "खजूर का पेड़" शीर्षक निबन्ध का विशेष उल्लेख है। तथा यह विशेष रूप से बताया गया कि प्रो० रानाति के वैयक्तिक निबंधों में साधारण और सामान्य विषयों को अत्यन्त रोचक शैली में निबद्ध कर आत्मीयता, विनोदशीलता और स्वच्छन्द कल्पना विहार का परिचय होता है तथा इनकी शैली सरल, आडम्बरहीन और आत्म-निष्ठ है। इसमें आचार्य शिवपूजन सहाय और राजा राधिकारमण सिंह जैसे यशस्वी साहित्यकारों की भी विशद चर्चा है।

शास्त्री जी ने और भी स्वनामधन्य शहाबाद के सभी साहित्यकारों की चर्चा की है परन्तु लेख का कलेवर बढ़ने एवं विषयान्तर होने के भय से मैं उनकी चर्चा नहीं कर रहा हूँ। इस सन्दर्भ में शास्त्री जी ने शहाबाद के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यिक कार्य-कलापों की स्थापना एवं संवर्धन हेतु अमूल्य दिशा बोध दिया है यह निर्विवाद है।

भाषा के अन्य विषय — हिन्दी भाषा के समक्ष समस्यायें, हिन्दी भाषा में नये शब्दों का चयन, नयी कविता, अकविता एवं नयी कहानी, अकहानी पर उनके चिन्तन की पैनी-दृष्टि विषयवस्तु की गहराई और उसके अत्युच्च शिखरों का स्पर्श करती हुई देखी जा सकती है। उन्होंने सरल एवं स्पष्ट भावाभिव्यक्ति के माध्यम से आलोचना के साथ-साथ रचनात्मक वास्तविकता को उजागर किया है। इसके अतिरिक्त साहित्य की सभी विधाओं के विकास की आगामी योजनाओं पर भी इन्होंने अपने निर्भीक विचार व्यक्त किये हैं।

कथित चतुर्दश शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन डुमराँव में हुआ था अत: शास्त्री जी ने भी अपने ठहरने का स्थल मेरे घर को ही बनाया था। जैन धर्मावलम्बी होने के कारण जैसी स्वच्छता उन्हें अपने घर में उपलब्ध थी वैसी सुविधा एवं स्वच्छता मेरे घर पर मिलने का उन्हें पूर्ण विश्वास था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कविवर केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' आदि विद्वानों का निवास-स्थल मेरा घर था। यह सुखद संयोग भी सहज-भाव से जुड़ गया था। इस अवसर पर शास्त्री जी से मिली उत्साहवर्धक प्रेरणा से प्रभावित होकर मैंने संस्कृत भाषा के माध्यम से परीक्षा देने का सङ्कल्प लिया। शास्त्री जी दिग्गज विद्वान् होने के साथ-साथ चलते-फिरते मुखर शिक्षानुरागी भी थे। आरा जैन कॉलेज तो उनका शिक्षण स्थल केन्द्र रहा है पर इसके अतिरिक्त जिस व्यक्ति को ये प्रतिभासम्पन्न देखते उसे उत्साहित और प्रेरित करने तथा शिक्षा जगत् की उच्चतम सीढ़ियों पर उसे चढ़ाने हेतु स्वयं अवलम्ब बनकर भी खड़े हो जाते। इस तरह का उदार शिक्षाप्रेमी और विचारशील व्यक्तित्व मैंने अपने जीवन में नहीं देखा। स्व० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' को भी इन्होंने एम०ए० परीक्षा देने की प्रेरणा दी। इसके बाद इन्हें पी-एच०डी० की डिग्री भी शास्त्री जी ने अपने निर्देशन और सान्निध्य द्वारा प्रदान कराई थी। मुझसे 'प्रणयी' ने स्वयं कहा था– शास्त्री जी ऐसी योग्यता एवं क्षमता के धनी हैं कि एकसाथ चार विषयों पर निर्देशन देकर चार व्यक्तियों को पी-एच०डी० करा सकते हैं। यह थी शास्त्री जी की अगाध विद्वत्ता और उनकी स्मरणशक्ति का चमत्कार। अपरिचितों को परिचित बनाकर निष्काम स्नेह भाव का वर्णन शास्त्री जी के व्यक्तित्व की अद्भुत विशेषता थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं जब सोचने लगता हूँ मुझे लगता है कि शास्त्री जी शिक्षा-क्षेत्र के अमूल्य पारस-रत्न थे। जिसका स्पर्श पाकर प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति विद्वान् होने के साथ-साथ उच्चतम आदरणीय स्तर भी सहज भाव से प्राप्त कर लेता था। कितने व्यक्तियों ने उनकी प्रेरणा से एम०ए०, पी-एच०डी० की डिग्रियाँ प्राप्त कर जीवनक्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त की होगी। मेरे लिए यह अज्ञात है। 'प्रणयी' जी संस्कृत विद्यालय, डुमराँव से हटकर आरा में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के आयुर्वेदिक विभाग में नियुक्त हुए। परन्तु शास्त्री जी की प्रेरणा लेकर आरा जैन कॉलेज से भी जुड़ गये और यशस्वी बने।

शास्त्री जी की प्रेरणा से ही मैंने सन् १९७५ में नवीनोत्तर मध्यमा परीक्षा दी। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद सन् १९७८ ई० में नवीन साहित्य शास्त्री परीक्षा का०दा० संस्कृत विश्वविद्यालय से देकर द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्णता प्राप्त की। यह सब कुछ शास्त्री जी की प्रेरणा से हुआ। मैंने दोनों परीक्षाओं में सम्बन्धित विषयों की पुस्तक केवल परीक्षा के दिन ही देखी। परन्तु इसके पूर्व मेरा जो संस्कृत व्याकरण और साहित्य का ज्ञान था उसे शास्त्री जी ने पहचाना और मेरी स्मरणशक्ति तथा प्रतिभा को भी। उनकी प्रेरणा से ही मैं आज जैसा जो कुछ हूँ सबके सामने है।

स्व० शास्त्री जी शिक्षाक्षेत्र के अनुपम पुष्पित पुष्प रहे हैं जिनकी सुरभि से आज भी शिक्षा जगत् धन्य हो रहा है। ये उत्साह और प्रेरणा के मूर्त रूप थे। जहाँ भी प्रतिभा देखते उसे सार्थकता प्रदान करने हेतु वे तन-मन-धन से क्रियाशील हो जाते थे।

ऐसे महान् व्यक्ति को शत शत नमस्कार।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषण प्रतिवेदन

डुमराँव मानस सम्मेलन में भाषण

परम श्रद्धेय समागत रामायण-मर्मज्ञ सन्त समाज एवं अन्य उपस्थित मानस प्रेमी रामभक्त श्रद्धालु बन्धुओं और बहनों!

मानस ज्ञान मण्डल, डुमराँव द्वारा आयोजित श्रीरामचरितमानस के प्रथम वर्षीय सम्मेलन के द्वितीय दिवसीय कार्यक्रम का अध्यक्ष पद मुझे देकर जो सम्मान मेरा किया गया है उसके लिए मैं हृदय से सभी का कृतज्ञ हूँ।

उपस्थित सन्त समाज-सिन्धु का प्रसरित विशाल रूप और उसमें डूबता हुआ मुझे अपना बौना व्यक्तित्व स्पष्ट ही परिलक्षित हो रहा है।

रामायण के ज्ञानरत्नों का विविध कला-कौशल से निखरा हुआ प्रकाशमान प्राञ्जल वैभव सन्तों के नयनों से अपनी गरिमा प्रकट करता रहा है। उसी का सम्बल लेकर मुझे विश्वास हुआ है कि मैं इस गुरुतर भार को जो मुझे सौंपा गया है, वहन करने में समर्थ हो जाऊँगा। राजर्षि से ब्रह्मर्षि पद को अपने उद्दाम त्याग एवं तपस्या के बल से प्राप्त करने वाले परम तपस्वी विश्वामित्र की यज्ञ-स्थली बक्सर के अन्तर्गत; इतिहास गगन के देदीप्यमान नक्षत्र, राजा भोज की यह नगरी अपनी धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा को वहन करते हुए; देश के अगणित धर्मधुरीण सन्तों, महन्तों, संन्यासियों, मनीषियों तथा विद्वानों के प्रवचन और उपदेशों का सदैव लाभ उठाती रही है।

यह भूमि राक्षसों और तपस्वियों की आर्यों और अनार्यों की निवासस्थली सदा से रही है। मनुष्य का हृदय भी दैवी सम्पत्ति और आसुरी सम्पत्ति का केन्द्र आदि काल से है। बाह्य आभ्यन्तर दोनों स्थलों की एक-सी स्थिति का ऐसा समागम विचित्र समागम है। दैत्यराज बलि का वासस्थान यही स्थल था। वृत्तासुर और बाणासुर का भी कर्मक्षेत्र यही भूमि थी। एक तरफ यह भूमि आसुरी कृत्यों के कारण युद्धस्थली हो गई तो दूसरी तरफ महर्षि विश्वामित्र जैसे तपस्वियों की यज्ञ-कर्मशाला होने के कारण पवित्र तपोभूमि हो गई। तपोयशस्काय के धनी विश्वामित्र से रघुकुल श्रेष्ठ दाशरथि मर्यादापुरुषोत्तम राजा राम ने शास्त्र और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शस्त्र दोनों की शिक्षा इसी क्षेत्र में पायी थी और दानवों के संहारकार्य का श्रीगणेश भी यहीं से किया था। ऐसी परम पावन सर्वगुणसम्पन्ना भूमि किसकी वन्दनीय नहीं है।

सन्त दरिया दास, स्वामी सहजानन्द सरस्वती इत्यादि सन्तों की इस तपो वैभव सम्पन्न धरा पर आज आप सभी सन्तों का समागम "जंगम तीर्थ राज" की श्रीसुषमा विकीर्ण कर रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है इस "जंगम तीर्थ राज" की स्नेह भक्ति ज्ञान के संगम की पवित्र वाग्धारा में निमज्जन कर सभी स्नेही श्रोताओं के मन निर्मल एवं शान्त होकर परमानन्द को प्राप्त करने में सफल होंगे।

कविश्रेष्ठ सन्त तुलसीदास की कृति श्री रामचरितमानस महाकाव्य, भक्ति-प्रधान ग्रन्थ है। कुछ विद्वान् इसे इसीलिए हिन्दुओं का धर्मग्रन्थ कहते हैं। पर मैं ऐसा सोचता हूँ कि यह हिन्दुओं का ही नहीं अपितु सृष्टि के सभी मानवों के हित हेतु मानव धर्मग्रन्थ है। मानवता के सभी आयामों का पूर्ण एवं सफल चित्रण मानस के अतिरिक्त विश्व के किसी भी धर्म या साहित्य ग्रन्थों में नहीं है। यह बात निर्विवाद है। रूस का रामायण के प्रति आकर्षण रामचरित का रंगमंच पर अभिनय, इस यथार्थ को उजागर कर रहा है।

मानवता की समग्रता का किसी भी क्षेत्र में चरम लक्ष्य के बिन्दु से पीछे रहना, धर्म को अनुदार बना देता है और ऐसी स्थिति में वसुधैवकुटुम्बकम् की मधुर भावना का प्रचार-प्रसार अवरुद्ध हो जाता है। मानस में मानवीय आदर्शों के प्रतीक राजा राम का चरित्र शबरी के जूठे बेर खाकर स्नेहाभिभूत हो निखरता है तो केवट को प्रेम से आलिंगन कर अस्पृश्यता के भूत का कचूमर निकालता है। तथा बंदर-भालुओं से भी मित्रता एवं स्नेह का सम्बन्ध स्थापित कर सामाजिक जागरूकता एवं बन्धुत्व भावना का आदर्श उपस्थित करता है। पारिवारिक सम्बन्धों का अनुशासनमय अनुकरणीय उत्कर्ष; जैसा मानस में विकसित है, अन्यत्र कहीं भी सुलभ नहीं। राम वनवास के बाद सहज सुलभ हुए राज्य सुख भोग के प्रति भरत की निःस्पृहता और कार्य क्षेत्र में कर्मठता आज के राजनायकों, जननेताओं के लिए पथ प्रदर्शक है। जिस सीता के लिए वन में व्याकुल होकर भटकने वाले राम ने दशानन का संहार किया उसी प्राण-प्रिया सीता को एक रजक के उपालम्भ पर वनवास! राम की प्रजा परायणता और प्रजा-जन को मत अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता रामराज का चरम उत्कर्ष है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विज्ञान ने मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए स्तुत्य प्रयास किये हैं और उन सभी विज्ञान जन्य सुख भोग के साधनों को प्राप्त करने में मनुष्य सतत बेचैन है। उसकी इच्छायें अदम्य और अनियन्त्रित होती जा रही हैं जिसके कारण भारत जैसे आध्यात्मिक देश में अनैतिकता और भ्रष्टाचार के जघन कृत्यों से मानवता कराह रही है। ऐसी स्थिति से त्राण पाने के लिए, जीवन संग्राम में विजयश्री को वरण करने के लिए, प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने के लिए जिस शस्त्र की आवश्यकता है; उस आत्म संयम; ममता; प्यार; पौरुष; शौर्य; त्याग; दया; धैर्य; अनुशासन; सहनशीलता; सामाजिकता, मित्रता एवं निःस्पृहतारूपी शस्त्र का समुचित प्रयोग कर्मक्षेत्र में कैसे सधे हुए चरित्र बल से हुआ है; इसका सुन्दर विवरण मानस ग्रन्थ की काव्य कला के सौन्दर्य में सँजोया हुआ है। सच पूछिए तो वसुधा को स्वर्ग बनाने की कला 'मानस'में निहित है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मानवीय मूल्यों को पूर्ण रूप से स्थापित करने में राम का आचरण हमें जीवन के हर क्षेत्र में प्रेरणा देता है। रावण की विद्वत्ता, शक्तिसम्पन्नता भी मानवीय गुणों के ह्रास से उसकी रक्षा में समर्थ न हो सकी। "रामादिवत् प्रवर्तितव्यम् न रावणादिवत् " की उक्ति की सत्यता आज भी कांग्रेस पतन के इतिहास में मूर्त रूप से विराजमान है।

आज ऐसी परम पावन पीयूषदा रामचरितमानस की कथा समागत श्रद्धेय सन्तों की वाणी से प्रवाहित होकर हमारे नगर को पुण्यमय करने के लिए, जनमन-मानस का कल्मष धोने के लिए, प्रस्तुत है। आपके मन को निर्मल करने के लिए सन्त समाज उपस्थित है, आप इन्हें अपना षडराग मलावलेपित मन समर्पण कर उसकी निर्मलता प्राप्त करें यही हमारा आग्रह है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बक्सर जनपदीय वैश्य महासम्मेलन में दिया गया भाषण

बक्सर जनपदीय वैश्य महासम्मेलन के पुनीत अवसर पर मंचस्थ बिहार प्रान्त के श्रद्धेय वैश्य पदाधिकारीगण, आदरणीय विशिष्ट एवं मुख्य अतिथि वृन्द, जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये प्रतिनिधि, सहयोगी एवं स्थानीय संघटन से जुड़े बन्धुवर, जाति-गंगा-प्रेमी देवियो,और सज्जनो!

आज इस परम पावन तपोभूमि, वीर भूमि बक्सर नगरी के किले के मैदान में जहाँ ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के यज्ञों के रक्षार्थ दशरथात्मज श्रीरामलक्ष्मण ने तत्पर हो दिव्य अस्त्र-शस्त्रों के संचालन की विद्या प्राप्त की तथा खरदूषण और ताड़का इत्यादि राक्षसों का संहार कर सज्जनों की रक्षा की उसी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक भूमि पर बक्सर जनपद वैश्य महासम्मेलन का अध्यक्ष होने के नाते और साथ ही क्षेत्रीय नागरिक होने के नाते आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए मुझे जिस गौरव और आनन्द का अनुभव हो रहा है, उसे शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता नहीं है। आप सभी की उपस्थिति ने इस वैश्य महासम्मेलन को गरिमा प्रदान की है। आप सभी सहधर्मियों, सहयोगियों और संघटन हेतु सर्वस्व त्याग करने वाले नौजवानों को सन्मुख देखकर कुछ निवेदन करने का मन हो रहा है।

वैश्य संघटन की बुनियादी सबल शुरुआत दो वर्ष पूर्व इस जनपद में हुई थी। माननीय श्री" ई० ब्रजबिहारी प्रसाद, बिहार प्रान्तीय अध्यक्ष ने श्री सरोज कुमार गुप्ता को पर्यवेक्षक नियुक्त कर अध्यक्ष के सर्वसम्मत चुनाव हेतु बक्सर भेजा था। इस अवसर पर एकत्र हुए वैश्य-बन्धुओं में कुछ व्यक्तियों को वैश्य समाज के संघटित होने पर विश्वास नहीं हो रहा था। परन्तु युग-धर्म समय की माँग ने संघटित होने की विचार-धारा को बल दिया और उसी के परिणामस्वरूप बक्सर जनपद का वैश्य संघटन अपने पूर्ण यौवन की ओर अग्रसर होकर वैश्य समुदाय की अपेक्षाओं से जुड़े लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए अपनी गौरव गरिमा तथा प्रतिष्ठा की रक्षा में चार चाँद लगा रहा है। इस बिन्दु पर हम बक्सर के नौजवान उत्साही युवकों की जितनी प्रशंसा करें वह कम होगी।

यथार्थत: बक्सर जनपद के वैश्य संघटन की नींव होने का श्रेय 'ब्रह्मपुर' को है। ब्रह्मपुर के निवासियों में वैश्य संघटन खड़ा करने की जो ललक,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्साह तथा प्रेरणाप्रद अभिरुचि का जागरण था वह अपने आप में बेजोड़ रहा है। बक्सर जनपद में वैश्य संघटनों को खड़ा करने हेतु ब्रह्मपुर के समर्पित कार्यकर्ताओं में सर्वश्री डॉ० कैलाश प्रसाद केशरी, डॉ० गोपाल वर्मा, श्रीनिवास वर्मा, केदारनाथ वर्मा, सिद्धनाथ प्रसाद गुप्ता तथा श्रीकृष्ण कुमार आजाद का नाम उल्लेखनीय है। इस अनुभव और प्रसंगायुक्त शब्दों के बावजूद यह भी बता देना आवश्यक है कि व्यक्ति विशेष की महत्वाकांक्षाओं के चलते जो सौहार्द-भाव विकसित होना चाहिये था वह ब्रह्मपुर में विकसित नहीं हुआ। परन्तु बक्सर नगर के संघटन ने अल्पकाल में ही वैश्य समुदाय के हितों के रक्षार्थ जो कदम उठाये वे अन्य क्षेत्रों के लिए प्रेरणा-प्रद बनकर मार्गदर्शक बन गये। बक्सर नगर के वैश्य संघटन की इसी जीवन्त प्रेरणा ने इटाढ़ी, धनसोई, राजपुर, सिमरी, डुमराँव, नवानगर, भोजपुर इत्यादि के वैश्य संघटन में नवीन रक्त का संचार कर दिया।

वैश्य जागरण की इस पुनीत वेला का प्रथम लक्ष्य वैश्य-बन्धुओं में अपने बालकों की शिक्षा में पूर्ण अभिरुचि और योगदान होना चाहिए। यह बात मैं ग्रामीण-अंचलों के लिए विशेष रूप से कह रहा हूँ। धन के अभाव में प्रतिभावान छात्रों का अध्ययन न रुके इसकी व्यवस्था वैश्य संघटनों को करनी चाहिये। इसी तरह अर्थाभाव से ग्रसित बीमार व्यक्तियों की भी समुचित चिकित्सा व्यवस्था संघटन को करने का प्रयत्न करना चाहिये। परस्पर स्नेह भाव का परिचायक व्यवहार और कार्य ही होता है। ऐसे उदात्त कार्य ही जातीय एकता तथा मानवीय भावनाओं के पोषक तत्त्व हैं। बक्सर जनपद के सभी वैश्य-संघटन इसी पुनीत भावना को लेकर क्रियाशील हैं। ये कार्य हम सभी के लिए उत्साहवर्द्धक वैचारिक भाव बोध के प्रकाशक तत्त्व हैं।

वर्तमान समय में विभिन्न पार्टियों के नेताओं, कार्यकर्ताओं द्वारा जो भाषण दिये जा रहे हैं, कार्य किये जा रहे हैं वे वैश्यों के लिए कितने हितकर हैं यह वैश्यों से अब छिपा नहीं है। नेताओं के भाषण और कार्यों को देखकर वैश्यों का मोह भंग हो रहा है। भारतवर्ष को आजाद हुए चार दशक बीत गये, पाँचवाँ दशक भी आधे से ज्यादा बीत चुका है। परन्तु इतने लम्बे समय में वैश्य बन्धुओं पर अनावश्यक एवं अव्यावहारिक; वस्तुसंग्रह नियन्त्रण, मूल्य नियन्त्रण विविध प्रकार की लाइसेंस प्रणालियाँ एवं कराधान के जरिये अफसरों को असीमित अधिकार देकर वैश्य बन्धुओं का आर्थिक शोषण तथा मानसिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्पीड़न कराया गया है। आदमी से भूल होती है (error is the human being)। इस स्वाभाविक भूल को कानून की अवज्ञा का दर्जा देकर नाना प्रकार से वैश्य बन्धुओं को सताया जा रहा है।

युग धर्म की माँग है कि सभी वैश्य बन्धु आपस में रक्त-सम्बन्ध स्थापित कर जातियों, उपजातियों के भेद-भाव को समाप्त कर वैश्य-संघटन को एक सबल इकाई का स्वरूप प्रदान करें। वैश्य संघटन की ऐसी सबल इकाई ही राजनैतिक लक्ष्यों को संघर्षों के माध्यम से प्राप्त करने में सफल होगी। "संघे शक्ति कलौयुगे" कलियुग में शक्ति का निवास संघटन में है। संघटन के अभाव में किसी भी वर्ग, वर्ण एवं जाति की हैसियत पशुओं से भी गई गुजरी होती है। अत: अपने हक और अधिकारों तथा राजनैतिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विभिन्न वर्गों, जातियों, उपजातियों में बिखरे वैश्य बन्धु पूर्ण रूप से संघटित होकर संघर्ष के लिए तत्पर हों यही मेरी मंगल कामना है।

जनतन्त्र में बहुमत को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। चुनाव में जिस पार्टी या व्यक्ति को अधिक मत प्राप्त होते हैं वही विजयी होता है। बुलेट से भी ज्यादा शक्तिशाली बैलेट पेपर (मतपत्र) होता है। अब बन्दूक की नली से सत्ता नहीं निकलती, मत पत्रों की पेटियाँ ही सत्ता का उद्गम स्थल हैं। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत बेमानी होती जा रही है। लाठी, लेखनी बनकर खड़ी हो रही है। युग की माँग के अनुरूप वैश्य बन्धुओं को संघटित होकर अपने बहुमत की पहचान स्थापित करनी है। लाठी के मुकाबले अपनी लेखनी को शिक्षित होकर सबल बनाना है।

वर्तमान प्रशासन की देन बिजली आपूर्ति की अव्यवस्था, बेरोजगारों की संख्या में बढ़ोत्तरी, सभी विभागों, कार्यालयों में उत्तरदायित्वहीनता, अकर्मण्यता एवं अदक्षता का बोलवाला; वेतन की आय के अतिरिक्त आय हेतु पद का दुरुपयोग, भाई-भतीजावाद, जातीय पक्षपात इत्यादि के शिकार वैश्य बन्धु सबसे ज्यादा हैं। उपयुक्त दुखदाई, उत्पीड़नों से संघर्ष करने के लिए सभी को वैश्य संघटन के प्रति समर्पण भाव से जुड़ना है। संघटन के माध्यम से ही वैश्य समुदाय अपने अतीत के गौरव, वैभव और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकेगा तथा शक्ति और सुख समृद्धि के वातावरण को निर्मित करने में सफल होगा। अत: हमारा संकल्प हो–

तराजू मीटर उठाते हैं तलवार भी उठाई है
प्रजा के सौजन्य हित सरकार की चलाई है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दमन दूसरों का नहीं, अपनी प्रतिष्ठा के रक्षा हित
संघटित होकर रहेंगे यह सौगन्ध हमने खाई है

श्री श्री १०८ महाराज अग्रसेन की राजधानी अग्रोह थी, वे सूर्यवंशी राजा थे। ये सभी वैश्यों के मूल-पुरुष महाराजा अग्रसेन – अग्रसेन के बालक अग्रवाल और अग्रवाल ही अपने कर्म और व्यवसाय के माध्यम से जातियों और उपजातियों में बिखरे हुए हैं जो ये सभी वैश्य बन्धु हैं।

◆

नवरत्न साहित्य परिषद में पढ़ा गया प्रतिवेदन

डुमराँव नगर में 'नवरत्न साहित्य परिषद् ' का गठन २३ अक्टूबर १९८८ को हुआ है। इस क्षेत्र की जनता, साहित्यिकों, साहित्यप्रेमियों के लिए यह हर्ष और गौरव की बात है। अपने अतीत काल में भी यह नगर साहित्यिक गतिविधियों एवम् साहित्यिक-सर्जनात्मकता के लिए विख्यात रहा हैं। और वर्तमान में भी यह उस परम्परा का निर्वाह किए जा रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में इस नगर की साहित्य साधना साहित्य जगत् में अपना विशेष स्थान अवश्य प्राप्त करेगी।

नवरत्न साहित्य परिषद् अपना प्रथम साहित्यिक समारोह आज दिनांक ३१/१२/८८ को बड़े उत्साह एवं उमंग से मना रही है। इस मंच पर इस क्षेत्र के प्राय: सभी साहित्य मर्मज्ञों एवं गद्य-पद्य मे सम्बन्धित सभी विधाओं के आदरणीय विद्वानों, रचनाकारों को एकत्रित कर आम जनता के विचारों को नई चेतना एवं जनकल्याणमयी नवस्फूर्ति से जागृत करने की प्रक्रिया की यह पुन: शुरुआत है।

इसके पूर्व भी डुमराँव नगर में साहित्यिक संगठन हुए हैं परन्तु उनकी गतिविधि की धारा जाने-अनजाने क्रमश: शिथिल होती चली गई; संगठन लुप्त हो गए, उनकी क्रियाशीलता नहीं के बराबर रह गई। आज से ५८ वर्ष पूर्व लगभग ईसवी सन् १९३० में 'साहित्य परिषद् ' नामक संस्था का गठन हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। तब इस संस्था ने अपना साहित्यिक कार्यक्रम बहुत जोरशोर से शुरू किया था। महापुरुषों की जयन्तियाँ मनाने, कवि सम्मेलन करने-कराने का क्रम अविरल गति से चला था। इस "साहित्य-परिषद्' के संगठन में तत्कालीन किन-किन साहित्यिकों ने प्रमुख रूप से भूमिका निभाई थी इसकी निश्चित जानकारी प्राप्त करना अभी शेष है। परन्तु उस समय के गद्य एवं पद्य के प्रमुख रचनाकारों के जो नाम मिल रहे हैं उनकी प्रशंसित एवं लोकप्रिय रचनायें आज भी जीवन्त और शाश्वत हैं; वे सभी रचनाकार डुमराँव नगर की उच्चस्तरीय साहित्यिक चेतना एवं संस्कृति के सुदृढ़ प्रमाण एवं आधारस्तम्भ थे। उन सभी दिवंगत मनीषी कवियों एवं लेखकों की सूची में जो नाम मिले हैं, उनका यहाँ बताया जाना अप्रासंगिक नहीं होगा। इनमें श्री सदल मिश्र, पण्डित नकछेदी तिवारी, पं अक्षयवर मिश्र, परमेश्वर दयाल, प्रि० मनोरंजन प्रसाद, फूलनजी, 'सुग्गन जी, चौधरी गंगा प्रसाद जैसवाल, बेकार भोजपुरी, हरिहर प्रसाद, श्री सत्यनारायण प्रसाद सौरभ, श्री विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।

सन् १९६० से १९७० के दशक में आपके इस गौरवमय डुमराँव नगर में "शहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन" के दो अधिवेशन हुए थे और ये दोनों सम्मेलन इतनी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए थे कि इनकी सफलता की कीर्ति आज भी दूसरे सम्मेलनों के लिए स्पृहा का विषय है। इन सम्मेलनों में डुमराँव नगर की जनता तथा सभी साहित्य प्रेमियों एवं विद्वान रचनाकारों को भारत के स्वनामधन्यमूर्धन्य विद्वानों के श्रीमुख से उनकी रचनाओं एवम् विचारों की भी सुनने का सुअवसर मिला था। इन विद्वानों में सर्वश्री श्रद्धेय हजारी प्रसाद जी द्विवेदी, परम तेजस्विता के मूर्त रूप राष्ट्रकवि दिनकर, केदार नाथ मिश्र प्रभात, रामदयाल पाण्ड़ेय, डॉ० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', बनारसी प्रसाद भोजपुरी, डॉ० भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र "माधव" श्री नेमीचन्द शास्त्री इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।

डुमराँव नगर में होने वाले ये दोनों सफल साहित्य सम्मेलन क्षेत्रीय कवियों, विद्वानों, साहित्यकारों एवं स्थानीय जनता एवं डुमराँव राजा के प्रभावशाली अभिनन्दनीय सहयोग से ही संभव हुए थे।

सन् १९६८ में 'कल्पना' नाम से डुमराँव नगरीय साहित्यिकों का एक संगठन बना था। इस संगठन ने स्थानीय कवियों की श्रेष्ठतम रचनाओं का संकलन कर 'नवरत्न' नामक एक पुस्तक का प्रकाशन किया था। इस प्रकाशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में नौ कवियों की रचनाएँ ही प्रकाशित हुई थीं, यह भी संयोग ही था। उन नौ कवियों के नाम भी बताए जाने का लोभ जग गया है। रचना प्रकाशन के क्रम में वे नाम इस प्रकार आते हैं — श्री सत्यनारायण प्रसाद केशरी, श्री विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', श्री कालूराम 'अखिलेश', श्री विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, श्री प्रभाकर राय, श्री मुफलिस 'रमेश', श्री चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल', श्री किशोर चन्द्र सरकार, श्री अम्बिका दत्त त्रिपाठी व्यास।

डुमराँव नगर में साहित्यकारों के संगठन पचास वर्षों में दो-तीन बने भी और काल चक्र के प्रवाह में विलीन भी हुए। गांधी साहित्य परिषद् पुस्तकालय के तत्वावधान में भी कवि सम्मेलन, महापुरुषों की जयन्तियाँ इत्यादि मनाई गईं। किसी तरह यह पुस्तकालय म्रियमाण होते-होते बचा है और नवीन जीवन की कामना लिए हुए जी रहा है — प्रगति-पथ पर कदम रख रहा है।

साहित्य-साहित्य है, यह बात निर्विवाद है, परन्तु जब कुछ रचनाकार रचनाधर्मिता और रचनाओं की वास्तविक परख के अभाव में अपनी रचनाओं को अन्य रचनाओं की तुलना में अधिक मूल्यवान मान कर अधिक महत्त्व देते हैं तथा अपने को भी अनावश्यक महत्त्व देने लगते हैं तब उनके अचेतन मन की गहराई में जाने-अनजाने अहम् अकुंरित होता है। ऐसी स्थिति सत्यं शिवं सुन्दरम् की साहित्यिक परम्पराओं में गतिरोध उत्पन्न करती है। साहित्यिक-संगठनों की सहज प्रगति को विशालता प्राप्त होने से वंचित भी। ऐसी स्थितियाँ संगठन की प्राण ऊर्जा को शनैः शनै समाप्त कर देती हैं। साहित्य पर साहित्यकार के व्यक्तित्व का पूर्ण प्रभाव पड़ता है। साहित्यकार जो कुछ भी लिखता है वह गद्य हो या पद्य, उस पर उनके विचारों, आकांक्षाओं, भावनाओं की सुदृढ़ छाप पड़ती है। वह जनमानस से जुड़ी भावनाओं और इच्छाओं को अपनी काव्यमयी रचना शैली में अपने ढंग से स्वरूप प्रदान कर अभिव्यक्ति देता है परन्तु जब वह अपने आप को न पहचान कर कृत्रिमता का जामा पहनता है, अपने पथ से भ्रष्ट होता है, अन्य साथियों को भी कुछ काल के लिए क्षुब्ध कर देता है। यह प्रवृत्ति ही संगठन के बनने और बिगड़ने का इतिहास बनाती है।

इसके अतिरिक्त डुमराँव नगर से कुछ पत्रिकाओं का प्रकाशन भी इस क्षेत्र के साहित्यकारों के सहयोग से हुआ है। इनमें 'समाधान', 'संवाद', 'कलश', 'राका', 'नवशंखनाद', 'डुमराँव टाइम्स'' के नाम प्रमुख हैं। वे सभी कालचक्र के प्रवाह में चिरनिद्रा में मग्न हैं। वर्तमान में बाबा टाइम्स १९८६ से प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हो रही है। इस पत्रिका का अपने ढंग का जीवट है। इस पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री शिवजी पाठक हैं। इस पत्रिका से स्थानीय जनता और साहित्यिकों को बहुत बड़ी आशा है। ऐसा विश्वास है कि यह पत्रिका अपनी जीवनी शक्ति से गति को प्राप्त करती रहेगी। श्री शिवजी पाठक और उनकी कर्मठता का फल इस पत्रिका को बनाए हुए है। पर देखा जाय यह भी कब तक?

डुमराँव में नवरत्न साहित्य परिषद की स्थापना का मूल उद्देश्य साहित्य की सम्पूर्ण विधाओं के अन्तर्गत सर्वजन हिताय साहित्य की सर्जना एवम् जन-साधारण को सही दिशा बोध; परस्पर विचारों का आदान-प्रदान, एक-दूसरे को समझने का; तथा सौहार्द भावना को जीवन के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करना है। आशा है यह नवरत्न साहित्य परिषद आपस के नैसर्गिक स्नेह-सहयोग और सद्भावना का स्थल बना रहेगा। तथा इसी प्रकार समय-समय पर भविष्य में भी साहित्यिक आयोजन करता रहेगा।

अन्त में दो शब्द। इस परिषद के सभी सदस्यों की यह आकांक्षा है कि आरा नागरी प्रचारणी सभा के भवन की तरह डुमराँव नगर में भी इस परिषद् का एक भवन होता तो इस क्षेत्र की जनता के लिए यह मंगलमय होता। नवरत्न साहित्य परिषद के सभी सदस्य इस प्रकार के रचनात्मक कार्य में अपना पूर्ण सहयोग तो देंगे ही परन्तु ऐसे महान् कार्य के लिए धरती और धन दोनों की विशेष आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें प्रशासन से जुड़े महानुभावों का स्नेह और आशीर्वाद भी मिलेगा ऐसा हम सभी को पूर्ण विश्वास है।

इस विश्वास के साथ सभी की मंगल कामना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विदेश यात्रा

यूरोप-यात्रा (लंदन यात्रा)

डुमराँव से लन्दन-यात्रा के क्रम में; देहली २३ अगस्त '८९ को पहुँच गया था। स्थानीय जनता के सभी वर्गों ने जिस स्नेह से मुझे विदाई दी थी; वह मेरे जीवन में अविस्मरणीय रहेगी। मेरे परम मित्र अब्दुल सत्तार ने भी इस अवसर पर मुझे फूलों का हार पहना कर विदाई दी थी। यह बात कुछ अन्य बन्धुओं को आश्चर्यजनक लगी होगी। विश्व हिन्दू परिषद्, जनपद बक्सर के अध्यक्ष को मुसलमान बन्धु द्वारा माल्यार्पण किया जाना; कुछ लोगों के विचार मनन का विषय बना होगा। डुमराँव राजगढ़-बिहारी जी के मन्दिर से लेकर डुमराँव स्टेशन तक इतने फूलों के हार गले में आ गये कि मेरा मुख भी ऊपर तक फूलों से ढक रहा था। स्टेशन पर ११ अप हावड़ा-देहली एक्सप्रेस भी समय पर आ गई; और मैं; अपनी पत्नी तथा बड़े पुत्र गोवरधन के साथ देहली-यात्रा पर चल दिया। बक्सर तक दो-तीन मित्रों ने भी साथ दिया।

देहली २३ अगस्त को पहुँच कर; पासपोर्ट; वीसा एवं डालर का प्रबन्ध कराना था। बीसा का प्रबंध केवल लंदन (U.K.) के लिए ही नहीं; अन्य यूरोपीय देशों के भ्रमण करते हेतु भी होना था। भारत सरकार विदेश यात्रा पर जाने वाले को ३ वर्ष में केवल ४०० डालर देती है। मुझे भी विदेश यात्रा खर्च हेतु ४०० डालर प्राप्त करने थे। यह कार्य केन्द्रीय विश्व हिन्दू परिषद्, विदेश विभाग के सहयोग से सम्पन्न हो गया।

दिनांक २५/८/८९ को सुबह ९.३४ पर जम्बो जेट बोइंग ७०७ द्वारा लंदन के लिए रवाना होना था। अत: देहली अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर २ बजे रात में पहुँच जाना था। २ बजे रात में पहुँचना इसलिये आवश्यक था कि सूटकेस, बैग इत्यादि का स्क्रीनिंग; माइग्रेशन प्रमाणपत्र एवं लगेज बुकिंग के साथ हवाई यात्रा की सीट नम्बर भी प्राप्त करना था। इन कार्यों में ३-४ घंटे का समय लग जाना स्वाभाविक है। कतिपय हवाई जहाजों का अपहरण होने के बाद सभी यात्रियों की जाँच कड़ाई के साथ की जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोइंग ७०७ जो बम्बई से उड़ान भर कर देहली आया था, लगभग १० मिनट लेट देहली पहुँचा था। इसलिये लंदन के लिए उड़ान भरने में भी १०-१५ मिनट विलम्ब हो गया। बोइंग ७०७ धरातल से धीरे-धीरे ऊपर उठा और लगभग ३६००० फुट की ऊँचाई पर पहुँच कर १००० किलोमीटर से भी अधिक रफ्तार पर (प्रतिघण्टा) अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगा।

हवाई यात्रा के दौरान; हवाई जहाज से धरातल तथा गगन के दृश्य सुखद, रोमांचक थे। कभी लगता था कि बादलों के भीतर ही भीतर हवाई यात्रा हो रही है। अरब सागर और अरब के रेगिस्तान के नजारे भी नभ से जमीन पर देखने योग्य थे। सूर्य क़िरणों के प्रभाव से रेत कण स्वर्णिम हो रहे थे। बोइंग जेट में सिनेमा भी दिखाया जा रहा था। यात्रियों के लिए मनोरंजन के साधनों में दैनिक एवं मासिक पत्रिकाओं का भी योगदान था।

यात्रियों को शाकाहारी नाश्ता तथा गर्मागर्म भोजन समय पर उपलब्ध कराया गया। कुछ यात्री जो शाकाहारी नहीं थे; उन्हें उनकी रुचि का भोजन (नॉन वेज) दिया गया।

लन्दन जाने के क्रम में विमान बालाओं द्वारा जानकारी दी गई कि देहली से लन्दन ९७०० किलोमीटर दूरी पर है। हम लोग समयानुसार सुबह ११.४५ पर लंदन पहुँचेंगे। ऐसा लगा कि लंदन की यात्रा केवल ४ घण्टे की है। मेरी घड़ी का समय भारतीय था। इस घड़ी के अनुसार हम ३.५० बजे दुपहर में लन्दन पहुँच गये। याने देहली से लन्दन में लगभग ९ घंटे लगे। भारतीय समय और लंदन के समय में ४ घंटे का अन्तर था। लंदन में सूर्यास्त लंदन के समयानुसार लगभग ८ बजे सन्ध्या काल में हुआ। दिनांक २५ अगस्त १९८९ को हम लोग सूर्य के साथ १८ घंटे के लगभग रहे। बचपन में सुना था कि अंग्रेजों के राज्य में सूर्यास्त नहीं होता। इस कथन कि सच्चाई आँखों से देखने को मिल गई।

लंदन में हीथ्रो (HEATHROW) हवाई अड्डे पर विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं ने हम सबका स्वागत करते हुए; जिन अतिथियों को जिन परिवार के साथ रहना था; उन्हें वहाँ भेजने की व्यवस्था की। मैं जिस परिवार में ठहरा था वह मानवीय गुणों से सम्पन्न गुजराती परिवार था। सनातन धर्म, हिन्दुत्व उस परिवार में प्रतिष्ठित था। श्री नटवरभाई और उनकी पत्नी हेमलता से मिलकर; उनके साथ ३ दिन रहकर अपने परिवार में बहुओं और बच्चों के साथ रहने का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आनन्द प्राप्त किया। मुझे यह नहीं लगा कि मैं किसी नयी जगह पर हूँ। पल-पल उनके आत्मीय हार्दिक स्वच्छ विचार और भाव मुझमें अपनापन का बोध भरने लगे। श्रीनटवर भाई और उनकी पत्नी हेमलता तथा दोनों नन्हें मुन्ने भी इस तरह हिल-मिल गये कि मुझे लन्दन डुमराँव जैसा लगने लगा।

२६ अगस्त को सुबह ६ बजे श्रीनटवर भाई अपनी कार से हम लोगों को लेकर मिल्टन केनिया वावल्स जहाँ विराट् हिन्दू सम्मेलन होना था उस स्थल पर ले गये। यह स्थान लंदन से ४० कि०मी० दूरी पर स्थित है। इस नगर का नाम ओमनगर कर दिया गया था। कार पार्किंग करने के बाद हम लोग सभास्थल पर पहुँच गये। श्रीनटवर भाई ने प्रधान-द्वार पर बताया कि हमारे साथ विशिष्ट लोग हैं। इस पर स्वयंसेवक हम लोगों को मुख्य सभा स्थल के पीछे कार्यालय में ले गये। इस कार्यालय में अपना नाम रजिस्टर कराने के बाद 'बैच' प्राप्त हुए। ये बैच फॉरेन डेलीगेटों के लिए बने थे। इन बैचों को लगाने वालों को सभास्थल में आने-जाने की सहज सुविधा प्राप्त थी। साधारण दर्शक को दो पौण्ड देने पर प्रवेशपत्र प्राप्त होता था। हरे-भरे स्वच्छ सुन्दर मैदान में आगन्तुकों के बैठने की व्यवस्था थी। विराट् हिन्दू सम्मेलन के प्रथम दिन २६ अगस्त '८९ को भी ६०-७० हजार व्यक्ति उपस्थित थे। प्राय: सभी व्यक्ति भारतीय वेशभूषा में थे। ५-७ प्रतिशत अन्य वर्ग के लोग थे। उनकी पोशाक अपनी परम्परा के अनुसार थी।

यह विराट् हिन्दू सम्मेलन का अपने आप में भव्य और विशाल आयोजन था। इसकी प्रत्येक कार्यवाही और व्यवस्था का यथार्थ चित्रण करने में अधिक समय लगना स्वाभाविक है। अत: मुख्य कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी ही दी जा रही है। यह अपने आप में एक ऐतिहासिक आयोजन था। भारत के बाहर इतनी संख्या में इतने हिन्दुओं का एक मंच पर हिन्दूहित एवं विश्वहित चिन्तन के लिए एक होना अपने आप में अतिशय महत्वपूर्ण था।

सम्मेलन के मूल्यवान विचारांश और नारे जो बैनरों पर लिखकर स्थान-स्थान पर टाँगे गये थे इनसे सभी को प्रेरणा मिल रही थी। यथा – "हिन्दू जगे विश्व जगे" – "हमें विश्व को उत्तम बनाना है" – "अनेकता में एकता हिन्दू की विशेषता" – "चाहे पन्थ अनेक हैं फिर भी हिन्दू एक है"। "नर सेवा नारायणसेवा"।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२६ अगस्त '८९ शनिवार को दिन भर पानी बरसता रहा और इस बरसते पानी में भी ४०-५० हजार व्यक्ति उत्साह के साथ सम्मेलन के कार्यक्रमों को देखते रहे। उपस्थित जन समुदाय (नर, नारी और बच्चों) का धैर्य वास्तव में प्रशंसनीय था। २७ अगस्त '८९ को रविवार था। वास्तव में यह दिन सूर्य का दिन था। समय पर प्रात:काल सूर्य देवता उदय हुए और दिनभर अपनी स्वर्णिम किरणों को सभा-स्थल पर बिखेर कर विराट् हिन्दू सम्मेलन और इसके कार्यक्रमों को स्वर्णिम करते रहे। मुझे तो लग रहा था यह विराट् हिन्दू सम्मेलन के भविष्य को भी स्वर्णिम करने के लिए सूर्य भगवान् का आशीर्वाद था। भगवान् श्रीराम भी तो सूर्यवंशी ही थे। श्रीराम शिला पूजन भी इसी दिन का मुख्य कार्य था। इस दिन ७०-८० हजार व्यक्ति उपस्थित थे। अन्तर्राष्ट्रीय जनसमुदाय जो यू०के० के बाहर से याने विदेशों से आये थे उनकी संख्या ६०० थी। भारत से लगभग ३५० व्यक्ति इस विराट् हिन्दू सम्मेलन में भाग लेने गये थे।

विराट् हिन्दू सम्मेलन यू०के० को सफल बनाने में ३५० हिन्दू संगठनों का सहयोग था। इस एकता को प्रदर्शित करने हेतु ३५० दीपक प्रज्वलित किये गये। उद्घाटन समारोह का सभापतित्व आचार्य सुशील कुमारजी ने किया। सम्मेलन से जुड़े सभी आदरणीय और श्रेष्ठ व्यक्ति उपस्थित थे। धर्माचार्यों में स्वामी सत्य मित्रानन्दजी गिरी; डॉ० स्वामी नारायण हिन्दू मिशन; आचार्य अविचलदासजी; संत मोरारी बापू; श्रीरमेश भाई ओझा; स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती (हरिद्वार) स्वामी चिदानन्दजी सरस्वती (रिषीकेष) सतुआ बाबा (वाराणसी) स्वामी चिन्मयानन्द जी यू०एस०ए० भी उद्घाटन भाषण हेतु विशेष तौर पर यहाँ आये थे।

स्वामी चिन्मयानन्दजी के उद्घाटन भाषण के बाद भगवा ध्वज और यूनियन जैक आचार्य सुशील कुमारजी और मुख्य अतिथि लॉर्ड मेयर द्वारा एक साथ फहराये गये। ब्रिटेन की महारानी की निजी गोरखा रेजीमेण्ट ने ध्वजों को सलामी दी।

स्वामी चिन्मयानन्द जी ने उद्घाटन भाषण में कहा कि इस सभा में हिन्दुओं की इतनी संख्या में उपस्थिति हमें एकता और संगठन की उन्नति के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। हमें अपने होनहार बच्चों को शिष्टता, संस्कृति, बुद्धिमत्ता और ज्ञान सिखलाने के साथ-साथ हिन्दुत्व की पहचान भी देनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिये। यह सम्मेलन भारतवासियों और अन्य देशों में रहने वाले हिन्दुओं को पूर्ण रूप से संघटित होकर अपनी समस्याओं के निदान ढूँढ़ने की प्रेरणा देगा। और भारतवासी हिन्दू विश्व के सभी बन्धुओं को संगठन के माध्यम से हिन्दुत्व का प्रकाश देंगे। स्वामी जी ने कहा कि नौजवानों को लोग कहते हैं वे यूजलेस हैं पर मैं कहता हूँ कि वे यूज्डलेश हैं। हमारे नौजवान बेकाम नहीं हैं। हमने उनसे काम नहीं लिया है। हमें नौजवानों से काम लेना चाहिये, उन्हें काम देना चाहिये। एक बार हमें केवल आने वाली नई पीढ़ी के बारे में ही नहीं, जो बड़े वृद्ध लोग हैं; उनके बारे में भी सोचना चाहिये। हमारे सोच तीन बिन्दुओं पर होने चाहिये – **शिशु कल्याण, नौजवान नियोजन; और बड़े-बूढ़ों की सेवा, सम्मान**। इनके पश्चात् और भी आये हुए धर्माचार्यों एवं विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारियों के भाषण हुए।

श्री शेर आजम, अध्यक्ष, मस्जिद कमेटी, यू०के० ने कहा कि वे विदेशों से आये हुए और यू०के० के हिन्दूओं की इतनी बड़ी जमात देखकर बहुत प्रभावित हुए हैं। ब्रिटेन में इस समय विविध संस्कृति और विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के लोग बसे हुए हैं। इनके अतिरिक्त अल्पसंख्यक हिन्दू समुदाय भी यहाँ रहकर ब्रिटेन की उन्नति और प्रगति की सोचते हैं। आप हिन्दू एवं अन्य लोग यहाँ बिना भय, चिन्ता के अपने विश्वास और मान्यताओं के साथ अपना गौरवपूर्ण जीवन जीने का निर्भयता के साथ अभ्यास और प्रयास करते रहे हैं।

२७ अगस्त '८९ को श्रीराम शिला पूजन (श्रीराम अङ्कित एक ईंट) का कार्य सम्पन्न हुआ। इस पवित्र पुण्यमय कार्य में ५०० दम्पतियों ने भाग लिया। वेदमन्त्रों की ध्वनि और यज्ञकुण्ड में आहुतियों के साथ श्रीराम शिला पूजन हुआ। स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती (हरिद्वार) ने बताया कि भारत में ६००० हजार गाँवों से श्रीराम शिला पूजित होकर अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि पर नवम्बर '८९ के प्रथम सप्ताह में पहुँचेगी और पूजित श्रीराम शिलाओं से ९ नवम्बर '८९ को श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर का निर्माण हेतु शिलान्यास होगा।

इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी श्री वी० पी० तोषणीवाल, अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा श्रीराम जन्म 'भूमि' के सम्बंध में पेश किया गया, जिसका अनुमोदन स्वामी चिन्मयानन्द जी (हरिद्वार) ने किया। और सर्वसम्मति से ओंकार ध्वनि के साथ यह प्रस्ताव परित हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्ताव :- "इस विराट् हिन्दू सम्मेलन में एकत्र सभी हिन्दू; भगवान् श्री राम में श्रद्धा और अपने विश्वास के साथ मिलटन के केनियावावल्स की पवित्र भूमि ओमनगर में इस प्रस्ताव के द्वारा भारत सरकार से निवेदन करते हैं कि राम जन्मभूमि पर मन्दिर के निर्माण में हम हिन्दुओं को पूर्ण सहयोग दें। यह सम्मेलन पुनः भारत के एवं विश्व के सभी हिन्दुओं एवं श्रीराम भक्तों से इस प्रस्ताव के द्वारा निवेदन करता है कि श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण कर अयोध्या की पवित्र नगरी को तीर्थ का दर्जा दिया जाय। श्रीराम जन्म भूमि पर मंदिर निर्माण के लिए भारत एवं भारत के बाहर विदेशों में रहने वाले हिन्दू श्रीराम शिला का पूजन कर (एक-एक ईंट) अपने-अपने स्थान से श्रीराम जन्म भूमि ट्रस्ट, भारत को भेजें।

इसके अतिरिक्त ब्रिटेन की महारानी; ब्रिटेन के प्रधानमंत्री, नेपाल के महाराजा इत्यादि विशिष्ट लोगों की शुभकामनाएँ भी सम्मेलन की सफलता के लिए प्राप्त हुईं।

सम्मेलन के दोनों दिनों के कार्यक्रम में सुश्री लता मंगेशकर, मोरारी बापू, अनूप जलोटा एवं अन्य धर्माचार्यों, विद्वानों के भजन-प्रवचन एवं भाषण हुए।

तीन पूजित श्रीराम शिलाएँ - लंदन अमस्ट्रडम (नीदरलैण्ड); फ्रैंकफर्ट (पश्चिम जर्मनी) से भी हम लोगों के साथ भारत आयीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजब दिवाली आई रे!

जिधर देखिये उधर उदासी
गुमसुम-सी है मन की काशी
गड़े अभाव के शूल नुकीले चुभन कठिन दुखदाई रे!
कोड़े मार-मार कर महगीं
खींच रही है तन की चमड़ी
भाव मिठाई के पीड़ा की करते कसक सवाई रे !
प्रगति-पन्थ अवरुद्ध कर रही
निज स्वारथ हित युद्ध कर रही
राज-मार्ग पर पल-पल बढ़ती राजनीति की काई रे!

◆

बीन बजाता रहा सपेरा[१]

खुली पिटारी करते सर सर
गेहुँवन साँप हुए सब बाहर
रात हो गई, हुआ अन्धेरा
भींग पसीने से गया सपेरा
तम ही तम है कहाँ सवेरा?
बीन बजाता रहा सपेरा!
बीन बजी पर नाद न मोहक
नयनों में अवसाद-भाव शक
दूध पिला कर पाला पोसा
फिर भी सबने तोड़ा नाता
कर्म कहें या कहें इसे किस्मत का फेरा
(संसद सूरज पर राहू का डेरा)
बीन बजाता रहा सपेरा ।

नोट :- (१) नरसिंही कांग्रेस सत्ता से बाहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी प्यारी नगरी

तू मेरी प्यारी नगरी है, मुझसे मत अपना दर्द छिपाना
कहाँ गया वह गौरव तेरा आज मुझे सच सच बतलाना
जो राजा हुआ उसीकी रानी होकर तूने इतिहास रचा
दिल्ली दिल्ली लेकिन तेरा भी लहुरी दिल्ली था नाम पड़ा
आँचल में थे कलाकार कवि सहज श्रेष्ठ संगीत घराना
तू मेरी प्यारी नगरी है ...
सिद्ध-गायिका नर्तकियाँ थी शोभा समृद्ध समैया की
सावन भर झाँकी सजती थी गढ़ में गोपाल कन्हैया की
लूटा करते थे नयन हमारे मधुमय दृश्यों का कोष खजाना
तू मेरी प्यारी नगरी है ...
सुख की वर्षा महल झोपड़ी खपरैलों के घर में थी
बतरस में फूल बरसते थे सहयोग भावना कर में थी
घर की बेटी सबकी बेटी मुश्किल था उस पर आँख गड़ाना
तू मेरी प्यारी नगरी है ...
तेरे पुत्रों ने चढ़ शूली पर तुमको था सम्मान दिया
आजादी मिल जाय देश को इसी लिये बलिदान दिया
व्यर्थ गये बलिदान आज सब कितना गम है नहीं ठिकाना
तू मेरी प्यारी नगरी है ...
चतुर खिलाड़ी कर गुट बन्दी प्रेम भाव को तोड़ रहे
सस्ती स्वारथ यश लिप्सा से अपना नाता जोड़ रहे
सहज हुआ वहुमत के बल से सज्जन को बुरा बनाना
तू मेरी प्यारी नगरी है ...
तू सुघर सुहागिन सजनी थी बाघिन थी अब तो बकरी है
कपटी कुटिल कुचाली के कर कठपुतली-सी नगरी है
अफसोस यही है बाजों का घर हो गया कबूतर खाना
तू मेरी प्यारी नगरी है ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सौन्दर्य सागर

सौन्दर्य का सागर नयन के सामने; कह रहा कोई करो तुम आचमन;
मन कह रहा, सुमनाञ्जली सादर इसे देकर करो हे प्रिय नमन ।
व्याकुल हुआ सौन्दर्य तन सम्पर्क हित कन्दर्प की ज्वाला जली
करबद्ध पौरष सामने झुककर खड़ा चरित्रबल तेजस्विता मन में पली ।
अपमान अपना देखकर सौन्दर्य ने होकर कुपित शाप अर्जुन को दिया ।
विस्मित हृदय मौन अर्जुन थे खड़े क्लीवत्व के शाप को अपना लिया ॥

सुन प्रिये; कहूँ, तू कैसी है

तू रूप-राशि कमनीय सुखद उषा की परम प्रभा-सी है!
निर्माण कुशल हिममयी ज्योति तू पावन अग्नि-शिखा-सी है!
तू बाल-सूर्य की स्वर्णमयी किरणों की दिव्य कला-सी है!
अधरों पर कुसुमित हास्य, नयन-रस-धार सुधा-सी है ।
सुन प्रिये ....

तू मृत्यु-लोक में कल्प-वृक्ष सी पुष्पित सोम लता-सी है!
तू शरद पूर्णिमा की निर्मल मादक रमणीय विभा-सी है!
तू नील गगन की चंचल विद्युत; हुई धरा की वासी है!
मथुरा वृन्दावन काशी-सी तू पावन गंगा जमुना-सी है ।
सुन प्रिये ....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुष्पित चन्दन तरु-सा यह तन विधि की अनुपम रचना-सी है!
चन्दन वृक्षों पर पुष्प न होते; हुआ असम्भव सम्भव तुझमें !
कवि का व्यंग हुआ ब्रह्मा पर मुझ पर हुई कृपा-सी है!
तुल सकी तुला पर जो न आज तक तू ऐसी महिमा-सी है!
सुन प्रिये ....

सङ्कटमयी निशा पथ में तू दूध धुली राका-सी है!
उलझी हुई गहन गुत्थियों की तू सुलझी भाषा-सी है!
मन में इच्छा जन्मी; विलीन, उन प्राणों की प्रतिनिधि-सी है।
लहरें उठीं, मिटी जल-तल पर तू रत्नाकर सागर-सी है
सुन प्रिये ....

परिवार सिन्धु का कालकूट तू हँस-हँस पीने वाली है।
नीलकण्ठ का गौरवमय तू जीवन जीने वाली है।
पूर्ण समर्पण होने वाली; चरणों में तू श्रद्धा-सी है।
सीमा में बहकर सागर से मिलने वाली सरिता-सी है।
सुन प्रिये ....

बड़ी उर्वरा मन की धरती सिंचित खेतिहर खेतों-सी है।
निज-जन की इच्छायें जिस पर पकी हुई फसलों-सी है।
तू दुखी दूसरों के दुख से; महिमा अनुपम सन्तों-सी है।
हर्ष सभी का हर्षित करता क्षमता योगी, ऋषियों-सी है।
सुन प्रिये ....

कण्टक विहीन पुष्पित गुलाब की तू सुन्दर डाली-सी है।
तप्त तवे-सा विश्व मरुस्थल तू उस की हरियाली है।
क्षीर-सिन्धु-सी पुलकित करती तू मधुमय प्याली-सी है।
तू व्यर्थ अनर्थों को करने वाली समर्थ काली-सी है।
सुन प्रिये ....

युगनयन किरणिया सुखदाई; हेमन्त गगन-गत-रवि-सी है।
नील-कमल-सा कोमलतम-मन दृढ़ता चरित्र की पवि-सी है।
यह अपमान सरासर होगा मैं कहूँ अगर रम्भा-सी है।
तू परम ज्ञान की शुभ्र ज्योति वेदों की अमर ऋचा-सी है।
सुन प्रिये ....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वर्ण-मृग-चर्म चाह, सीता के जीवन की चरम त्रासदी है।
पर स्वर्णाभूषण हित तूने, नहीं याचना मुझसे की है।
तू सन्तोषी जीवन जीने की अनुपमेय पूर्ण कला-सी है।
मैं नित्य पढ़ा करता हूँ तुमको सचमुच तू गीता-सी है।
सुन प्रिये ....

♦

नील-नभ-घनश्याम

शब्द सरस जलधर मधुर
बरस रहे मानस-भू-पर
सुखदा सृजन हरितमा अभिराम।
कल्पनामय मन-भ्रमर
कितना सुखी रसपान कर
भाव से भोगा सभी हो गया निष्काम।
सत्ता न सुख दुख की रही
धारा परम रस की बही
आनन्द-सागर में समाहित नाम रूप अनाम!

♦

वह कौन ?

मैं उसे बेहद प्यार करता हूँ;
उसमें कुछ ऐसा अनूठा, मीठा
चुम्बकीय आकर्षण है –
उसी के लिए जीता हूँ
उसी के लिए मरता हूँ।
विवेक मेरा सुस्त है, पस्त है
रहा न घर परिवार का चलते -
व्यौपार का। खिंचा चला जा रहा हूँ
उस की तरफ, उसी तरफ उसके समीप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर और कुछ समीप, अतिशय समीप।
वह सुन्दर है, सलोनी है,
सरस है; फूल सी कोमल-सुगन्धित
और चाँद-सी सुधामयी;
जैसी कल थी वैसी आज भी
भविष्य में भी वैसी ही रहेगी;
कालचक्र की गति का उसपर –
कोई असर नहीं – वह काल प्रूफ है।
मैं उसके गुणों से परिचित –
पर चेहरे से अपरिचित हूँ।
उसे चाहने वाले और भी हैं
पर वह किसे प्यार करती है
इसका पता नहीं : पता है –
तो बस, इतना –
प्रेम-सागर की लहरों की पर्तों में
एक स्वर्णिम नगर है जिसमें –
उसका अनुपमेय सुन्दर घर है।
प्रार्थना, अनुनय, विनय की प्रक्रिया से
गुजरकर जब सक्रिय हुई युक्ति –
तब चुपके से किसी ने कान में कहा –
इसी रूपसी का नाम है मुक्ति!

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्य भाग मिल गई स्वतन्त्रता

हुए स्वतन्त्र हम जिस दिन, उस दिन –
हर्षित मन की मधुर कल्पना
मुक्त गगन में पंख पसारे
लिये सुनहले स्वप्न दृगों में
यही सोचती –
पूर्ण मुक्त बंधनविहीन हूँ
लक्ष्य शीघ्र ही मिल जायेगा
रामराज्य की ओर उड़ चली।
किन्तु दूर और मंजिल है
आज कल्पना से मत पूछो
बाँध रहे पाँखों को उसकी
ये सब धागे जो खादी के
जँजीरें बनकर फौलादी।
निस्सहाय अबला अशक्त वह
गिरी भूमि पर महँगाई की
वश कुछ भी चल सका न उसका
चंगुल में फँस गई पूर्णत:।

भ्रष्टाचार दैत्य तब अपनी
लगा पूर्ण करने इच्छायें
उससे खूब लिपटकर कसकर
पर पौरुष की तनी न भौहें
झुके दृगों से देख रहा सब
धिक्कारो ललकारो उसको,
जिससे उद्यत हो दिखलाये क्षमता
या दो बूँद बहाकर आँसू
कहे – विवश हूँ बड़ी विवशता
धन्य भाग मिल गई स्वतन्त्रता!

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगा की मैली धारा है

कितना अच्छा; कितना प्यारा हिन्दुस्तान हमारा है।
भ्रष्टाचार की गंगा निर्मल, गंगा की मैली-धारा है॥
राष्ट्र-प्रेम का भाव न मन में कर्म दशानन का करते
फिर भी राम स्वयं को कहते राम-राज का नारा है!
लोकतन्त्र शतरंज खेल है कटते पिटते जिन्दा मोहरे;
खेलवइयन को केवल अपना स्वार्थ हिमालय प्यारा है।
"काशी में मृत्यु स्वर्ग मिलता है" – कौन देखकर आया है।
भ्रष्टाचार के बल पर अब तो घर में स्वर्ग नजारा है।
विश्वासों का दर्पण दरका आशाएँ भी चूर हुईं
मीठा-सपना क्षीर-सिन्धु का आँखों में जल खारा है।

◆

राजा शब्द हो गया अकिंचन!

मन्त्री है, जन सेवक भी है, नेता भी है, है सज्जन!
शब्दों को ये लगे लूटने
अर्थ अर्थ में लगे टूटने
जन सेवक बन बैठा राजा; राजा शब्द हो गया अकिंचन
लूट का भेद न खुलने पाये
ऐसा व्यूह बनाया इनने
नहीं छोर मिल पायेगा तो खुले गाँठ का कैसे बंधन
लूट खुदाई खुदा कहाऊँ
स्वर्ग लूट कर घर ले जाऊँ
इसी धुरी पर नाच रहा है कर्णाधारों का नवचिन्तन

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्तक

जवान, बच्चे हो नहीं सकते

ये पक्के मकान कच्चे हो नहीं सकते
पके हुए पकवान कच्चे हो नहीं सकते
वस्तुओं के दाम भी जवान हुए हैं
ये जवान; फिर से बच्चे हो नहीं सकते

विकल प्राण पार्थ है

नीति प्रीति स्वार्थ है; स्वार्थ ही परमार्थ है
संघर्ष स्वार्थ; स्वार्थ का; विकल प्राण-पार्थ है
रणभूमि मध्य सारथी कृष्ण को तलाशता
रोमरोम विकल दग्ध आज का यथार्थ है

मौन, मन-सितार है

मचल रहा नयन में मूर्तिमन्त प्यार है
कपोल पर बह रही आँसुओं की धार है
वेदना वियोगमय प्राण छटपटा रहे
तार पर अँगुलियाँ; मौनमन-सितार है

कर रही रचना नयी

ओजमय ऊर्जा हमारी कर रही रचना नयी
साहस हमारा है हिमालय दृष्टि है करुणामयी
बन्धुत्व का शतदल खिला प्रेम-सागर में प्रिये!
द्वेष-तम के नाश हित ही नेह रवि-किरणें जयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्य ही भगवान् है

सत्य ही है प्रेम, जग में; सत्य महिमावान है
सत्य ही है सूर्य नभ में; सत्य जीवन प्राण है
सत्य ही यह सृष्टि भी है; परिवर्तन पल पल का सत्य
सत्य यह आश्चर्य मय है; सत्य ही भगवान् है

आप कैसे श्रीमान है

आप कहिये हमें दलित, पिछड़े, हम भी आप जैसे इन्सान हैं,
विनम्रता से भी परिपूर्ण हम, धैर्यवान, शीलवान हैं।
आपकी वाणी मे हमारे लिए निन्दनीय-शब्द-विशेषण,
इन्सान, इन्सान में यह फर्क कैसा, आप कैसे श्रीमान हैं?

अन्याय है

समान अवसर सबके हित, स्वतन्त्रता का पर्याय है।
संविधान में सबकी सुरक्षा, सबके लिए न्याय है।
दलित, दीन, झुग्गी, झोपड़ी में; आप महलों में रहेंगे?
घपला, घोटाला, हवाला, शर्म की बात है अन्याय है।

तुरुप का पत्ता है

वर्षों तक भाषण देकर भरमाया आपने, आप अच्छे वक्ता हैं।
कानून की पकड़ में आये नहीं, क्योंकि आपके हाथ में सत्ता है।
दलितों के हक की दौलत खा गये; सुनो हजम नहीं होगी;
न्यायालय, वोट, संगठन और क्रान्ति तुरुप का पत्ता है।

बन्दूक की नोंक पर ...

भूख से न मौत हो बस इसी के वास्ते
बन्दूक की नोंक पर रोटियाँ तलाशते
गरीब नौजवान को नक्सली मत कहो
ये ढूँढ़ते हैं अर्थपूर्ण जिन्दगी के रास्ते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अटल जी ने कहा –

"बाबरी" की बात छोड़ बराबरी की बात कीजिये
स्नेहभावना से पूर्ण समझदारी की बात कीजिये
धर्म के नाम पर लड़ना, मरना बुरी बात है
देश स्वर्ग बने ऐसी ईमानदारी की बात कीजिये

खुशी का पर्व

पन्द्रह अगस्त खुशी का पर्व है खुशियाँ मनाइये
महँगाई से दिल जल रहा है; दिल को दीपक बनाइये
दिल के दीपक की रोशनी में लुटेरों की पहचान होगी
लुटेरों को पहचान कर देश को समृद्ध बनाइये

चाँद का नजारा

जुगनू की जिन्दगी में चाँद का नजारा
सेवक बना है स्वामी, ले वोट-धन हमारा
पीकर स्वयं सुधा-घट हमको जहर पिलाता
कितना अच्छा देखो गणतन्त्र है हमारा

मृत्यु को ललकारते हुए

मृत्यु को ललकारते हुए पथ पर बढ़ने का नाम जिन्दा दिली है
संघर्षों से हँस-हँस कर संघर्ष करने के लिए जिन्दगी मिली है
सृष्टि का यही क्रम है जीवन-मरण में चोली-दामन का सम्बन्ध है
विश्व-मरुस्थली में धन्य है वे; जिनकी जिन्दगी फूल सी खिली है

आदमी के भीतर का आदमी मर गया

आदमी के भीतर आदमी है भीतर का आदमी मर गया
अन्न मिठाई मेवा खाकर भी पशुओं का चारा चर गया
क्या आदमी फिर से पशु हो जायगा; यह सोच कर
वर्तमान में समाज के भीतर का सही आदमी डर गया

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी निबन्ध और भोजपुरी कविता

सत्य

सत्य केकरा के कहल जाला? सत्य के स्वरूप का ह? सत्य के पहचान का ह? एह बारे में समय-समय प ढेर तरह से विचार कइल गइल बा, एह विचार के क्रम में शास्त्रन में एगो उक्ति मिलेला जवना के माने ह कि जे भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनों काल में एके नियन रहे आ जेकरा में कवनों विकार ना पैदा होय, ऊहे सत्य ह। आजो लोग के विवेक जइसे के तइसे गम्भीर चिन्तन आ मनन करत बा आ उक्ति जइसे के तइसे उजागर हो रहल बा। साँचो के ई आध्यात्मिक सत्य चिरंतन सत्य के परिभाषा ह। एह घेरा में सत्ये ईश्वर के दोसरका नाँव हो जाला।

संसार में रंग-बिरंग के आ अनेक आकांर-प्रकार के भौतिक अचर-चर-चैतन्य प्राणियन के जनम आ मरण के जे सिलसिला रहल बा, ऊ सामने बा, सत्य बा; एह जागतिक प्रत्यक्ष के ऊपर के कसौटी प नइखे जाँचल जा सकत। काहे कि ई दुनिया नाशवान आ परिवर्तनशील ह। एकरा में बराबर परिवर्तन हो रहल बा। एहसे एह संसार के अपरिवर्तनीय चिरन्तन सत्य से निकसल सत्य कहल जाय त जादे सुन्दर होई।

हर आदमी परिवर्तनशील दुनिया के एगो अंग ह, सबके आपन-आपन सत्य बा। सबके आपन-आपन जिए के ढंग बा। ऊ सब अपना-अपना सत्य से अपना जिनिगी के सँवारले बाड़न। वाकिर एह सत्य के कुछ हिस्सन के नग्नता आदमी के पसन्द नइखे। एकरा के ऊ पर्दा के भीतर राखल चाहेला। छिपावे चाहेला। सत्य के ढाँके खातिर चादर के जरूरत प्रगतिशीलता ह, विवेक ह।

एह घरी संसार के लोग आध्यात्मिक सत्य के अलावे दोसरा के व्यावहारिक सत्य के देखल चाहेलन। एह व्यक्तिगत सत्य के देखे खातिर केहू जल्दबाजी कर रहल बा, त केहू गते-गते चल रहल बा, जब कि एगो भयंकर सत्य-डरावना सत्य अइसन सभ लोगन के जिनिगी के अंग बा। जवना में ऊ जी रहल बाड़न। बाकिर साथ ही दोसरा लोग के परदा के भीतर के सत्य के नग्नता के देखे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ल-चढ़ल लालसा से बेचैन बाड़न। ई बाहरी लालसा दोसरा लोगन के व्यक्तित्व से टकराले उलझेले आ उनका जिनिगी के व्यावहारिक आ निजी सत्य के लंगटे करके चाहेले। अइसन इच्छा आ मनोवृत्ति सामाजिकता के मार डालेली। शिष्टाचार प चोट पहुँचावेली, कबो-कबो त ई इनसान के इनसानो ना रहे देवे। आ अइसन इच्छा वाला लोग अपने डरावना सत्य के पड़ोस में दोसर नेक लोगन के सुन्दर आ साफ सुथरा जिनिगी के सत्यो प कूड़ा करकट फेंक के ओकरा के भयंकर बना देल चाहेलन। ई बात दोसर बा कि एकरा में उनका सफलता मिलेला कि ना?

एह घरी जादे लोगन के व्यावहारिक सत्य बिगड़ गइल बा, रोगी हो गइल बा। एह बिगड़ल आ बीमार सत्यन से बनल समाज के तसवीर हमनी सभके सामने बा। एही समाज में आज हमनी मउअत के जिनिगी जी रहल बानी। स्वच्छ प्राण वायु खातिर बेचैन बानी। लोक-कल्याणकारी समाज के बनावे खातिर वैयक्तिक सत्यके स्वस्थ बनावे वास्ते सत्य, शिव, सुन्दर, जे तीनों काल में एक समान रहे वाला सत्य के व्यावहारिक पक्ष ह, के अपनावे के होई। हर आदमी के सत्य, सत्यं-शिवं-सुन्दरं के व्यावहारिक पक्ष के अपनाइए के स्वस्थ आ सुनिर्मल लोक-कल्याण करेवाला, आनन्द बढ़ावे वाला समाज के सहायक होई, आ आध्यात्मिक सत्य के दर्शनों के मार्ग साफ होई। जेकर जिनिगी सत्यं-शिवं-सुन्दरं के व्यावहारिक पक्ष के अपना लेले, ऊ आनन्द के असीम सागर के परमानन्द कैं पावे में समर्थ होले। समाजो के ओकरा कामन से मन मोहे वाला सुगन्ध आ शक्ति मिलेला। समाज के विश्वबन्धुत्व के भावना के सदेह बनावे खातिर हर आदमी के व्यावहारिक सत्य के सत्यं-शिवं-सुंन्दरं पर टिकावे के होई।

सत्यं-शिवं-सुन्दरं के व्यावहारिक उपयोग के बिना सामाजिक विकास के उमेद निरर्थक बा। रामराज्य के त कल्पनो नइँखे कइल जा सकत। एकरा खातिर वैयक्तिक आ सामाजिक तह प काम होना जरूरी बा। शिक्षा के कमाऊ बनावे के साथे साथ सत्यं-शिवं-सुन्दरं के व्यावहारिक पक्षो प खड़ा करेके पड़ी। अइसने शिक्षा हमनी के सदाचारी आ विद्वान लोगन के दे सकी। नेता लोगन के नेतागिरी कानून बनावे आ शासन चलावे तके ना रहिके मौन आचरनं द्वारा सत्य-शिव-सुन्दर के व्यावहारिक राह प आगे होके जनता के आगे उदाहरण राखे के पड़ी। तबे भारतीय लोक–तंत्र के सत्य प्रकाश में आई।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँजुरी भर गंगाजल

हिमालय के ऊँचा शिखर गोमुख से निकसे वाली गंगा, नदी ना, सुरसरी हई। अइसे त जमुना, सिंधु, ब्रह्मपुत्र आदि अनेक नदियन के निकले के जगह हिमालये ह, बाकिर गंगा ओकर अइसन देन ह, जेक़र बराबरी करेवाला दोसर कवनो नइखे। शास्त्रन में महामहिमाशालिनी गंगा के प्रशंसा में, स्तुति में हजारन गीत गवाइल बाड़न स । ई पातक के नाश करनेवाली पुण्यसलिला हई। अलकनन्दा वगैरह नदियन के, पहाड़ी इलाका में अपना में मिलावत पहाड़ी ढलान के पार कर के ई हृषीकेश में समतल जमीन पर उतरेली, फेरु कुरुक्षेत्र से आगे प्रयाग में जमुना के संगम से एकर पवित्र आ विशाल देह पुष्ट होला। पुरुब दिशा में पुण्य नगरी काशी से आगे बढ़के सोन आदि के अपना गोद में दुलारत पटना, भागलपुर, कलकत्ता आदि नगरन के पवित्र बनावत गंगासागर तीर्थस्थल प समुन्दर के गोद में ई अपना के अर्पित कर देली। जमुना आ सोन जइसन बड़ नदियन के संगम भइला के बादो गंगा गंगे रहली। जमुना आ सोन के अस्तित्व गंगा के अस्तित्व में समा गइल । गंगा के जल के पवित्रता ओही तरह से बनल रहल। गंगा के जल में पाप के नाश करेवाली शक्ति वीया। एकरा जलके विचित्र महत्व बा।

आदमी शिशु के रूप में धरती पर जनमेला! ओकरा साथे ओकर आत्मा-सत्य सनातन के गंगा जीवनधारा बनके बह चलेली। हृदय के गहराई में ठहरल अत्यन्त पवित्र अँजुरी भर गंगाजल चेतनता–गतिमयता के प्रतीक बनके जीवन यात्रा पर निकल पड़ेला। हिमालय के हृदय से निकसे वाली गंगा ऐगो हई। हृदय से निकसे वाली-जीवन धारामयी गंगा करोड़ों-अरबों के गिनती में बाड़ी। अपने आप में हृदय से निकसेवाली एह सभ गंगन के अस्तित्व अँजुरी भर गंगाजल ह। रउआ, ऊ आ हमनी सभे अँजुरी भर गंगाजल के चलत-फिरत प्रतीक बानीं।

एह घरी हमनी सभके सामने ईहे प्रश्न बा कि अपना-अपना अँजुरी भर गंगाजल के पवित्रता हमनी कइसे बनवले रहीं, कइसे एक अँजुरीभर गंगाजल के निर्मलता आ पापनाश करे वाली शक्ति जागल रही। आ अपना परमपुण्यमय आकर्षण कें ई कइसे जोगवले रही। कइसे ई अँजुरी भर गंगाजल तीर्थस्थल बन जाई! ईहे प्रश्न बा, जे बड़ा बेढंगा सामने खड़ा हो गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज में अपराध करेवाला ना होइतन 'अपराध ना होइत' त रामराज्य होइत। चारों ओर शान्ति दिखाई पड़ित। मरघट के शान्ति ना, बलुक चहल-पहल के बीच आनन्द से जनमल परमानन्द के शान्ति। हँसत, किलोल करत, नाचत, झूमत, शान्ति सभके बीच, सभके पास रहित। एही शान्ति के पावे खातिर प्रशासक वर्ग कानून बनाके दण्ड-व्यवस्था के जरिए बढ़ रहल बाड़न। उनकर सोचावट बा कि कानून के पेट से अइसन शान्ति जरूर जनमी। एह घरी के शिक्षाशास्त्रियन के खेयाल बा कि अर्थकरी पढ़ाई से आदमी बेकार ना रहिहें। सभ लोग रोजगार में लाग जइहें आ शान्ति के जनम हो जाई। सभ राजनैतिक आ सामाजिक काम करे वाला लोगन के विचार ह कि धरती आ रुपया-पइसा के बराबर बँटवारा होखे से एह शान्ति के उतरल जरूरी हो जाई आ अँजुरी भर गंगाजल पवित्र गंगाजल बनल रही।

अंजुरी भर गंगाजल के अनगिनत गंगा में से कतने अँजुरी भी गंगाजल के धारा विशाल गंगा बन सकली, विश्व के इतिहास के ढूँढ़ल जाय त अँगुरिए प गिनाए लायक जीवन गंगा मिलिहें। एह सिलसिला में आदर के साथ राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, यीशु, पैगम्बर, मुहम्मद साहेब, गुरुनानक आ गाँधी आदि लोगन के नाव लेल जा सकत बा। एह लोगन के अँजुरी भर गंगाजल के जीवनधारा विशाल गंगा बन गइल।

अगर हमनी ईमानदारी से रामराज्य आ शान्ति के चाहत बानीं त हमनी के आपन नजर बदले पड़ी, सोचे के तरीका बदले पड़ी। सभ लोग के एकरा खातिर उपाय कइल जरूरी बा। अतने से बहुत बड़ा क्रान्तिकारी बदलाव हो जाई। जतने महापुरुष भइलन, सभके हमनिएँ अइसन जिनिगी मिलल रहे, वाकिर उनकर विचार, काम करे के ढंग, जोए के तरीका हमनी से अलग रहे। यदि हमनी एह सचाई के अनुसरन कर लीं, त अचके में हालत सुधर जाई। हम जे चाहत बानी, ऊ हमरा सामने होई आ हम ओकरा नगीचा होखब। बाकिर ईमानदारी से अपना विचारन के कामन के मोरे त परबे करी।

अंजुरी भर गंगाजल के जिनिगी के धारा के विशाल जिनिगी के गंगा के रूप देल त परम तपस्या के फल ह। वाकिर एकर पवित्रता बनल रह जाय त बहुत बड़ बात बा।

एकरा पवित्रता के बचावे खातिर शास्त्रन द्वारा बतावल विकारन–काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सर के सही रूप के जानल आ ओहनिन के आक्रमण से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना कार्यन के बचावल बहुत जरूरी बा। एह रास्ता के बिना अपनवले अर्थकरी विद्या, धरती आ धनके सही बटवारा से आ रोज नया-कानून बनवला से हमनी के कवनो मदद ना मिली। ऊपर लिखल छवो बिकारन के रोके के सामाजिक आ वैज्ञानिक तरीका खोजे आ ओकरा अनुकूल जीए के कला के अपनवला बिना ई अँजुरी भर गंगाजल बराबर गन्दा विचारन आ कामन के गन्दा नाला में मिलत रही। हमनी एह अँजुरीभर गंगाजल के विचित्र लाभन से पिछुआइल रहब

◆

वेद एगो झलक

दुनियाँ के सभ भाषन के पुरान से पुरान पोथियन में वेद के पहिला स्थान बा। एकरा के असहूँ कहल जा सकत बा कि वेदे दुनियाँ के पहिला पोथी ह। वेद के ऋचा के द्रष्टा ऋषि रहन। वेद के भाषा संस्कृत ह। संस्कृत भाषा सभ भाषन के जननी ह आ सभ भाषन में पुरान ह। अंग्रेजी भाषा आज दुनिया के सभ भाषन में धनी मानल जाली। संस्कृत के 'त्रि' शब्द अंग्रेजी में 'थ्री', 'मातृ' 'मदर' आ 'पितृ' फादर हो गइल बा। अइसन कतने बानगी मिलिहें, जवनन से संस्कृत के फैलाव आ ऊँचाई में संदेह नइखे कहल जा सकत। वेदन के सायण भाष्य आजो भारतीय विद्वानन के समाज में गौरव के बात बन रहल बा। अइसे त, वेदन प ढेरका भाष्य लिखाइल आ ओहनिनो के कम आदर नइखे।

वेदन के ऋचन के साथ जवनन ऋषियन के नाँव लेल जाला, ऊ लोगिन मंत्र-द्रष्टा रहलन यह उनकर आपन खोज रहे। ईहो कहल जा सकेला कि वैदिक ऋचा के रचना करे वाला केहू पुरुष नइखे। एही माने में वेद 'अपौरुषेय' कहल गइल बा। हमरा जाने में वेदन के ऋचा ऋषियन के दिखाई पड़ल, एहसे कहल गइल बा कि ओह जुग में सियाही, भोजपत्र आ ताड़पत्रो के जानकारी लोगन के ना रहे आ लिखहूँके लूर लोगन के ओह घरी तक ना रहे। एह से गुरु शिष्य के मुहाँमुही एह वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार भइल। वेद श्रुतियों एही से कहाइल। ज्ञान के सिद्धान्त ऋषियन के बुद्धि में उभरल, जवना चलते ऋषिलोग द्रष्टा कहाइल। आज के वैज्ञानिक लोग जवना नया सिद्धान्त के खोज करत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न, ओकर उनका के 'अन्वेषक' आ शोधकर्त्ता कहल जाला। भौतिक पदार्थन के संयोग, वियोग आ विश्लेषण से जे नया ज्ञान लाभ होता ओकरा खातिर आजो उनकर नाँव अमर हो जाता। अचरज हैला ई जानि के कि पहिले के लोग अपना नाव के खातिर अतना बेचैन ना होत रहन। अध्ययन के क्षेत्र में अनन्त ज्ञान के भंडार रखेवाला ऋषिलोग अपना नाँव के लुकाके रखही में संतोष मानत रहलन।

ध्यान देके देखल जाय त हर सिद्धान्त भा ज्ञान के साकार रूप देवे वाला आदमी पहिले दर्शक ह। बाद में लेखन-कला के विकास के साथ ऊ भले लेखक बन गइल होय।

आज हम वैदिक ऋचन के पौरुषेय माने में हिचकिचा जात बानी। बुझाता कि एहसे वेद के श्रेष्ठता, प्राचीनता आ अमरता खतरा से खाली ना रही। बाकिर बात अइसन नइखे। सचाई त ई बा कि वैदिक ऋचन के कलेवर, रचना, अंग-संस्थान बाहर भा भीतर, जहवाँ जाइल जाय, ओकरा ज्ञान के दिव्यात्मा के जवना कसौटी पर कसल जाय, सोरहो आना सही जनाई। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के अलावा ओहिजा कुछुओ दोसर चीज ना मिली।

वेदन के ढेरका ढेर ऋचा कर्म ज्ञान से मिलल जुलल मिलिहें। एही से ब्राह्मण के रचना वेदन के बाद भइल। एहिजा कर्म के अगहर कइल गइल। कर्म-काण्ड के श्रेष्ठता यज्ञन के जरिए आगे बढ़ल। कर्म से वेद-विसेष के कृपा पावे के शुरुआत भइल। एकरा बाद आत्मोत्कर्ष ज्ञानपरक दिव्य संदेशमय अर्थों वेदन के 'आरण्यक' आ 'उपनिषद् ' से सामने आइल।

कहे के मतलब ई बा कि दुनिया के साकार सत्य के समझे के अद्भुत प्रयास 'प्रज्ञां के द्वारा शुरु भइल। निराकार आ साकार के समझे के तरीका तत्त्व विश्लेषण से निकसल। न्याय-मीमांसा आ दर्शन शास्त्र के जनम भइल।

आ एह मनन-चिन्तन के फल आत्मपरक ज्ञान के उन्मेष अइसन भइल कि ओकरा में 'परम' विशेष के योग हो गइल। आत्मा परमात्मा हो गइल। आनन्द परमानन्द बन गइल।

पछिम के विद्वान लोग वेदन के ऋचन में भरल सत्य के उद्घाटन तत्त्वन के संयोग, वियोग, विश्लेषण आ विभंजन के माध्यम से करे लगलन। सत्य, शिव, शक्ति के उपयोग ऊ लोग विश्व के सुन्दरतम बनावे में ना करके राजनैतिक-स्वार्थन के पूरा करे में, करे लगलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज दुनिया में तनाव बा, अभाव बा, आशंका बा, भय बा, अवरी बा अशान्ति। बाकिर ए सभन के ठहराव मन में बा, अवरी कतहूँ नहखे। एह हालत से बाहर निकले के उपाय दुनिया के हर आदमी कर रहल बा, बाकिर एह में सफलता कतना मिल रहल बा, एकर सबूत हम आ रावा बानी।

एहमें सफलता ना मिले के कारण बा उलझल व्यक्तित्व, राग-द्वेष के बढ़ावा देवे वाला हालत, भोग्य पदार्थन के भोगे के लालसा। आदमी के मने एकर जिमेवार बा। एकरा से छुटकार पावे खातिर वेदे के ज्ञान के आश्रय लेवे के परी।

ऋग्वेद के सूक्तन में प्रथम सूक्त अग्नि-सूक्त ह। प्रथम ऋचा –'अग्निमीले पुरोहितम् ' से अग्नि के स्तुति शुरू होला। अग्नि के तेज रूपविश्वनिर्माणकारी योग्यता श्रद्धा के साथ स्वीकार कइल गइल बा। पछिम के वैज्ञानिक लोग एह तेज ऊर्जा-शक्ति के भौतिक पदार्थन के विचवान से उपयोग करके चन्द्रलोको में पहुँचे के सफलता पवले। आ एकरे बाद दोसरो ग्रह पर जाये के प्रयास में लागल बाड़न। अवतारी पुरुष लोग अग्नि के तेजस् स्वरूप से परम ज्योतिर्मय शक्ति के उद्घाटन कर के 'सर्वजन हिताय' के ओर आगे बढ़ले।

ई हे वेद के प्रथम सूत्र के प्रथम चरचा से मिले वाला महत् ज्ञान के स्पर्श आ आभासमात्र ह। वेद के ई हे ज्ञान असीम आनन्द के लाभ करावे में समर्थ हो सकेला।

◆

सुमन

सुगन्ध के समुन्दर सुमन के इयाद पड़ते, मन सुगन्धित हो जाला, खिल उठेला। हम फुलवारी में फूलन के बीच में होईं भा ना होईं। डाढ़ प झूलत फूल आखिन के आगे होय भा ना होय, माली के डलिया में सजावल फूलन के बगल से हम निकलीं भा ना निकलीं, देवता के माथा प चढ़ल फूलन के देखीं भा ना देखीं। कहे के मतलब ई बा कि सुमिरते, फूलन के साथ आत्मा के संयोग होते मन में सुगन्ध के लहर हिलोरा लेवे लागेला। कल्पना में फूलन के सुगन्ध के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरंग नाच करे लागेले। साँचो, धरती प सुगन्ध के प्रतिनिधित्व खाली सुमने करेला। सुमन-सुमन ह।

सुमन के मुसुकी भरल सुघराई के आदमी अपना कला के चतुराई से कागज आ प्लास्टिक के फूलन प परगट कइलस। वियाह के मोका प बरात सजावल गइल। घर, दरवाजा आ मण्डप प बाग के वैभव के उतारे के कोशिश भइल। एगो हद तक, प्रकृति के असीम शोभा से भरल सुमन के अभाव के बनावटी, सुगंध रहित कपट कलेवर वाला सुमनन से पुरावल गइल। आदमी के कला अपने आप में धन्य हो गइल।

प्रकृति के देल फूलन में जान बा, गति बा। हुलास बा, उमंग बा। कमनीय कोमलता बा, त्याग बा। वेदना आ प्यार बा। सभ से बड़ बात त ई बा कि एह दुनिया के सुन्नर बनावे में ऊ फूल के बराबर लागल रहले। फूल आचरण के पवित्रता के जीयत प्रतीक बाड़न।

पेड़ के डारियन प कली हँसि के फूल बनि जाली। फूल कुम्हिलइबो करेलन आ मुरुझइबो करेलन। बाकिर, ई सभ हालत प्रकृति के फूलन के होला। कागज प्लास्टिक भा दोसरा पदार्थन से बनल आदमी के कला कौशल के फूलन के साथ ई सभ ना हो सके। आदमी के बनावल फूलन के कली सभ ना हँसके फूल बन सकेली आ ना मुरझा सकेली। एह हँसे, खेले, कुम्हिलाए आ मुरझाए के बदले चेतना के अनुपस्थिति साफ-साफ जाहिर होला। बिना चेतना के, परान के सुमन के सुघरई कहाँ?

सुमन के सुघरई के सुगंधित संसार में गुलाब अइसन सुघर, जुही के कली अइसन मुलायम देह, चम्पा अइसन बदन, चमेली अइसन गोराई बगैरह। कहाउत त मशहूरे बा। फूलन के नाँव प बचवा, बचियन नाँवों राखल फूलन से आदमियन के प्रेम के जीयत-जागत उदाहरनें ह। गुलाब सिंह, कमल सिंह, गेंदा लाल, चमेली बाई, चम्पा बाई, जूही इत्यादि एकर प्रमाण बा। गुलाब अपना मधुर मोहक सुगन्ध के चलते समाज में बड़ा आदर पावेला, त कमल दिव्य आदि पुरुष आ ओकरा शक्ति-स्वरूप के अंगन के सुघरई के उदाहरन उपस्थित करेला।

कमल-मुख देखते हृदय कमल खिल जाला। नयन-कमल देख के नयनो मुस्कुरा उठेले। कर-कमल के शोभा चित्त में स्पर्श पावे के लालसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगावेली त चरण-कमल के ललाई श्रद्धा से झुकल आदमी के आराधना के रँग देली।

कमल प्रकाश के उपासक ह। प्रकाश के अभाव में मउरा जाला। उदास हो जाला। ई प्रकाश पुंज के खोज में पाँक के छाती चीरके ऊपर उठि के पानी के रुकावट के मिटा के अपना आराध्य के पा के निहाल हो जाला। पाँक हमनी के कमल देला। गंगा के पवित्र जलमय बालू हमनी के कमल नहखे दे सकत।

एह घरी विवेक के विशाल बाढ़ में समाज डूब गइल बा। अर्थ के अनर्थ करे वाला दल-दल में गर्दन तक फँसल आदमियत कराह रहल बा। स्वार्थ के अन्हरिया छा गइल बा। लोभ-निशा के घनघोर अन्हार के करिअई आदमी के भीतर घुस गइल बीया। तबहूँ असरा के दीया के जगवले रहे में विश्वास आ सनेह अपना करतब के पूरा कर रहल बा। काल जुग-जुग के नियमन से बन्हाइल राह प चल रहल बा। तबहूँ आदमी के मन कमल के सुमन पावे के इन्जतारी में हर दम बेचैन बा। अपसोस! दुनिया में अनेरिये फुलाइल कमलन के देखें खातिर बेचैन ना हो के आदमी अपना बुद्धि के बाढ़ से उपजल स्वार्थ के पाँक में ग्यानोदय के प्रभाव से मन के पलटि के सरसिज सुमन क लेत त संसार स्वर्ग बन जाइत। कवनो समय मानव-मन के फूल के समान खूबियन के खिल गइला प फूलों के सुमन के सम्बोधन मिलल बा। आजो मानव-मन सुमन बनो; फूल के गुण-धर्म से भरल बनो, आजु भ्रष्टाचार के युग में इहे हमरा कामना बा।

◆

अपराध, अपराधी, अपराधालय

आदमी अपराध काहे करेला, ओकर प्रवृत्ति अपराध के कामन में काहे होले, का जनमें से ओकर स्वभाव अपराध करे के होला, आखिर ई होला काहे? कबो-कबो त आदमी बहुत बड़ घिनौना अपराध कर बइठेला। कुछ आदमी त जिनगी भर अपराधे करत रह जालन। अपराध कइल उनकर स्वभाव बन जाला। ई कइसन लाचारी आ कइसन समस्या बा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदमी विवेक-शील परानी ह। सभ परानियन में बुद्धि-बल एकर खासियत ह। ई बुधि, ई विवेक एकरा के नीमन कामन में ना लगाके खराब कामन के ओर काहे लगावेले आ ऊ अपराधी काहे बन जाला?

भारतीय संस्कृति में आदमी के चरित्र के पवित्रता बनवले राखे खातिर जे सुन्दर विचार मिलेला; ओकर बराबरी दुनिया के कवनो साहित्य आ इतिहास के चरित्र से नइखे हो सकत। भारतीय चरित्र के सामने दुनिया के दोसर चरित्र बवना लागेलन स।

आदमी के बच्चा जब धरती प जनमेला, त ओकरा मुँह प कतना सरलता, फूल के सुन्दरता आ मुसकुराहट होले कि सभ के मन बलाते ओने खिंचा जाले। समय के साथ आदमी जब लरिकाईं के पार करके जवानी के ओर बढ़ेला तब ऊ किसिम-किसिम के भावना, गति-विधि, क्रिया-कलाप आ व्यवसाय से पनपत समाज के अनेक वर्गन में बँटा के विराट विश्व के चहल-पहल के केन्द्र बन जाला। एह बच्चन कै मन के अन्दर मानवीय ज्ञान के तह प जे छव गो विकारन के बीया अँकुरेले, ओहनिन के भनक आ पहचान हमनी के ओहनिन के जनम-काल में ना मिले। बाद में ऊ छओ विकार पारिवारिक पड़ोस के साथियन के साथ शिक्षण-संस्थान में रोकलो जाला आ बढ़बो करेले।

व्यक्तियन के समूहे समाज कहाला। जइसन व्यक्ति होले ओइसने समाज होला। ईहो कहल जाला कि जइसन समाज होले ओइसने व्यक्ति होला। साँच त ई हे बुझाला कि अगर समाज के एक-एक आदमी नीमन हो जाय त समाज नीमन होइए जाई। एहमें दूगो राय नइखे हो सकत। काहे कि व्यक्तिए समाज के नेंव ह। समाज के सामूहिक व्यक्तित्वों के लरिकन के आ जवानन के चरित्र प बड़ा असर पड़ेला।

विवेक के तह प, मनके गहराइन में अँकुरल छवो विकार, परिस्थितियन के उलुटा रहे से, मनचाहा फल ना मिले से, धीरज क अभाव में, विवेक के सजग ना रहे से आदमी के मस्तिक पर आपन असर एह तरह से डालेलन कि अपराध के जनम देवेवाला समय के जनम हो जाला। बस एही घरी अपराध जनमेलन। एह छन के एह समय के कइसे रोकल जाय ईहे बात विचारे के बा। समस्या टेढ़ आ कठिन बा। कथनी-करनी में बड़ा फरक होला। आदमी के कमजोरी के ईहे पहिला ठाँव ह। एहिजेसे सभ अपराध पनपेलन। जे एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमजोरी के दूर करेमें रात-दिन लागल रहेलन, आ जवना हद तक उनका एहमें सफलता मिलेला, ओंही हद तक ऊ बड़का यशस्वी होलन।

कहेके मतलब ई बा कि जतने अपराध होलन, उनका जड़ में छवो विकारे होलन। जइसे काम विकार के प्रधानतासे मन मोताबिक बिआह ना होखे से आत्महत्या, अपहरण, बलात्कार, हत्या वगैरह अपराध जनमेलन।

मनमोताबिक फल ना मिले से फल मिले में जवन परिस्थिति भा व्यक्ति बाधा पहुँचावेलन उनकाके आपन शिकार बनावे के काम क्रोध करेला। कबो-कबो त क्रोध छोटो बात के बड़ा भयंकर बनाके भारी अनरथ कर देला। जइसे एगो आमके फर तुरेके चलते पैदा भइल छोट छोटा लइकन द्वारा झगड़ा खून तक करा देला।

लोभ के का कहे के बा? ई हो विकार कम अनरथ करेवाला ना ह। सम्पत्ति के लोभ, पद, प्रतिष्ठा के लोभ, रूप के लोभ, इन्द्रिय-सुख के लोभ मामूली आदमी से लेके विद्वान, शासक आ नेता लोगनि तक के ना छोड़े। ई सभके एक झटका में गिरा देला।

मद जेकरा विवेक प छा जाला, ओकरा के त ऊ लेइए बइठेला, साथे साथे समूचा परिवारोके, आ हितो मीतोके विनाशके कारण बन जाला। एकरा से आदमी अपनाक जादे बूझेला आ आपने नाश कर बइठेला।

मोह के जगलासे अपनन से जरूरत से अधिक प्यार होला। एकरा चलते आदमी के सभ सात्विक विचार आ काम पाछा पड़ जाला। मोह में पड़िके आदमी दोसरा से द्रोह करे लागेला। मोह कबो-कबो चोरी आ अनाचारो के जनम देवे से बाज ना आवे।

मत्सरी दोसराके योग्यता; ऐश्वर्य आ प्रतिष्ठा के बाढ़ ना देख सके। मत्सर आदमी के बात-व्यवहार सभके बिगाड़ देला। मत्सरो आदमी के नाश के घरी ले आवे में देर ना करे।

पुराना जमाना में एह सभ विकारन प रोक लगावेके इन्तजाम धरम के भीतर कइल गइल रहे बाकिर धरम जब पुरान रूढ़ि आ हठके शिकार होके कुछ खास लोगन के स्वारथ साधे में लाग गइल तब एकर असली रूप बिगड़ गइल। आज त धरम निरपेक्ष लोकतंत्र के जे रूप निखर रहल बा, ऊ सामने बा, आज धरमके नाँव लेते कुछ बन्हल बन्हावल भावना के घेरा में विचार चक्कर काटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागता। अइसन हालत में एह विकारन के नया ढंग से रोके-थाम्हे के क्रम में नीचे लिखल बातन प ध्यान देवे के चाहीं (१) शिक्षा के सही स्वरूप, वैज्ञानिक उपलब्धियन के सामाजिक स्तर पर उपयोगी बनावे के ढंग से जाँचल (३) न्यायालयन के व्यवस्था में जड़ से सुधार (४) विधि के जानकारन खातिर स्वस्थ समाज के बनावे के सिलसिला में आचरण संहिता (५) संपत्तिके संग्रह प विचार के साथ रोक-थाम (६) पारिवारिक व्यवस्था के वर्तमान युग के अनुसार संरक्षण (७) चलचित्र जगत के सही राह-बतावल (८) विभिन्न पेशावाला लोगिन के आपस में प्रेम-भाव से स्थापना करेवाला मूलतत्वन के प्रचार-प्रसार (९) धैर्य, सहनशीलता, योग्यता, क्षमा, दया आदि मानवीय गुणन के विकास के पूर्ण प्रयास एह विकारन के रोके थाम्हे में मदद पहुँचा सकेला।

मानव मन के विशेष जानकारी रखेवाला लोग, सजग, विचारक, मननशील, चिन्तक आ विधि के जानकारन द्वारा एह काम के पूरा करावल बहुत जरूरी बा।

◆

भोजपुरिया माटी

जानत ई सौंसे जहान बा, भोजपुरिया माटी महान बा
ई माटी में भरल शान बा
ई माटी के अजब आन बा
ई माटी में भरल नेह बा
ई माटी ले बनल देह बा
खड़ा मुकाबिल में के होई सोना ऐसन तपल प्राण बा
जानत ...

ई माटी में भरल जोश बा
ई माटी में भरल रोष बा
ई माटी में भरल आग बा
ई माटी में भरल त्याग बा
कितना गुण एकर गाँई जा ई गुण से ठकचल खदान बा
जानत ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई माटी भारत गौरव धन
ई माटी सुन्दर नन्दन बन
ई माटी कस्तूरी चन्दन
ई माटी काशी वृन्दावन
ई माटी में शस्त्र, शास्त्र के सबले नीमन भरल ज्ञान बा
जानत ...
इहाँ जनमली बड़ा भाग बा
ई माटी मथुरा, प्रयाग बा
इहें जिनगी आपन काटीं
इहें मिलो माटी में माटी
सरगो के माटी ले नीमन ई माटी पावन महान बा
जानत ...

♦

भोजपुरिया बोली

भोजपुरिया बोली हमनी के मधुर प्राण बा – श्वास बा!
चन्दा मामा के एकरा में गारल गइल मिठास बा ?
खिलल फूल शब्दन के झोली
मदमातल भोजपुरिया बोली
मेला घुमनी; कहआ मर्दा, अजगुत शबद बिलास बा।
भोजपुरिया बोली ...
नगर गाँव के डगर डगर पर
उखिया अस रस गगरी भर भर
मुहवाँ से छलका ई भाषा रोज मिटावत प्यास बा
भोजपुरिया बोली ...
स्वर लहरी मलयज बयार बा
रसले साधल तार तार बा
राग रङ्ग चैता के ऐसन सौझे नाचत मधुमास बा
भोजपुरिया बोली ...

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरिया बोली बोलि बोलि

सरगे से जब एहिजे अइलीं
किहू किहू कर हम चिचिअइली
हँस हँस फूलन के शरमइली
मंगली चन्दा मंगली तितली
आपन बात बुझवली बुझली मिश्री ऐसन रस घोलि घोलि।
भोजपुरिया बोली बोलि बोलि
माई के जियरा हुलसवली
बाबू के जियरा पुलकवली
एहिजे माटी में लोटि पोटि
ऐहिजे खाटी पे लोटि पोटि
तुतरी बानी बोलि बोलि उठि झूमि झूमि उठ डोलि डोलि
भोजपुरिया भाषा बोलि बोलि
एहिजे भइया बीतल बचपन
खेलत कूदत गइल लड़कपन
इहँवे गइल जगत ई देखल
इहँवे गइल जगत ई बूझल
ज्ञान-अँजोरिया में हँसि हँसि हृदय के अखियाँ खोलि खोलि

◆

कुँवर सिंह

हे वीर पुरुष आजादी हित भीषण संग्राम रवाँ कइँली
माथ प्रथम भोजपुरियन के फिर भारत के ऊपर कइँली
फेड पवित्तर आजादी के सूखत रहे न सूखे दिहली
रक्त देह के भर भर अञ्जुरी झुकि झुकि रवाँ प्रेम से दिहली
गौरव के मिहराइल अगिया रवाँ जगा दिहली कण कण में
देश-प्रेम के पावन गंगा रवाँ बहा दिहली जीवन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कह रहल आजु इतिहास इहे राउर जसवा जे बन सूरज
दे रहल मनुज के बा प्रकाश दी ही जब तक गंगा सतलज

आ रहल याद बा अंबही तक ऐसन राउर ललकार रहे
उठिके मुरदा प्रिय स्वेदश हित रण में भाँजत तलवार रहे

बा लिखल देश के हिरदे पर राउर कम वाँ राउर गुणवाँ
अगणित कायर बन बीर गइल मुहवाँ से ले राउर नमवाँ

वीर शिवाजी के, प्रताप के, दूसर अवतार रवाँ रहली
माथ प्रथम भोजपुरियन के फिर भारत के ऊपर कइली

♦

संत तुलसी

अनाचार के घिरंल अन्हरिया रहे जोर से धरती पर
सकपकाय के सत्य लुकाइल रहे भरल-मनवाँ में डर
भक्ति भाव के पता रहे ना खुल के खेलत पाप रहे
अवनी से अम्बर तक बिखरल जीवन में अभिशाप रहे

शोक-पङ्क में धँसल रहे, हो विकल हिन्दुवन के नैय्या
तनल देख तलवार, थराइल रहे धर्म के हा! गैय्या
रक्षक हो तुलसी तब अइलन बाँचि धर्म के प्राण गइल
भागल दुम के दाब अन्हरियाँ जागल जगत विहान भइल

प्रगट भइल रामाय्रण के रवि खिलल प्रेम के कमल महान
भक्ति-भाव के उड़ल महकिया महमह महकल सकल जहान
पी पराग श्रद्धारस छक कर मातल मनवाँ बन मधुकर
चलल पवन विश्वास भाव के डगर डगर पर लहर लहर

हुलसी घटा, गगन हुलसल हिमगिरि हुलसल हुलसी हुलसी
सुन पड़ल इहे सबके मुखते धन भाग प्रगट भइले तुलसी

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होली

ना जाने के खेलल होली!
लाल भइल पूरूब के अँगना,
लाल भइल गोरी के कँगना,
डाल-डाल पर टिहुकि-टिहुकि के
ना जाने के बोलल बोली !
ना जाने के खेलल होली !
लाल-लाल अँचरा धरती के,
रँग से माँग भरल परती के,
लाल-लाल केहू के कुरुता,
लाल-लाल केहू के चोली!
ना जाने के खेलल होली!
कहूँ अबीर, कहूँ गुलाल बा,
लाल-लाल हो गइल ग़ाल बा,
कहूँ जवानन के जमात बा।
कहूँ बूढ़-लरिकन के टोली !
ना जाने के खेलल होली !

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक़्तक

दुलभ अनन्दवाँ

बाहर से तनवा के भीतर से मनवा के सफइया करिलऽ
चन्दनिया ऐसन उजागर उजास हियवा में भरिलऽ
कस्तूरी मृगनीयन ससवाँ-कस्तूरी महक जाई
निर्मल चितवा में दुलभ-अनन्दवाँ अकवरिलऽ

♦

कुर्सी हथियावऽ

राजनैतिक मठाधीश होखे बदे अल्पसंख्यक, दलित वर्ग रिझावऽ
धन के जुगाड़ करे बदे असमाजिक तत्वन से बतियावऽ
गाँवे गाँवे घूमि घूमि चुम्बक नीयन मीठ-झूठ भाषण दऽ
सोनवा के देहिया बनिजाई सत्ता के कुर्सी हथियावऽ

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाइकू

१

देखी हवाला
संसद में बवाला
मुहवाँ काला

× × ×

करी ले काम
बहेला पसिनवा
हो जाला शाम

× × ×

जूही के फूल
नभवा में खिलल
गंगा के कूल

× × ×

अमृत घोली
भोजपुरिया बोली
उठाव डोली

× × ×

चान्दी के थाली
गगन में निराली
बजाव ताली

♦

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

RajGuru Math, Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon